

बायें से दायें – मेहेर रुस्तम फ़लाहाटी भाऊ कलचुरी, रुस्तम फ़लाहाटी

रुस्तम फ़लाहाटी ने, जो व्यवसाय से समुद्रीय अभियन्ता (Marine Engineer) थे, अवतार मेहेरबाबा की मंडली के साथ रहने और उनके साथ काम करने का अवसर मिलने के कारण, अपनी नौकरी छोड़ दी। वह उनके साथ 1989 से 2000 तक रहे।

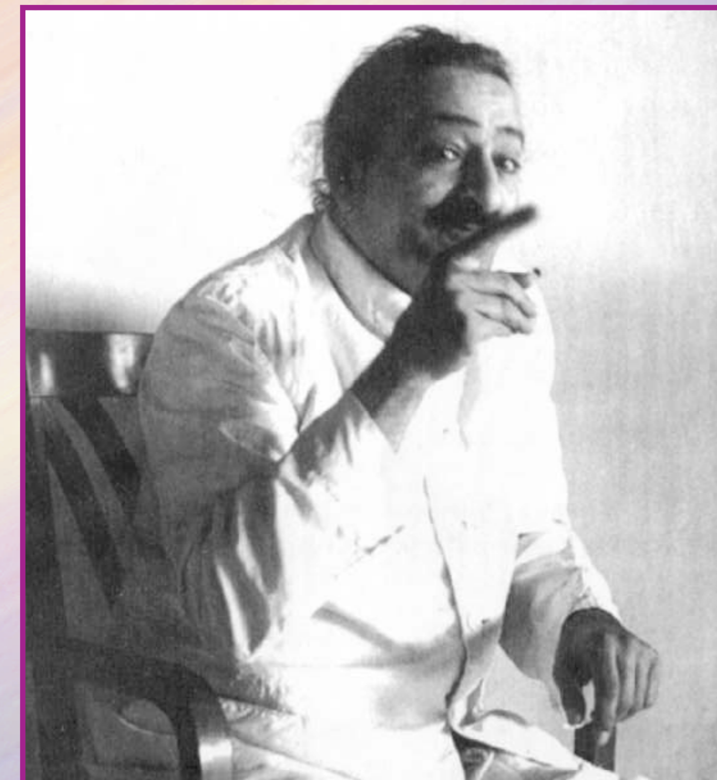
इस पुस्तक में लेखक ने मंडली द्वारा वर्णन की गईं, बाबा के शब्दों की सच्चाई को प्रकट करती हुईं और अधिक कहानियाँ ही नहीं प्रस्तुत की हैं बल्कि मंडली के जीवन के उस पहलू पर भी प्रकाश डाला है जो उनके माध्यम से प्रियतम बाबा के सक्रिय रूप को प्रतिबिम्बित करता है।

असली खज़ाना – III

अनुवादः डा. (श्रीमती) मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ

असली खज़ाना – III

रुस्तम फ़लाहाटी कृत अंग्रेज़ी पुस्तक
"The Real Treasure-III"
का अनुवाद



अनुवादः
डा. (श्रीमती) मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ

अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन

असली ख़ज़ाना–III

रुस्तम फ़लाहाटी कृत अंग्रेज़ी पुस्तक

"The Real Treasure-III"

का अनुवाद

एक अन्तेवासी का अवतार मेहेरबाबा की मंडली के साथ जीवन

अनुवाद

डा. (श्रीमती) मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ

एम.एससी. पीएच.डी.

जनवरी–**2011**

प्रकाशक :
अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन
198—ए, बिशप रॉकी स्ट्रीट,
फ़ैजाबाद रोड, लखनऊ
फ़ोन : 0522-2327477
0522-2350214, 011-46075921
मोबाइल : 09871608615, 9415080217

मुद्रक
शिवम् आर्ट्स, 211 पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ
फ़ोन : 0522-2782348, 2782172

समर्पण

मैं यह पुस्तक प्रियतम अवतार मेहेरबाबा के साथ घनिष्ठता से जुड़े हुये, उनके मंडल के शिष्यों को समर्पित करता हूँ जिनके बारे में बाबा ने कहा है कि वे उनके साथ एक हैं लेकिन पर्दे के पीछे होने के कारण, वे ईश्वर को देख नहीं सकते हैं।

fo"k; lwph

• • •

izse lans'k

असली खज़ाना–III (The Real Treasure-III) का अनुवाद हिन्दी जगत के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण अर्थ रखता है।

रुस्तम फ़लाहाटी जी ने 11 साल तक मंडली जनों के संपर्क में रहकर जो अनुभव प्राप्त किया, वही अनुभव उन्होंने The Real Treasure-III (असली खज़ाना–III) पुस्तक में उतारा है। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद पाठकों को अपना दैनिक जीवन व्यतीत करते समय प्रेरणादायी तथा लाभकारी होगा।

मंडली ने जो जीवन व्यतीत किया, वह हम सभी के लिये आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नति के लिये प्रेरणादायी है।

असली खज़ाना पुस्तक के अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक, अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन को मेरा हार्दिक धन्यवाद जिन्होंने अथक परिश्रम करके यह पुस्तक पाठकों के सामने पेश की।

यह इश्क नहीं आसाँ, बस इतना ही समझ लें,
एक आग का दरिया है, और डूब के जाना है।

अहमदनगर
16 जनवरी, 2011

मेहेरबाबा की सेवा में,
मेहेरनाथ बी. कलचुरी, ट्रस्टी
अवतार मेहेरबाबा पी.पी.सी. ट्रस्ट
अहमदनगर–महाराष्ट्र

हृदय के उद्गार

अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन श्री रुस्तम बी. फ़लाहाटी का अत्यंत आभारी है जिन्होंने अपनी अंग्रेज़ी पुस्तक "The Real Treasure-III" *का हिन्दी में अनुवाद करने और उसे प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।*

अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन श्री राम अचल यादव, कु. आकांक्षा श्रीवास्तव, श्री के. डी. निगम, श्री अमित निगम एवं अन्य बाबा प्रेमी भाई बहनों का भी अत्यंत आभारी है जिन्होंने हर छोटी, बड़ी ज़रूरत पड़ने पर हमारी सहायता की। हम श्री एम.सी. जायसवाल एवं श्रीमती सुनीता अवस्थी के भी अत्यंत आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक के प्रूफ का संशोधन करने में सहायता की।

फ़ाउन्डेशन शिवम् आर्ट्स के सभी कर्मचारियों एवं व्यवस्थापकों को भी हार्दिक धन्यवाद देता है जिनके सहयोग के बिना यह कार्य असंभव था।

हम अपने प्रियतम अवतार मेहेरबाबा के भी अत्यंत आभारी हैं जिनकी कृपा से यह कार्य पूरा हुआ। आशा है यह पुस्तक, अपने अंदर छिपे हुये असली खज़ाने, ईश्वर को प्राप्त करने में पाठकों की सहायता करेगी।

जय मेहेर बाबा !

लखनऊ — *अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन*
जनवरी 15, 2011 — *के सभी सदस्य*

iLrkouk

बाबा के प्रेम में प्रिय भाइयो और बहनो,

आप लोगों में से कई प्रेमियों ने असली खज़ाना पढ़ने के बाद, मुझे धन्यवाद देने के लिये फ़ोन किया था। मैं उनसे कहता हूँ कि उन्हें मुझे नहीं बल्कि प्रियतम बाबा को धन्यवाद देना चाहिये क्योंकि असली खज़ाना वास्तव में मैंने नहीं, उन्होंने ही लिखी थी। मैं तो उनके हाथों में सिर्फ एक पेंसिल था। ये कहानियाँ फूल थे जो दैवी माली ने संसार में अपने प्रेमियों के कल्याण के लिये उगाये थे। मैंने उन्हें लगाया या उगाया नहीं था। उनके एक दास के रूप में, मैंने इन फूलों को संसार में उनके प्रेमियों तक दैवी माली की इच्छानुसार पहुँचाया। यह मेरा सौभाग्य था कि दैवी माली ने अपने कई दासों में से, इस कार्य के लिये मुझे चुना और इन फूलों को दैवी माली से उनके प्रेमियों तक पहुँचाने में–इन फूलों की खुशबू मेरे हाथों में–वास्तव में मेरे पूरे अस्तित्व में अभी भी है और इसी ने मेरी गहन पीड़ा और कष्ट के दौरान मुझे सहारा दिया है। यही कारण है कि मैं उन सभी पाठकों को धन्यवाद देता हूँ जो मुझे फ़ोन करके मुझसे अनेकों प्रश्न पूछते थे और मुझे उन कहानियों की खोज में, जिन्हें मैं उनके प्रेमियों को बताना भूल गया था, अपनी यादों की गलियों में घूमने के लिये विवश कर देते थे। मेरा यह विश्वास है कि प्रत्येक बाबा प्रेमी को, जो इन संदेशों को अपने प्रतिदिन के जीवन में आचरण में लाता है, इनसे लाभ होगा। यह जादू की तरह काम करता है। वास्तव में जब सब कुछ असफल हो जाता है, तब इसी से लाभ होता है। आप इन कहानियों को केवल पढ़ें ही नहीं बल्कि अपने जीवन में इनको आचरण में भी लायें और तब आपका अपना जीवन असली खज़ाना बन जायेगा। प्रत्येक प्रेमी को, दैवी माली द्वारा दिये गये फूलों को अपने हृदयों में लगाना चाहिये जहाँ अधिकतर इच्छाओं की घास उगती है। उचित देखभाल करने से, ये फूल आपके हृदय में, संख्या में बढ़ते चले जायेंगे, अथवा इच्छाओं की घास की जगह पूरी तरह से ले लेंगे और उस अनन्त प्रेम का अनुभव करने में प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करेंगे जो हर अस्तित्व के अंदर है और जिसकी खोज हर आत्मा कर रही है।

यह यात्रा कठिन और कष्टपूर्ण है लेकिन इनाम पाने का प्रयत्न करने लायक है। तुम्हारे अंदर माया के प्रलोभनों, जो सूक्ष्म रीतियों से आध्यात्मिक मार्ग से तुम्हारा ध्यान हटाना चाहते हैं, और यथार्थता के बीच, जो निरंतर तुम्हें संकेत करके पास बुलाती है, निरंतर युद्ध होगा। कभी कभी तुम असफल हो जाओगे जैसा कि ज़रूरी है। यहाँ तक कि तुम यह भी अनुभव कर सकते हो कि बाबा पर तुम्हारी पकड़ ढीली हो रही है लेकिन इस बात का विश्वास करो कि तुम्हारी ओर से ईमानदारी से किये गये प्रयत्न का ज़रा सा भी संकेत, तुम्हारी ओर उनका ध्यान आकर्षित करने के लिये पर्याप्त है। यहाँ तक कि जब तुम असफल होकर अपनी पकड़ ढीली कर देते हो, वह तुम्हें पकड़े होंगे। वास्तव में, उस समय के दौरान वह तुम्हें गोद में उठाये होंगे। इसलिये आशा और साहस रखो। और इन सबसे बढ़कर उनका होने की वह तड़प और हिम्मत रखो। बाकी सब वह स्वयं देख लेंगे। इस बात का विश्वास रखो।

जय मेहेर बाबा !

रुस्तम बी. फ़लाहाटी

vkHkkj

इस पुस्तक को लिखने में मुझे निरंतर दिये गये सहारे और मार्गदर्शन के लिये मैं प्रियतम मेहेरबाबा की मंडली का अत्यंत आभारी हूँ। मैं, चेयरमैन भाऊ कलचुरी जी को विशेष रूप से हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जो अपनी अत्यंत व्यस्त दिनचर्या के बावजूद, मेरी सहायता करने के लिये हमेशा उपलब्ध रहते थे।

मैं अपनी पत्नी मेहेर को इन कहानियों को लिखने के लिये धन्यवाद देता हूँ क्योंकि मैं अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण स्वयं लिखने में असमर्थ था। मैं स्टीव क्लाइन को धन्यवाद देता हूँ जो हर बार प्रसन्नतापूर्वक मेरी सहायता करता है–स्टीव ने इस पुस्तक को आकार और रूप ही नहीं दिया बल्कि इसको अन्तिम रूप भी दिया जिसे वह मंडली के साथ रहने के अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर बहुत अच्छी तरह करता है। मैं अपने मित्रों, अरविन्द और समीरा महाजन को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने कम्प्यूटर के कार्य में सहायता की। मैं सायरस और सौम्या खम्बाटा, जी. बर्नार्ड रोड्रिगो और मिथू गार्ड को धन्यवाद देता हूँ जो मेरी सहायता करने के लिये हमेशा तैयार रहते थे। मेरे सभी कार्यों और प्रयासों में मुझे सहायता देने के लिये मैं क्रैग रफ़ को धन्यवाद देता हूँ। मैं अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन की मेहेर ज्योति, समीर दिलजन और सतीश चन्द्र श्रीवास्तव को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने "The Real Treasure" Part I और Part II (असली खज़ाना और असली खज़ाना–II) का, हिन्दी जानने वाले बाबा प्रेमियों के लाभ के लिये, हिन्दी में अनुवाद किया। मैं आदिनाथ थाम्बे को भी धन्यवाद देता हूँ जिसने इस पुस्तक की छपाई और वितरण में मेरी सहायता की। मैं बाबा के प्रेम में अपने सभी भाइयों और बहनों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को इस रूप में बाबा प्रेमियों तक पहुँचाने में, छोटे और बड़े रूप में अपना समय दिया।

अन्त में, जैसे ही मैं अपने स्वामी और गुरु के सामने उन्हें धन्यवाद देने के इरादे से खड़ा होता हूँ, मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व काँप रहा है, मेरा हृदय

व्याकुल है और शब्द मेरा साथ नहीं दे रहे हैं क्योंकि मैं जो कुछ कहता हूँ, वह उनसे है, मैं जो कुछ भेंट करता हूँ वह उन्होंने मुझे दिया है, मैं जो कुछ हूँ, उनके कारण हूँ। मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व उनसे उत्पन्न है। मैं सृष्टि के स्वामी को क्या भेंट दे सकता हूँ?

यह ठीक उसी तरह होगा जैसे कि एक मोमबत्ती सूर्य को अपना प्रकाश भेंट करे। जब मुझे यह एहसास होता है कि अपने प्रियतम को भेंट में देने के लिये मेरे पास मेरा अपना कुछ नहीं है, तो मुझे बहुत दुःख होता है। वह इस पुस्तक के यथार्थ लेखक ही नहीं हैं बल्कि इसके सारे चरित्र, मुद्रक (पुस्तक छापने वाला), पुस्तक पढ़ने वाले और स्वयं पुस्तक भी हैं। वह सबकुछ हैं। उनके अलावा दूसरा और कोई नहीं है। एकमात्र वही हैं क्योंकि एकमात्र वही, इतने सारे लोगों के हृदयों को, इस तरह से छू सकते हैं (प्रभावित कर सकते हैं)। मैं इस पुस्तक के यथार्थ लेखक 'मेहेर बाबा' को प्रणाम करता हूँ और उन्हें अपना हृदय अर्पित करता हूँ। वह असली खज़ाना की रचना करने वाले ही नहीं हैं बल्कि वह स्वयं असली खज़ाना हैं जिसे हम सब खोज रहे हैं।

1. असली खज़ाना पुस्तक को लिखना

सन् 2000 में, मेरी बीमारी शुरू होने पर भाऊजी ने मुझे सलाह दी थी कि क्योंकि मैं कोई दूसरा काम करने के लायक नहीं था, इसलिये मुझे मेहेराबाद में बिताये गये अपने जीवन के बारे में पुस्तक लिखना चाहिये। मैंने उनकी सलाह पर ध्यान नहीं दिया और अपने अच्छे स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करने की आशा में किसी दवा की खोज करने में लगा रहा। लगभग दो वर्ष के संघर्ष के बाद, यह समझ में आने पर कि मेरा स्वास्थ्य और अधिक खराब हो रहा था, मैंने जनवरी 2002 के आसपास पेन उठाया और लिखना शुरू किया। मैंने अपने आपको केवल व्यस्त रखने के लिये लिखना शुरू किया क्योंकि इस समय तक मेरा स्वास्थ्य इतना अधिक खराब हो गया था कि कभी कभी, कुछ दिनों तक मैं बिस्तर से बहुत कठिनाई से उठ पाता था।

जब मैं मंडली के साथ बिताये गये अपने जीवन के बारे में लिख रहा था, मैंने प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया कि इस जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग 'आध्यात्मिक प्रशिक्षण' था। किसी व्यक्ति के मन में आध्यात्मिक प्रशिक्षण के बारे में यह परम्परागत धारणा होती है कि यह एक वैराग्यपूर्ण, आश्रम में बिताया गया जीवन है जहाँ धार्मिक उपदेश दिये जाते हैं और ध्यान संबंधी क्रियायें कराई जाती हैं। जो लोग ऐसे आश्रमों में रहते हैं अथवा ऐसा आचरण करते हैं, प्रायः ऐसा अनुभव करते हैं। लेकिन मंडली द्वारा ट्रस्ट में दिये जाने वाले आध्यात्मिक प्रशिक्षण का यह तरीका नहीं था।

हम लोग, जो मेहेराबाद में रहकर बाबा का कार्य कर रहे थे (Residents), सामान्य रूप से कार्य करते थे जैसे कि हम संसार में रहकर करते हैं। हमारी कोई विशेष दिनचर्या नहीं थी लेकिन यहाँ पर निरंतर क्लेश के कारण हर काम बहुत अधिक कठिन हो जाता था और मंडली के द्वारा लगने वाले शब्दों के हथौड़ों (hammering) का तो कहना ही क्या। इससे तीर्थयात्रियों और अन्तेवासियों के मन में, विशेष रूप से जिनके लिये यह सब नया था, विवाद और संदेह पैदा हो जाते थे क्योंकि मिथ्या अहं का नाश करने के बाबा के तरीकों की उन्हें थोड़ी सी भी समझ नहीं होती थी।

अक्सर मैं देखता था कि नये अन्तेवासियों में से कुछ लोग मेहेराबाद से चले जाते थे क्योंकि वे प्रशिक्षण की कठोरता को सहन नहीं कर पाते थे। ये बाबा प्रेमी, मंडली के कार्यों के प्रति नकारात्मक धारणा लेकर चले गये और उनकी (मंडली जनों की) आलोचना करने लगे। मैंने इन बाबा प्रेमियों के हृदय के भावों को समझने और उनकी मंडली के बारे में गलत धारणाओं को दूर करने की आवश्यकता को अनुभव किया क्योंकि मैं जानता था कि इसी तरह के दौर से मैं भी गुज़र चुका था।

इस पर भी, अपने संदेहों के बावजूद, मंडली अथवा उस स्थान के बारे में मेरे अंदर कोई भी नकारात्मक भावना नहीं थी। इसके बजाय, किसी के साथ झगड़ा होने के बाद तनाव के क्षणों में मैं बाबा से सच्चे हृदय से प्रार्थना करता था कि वह मेरा मार्गदर्शन करें और यह समझने में मेरी मदद करें कि ऐसा क्यों हो रहा था। मैं बाबा से कहता था, "आप सब कुछ

जानने वाले और इस संसार की रचना करने वाले ईश्वर हैं जो इस सृष्टि के सभी प्राणियों के भूत, भविष्य और वर्तमान को जानता है। जब आपने मंडली को चुना, आप जानते थे कि उनके द्वारा हमें किस तरह के पागलपन का सामना करना पड़ेगा। इसलिये इस सबके पीछे कोई कारण है जिसे मैं नहीं समझता हूँ। आप चाहते हैं कि हम इस सबका सामना करें, इसलिये कृपा करके, इसे समझने में मेरी सहायता कीजिये।''

मानसिक तनाव की स्थिति में मैं बाबा से हर बार यह प्रार्थना ह्रदय से करता था। इसके साथ, मैं काम करना ज़ारी रखता था। मैं इसे बाबा के लिये करने और कठिनाइयों की उपेक्षा करने का भरसक प्रयत्न करता था। कई सालों के बाद, मुझे एक पहेली की तरह टुकड़ों टुकड़ों में उत्तर मिलने लगे और इस पुस्तक को लिखने के समय मुझे यह स्पष्ट रूप से समझ में आया कि इन पहेली के टुकड़ों को किस प्रकार से रखा जाये ताकि वहाँ जो कुछ हो रहा था, उसकी पूरी तस्वीर सामने आ सके। मेरी प्रार्थनाओं के उत्तर में, यह वास्तव में बाबा की असीम कृपा थी।

अपने ह्रदय में इस बात से पूरी तरह संतुष्ट होकर कि मंडली जो कुछ कर रही थी वह मात्र पागलपन नहीं बल्कि सभी संबंधित जनों की सबसे अधिक भलाई के लिये था, मुझे उन दूसरे बाबा प्रेमियों में इस ज्ञान को बांटने की इच्छा हुई जिनमें से कई लोग इसे समझ नहीं सके थे। मैंने बाबा से प्रार्थना की कि वह इस कार्य में मेरी सहायता करें। मैं जानता था कि इस पुस्तक को लिखने, छपवाने और प्रकाशित करने में ही नहीं बल्कि मुझे यथासंभव और भी कामों में मदद की आवश्यकता थी क्योंकि इस सारे कार्य के लिए मुझे अभी भी मंडली की अनुमति की आवश्यकता थी।

अपने पिछले अनुभव से मैं जानता था कि भिन्न भिन्न कारणों से, जिन्हें मंडली जन और बाबा ही अच्छी तरह जानते थे, किसी व्यक्ति द्वारा अच्छी योजनाओं को शुरू करने में मंडली एक भयंकर बाधा (रुकावट) बन सकती थी। मैं विवादास्पद आधारों पर, उस प्रदेश में चल रहा था जहाँ चलने का साहस पहले किसी ने नहीं किया था और, मैं निष्कपट रूप से कहता हूँ कि मैं डरा हुआ था। विशेष रूप से भाऊ जी से मुझे बहुत डर लग रहा था। मेरे खराब स्वास्थ्य के कारण मेरा डर और बढ़ गया था।

फिर भी बाबा मुझ पर दबाव डाल रहे थे जिससे मैं आगे बढ़ता रहा। मैं जानता था कि मुझे यह कार्य करना था भले ही इसके कारण मुझे शब्दों के हथौड़ों की मार सहना पड़े।

पुस्तक को पूरा करने में मुझे कई महीने लग गये और इसके पूरा हो जाने पर, मैंने भाऊजी की अनुमति लेने के लिये, उनके पास जाने का निश्चय किया। मैं जानता था कि मुझे उनसे अच्छे मनोभाव (मूड) में, जब वह ट्रस्ट के काम में व्यस्त न हों, बात करना था और उस समय; संभवतः, मैं उनकी अनुमति प्राप्त करने में सफल हो सकता था। इसके लिये मुझे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने की ज़रूरत थी क्योंकि मैं जानता था कि अगर भाऊजी खराब मनोभाव में होंगे तो मेरे द्वारा एकाएक बात छेड़ने पर, वह मुझे बाहर निकाल देंगे।

एक दिन, जब भाऊजी विशेषरूप से अच्छे मनोभाव में थे और तनावरहित होकर हँसी मज़ाक कर रहे थे, मैंने इस विषय को छेड़ा। मैंने उन्हें याद दिलाई कि उन्होंने मुझसे यहाँ के हमारे जीवन और अन्तेवासियों (मेहेराबाद में रहकर बाबा का कार्य करने वाले बाबा प्रेमियों, (Residents)) के मंडली के साथ परस्पर संबंधों के बारे में एक पुस्तक लिखने के लिये कहा था। मैंने उन्हें बताया कि मैंने वह पुस्तक पूरी लिख ली थी और मैं उन्हें कुछ कहानियाँ सुनाना चाहता था क्योंकि मैं उनसे (भाऊजी से) जानना चाहता था कि दुनियाँ में रहने वाले बाबा प्रेमियों के लिये, जो नहीं जानते थे कि यहाँ (मेहेराबाद में) क्या हो रहा था, ऐसी कहानियाँ छपवाना क्या उचित होगा।

मैंने उन्हें दो अच्छी कहानियाँ सुनाने के बाद, फिर खराब कहानियाँ, जो मंड़ली द्वारा अन्तेवासियों पर शब्दों के हथौड़ों से किये गये वार से संबंधित थीं, सुनाने का निश्चय किया। जब मैंने भाऊजी को अच्छी कहानियाँ सुनाना समाप्त किया, दुर्भाग्य से बाधा आ गई। ट्रस्ट के कार्य से एक कर्मचारी मिलने आया। भाऊ जी कार्य से संबंधित विषय पर उस कर्मचारी से नाराज़ हो गये और उसे डाँटना शुरू कर दिया। जब मैंने भाऊजी को गुस्से में देखा, मेरा दिल डूबने लगा। कर्मचारी के जाने के बाद, वह गुस्से में ही मेरी ओर मुड़े और मुझसे कहानियाँ सुनाने के लिये कहा।

इस समय तक मंडली द्वारा किये गये शब्दों के हथौड़ों के वार की कहानियाँ सुनाने की मेरी हिम्मत समाप्त हो चुकी थी। ऐसा नहीं था कि मैं शब्दों के हथौड़ों से डरता था, क्योंकि जब मैं स्वस्थ था, मुझे इस स्थिति का सामना रोज़ करना पड़ता था। लेकिन अब मेरा स्वास्थ्य इतना खराब था कि मुझे डर था कि अगर मुझ पर शब्दों के हथौड़े रोज़ बरसना शुरू हो गये तो मेरा स्वास्थ्य और अधिक खराब हो जायेगा। इसलिये मैंने भाऊजी को मंड़ली द्वारा किये गये शब्दों के हथौड़ों के वार की कहानियाँ भविष्य में फिर कभी सुनाने और इस समय केवल अच्छी कहानियाँ सुनाने का निश्चय किया।

जब मैंने तीसरी अच्छी कहानी पूरी सुना दी, भाऊजी ने मुझसे गुस्से में कहा, ''ऐ मिस्टर, क्या तुम यही सब लिखने जा रहे हो?'' मैं समझ नहीं सका कि भाऊ जी इतने नाराज़ क्यों थे और वह क्या कहना चाह रहे थे। इसलिये मैंने उनसे कहा, ''मैंने इसी तरह की और कहानियाँ भी लिखी हैं।''

भाऊजी ने गुस्से में कहना ज़ारी रखा, ''क्या तुम यही सब लिखने जा रहे हो? क्या तुम केवल अच्छी कहानियाँ लिखने वाले हो? आध्यात्मिक प्रशिक्षण अथवा मंडली द्वारा तुम लोगों पर शब्दों के हथौड़ों से किये गये वार के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? क्या तुम इस बारे में नहीं लिखोगे?''

मैं आश्चर्य चकित था। मैंने जो कुछ सुना, उस पर मुझे विश्वास नहीं हुआ और कुछ घबड़ाकर मैंने उनसे पूछा, ''आप चाहते हैं कि मैं वे बातें भी लिखूँ? वे बातें कुछ विवादास्पद हैं।'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''हाँ, यह बहुत महत्व पूर्ण है, और तुम्हें यह सब अवश्य लिखना चाहिये।'' भाऊ जी के माध्यम से बाबा द्वारा मुझे दी गई इस अनुमति से मैं अत्यंत प्रसन्न हो गया। यह पहला अवसर नहीं था जब भाऊजी ने मेरे हृदय की वास्तविक इच्छा और उसे पूरा करने में रुकावट डालने वाले मेरे डर और संदेहों को भी समझ लिया था।

कितने आश्चर्यजनक ढँग से उन्होंने हर बात स्पष्ट करके मेरे लिये सब कुछ आसान कर दिया था। भाऊजी कहो अथवा बाबा, मेरे लिये यह एक, और समान बात है। मेरे हृदय की आन्तरिक आवश्यकता का बाबा ने प्रत्युत्तर दिया था। अब मैं इस विषय पर स्वतंत्रतापूर्वक लिख सकता था, क्योंकि भाऊजी ने मुझसे इस विषय पर लिखने के लिये स्वयं कहा था।

जिस ढँग से यह सब हुआ, उसमें स्पष्ट रूप से बाबा का हाथ था। भाऊजी के आफ़िस से बाहर आने के बाद मैं अत्यन्त प्रसन्न था।

अन्त में, जब पुस्तक छप गई, मैं मंडली जनों और बाबा प्रेमियों की इसके प्रति हृदय को व्याकुल कर देने वाली प्रेमपूर्ण प्रतिक्रिया से आश्चर्य चकित था। किताब के छपने और प्रेमियों के पास पहुँचने के कई हफ़्तों के बाद, मैंने मंडली की कुशल क्षेम और मेहेरवान जसावाला के स्वास्थ्य के बारे में जानने के लिये, उन्हें फ़ोन किया। मैंने मेहेरवान से यह भी पूछा कि क्या हर व्यक्ति को भेंट में दी गई पुस्तक की प्रति मिल गई थी। मेहेरवान ने बताया कि सबको अपनी अपनी प्रति मिल गई थी लेकिन बहुत चिन्ता के साथ उन्होंने कहा, ''किताब बहुत अच्छी थी, लेकिन रुस्तम तुमने यह क्या किया? तुमने ये सब बातें क्यों लिखीं? इसे पढ़ने के बाद भाऊजी तुम्हारी हत्या कर देंगे।''

जब मेहेरवान ने यह कहा, मैं खूब हँसा और उन्हें आश्वासन दिया कि स्वयं भाऊजी ने मुझसे इस विषय पर लिखने के लिये कहा था। ऐसा प्रतीत हुआ कि मेहेरवान को यह सुनकर आश्चर्य हुआ और उन्होंने मुझसे फिर पूछा, ''क्या तुम्हें पूर्ण विश्वास है कि भाऊजी ने तुमसे यह करने के लिये कहा?'' जब मैंने उन्हें पुनः विश्वास दिलाया तो उन्होंने चैन की गहरी साँस ली, ''तुमने अच्छा किया कि उन्हें इसके बारे में सूचित कर दिया। मुझे तुम्हारी चिन्ता हो रही थी।''

हालांकि मैंने मेहेरवान को आश्वासन दे दिया कि सब कुछ ठीक था, फिर भी, कुछ दिनों के बाद मेरे मन में एक मूर्खतापूर्ण संदेह पैदा हो गया। ''अगर भाऊजी इस सबके बारे में भूल गये हों तो क्या होगा?'' पहले भी वह ऐसा कर चुके थे। वह मुझसे कुछ करने के लिए कहते थे, फिर इसके बारे में बिल्कुल भूल जाते थे, और फिर मुझ पर अपने शब्दों के हथौड़े चलाते थे कि मैंने उनकी सलाह लिये बिना वह काम क्यों किया। यह याद करके कि भाऊजी पहले भी कई बार ऐसा कर चुके थे, मैं बहुत डर गया। अगर वह इस बार भी भूल गये तो क्या होगा? अगर उन्हें यह याद नहीं रहा कि उन्होंने मुझसे इस विषय पर लिखने के लिये कहा था, तो क्या होगा? मैं प्रार्थना और बाबा की याद करते हुये, घटनाओं के घटित होने का इन्तज़ार करने के अलावा, इस बारे में और कुछ नहीं कर सकता था।

कई महीनों के बाद भाऊजी ने मुझसे कहा, ''सबको तुम्हारी किताब पसन्द है, लेकिन मैं नहीं जानता हूँ कि तुमने क्या लिखा है। मैं बहुत व्यस्त हूँ और इसको पढ़ने के लिये मुझे समय नहीं मिलता है।'' कुछ सालों के बाद, जब मैं उनके पास बैठा हुआ था, उन्होंने मुझसे कहा, ''मैंने तुम्हारी किताब पढ़ ली है और मुझे यह बहुत अच्छी लगी। यह वास्तव में आध्यात्मिक थी।'' भाऊजी ने आगे कहा, ''और लिखना ज़ारी रखो।'' मैंने भाऊजी को याद दिलाया कि मेरी किताब इसलिये अच्छी नहीं थी क्योंकि मैंने इसे लिखा था बल्कि इसलिये अच्छी थी क्योंकि उसमें मंडली के संदेश थे।

हाल ही में, एक बाबा प्रेमी ने मुझसे पूछा कि मंडली के साथ अपने जीवन में मैंने सबसे अधिक महत्वपूर्ण कौन सा कार्य पूरा किया था। मैंने उसे उत्तर दिया, ''हालांकि मेरे द्वारा किये गये सारे कार्य बाबा करते थे, मैं नहीं, फिर भी जो कार्य मुझे सबसे अधिक महत्वपूर्ण लगता था और जो मेरे हृदय को रोमांचित करता था, वह था अपनी बुद्धि और हास्य का प्रयोग मंडली को हँसाने और उनके लिये दिन को प्रसन्नतापूर्ण बनाने के लिये करना। उन्हें हँसते हुये और प्रसन्न होते हुये देखना, मेरे लिये अधिक महत्वपूर्ण था।''

जब मंडलीजन हँसते थे, उनके आस पास के लोग प्रसन्नता का अनुभव करते थे और जब वे दुखी होते थे, सभी प्रेमियों के संसार में अँधेरा छा जाता था। इसीलिये मंडली के साथ मेरे जीवन और मेरे कार्य का सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग मंडली जनों को हँसाना और उन्हें प्रसन्न देखना था।

2. पुस्तक का परिणाम

असली ख़ज़ाना (The Real Treasure) को लिखने के बाद, कई बाबा प्रेमियों नें, जिन्हें पुस्तक अच्छी लगी, मुझसे प्रार्थना की कि मैं इस विषय पर और अधिक लिखूँ। मैंने उनसे कहा कि मेरे पास कहने के लिये और कुछ नहीं हैं। उन्होंने जो कुछ पढ़ा है, उसे अपने जीवन में आचरण में लाना चाहिये। कुछ और लिखने की बाबा प्रेमियों की बहुत सी प्रार्थनाओं का मैं प्रायः यही उत्तर देता था। एक बाबा प्रेमी ने एक ऐसी टिप्पणी की

जो मेरे मन में अंकित हो गई। जब मैंने उसे बताया कि उसने जो कुछ पढ़ा था, उसे अपने जीवन में आचरण में लाने की ज़रूरत थी तो उसने टिप्पणी की, ''लेकिन हम यह नहीं जानते हैं कि हम अपने जीवन में इसका प्रयोग किस प्रकार करें। क्या तुम हमें अपने अनुभव बता सकते हो कि तुमने यह सब किस तरह किया?'' मैंने इस पर विचार किया और मैं सोच में डूब गया कि क्या मैं बाबा प्रेमी की सलाह को ध्यान में रखते हुये, इस आधार पर कुछ और लिख सकता था। तो भी, मेरे खराब स्वास्थ्य के कारण, किसी पुस्तक को लिखना और उसे छपवाना, मेरे लिये बहुत कठिन था और फिलहाल मैंने इस बात की उपेक्षा कर दी।

सन् 2007 के अन्त में, मेरे पास दिल्ली से समीर दिलजन नाम के एक बाबा प्रेमी का फ़ोन आया। उसने ''दी रियल ट्रेज़र'' (The Real Treasure) किताब पढ़ी थी और मुझे यह बताने के लिये फ़ोन किया था कि इसे पढ़ने के बाद, किस तरह उसके मन में होने वाले कई संदेह दूर हो गये थे। उसने मुझसे थोड़ी देर तक इस बारे में बात की कि मेरी किताब ने उसकी कुछ समस्याओं को हल करने में किस तरह मदद की थी, लेकिन उसने यह भी कहा कि उसके मन में अभी भी कुछ संदेह हैं जो उस किताब में नहीं बताये गये थे। उसने मुझसे प्रश्न पूछना शुरू कर दिया और इतने वर्षों में विभिन्न विषयों पर मंडली ने जो कुछ कहा था, उसके आधार पर मैंने उसे कुछ उत्तर दिये। मंडली ने विभिन्न विषयों पर जो कुछ कहा था, उसे सुनकर वह बहुत खुश लगा और इससे उसके संदेहों के दूर होने में उसे मदद मिली। उसने भी सलाह दी कि मैं नई किताब लिखूँ और उसमें उन विषयों पर लिखूँ जो मैंने अपनी पहली किताब में नहीं लिखे थे। मैंने उसे बताया कि नई किताब के लिये मेरे पास पर्याप्त सामग्री नहीं थी। उसने कहा, ''चिन्ता न करो। बाबा तुम्हें सामग्री देंगे।''

संयोगवश समीर मुझे नियमित रूप से, हफ़्ते में एक बार फ़ोन करके अपने संदेहों अथवा विभिन्न विषयों पर, जिनके बारे में उसे मुझसे बात करने की ज़रूरत महसूस होती थी, मुझसे बात किया करता था। इससे मैं अपनी यादों की गलियों में जाने और इतने सालों में मंडली ने तीर्थयात्रियों और अन्तेवासियों से विभिन्न विषयों पर जो कुछ कहा था,

उस सबको याद करने के लिये विवश हो जाता था। इस प्रकार, मुझे एक के बाद दूसरी कहानी याद आने लगी। समीर दूसरा भाग लिखने के लिये मुझ पर दबाव डालता रहा और यद्यपि, अभी भी मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं थी, मैंने इन कहानियों को लिखना शुरू कर दिया और समीर को आश्वासन दिया कि अगर सारपूर्ण कहानियाँ पर्याप्त मात्रा में मुझे याद आ गईं और अगर बाबा की ऐसी मर्ज़ी हुई तो मैं दूसरी किताब लिखकर छपवाऊँगा।

इस अवधि के दौरान मेरा स्वास्थ्य इतना अधिक खराब था जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। मेरी पाचन संबंधी समस्यायें बढ़ गईं थीं और वज़न कम हो रहा था। कभी कभी मुझे इतनी अधिक कमज़ोरी आ जाती थी कि अपनी पत्नी से कहानियाँ लिखाने अथवा बात करने पर भी, मेरी साँस फूल जाती थी। कभी कभी मैं बिल्कुल बोल नहीं पाता था और सोता रहता था। इसलिये लेखन में आवश्यक प्रवाह को बनाये रखना, मेरे और मेरी पत्नी के लिये बहुत कठिन था। मुझे अक्सर आश्चर्य होता था कि मंडली जन, विशेष रूप से भाऊजी, ऐसी परिस्थितियों में स्वयं को कैसे सँभालते और कार्य करते थे। मैं उन लोगों की तरह कार्य करने में असमर्थ था और अक्सर, लिखने का विचार त्याग देता था।

संयोगवश, जब कभी ऐसा होता था, समीर का फ़ोन आ जाता था। मुझसे पूछने के लिये; उसके पास कुछ और प्रश्न होते थे और उनके उत्तर सुनने के बाद, वह मुझे लिखना ज़ारी रखने के लिये उत्साहित करता था। इस तरह से याद करके और मंडली के साथ रहने के समय मैंने जो अपने नोट्स लिखे थे, उनके आधार पर, मैं एक के बाद दूसरी कहानी लिखता चला गया। जब मैंने इन कहानियों को इकट्ठा किया, तो मैं स्वयं यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि यह एक किताब के लिये पर्याप्त थीं। मैंने इन्हें बार बार पढ़ा और इन कहानियों ने मेरे हृदय को गहराई से स्पर्श किया तथा मुझे बाबा की उपस्थिति का अनुभव कराया। मैं समझ गया कि मैंने नहीं बल्कि स्वयं बाबा ने यह सब लिखा था और मैं उनके हाथों में मात्र एक पेंसिल की तरह था। इस किताब को लिखने के कार्य ने मेरे जीवन के सबसे अधिक कठिन दौर का सामना करने में मेरी सहायता की

और अब मैं संसार के बाबा प्रेमियों, विशेष रूप से उन प्रेमियों को, जो अत्यंत कष्ट में थे, इनमें भागीदार बनाना चाहता था।

किताब लिखने के बाद, मैंने उन बाबा प्रेमियों और दोस्तों से सम्पर्क किया जिन्होंने मेरी पहली किताब की छपाई और भूल सुधारने में मेरी मदद की थी। इस कार्य में कई महीने लग गये और The Real Treasure-II (असली खज़ाना–II) 2008 में छप गई। जब मुझे किताब मिली और मैंने उसका समर्पण पढ़ना शुरू किया, मुझे अचानक समीर दिलजन की याद आई जिसने, किताब पूरी होने के बाद, मुझे फोन करना बन्द कर दिया था। किताब लिखने और छपने के बीच कई महीने बीत गये थे। इस दौरान, लगभग छः महीने से न तो समीर की कोई ख़बर मिली थी और न ही उसका कोई फ़ोन आया था।

क्योंकि मैं उसे किताब की एक प्रति भेंट करना चाहता था इसलिये मैंने उससे उस फ़ोन नम्बर पर, जो उसने मुझे दिया था, सम्पर्क करने की कोशिश की। मैं लगभग एक महीने तक कोशिश करता रहा, पर किसी ने फ़ोन नहीं उठाया। मेरी पत्नी ने, जो दिल्ली की है, अपने कुछ मित्रों से सम्पर्क करके समीर के बारे में पता लगाने के लिये कहा। उसने अपने मित्रों को समीर के बारे में पूरा विवरण दिया और यह भी बताया कि वह लखनऊ का रहने वाला था। उन्होंने कुछ बाबा प्रेमियों से सम्पर्क करके समीर का लखनऊ में पता लगाया और उसको हमसे सम्पर्क करने का संदेश दिया।

इसलिये, एक दिन जब समीर ने अचानक फ़ोन करके विभिन्न विषयों पर बात करना शुरू किया, तो हमें आश्चर्य हुआ। उस समय वह एक समस्या का सामना कर रहा था जो उससे हल नहीं हो रही थी। बिना कुछ विचार किये, मैंने उससे कहा, "बाबा ने तुम्हारे साथ मेरा सम्पर्क इसलिये कराया ताकि मैं तुम्हारी सारी बीमारियों की दवा तुम्हें दूँ। मैं तुम्हें The Real Treasure II की एक प्रति भेज रहा हूँ और इसमें तुम्हारी सारी समस्याओं का समाधान मिल जायेगा जो तुम ढूँढ़ रहे हो।" मैंने समीर को यह भी याद दिलाया कि उसके संदेहों और उसके द्वारा मुझे उत्साहित

किये जाने ने दूसरे भाग को लिखने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। समीर ने कहा, ''यह मैं नहीं था, स्वयं बाबा थे।''

वास्तव में, मैं अपने हृदय में महसूस करता था कि यह सब बाबा कर रहे थे और मैं उनके हाथों में सिर्फ़ एक पेन्सिल था। अब मैं यह और अधिक महसूस करता हूँ कि सारी घटनायें, सारे पात्र और सारे व्यक्ति, जिन्होंने इस किताब के छपने में कोई भी भूमिका निभाई, सब कुछ बाबा की आज्ञा से कर रहे थे। वास्तव में, उनके रूप में बाबा ही सब कुछ कर रहे थे। एरच टिप्पणी किया करते थे, ''यह तुम्हारे और तुम्हारे प्रियतम के बीच खेला जाने वाला खेल है। और इसमें कोई दूसरा नहीं है– केवल तुम और प्रियतम हो।''

3. छोटी बातों के लिये मेहेरा की चिन्ता

जून 1989 में मैं एक अन्तेवासी की तरह मेहेराबाद में रहने लगा। उसके पहले मैं एक तीर्थयात्री की तरह जाया करता था। मेरी ऐसी अन्तिम यात्रा फरवरी–मार्च 1989 में हुई। इस अवधि में, जब मैं मेहेराज़ाद जाता था, मैं मेहेरा, बाबा की प्रियतमा की बातें सुनने के लिये खिंचाव अनुभव करता था और महिलाओं की तरफ ड्योढ़ी में जाकर बैठ जाता था।

इसके पहले मेहेराज़ाद जाने पर मैं अधिकांश समय मंडली हाल में एरच, बाबा की बहन मनी अथवा बाल नातू की बातें सुनने में बिताता था। परन्तु इस यात्रा में, ऐसा करने की मेरी इच्छा नहीं हुई। मेरा हृदय मेहेरा के पास जाकर बैठने के लिये तीव्र खिंचाव का अनुभव करता था और मैं इसे मेहेराज़ाद जाने पर हर बार अनुभव करता था।

जब मेहेरा ड्योढ़ी में बैठकर बाबा के बारे में बात करतीं थीं, वह अक्सर महिला तीर्थयात्रियों से घिरी रहती थीं और पुरुष थोड़ी दूरी पर बैठते थे। ड्योढ़ी के सामने एक ऊँची बेंच रखी रहती थी जहाँ पुरुष बैठते थे और मैं अक्सर वहाँ बैठा करता था। क्योंकि यह बेंच काफ़ी दूर थी और मेहेरा धीरे धीरे बात करती थीं इसलिये मैं उनके शब्दों को ठीक से सुन नहीं पाता था लेकिन उनके चेहरे के भावों को देखता रहता था जो मुझे बाबा की याद दिलाते थे।

शाम को साढ़े पाँच बजे जब बस के जाने का समय होने पर घंटी बजती थी, हम लोग पंक्ति में मेहेरा और दूसरे मंडली जनों से मिलते थे और मेहेराबाद चले जाते थे। इस यात्रा में मैंने मेहेरा को कुछ ऐसा करते देखा जो मैंने उन्हें करते हुये पहले कभी नहीं देखा था। जब सब लोग उनसे विदा ले चुकते थे, वह पंक्ति में अन्तिम महिला तीर्थयात्री का हाथ पकड़ लेतीं थीं और उसे जाने नहीं देतीं थीं। घंटी बजने के बाद वह दस या पन्द्रह मिनट तक उससे बात करती रहतीं थीं। मैं इस पारस्परिक संबंध को दूर से ध्यान से देखा करता था। मनी और मेहरू अक्सर मेहेरा से बार बार प्रार्थना करती थीं और उन्हें याद दिलाती थीं कि वह तीर्थयात्री को जाने दें। मेरे मन में ये बात आई कि मेहेरा शायद इसलिये स्वयं को इस ढँग से प्रस्तुत कर रहीं थीं क्योंकि उनका अन्तिम समय निकट था।

उन दिनों मेहेराज़ाद पन्द्रह मार्च तक खुला रहता था। मेहेराज़ाद जाने के अन्तिम दिन, इलेन (Elaine) नाम की एक महिला तीर्थयात्री, जिसका सात, आठ वर्ष का पीटर नामक एक छोटा लड़का था, बातचीत के समय मेहेरा के पास बैठी थी। उसके लड़के के पास एक छोटा गिटार था जो वह बहुत अच्छा बजाता था। वह मन को लुभाने वाला छोटा बच्चा था और ज़्यादातर बाबा के बारे में बात करता था। सभी लोग यह अनुभव करते थे कि वह बाबा की बातों में इतना अधिक डूब जाता था, इसलिये पिछले जन्म में उसका बाबा के साथ बहुत गहरा और मज़बूत संबंध रहा होगा। उसने मेहेरा की स्तुति में एक गाना भी लिखा था जो उसने मेहेरा को गाकर सुनाया। मुझे एक लाइन याद है जो इस प्रकार थी, "Baba loved the trees so tall, Baba loved Mehera best of all" (बाबा ऊँचे ऊँचे पेड़ों से प्रेम करते थे, बाबा मेहेरा से सबसे अधिक प्रेम करते थे)।

गाना ख़त्म होने पर, जब बस के जाने का समय होने पर घंटी बजी, हमेशा की तरह सबने मेहेरा से बिदा ली और बस के जाने का समय होने से, बस में बैठने के लिये चले गये। मेहेरा से मिलने वाली अन्तिम तीर्थयात्री इलेन थी। हालांकि मैं मेहेरा से बिदा ले चुका था, फिर भी मैं गया नहीं और मेहेरा के साथ अन्तिम तीर्थयात्री की भेंट को देखने का इन्तज़ार करने लगा जो मेरे मन को हमेशा आकर्षित करती थी। मैं जानता था कि जब तक मेहेरा अन्तिम तीर्थयात्री को जाने नहीं देतीं, बस नहीं जायेगी।

मेहेरा ने इलेन से इस बारे में पूछना शुरू कर दिया कि वह हवाई यात्रा में अपने बेटे का गिटार किस तरह लेकर जायेगी। इलेन ने कहा कि उसने इस बारे में सोचा नहीं था और वह अपनी यात्रा के सामान के साथ उसे भी बैग में भर लेगी। इस पर मेहेरा ने चिन्ता व्यक्त की कि उठाने, रखने में गिटार टूट जायेगा। उन्होंने फिर इलेन को विस्तार से समझाया कि वह गिटार को टूटने से बचाने के लिये, उसके चारों ओर पैकिंग करने वाली सामग्री लगाकर, फिर उसे बैग में रखे। मैं छोटे बच्चे के गिटार के लिये मेहेरा की चिन्ता से बहुत प्रभावित हुआ। जब मेहेरा को यह विश्वास हो गया कि इलेन उनके निर्देशों को अच्छी तरह से समझ गई थी, तभी उन्होंने उसे जाने दिया।

जब हम लोग जा रहे थे, मैंने इलेन से बात शुरू की और जाने का समय होने के बाद भी मेहेरा जिस तरह से उसे अपना प्रेम दे रहीं थीं, इस पर उसने भी टिप्पणी की।

15 मार्च को; जब तीर्थयात्रियों के मेहेराबाद जाने और ठहरने का मौसम ख़त्म हो गया, हम सब अपने घरों को चल दिये। हमें इस बात का ज़रा सा भी आभास नहीं था कि हम मेहेरा को आखिरी बार देख रहे थे। जब मई 1989 में मेहेरा के मरने की खबर मुझे मिली, मेरा दिल टूट गया। मैंने समुद्री जहाज पर अभियन्ता (engineer) की अपनी नौकरी छोड़ने का निश्चय किया ताकि मैं मंडली के पास अपना समय बिता सकूँ क्योंकि मैं जानता था कि मंडली जन अधिक समय तक जीवित नहीं रहेंगे और मैं उनके पास रहने के इस अवसर का यथाशक्ति लाभ उठाना चाहता था। इस तरह मैं जून 1989 में अन्तेवासी की तरह मेहेराबाद में रहने के लिये आया।

15 जून से तीर्थयात्रा का मौसम शुरू हुआ और इसी दौरान किसी समय इलेन फिर आई। क्योंकि मेहेरा की अनुपस्थिति में पहली बार तीर्थयात्री आ रहे थे, इसलिये हर व्यक्ति मेहेरा की अनुपस्थिति को गहराई से महसूस कर रहा था और ज्यादातर लोग उन्हीं के बारे में और उनके साथ अपने अनुभवों के बारे में बात कर रहे थे। मैंने इलेन के पास जाकर पूछा कि क्या उसे याद था कि अन्तिम बार मेहेराज़ाद से चलते समय

मेहेरा ने किस प्रकार उसका हाथ कस कर पकड़ लिया था और उसके बेटे के गिटार के प्रति कितना प्रेम और चिन्ता व्यक्त की थी।

उसने कहा, ''हाँ, मुझे याद हैं लेकिन क्या तुम जानते हो कि गिटार टूट गया। मैंने इसे सावधानी से पैक नहीं किया था।'' मैंने उससे पूछा, ''क्या तुमने उस क्षण की याद में गिटार को संभाल कर सुरक्षित रखा है क्योंकि तुम अन्तिम तीर्थयात्री थी जिसका मेहेरा ने अभिनन्दन किया था और बात की थी।'' उसके चेहरे पर पश्चाताप की भावना थी जब उसने कहा, ''दुर्भाग्य से, नहीं। काश ! मैं उसे सुरक्षित रख लेती।''

4. मेहेरा की प्रेम भावना

मेहेरा के प्रेम और दया की दूसरी कहानी जो मुझे याद आ रही है, वह एक भारतीय दम्पत्ति की है जो पहली बार मेहेराबाद आये थे। उनके साथ आठ दस वर्ष की उम्र के दो बच्चे थे। वह दिसम्बर में आये थे जब बहुत अधिक ठंड होती है और यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि उस वर्ष बहुत अधिक ठंड थी। मुंबई में रहने के कारण, जहाँ सर्दी के मौसम में प्रायः गर्म कपड़े की ज़रूरत नहीं होती हैं, वे लोग अपने बच्चों के लिये पर्याप्त मात्रा में गर्म कपड़े नहीं लाये थे।

हालाँकि बच्चे स्वेटर पहने हुये थे, पर वे बिना मोजों के चप्पल पहने हुये घूम रहे थे जो मुंबई में आम बात है। इस उम्र के बच्चे साधारणतया शरारती होते हैं और ये बच्चे भी थे। तो भी, जब कभी वे मेहेरा के आसपास होते थे, वह ड्योढ़ी में बैठकर बिना शोर किये, शान्तिपूर्वक, ध्यान से बातें सुनते थे।

मेहेराबाद की अपेक्षा मेहेराज़ाद में अधिक ठंड होती है। और इस विशेष अवसर पर, कहानी सुनाने के बाद मेहेरा ने अपनी दाईं ओर देखा जहाँ बच्चे बैठे हुये थे और उन्होंने देखा कि बच्चों ने मोजे नहीं पहने थे। अपने चेहरे पर चिन्ता के भाव के साथ, उन्होंने बच्चों के माता पिता से पूछा कि उन्होंने अपने बच्चों को पर्याप्त मात्रा में गर्म कपड़े क्यों नहीं पहनाये थे। उन्होंने मेहेरा को जल्दी से आश्वासन दिया कि उनके बच्चे स्वस्थ

और ताकतवर थे और वे सर्दी को सह सकते थे। उनके लिये यह कठिनाई नहीं थी।

माता पिता की उदासीनता की तुलना में, बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति मेहेरा के चेहरे पर चिन्ता की भावना, देखने में, वास्तव में दिल को छूने वाली थी। तब मेहेरा ने बच्चों के माता पिता से कहा, ''लेकिन वे अभी छोटे बच्चे हैं और उनकी सर्दी से रक्षा करने की ज़रूरत है। अगर हम बालिग़ लोगों को गर्म कपड़े पहनने के बावजूद ठंड लग रही है तो बच्चों को सर्दी से अवश्य कष्ट हो रहा होगा।''

फिर उन्होंने बच्चों से पूछा, ''तुम्हें ठंड लग रही है या नहीं?'' उन्होंने कहा कि लग रही थी। मेहेरा की चिन्ता यहाँ तक ही नहीं रही। उन्होंने अपनी एक महिला सहायिका से घर के अन्दर से कुछ गर्म कपड़े लाने के लिये कहा। उसने ऐसा ही किया और बच्चों की अतिरिक्त गर्म कपड़े पहनने में मदद भी की। इस सबसे संतुष्ट होने के बाद ही, अपने चारों ओर बैठे हुये बाबा प्रेमियों को मेहेरा ने और कहानियाँ सुनाईं।

कुछ समय के बाद मेहेरा ने बच्चों से पूछा ''अब तुम्हें ठण्ड तो नहीं लग रही'' अपने चेहरों पर मुस्कुराहट के साथ, दोनों बच्चों ने सिर हिलाकर बताया कि उन्हें ठण्ड नहीं लग रही थी। बाबा प्रेमियों के प्रति मेहेरा का प्रेम और चिन्ता ऐसी थी कि वह उनके शब्दों के द्वारा ही नहीं बल्कि उनके व्यवहार के द्वारा भी प्रकट होती थी।

हम में से अधिकांश लोग मेहेरा द्वारा सुनाई गई कहानियों को सुनने में लीन थे और उन्होंने बच्चों को सर्दी से कष्ट पाते हुये नहीं देखा था और जिन लोगों ने देखा भी था, उन्होंने उनके कष्ट के प्रति किसी तरह की चिन्ता नहीं दिखाई थी। इस घटना को देखकर, उन बच्चों के प्रति मेहेरा का सच्चा प्रेम और उनका कष्ट कम करने की उनकी कोशिश से मेरा हृदय बहुत प्रभावित हुआ और इस घटना ने मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ी।

5. बाबा द्वारा मेरी रक्षा

शुरू के दिनों में, बाबा के जन्म दिन के उत्सव में मेहेराज़ाद में नाटक होता था, उसके बाद पिम्पल गाँव के स्कूल के बच्चों को, जो लम्बी लाइनों

में मेहेराज़ाद आते थे, लड्डू बाँटे जाते थे। एक बार लड्डू बाँटने के समय मैं वहाँ पर था। मेहेराज़ाद के मंडली जनों ने मुझसे लड्डू बाँटने के लिये कहा।

बच्चे पिछले दरवाज़े से लाइन में मंडली हाल में आकर बाबा के दर्शन करते थे और आगे के दरवाज़े से बाहर जाते थे जहाँ पर उन्हें लड्डू दिये जाते थे। इस तरह से पंक्ति सुचारु रूप से आगे बढ़ती जाती थी हालाँकि बच्चे सैकड़ों की तादाद में होते थे। लड्डू बाँटने का यह कार्यक्रम पूरे दिन चलता रहा। शाम के समय, जब ट्रस्ट की बस जा रही थी, स्वयंसेवकों (Volunteers अपनी इच्छा से सेवा करने वाले) से भी जाने के लिये कहा गया। मैंने सभी पुरुष मंडली जनों से बिदा ली और फिर महिला मंडली जनों और बाबा की प्रियतमा मेहेरा से बिदा लेने के लिये महिलाओं की ओर गया।

मैं इतने सारे बच्चों को इतने लम्बे समय तक लड्डू बाँटकर थक गया था और जिस समय मैं महिला मंडली जनों से बिदा ले रहा था, मेरा दिमाग थकान से शिथिल और मन व्याकुल था। मेहेरा से मिलने की मेरी बारी आने पर, उन्होंने मुझसे अचानक पूछा, ''क्या तुम जा रहे हो?'' मैंने उत्तर दिया, ''हाँ,'' क्योंकि मैं ट्रस्ट की बस से जा रहा था। इस पर मेहेरा ने अपना दाहिना हाथ, अपने कंधे तक ऊपर उठाकर, उसे मेरी ओर बढ़ाया। क्योंकि थकान से मेरा दिमाग शिथिल होने से, मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा था, इसलिये मैंने समझा कि मेहेरा मेरा आलिंगन (गले लगाना) करना चाहतीं थीं और मैंने उनका आलिंगन करने की कोशिश की। अचानक मैं यह जानकर डर से काँपने लगा कि मैं हिल नहीं सकता था; मेरे पूरे शरीर को लकवा मार गया था। मेरा दिल बहुत तेज़ी से धड़कने लगा क्योंकि मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या ग़लत था। अचानक मेरे अंदर से एक तेज और स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी, ''बाबा की आज्ञा है कि पुरुष मेहेरा का आलिंगन नहीं कर सकते हैं।'' मेरा दिमाग एकदम साफ़ हो गया और मैं बहुत सावधान हो गया। अगले ही क्षण, मेरा शरीर लकवे से मुक्त हो गया और मैं चल सकता था। मैंने मेहेरा का आलिंगन करने की फिर कभी कोशिश नहीं की। इसके बजाय मैंने यह समझने की कोशिश की कि मेहेरा ने मेरी ओर अपना हाथ क्यों बढ़ाया था।

इसी समय मैंने मेहरू को अपने पीछे खड़े देखा। उसके हाथ में बाबा के प्रसाद की मिठाई की ट्रे थी। मेहेरा मेहरू की ट्रे से प्रसाद लेने के लिये हाथ बढ़ा रहीं थीं ताकि वह मुझे प्रसाद दे सकें। इससे मुझे यह ग़लतफ़हमी हो गई कि वह मेरा आलिंगन करने की कोशिश कर रहीं थीं।

तब मेहरू ने मेहेरा से कहा, ''रूस्तम यहाँ कुछ समय रहेगा और वह बम्बई नहीं जा रहा है। वह केवल मेहेराज़ाद से जा रहा है और 'जय बाबा' कहने आया है।'' उसकी बात से हम सबका भ्रम दूर हो गया। मैं मेहेरा से जयबाबा कहकर चल दिया और मैंने बाबा को धन्यवाद दिया कि उन्होंने उनकी आज्ञा का उल्लंघन करने की भयंकर गलती से मुझे बचा लिया।

जब मैं बस से मेहेराबाद जा रहा था, मैंने अपने एक तीर्थयात्री मित्र को यह घटना बताई जिसने टिप्पणी की, ''तुम हमेशा शिकायत करते हो कि पुरुषों का कैसा दुर्भाग्य है कि वे मेहेरा का आलिंगन प्राप्त नहीं कर सकते और देखो, आज बाबा ने, उनकी आज्ञा का उल्लंघन किये बिना, तुमको अपने हृदय में मेहेरा का आलिंगन करने का अनुभव प्रदान कर दिया।''

6. आलसी प्रेमी

एरच हमें अक्सर उत्साहित करते थे कि हम बाबा की निरंतर याद करने का भरसक प्रयत्न करें। वह हमसे कहते थे कि इसका सबसे आसान तरीक़ा यह है कि हम अपने हर काम में उनकी याद करें। वास्तव में, पूरे दिन अपने हर कार्य को उनको अर्पित करें। पूरे दिन अक्सर हम इस बात की ओर सचेत रहते हैं कि, ''मैं'' काम कर रहा/रही हूँ। अगर हम काम करते समय यह याद रखें कि ''मैं'' नहीं बल्कि ''वह'' (बाबा) इसे कर रहे हैं तब बहुत ही स्वाभाविक ढँग से निरंतर और बिना किसी प्रयत्न के उनकी याद आयेगी। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये किसी भी व्यक्ति को पहाड़ पर जाकर, आसन लगाकर ध्यान करने की ज़रूरत नहीं है।

एरच इस बात की ओर हमारा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करते थे कि हमारे लाभ के लिये बाबा ने इस अवतरण में फ़िल्मों और आध्यात्मिक साहित्य का एक विशाल खज़ाना अपने पीछे छोड़कर, उनकी याद करना हमारे लिये कितना आसान बना दिया था। इसके अतिरिक्त हमारे पास संगीत, इन्टरनेट और दूसरे कई माध्यम हैं जो, अगर उचित ढँग से प्रयोग में लाये जायें तो बाबा की याद करने का माध्यम बन सकते हैं। फिर भी, हम बाबा प्रेमी इतने अधिक आलसी और सुस्त हैं कि इन चीजों का प्रयोग बाबा की याद करने में करने के बजाय, हम भौतिक जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में इनका प्रयोग करते हैं।

एक अवसर पर एरच को ऐसा कहते हुये सुनकर, मुझे एक चुटकुला याद आया और मैंने उन्हें सुनाया। ''चार आलसी व्यक्ति थे जो एक दूसरे की अपेक्षा अधिक आलसी थे। चौथा और सबसे अधिक आलसी व्यक्ति बाबा प्रेमी था। ये चारों व्यक्ति एक सेब के पेड़ के नीचे सो रहे थे और अपना दिन सुस्ती में बिता रहे थे, जैसा कि वे रोज़ करते थे। सेब का पेड़ पके हुये सेबों से भरा हुआ था। जब दिन के भोजन का समय बीत गया तो पहले आलसी व्यक्ति ने जोर से कहा, 'मुझे बहुत जोर से भूख लग रही है लेकिन मुझे पेड़ में चढ़ने में आलस लग रहा है; मेरी इच्छा है, कि सेब नीचे जमीन पर गिर जायें ताकि मैं उन्हें उठाकर खा सकूँ।'

''दूसरे आलसी व्यक्ति ने कहा, 'मुझे भी भूख लगी है, लेकिन मैं सेब उठाने के लिये उठना नहीं चाहता! मैं चाहता हूँ, कि सेब सीधे मेरे मुँह में गिर जायें ताकि मैं उन्हें खा सकूँ।'

''इस पर, तीसरे आलसी व्यक्ति ने कहा, 'मुझे भी बहुत जोर से भूख लगी है; लेकिन अगर मेरे मुँह में सेब गिर भी गया तो मेरे लिये इसे चबायेगा कौन?'

''अन्त में बाबा प्रेमी ने कहा, 'मुझे भी भूख लगी है, लेकिन चबाने की बात तो दूर है, मेरे लिये सेब को निगलेगा कौन?'''

मेरी बात सुनकर एरच हँसे और मैंने आगे कहा, ''मेरा अनुमान है कि हम सब ऐसे ही हैं। जैसा कि आपने कहा है; बाबा ने हमको उनकी याद करने के कई अवसर दिये हैं जिनकी तुलना पहले से तैयार किये हुये और पहले से हज़म किये गये (Pre-digested) भोजन से की जा सकती है जो

उन्होंने (बाबा ने) हम सबके मुँह में रख दिया है। हमें इसे केवल निगलना है। और हम यह भी नहीं कर पा रहे हैं। इसलिये, यह जानते हुये, बाबा हमारे गले के अंदर ज़बर्दस्ती एक नली डालते हैं और हमारी आत्माओं को भूखा मरने से बचाने के लिये, नली से हमें खाना खिलाते हैं। मेरा अनुमान है कि गले में ज़बर्दस्ती नली डालने की क्रिया, कष्ट है जो हम सहते हैं, जो उनकी याद करने और हमारी आत्माओं की भूख शान्त करने में हमारी सहायता करता है।''

एरच यह सुनकर प्रसन्न प्रतीत हुये और उन्होंने टिप्पणी की, ''हाँ, ऐसा ही है। हम संतुष्ट हो जाते हैं और बाबा की याद करने को हल्केपन से लेते हैं क्योंकि हमारे मन दूसरी चीजों के आकर्षण में पहले से ही लीन रहते हैं। अगर हम निरंतर उनकी याद करते हैं तो हम उनके समान (बाबा के) बन जाते हैं। यह बहुत सरल है, लेकिन हम ऐसा करने में असमर्थ होते हैं क्योंकि हमारे मन इच्छाओं से भरे हुये हैं। हम जीवन का पीछा गंभीरतापूर्वक करते हैं और ईश्वर को हल्केपन से लेते हैं; और बाबा ने स्वयं कहा है कि हमें ईश्वर को गंभीरतापूर्वक और जीवन को हल्केपन से लेना चाहिये। इसलिये हर काम में, जो तुम करते हो, उनकी याद करने की कोशिश गंभीरतापूर्वक करो। चाहे तुम कोई काम करो अथवा खेलो, उनके लिये करो। संतुष्ट होकर, इस अद्‌भुत अवसर को मत खोओ जो बाबा ने हमें अपने इस अवतरण में दिया है।''

7. हृदय और मस्तिष्क के बीच में सामंजस्य

जब कभी मैं बाबा के उपदेशों को पढ़ता था, मैं उनके शब्दों की सत्यता को अपने हृदय में अनुभव करता था। यह कह सकते हैं कि मैं उन्हें भावनात्मक स्तर तक गहराई से समझता था। इसलिये, एक, लम्बे समय से अन्तेवासी को बाबा के शब्दों का बौद्धिक रूप से टुकड़ों टुकड़ों में सूक्ष्म निरीक्षण करते देखकर मैं अत्यंत मोहित हो गया। यह अन्तेवासी बाबा के शब्दों का गहरा अर्थ समझने की कोशिश करने में, मानसिक रूप से उन्हें इधर उधर करते हुये, उनके टुकड़े टुकड़े कर देता था और अन्त में वही निष्कर्ष निकालता था जो मेरा हृदय महसूस करता था। मुझमें यह

गुण नहीं था और मैं इस बात से चकित था कि वह अन्तेवासी ऐसा किस तरह करता था। अगर मैं बाबा के शब्दों का बुद्धि द्वारा सूक्ष्म निरीक्षण करने की कोशिश करता था, तो मुझे मानसिक रूप से परस्पर विरोधी विचारों और व्याकुलता का ही सामना करना पड़ता था। इसलिये, मैं इस अन्तेवासी को ऐसा करते देखकर, जो बात मेरे लिये पूर्ण रूप से अनोखी थी, मोहित हो जाता था।

एक दिन मैंने इस विषय को एरच के सामने छेड़ा और यह अन्तेवासी जो कुछ कर रहा था, उस पर आश्चर्य प्रकट किया। मैंने कहा, ''मुझे बाबा के शब्दों की सच्चाई का हृदय में अनुभव करना पड़ता है, मेरे हृदय को इसे समझने के लिये मन से ग्रहण करना पड़ता है। मैं इसे बुद्धि से कभी नहीं समझ पाता हूँ। बौद्धिक रूप से इनका सूक्ष्म निरीक्षण करना, खण्ड खण्ड करना और फिर हृदय से ग्रहण करना, मेरे लिये बहुत अधिक कठिन है। मैं अपने हृदय से यह कार्य तुरंत कर सकता हूँ, लेकिन बुद्धि द्वारा ऐसा करने में शायद मुझे कई दिन लग जायेंगे तब मैं उन्हें हृदय से ग्रहण कर पाऊँगा।''

मैंने मेहेरबाबा के कथन का संदर्भ देते हुये एरच से यह भी कहा, ''बाबा ने कहा है कि 'मस्तिष्क परस्पर विरोधी विचारों, डर और संदेहों का स्थान है जबकि हृदय जानता है।' मेरी यही स्थिति है और मुझे आश्चर्य होता है कि यह अन्तेवासी बुद्धि द्वारा यह किस तरह से करता है।''

एरच ने उत्तर दिया, ''इसमें आश्चर्य की क्या बात है? जब हृदय और मस्तिष्क में सामंजस्य होता है, वे एक ही गाने को, एक ही सुर में गाते हैं। सामंजस्य की अवस्था में, तुम अपने हृदय से सोचने लगते हो और अपने मस्तिष्क से अनुभव करने लगते हो। सामंजस्य की अवस्था में वे एक दूसरे के परिपूरक (पूर्ण करने वाले) होते हैं और एक ही सत्य के प्रतिबिम्ब हो जाते हैं। सारांश यह है कि परस्पर विरोधी विचार बिल्कुल नहीं होते हैं; हृदय बुद्धि की भूमिका निभा सकता है और बुद्धि हृदय की भूमिका निभा सकती है क्योंकि सामंजस्य की अवस्था में इन दोनों स्थितियों में सत्य का अनुभव एक और समान होता है।'' एरच के शब्दों को सुनकर, मैंने अनुभव किया कि सामंजस्य की अवस्था तक पहुँचने से पहले, मुझे बहुत से मानसिक रूप से परस्पर विरोधी विचारों को स्थिर करना था।

8. याद के माध्यम से क्रोध को जीतना

निम्नलिखित घटना उस समय हुई जब हम लोग मेहेराज़ाद जाने वाली सड़क पर बने हुये एक प्रदूषण फैलाने वाले रासायनिक कारखाने को बन्द करवाने के लिये मुकदमा लड़ रहे थे। मैं इस लड़ाई में कठिन परिश्रम करके प्रदूषण फैलाने वाले कारखाने के खिलाफ़ सबूत इकट्ठा कर रहा था। इसके लिये मुझे नगर में ही नहीं बल्कि पुणे, मुंबई, दिल्ली, औरंगाबाद और नासिक में स्थित विभिन्न सरकारी दफ़्तरों में भी जाना पड़ता था। जैसे जैसे हम कारखाने से संबंधित कानून के विरुद्ध व्यवस्थाओं के सबूत इकट्ठा करते गये, और कारखाने के मालिक को यह प्रत्यक्ष प्रतीत होने लगा कि वह फँसता जा रहा था, उसने हमारे और ट्रस्ट के क्रियाकलापों के खिलाफ़, अखबारों में झूठी ख़बरें छपवाना शुरू कर दिया। ये अख़बारों के समाचार कलंकित करने वाले और सच्चाई से दूर थे और इससे मुझे बहुत गुस्सा आता था। मैं अखबारों के दफ़्तरों में सच्चाई बताने के लिये जाकर, उनको धमकी देता था कि अगर उन्होंने वास्तविकता को प्रकाशित नहीं किया तो इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।

मेरे गुस्से को देखकर, मुझे शान्त करने की कोशिश करते हुये एरच कहते थे, ''रूस्तम तुम क्यों गुस्सा होते हो? तुम्हें जो करना है, करो; दृढ़तापूर्वक करो, लेकिन गुस्सा न करो।'' मैं उत्तर देता था कि गुस्सा लड़ाई ज़ारी रखने में मेरी सहायता करता था। मैंने कहा, ''इसके बिना, मैं इस तरह से काम नहीं कर पाऊँगा जैसे मैं कर रहा हूँ।'' एरच सिर्फ गहरी साँस लेकर, अपना सिर हिलाते थे और आगे कुछ नहीं कहते थे।

एक दूसरे अवसर पर, जब मैं कारखाने के मालिक़ से नाराज़ था, एरच ने टिप्पणी की, ''रुस्तम, कारखाने के मालिक के लिये तुम्हारे हृदय में जो गुस्सा है उसे काबू में करो। इस तरह से उससे द्वेष न रखो। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो अगले जन्म में तुम दोनों पति, पत्नी बनोगे।'' मेरे साथ वहाँ उपस्थित सभी लोग हँसने लगे। अन्तेवासियों में से एक ने, जो हमेशा मेरी खिंचाई करता था, पूछा, ''पति कौन होगा और पत्नी कौन होगा? मेरे विचार से रुस्तम पत्नी होगा और कारखाने का मालिक पति होगा।''

जब वह अन्तेवासी इस बारे में मुझे अक्सर छेड़ने लगा तो मैंने उससे कहा, ''मैं पति बनूँ या पत्नी, इसका कोई महत्व नहीं है। दोनों ही स्थिति में, मैं उसे इसी तरह परेशान करूँगा जैसे अभी कर रहा हूँ।'' एरच के साथ सभी लोग हँसने लगे।

फिर एरच ने बहुत गंभीरता से कहा, ''तुम्हें अपने क्रोध को जीतना है। जब तुम ऐसा नहीं करते हो, तो तुम्हारे अगले जन्म में बाबा तुम्हें एक ऐसे रिश्ते में बाँध देते हैं जहाँ तुम एक दूसरे के क्रोध का सामना करने, इस पर काबू पाने और एक दूसरे से प्रेम करने के लिये विवश कर दिये जाते हो। अक्सर ऐसे लोग पति पत्नी होते हैं, और अक्सर अपने रिश्ते में असफल होते हैं और अन्त में एक दूसरे को तलाक दे देते हैं। पिछले जन्म का क्रोध, इस जन्म में भी रहता है जिसके परिणाम स्वरूप उनमें तलाक हो जाता है और अब यह अगले जन्म में भी ज़ारी रहता है जिसमें उनके बीच माँ और बच्चे का रिश्ता होता है जिसमें वे एक दूसरे से प्रेम करने के लिये बाध्य हो जायेंगे। यहाँ भी, बच्चों का अपने माता–पिता के साथ मतभेद होता है और संबंध टूट जाते हैं। जब तक दोनों आत्मायें एक दूसरे से प्रेम करना नहीं सीख लेती हैं, तब तक यह सिलसिला चलता रहता है। ऐसे ही होता है।''

एरच के यह बताने के बाद, मैंने उनसे पूछा, ''अगर समय के साथ–साथ उनकी एक दूसरे के प्रति अरुचि बढ़ती जाये और स्थिति असहनीय हो जाये तो उन्हें क्या करना चाहिये?'' एरच ने कहा, ''ज्यादा से ज्यादा बाबा की याद करने और उनको रिश्ते में लाने की कोशिश करो। इससे उसके प्रति अरुचि और क्रोध को जीतने में सहायता मिलेगी।''

मैंने आग्रहपूर्वक कहा, ''अगर क्रोध ज़ारी रहता है, तो क्या करें? तब क्या करना चाहिये?'' एरच ने गहरी सांस लेकर कहा, ''अगर बाबा की याद के माध्यम से, तुम क्रोध को जीतने और आपस में प्रेम करने में सफल होते हो, तो इससे बाबा प्रसन्न होंगे। लेकिन अगर स्थिति पूर्णरूप से असहनीय है, तब एक दूसरे से अलग रहना अथवा एक दूसरे से अलग हो जाना चाहिये। तो भी, यह महत्वपूर्ण है कि तुम उसके बाद आपस में किसी तरह का द्वेष नहीं रखते हो और मित्रता एवं सामंजस्यपूर्ण रिश्ता

बनाये रखते हो। कम से कम दूर से ही सही, एक दूसरे से प्रेम करो। अगर तुम वास्तव में बाबा से प्रेम करना चाहते हो और अपने प्रति उनके प्रेम का अनुभव करना चाहते हो, तो तुम्हें हर व्यक्ति से प्रेम करना होगा भले ही वह कैसा भी हो।

''इसलिये, अलग होने के बाद द्वेष को खत्म करके प्रेम पैदा करो। उसके बाद, सांसारिक प्रेम के झूठे बंधन में न फंसने का प्रयत्न करो और इसके बजाय दैवी प्रेम की तड़प पैदा करो। अगर तुम फिर से एक साथी चाहते ही हो; तो बाबा को अपना साथी बनाओ। उनसे शादी करो और उनके साथ अपना रिश्ता बनाओ। वह तुम्हें कभी भी निराश नहीं करेंगे। एकमात्र बाबा ही ऐसे हैं जो प्रारंभ से अन्त तक तुम्हारे साथ रहेंगे।''

9. बिना प्रयत्न के निरंतर याद

हालांकि बाल नातू स्वास्थ्य की दृष्टि से हमेशा कमज़ोर थे परन्तु बाबा की याद करने में बहुत मज़बूत थे। वह लगभग हर काम में बाबा की याद करते थे और कई बार सनकी तरीके से करते थे। वह इस बारे में स्वयं कहते थे, ''मैं अपनी हर छोटी ज़रूरत के लिये जिस तरह बाबा से मदद माँगता हूँ, लोग सोचते हैं कि जिस तरह से मैं बाबा की याद करता हूँ, मैं कम बुद्धि का हूँ। वे सोचते हैं कि मैं सनकी अथवा पागल हूँ। लेकिन वे लोग जो कुछ कहते हैं, मैं उसका बुरा नहीं मानता क्योंकि मैं जो कुछ कर रहा हूँ, उसमें मुझे आनन्द आता है और, इस माध्यम से मैं प्रियतम बाबा की उपस्थिति को निरंतर अनुभव करता हूँ।''

मैं मानता हूँ कि जब मैंने बाल से पहली बार उनकी कहानियाँ सुनी, मैंने भी उन कहानियों को मूर्खतापूर्ण समझा। लेकिन फिर जैसे जैसे समय बीतता गया और मैंने अपनी हर ज़रूरत के लिये सबसे पहले बाबा से मदद माँगकर, बाल नातू की तरह बाबा की याद करने का प्रयत्न किया, मुझे अनुभव हुआ कि ऐसा करना बहुत कठिन था। तब मुझे बाल नातू की महानता का अनुभव हुआ।

बाबा के साथ बाल का रिश्ता, एक बच्चे का माँ के साथ जैसा था। एक असहाय बच्चे की तरह, जो हर छोटी चीज़ के लिये माँ का सहारा

लेता है क्योंकि वह जानता है कि माँ उसकी ज़रूरत को ज़रूर पूरा करेगी, बाल ठीक उसी तरह से बाबा से मदद माँगते थे। नीचे कुछ ऐसी ही कहानियाँ हैं जो उस रिश्ते को प्रकट करती हैं हालांकि उस समय वे मूर्खतापूर्ण लगती थीं।

बाल ने एक बार मुझे बताया, ''मैं किसी काम से पूना में था, और कहीं जाने के लिये मैं एक स्थानीय (लोकल) बस में चढ़ा। मैंने बस में चढ़ते ही देखा कि यह भरी हुई थी और मेरे बैठने के लिये कोई भी सीट खाली नहीं थी, अतः मैं थोड़ा व्याकुल हो गया। जहाँ मैं जा रहा था, वह जगह काफ़ी दूर थी और मैं जानता था कि मेरे कमज़ोर स्वास्थ्य के कारण, पूरे रास्ते खड़ा रहना मेरे लिये कठिन होगा। मैंने बाबा से अपने कमज़ोर स्वास्थ्य की शिकायत करते हुये, मुझे सीट दिलाने की प्रार्थना की। एक दो स्थानों पर बस रुकने के बाद कुछ यात्री नीचे उतरने के लिये उठे और मुझे बाबा की दया से सीट मिल गई। मैं बहुत आराम से यात्रा कर रहा था लेकिन, कुछ समय बाद, मुझे प्यास लगने लगी। मैं नहीं जानता था कि मुझे कहाँ और किस तरह से पीने का पानी मिलेगा और इसलिये मैंने बाबा से मदद करने के लिये पुनः प्रार्थना की। जैसे ही मैं अपने स्थान पर बस से नीचे उतरा, मेरे ठीक सामने एक होटल था। मैंने अंदर जाकर पानी पिया। मैंने अपनी प्यास बुझाई और मेरी ज़रूरतों का ध्यान रखने के लिये बाबा को धन्यवाद दिया।

फिर बाल टिप्पणी करते थे, ''देखा, बाबा हर छोटी से छोटी बात का किस तरह ध्यान रखते हैं।'' जब मैंने यह कहानियाँ पहली बार सुनीं, मुझे सब कुछ मूर्खतापूर्ण लगा और मैंने सोचा, ''हर जगह यात्री चढ़ते उतरते रहते हैं। बाबा ने बाल के बैठने के लिये उन यात्रियों को नहीं उतारा। इसके अलावा, बाबा ने बाल के लिये वह होटल विशेष रूप से नहीं बनाया।''

उस समय, मेरी समझ में यह नहीं आया कि इन माध्यमों से बाल बाबा की याद अत्यन्त स्वाभाविक ढँग से, निरंतर करते थे।

बाल अक्सर अपना पेन अथवा कोई कागज़ अथवा पुस्तक कहीं रख देते थे और उसके न मिलने पर व्याकुल हो जाते थे और तुरंत पुकार कर कहते थे, ''बाबा, कृपया इसे ढूँढ़ने में मेरी सहायता कीजिये।'' अक्सर यह

पास में ही कहीं रखी होती थी और इसके मिल जाने पर, बाल पुनः टिप्पणी करते थे, ''देखो, बाबा ने किस तरह से मेरी मदद की।''

उस समय मैं सोचता था, ''अगर आपने सावधानी से देखा होता तो आपको यह मेज़ पर रखी हुई मिल जाती। बाबा ने इसे आपके लिये वहाँ पर नहीं रखा।'' उस समय मैं यह नहीं समझ सका कि बाल का बाबा के साथ इस तरह का संबंध पूरे दिन सामान्य रूप से बाबा की याद करने में बाल की सहायता करता था। अपनी बीमारी के दौरान, अपनी पीठ में दर्द के कारण मुझे ज़्यादातर समय बिस्तर पर लेटे रहना पड़ता था और मैं अपने मन को बाबा के विचारों में लगाने के लिये, बाबा की याद करने के लिये संघर्ष कर रहा था। उस समय मुझे यह प्रत्यक्ष रूप से अनुभव होने लगा कि बाल नातू कितने महान थे।

बाल जिस तरह बाबा की याद करते थे, उसी तरह बाबा की याद करने की कोशिश मैंने कई अवसरों पर की और अभी भी करता जा रहा हूँ। मैंने अपनी हर छोटी ज़रूरत के लिये बाबा को पुकारना शुरू किया, पर मैं बुरी तरह असफल रहा। मेरा मन सहायता के लिये परिवार के लोगों, दोस्तों और सहायकों को (Helpers) याद करता था। केवल उस समय, जब उनसे सहायता नहीं मिलती थी, मैं बाबा को पुकारता था। अपने प्रथम चुनाव के रूप में बाबा की याद करना बहुत कठिन था। और मैं इसके लिये अभी भी संघर्ष कर रहा हूँ, हालांकि कोशिश करने पर और बाबा की कृपा से, अब मैं इसमें थोड़ा सफल होने लगा हूँ। ऐसा नहीं है कि बाबा को, आप जो कुछ माँगे, वह देना होगा अथवा आपकी ज़रूरतों को भी पूरा करना होगा। परन्तु, इस प्रकार की स्थितियाँ बाबा की ज्यादा से ज्यादा याद करने का माध्यम बन जाती हैं और अन्त में, आप बिना प्रयत्न किये निरन्तर याद करने की अवस्था में पहुँच जाते हैं।

10. बाबा की याद सही चुनाव

बहुत से ऐसे तीर्थयात्री हैं जो हर वर्ष मेहेराबाद जाते हैं। वे लोग विशेष रूप से अमर तिथि, बाबा का जन्म दिवस और मौन दिवस अथवा छुट्टियाँ होने पर भी जाते हैं। ये तीर्थयात्री प्रियतम बाबा के और उनकी

मंडली जनों के साथ रहने का आनन्द लेने जाते हैं। जो लोग एक लम्बे समय तक जाते रहे, उनका मंडली के साथ संबंध गहरा हो गया। वे किसी एक मंडली जन के साथ अधिक घनिष्ठ हो जाते थे और उनको अपनी व्यक्तिगत समस्यायें भी बताते थे।

एक अवसर पर, एक भारतीय दम्पत्ति, जो एरच के साथ अधिक घनिष्ठ था, उनके पास गया क्योंकि उन्हें कुछ बातों पर सन्देह था। उनके बच्चे बड़े हो रहे थे और वे उनके भावी व्यवसाय के बारे में उनका मार्गदर्शन करना चाहते थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि सबसे अच्छा क्या होगा और उन्होंने अनुभव किया कि थोड़े से मार्गदर्शन से उन्हें मदद मिलेगी। इसलिये उन्होंने एरच से पूछा, ''हमारे बच्चों को अपना व्यवसाय चुनने के बारे में आप क्या सलाह देंगे? वे कालेज में प्रवेश लेने वाले हैं और उन्हें अपने व्यवसाय के बारे में अभी निर्णय लेना है। आप जानते हैं कि इस समय बहुत कठिन प्रतिस्पर्धा (Competition) है और हम चाहते हैं कि वे अपने जीवन की शुरुआत अच्छी करें।''

एरच ने तुरंत उत्तर दिया, ''लेकिन तुमने पहले ही उनकी ज़िन्दगी की शुरुआत अच्छी की है।'' दम्पति को आश्चर्य हुआ कि एरच के कहने का क्या अर्थ था। एरच ने समझाया, ''मेहेरबाबा के शब्दों का सत्य ही सबसे बड़ा ज्ञान है जो तुमने उन्हें समझाया है और वे इसे बौद्धिक स्तर पर समझते हैं। जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य उनके (बाबा के), ईश्वर के, साथ एकता प्राप्त करना है जिसे वे सफलतापूर्वक प्राप्त करेंगे अगर वे अपने प्रतिदिन के जीवन में, उस बौद्धिक ज्ञान को, जो उन्होंने प्राप्त किया है, अपने आचरण में लायेंगे। उनके जीवनों में मेहेर बाबा की उपस्थिति को लाकर, तुमने उन्हें जीवन की अच्छी शुरुआत दी है। इस शुरुआत के आधार पर, बाबा की निरंतर याद करने का प्रयत्न करके, उन्हें अपना जीवन निर्धारित करना चाहिये ताकि किसी दिन वे लक्ष्य तक पहुँच सकें। उन्हें बाबा की याद को अपना जीवन बनाने दो, और वे अन्त में वह प्राप्त करेंगे जिसे पाने में बहुत कम लोग सफल होते हैं– और वह दैवी प्रियतम के साथ एकता है।''

एरच की बात दम्पत्ति ने सुनी लेकिन उन्होंने फिर भी आग्रह किया कि एरच बच्चों के सांसारिक जीवन और व्यवसाय के बारे में अपनी सलाह दें। एरच ने कहा, ''बाबा के नाम का जप करो। पूरे दिन में तुम जो भी काम करो, उनकी याद करो। तुम क्या काम करते हो अथवा तुम कैसा जीवन व्यतीत करते हो इसका कोई महत्व नहीं है। वास्तव में जो बात महत्वपूर्ण है, वह यह है कि तुम जो भी काम कर रहे हो, क्या तुम उस समय उनकी याद कर रहे हो? क्योंकि अगर तुम अपने हर काम में सफलतापूर्वक उनकी याद कर रहे हो, तब उस कार्य की ज़िम्मेदारी बाबा पर होगी। वह सही निर्णय लेने में, अन्दर से तुम्हें उकसायेंगे (prompt)। हर परिस्थिति में सही निर्णय लेने में, केवल ईश्वर की याद ही तुम्हारी सहायता करेगी।''

11. मेरे निरंतर साथी के रूप में ईश्वर

मैंने मंडली से उस आनंद के बारे में अक्सर कहानियाँ सुनी हैं जिसका अनुभव किसी व्यक्ति को उस समय होता है जब वह ईश्वर की याद में अथवा ईश्वर में लीन हो जाता है। उनमें से एक मेरी प्रिय कहानी इस प्रकार है।

पहाड़ी की चोटी पर बनी हुई एक गुफ़ा में, एक सन्त एकान्तवास में रहता था। उसका एक शिष्य था जो गुफ़ा के बाहर पहरा देता था और किसी को अंदर नहीं आने देता था। सन्त केवल इस शिष्य से मिलता था जिसे वह महीने में केवल एक बार अपने साथ पूरा दिन बिताने के लिये गुफ़ा के अंदर बुलाता था। महीने के शेष दिनों में यह शिष्य गुफ़ा के बाहर पहरा देता था।

इधर उधर घूमने वाले कई तीर्थयात्री, जिन्होंने इस सन्त के बारे में सुना था, उत्सुकतावश आते थे और यह शिष्य उन्हें सन्त को बाधा पहुँचाने से रोक देता था। तीर्थयात्री शान्तिपूर्वक चले जाते थे। फिर भी, एक जिद्दी तीर्थयात्री सन्त का दर्शन करने के लिये अड़ गया और उसने वहाँ से जाने के लिये मना कर दिया। वह शिष्य के साथ गुफ़ा के बाहर कई दिनों तक

बैठा, उससे प्रार्थना करता रहा। अन्त में शिष्य ने उसकी बात मान ली और उससे कहा, ''सन्त महीने में एक बार मुझे अपने साथ पूरा दिन रहने के लिये बुलाते हैं। तब मैं उनसे तुम्हारे लिये प्रार्थना करूँगा। तुम उस दिन आना और अगर सन्त की मर्ज़ी होगी, तो तुम्हें उनके दर्शन हो जायेंगे।''

निश्चित दिन, जब सन्त ने शिष्य को अन्दर बुलाया, तो तीर्थयात्री वहाँ पर मौजूद था। दैवी गुरु की उपस्थिति में पूरा दिन व्यतीत करने के अवसर का शिष्य बहुत बेचैनी से इन्तज़ार कर रहा था, इसलिये वह गुरु से तीर्थयात्री के बारे में बताना ही भूल गया। जब पूरा दिन समाप्त होने वाला था, तभी उसे याद आई और उसने गुरु को बताया। हालांकि गुरु मिलना नहीं चाहते थे, परन्तु शिष्य के प्रार्थना करने पर, उन्होंने तीर्थयात्री से मिलने के लिये कुछ मिनटों का समय दे दिया।

गुरु के तेज को देखकर, तीर्थयात्री ने आनन्द से भाव विभोर होकर, उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। कुछ क्षण मौन रहने के पश्चात्, गुरु ने तीर्थयात्री से पूछा, ''मेरे बच्चे, क्या तुम कुछ चाहते हो?''

तीर्थयात्री ने उत्तर दिया, ''श्रीमान्, मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। आपने एकान्तवास में कई साल बिताये हैं। क्या आपको कभी भी अकेलेपन का अनुभव नहीं होता और क्या आपको कभी एक साथी की ज़रूरत महसूस नहीं होती?''

दया से भरी हुई, कोमल मुस्कुराहट के साथ गुरु ने उत्तर दिया, ''मैं कभी भी अकेला नहीं रहता क्योंकि ईश्वर मेरे साथ रहता है। वह मुझे एक क्षण के लिये भी अकेला नहीं छोड़ता।'' सन्त ने थोड़ी देर रुककर कहा, ''इस क्षण तक ईश्वर मेरे साथ था लेकिन अब, जब से तुम यहाँ आये हो, वह मुझे छोड़कर चला गया है और मुझे अकेलेपन का अनुभव होने लगा है। मुझे उनकी कमी (अनुपस्थिति) खलने लगी है।''

तीर्थयात्री को अपनी भूल का अहसास हुआ और उसने गुरु से क्षमा माँगी। उसने उन्हें फिर कभी भी बाधा न पहुँचाने का वादा किया।

12. सच्चा आशीर्वाद

हर बार, जब कोई अन्तेवासी मेहेराबाद के वातावरण और अन्तेवासियों के बीच सामंजस्य न होने से, होने वाली अनावश्यक कठिनाइयों के बारे में एरच से शिकायत करता था, वह इस टिप्पणी के साथ उसे टाल देते थे, "मैं नहीं जानता, तुम किस बारे में बात कर रहे हो। बाबा के साथ रहने पर हम लोगों ने जिस तरह की कठिनाइयों का सामना किया, वैसी कठिनाइयों का सामना करते हुये मैं यहाँ किसी भी व्यक्ति को नहीं देखता। उस समय सब कुछ इतना अधिक तीव्र (intense) था। हम लोगों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उसकी तुलना में तुम लोग वास्तव में जैसे पिकनिक मना रहे हो।"

अगर कोई व्यक्ति एरच की बात से सहमत न होकर कहता था, "लेकिन आपको सहारा देने के लिये आपके साथ बाबा की भौतिक उपस्थिति थी," तो एरच मुँह बन्द करके हँसते हुये कहते थे, "उनकी भौतिक उपस्थिति से ही हम ऊब गये थे। कभी कभी उनकी उपस्थिति इतनी अधिक कष्टदायक हो जाती थी, कि हम उससे दूर होना चाहते थे। तुम लोग अपनी मर्ज़ी से बैंक, बाज़ार या कहीं भी बाहर जा सकते हो और अपनी पसंद का खाना खा सकते हो। यही नहीं बल्कि तुममें से अधिकांश लोग साल में एक बार काम से छुट्टी लेकर जाते हो और आराम करते हो। हमारे लिये ऐसा कुछ नहीं था। हमें किसी तरह की स्वतंत्रता ही नहीं थी, बल्कि हमारी ज़िन्दगी का हर एक पल मेहेर बाबा के चारों ओर ही घूमता रहता था।

"उनके कार्य के लिये हम निरंतर उनके इशारों पर नाचते थे। हर समय उनके भौतिक शरीर और आराम का ध्यान रखना हमारी ज़िम्मेदारी थी, भले ही वह काम कर रहे हों अथवा आराम कर रहे हों। हमारे पास अपने लिये कोई भी खाली समय नहीं था और न ही किसी तरह की बिल्कुल स्वतंत्रता ही थी। हम उनके दास थे और सालों तक हमारी यही स्थिति रही। क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि स्वतंत्रता न होना, उस समय तक काम करना जब तक तुम्हारा शरीर थककर चूर न हो जाये,

आराम, खाना और यहाँ तक कि स्नान भी न कर पाना और यह सब प्रसन्नतापूर्वक करना, कितना अधिक कष्टपूर्ण होता होगा?

"सबसे अधिक बुरी बात यह थी कि हमारे मन में अगर कोई भी नकारात्मक विचार आते थे तो बाबा, ईश पुरुष होने के कारण, यह जानते हुये कि हमारे मन में क्या था, हमसे बताने के लिये कहते थे। इस तरह हमें सोचने के लिये भी एकान्त नहीं मिलता था। हाँ, यह सब बहुत बहुत अधिक कष्टपूर्ण हो सकता है। लेकिन इस सबका एक बहुत ही सकारात्मक पहलू भी है।" एरच काफ़ी देर तक चुप रहे।

फिर उन्होंने कहा, "तुम्हें आश्चर्य होगा कि किसी को परेशान करने और कष्ट देने का सकारात्मक पहलू क्या हो सकता है। इससे हमें सर्वाधिक स्वाभाविक ढँग से हर पल उनकी याद करने में मदद मिलती थी। हमें उनका ध्यान करने अथवा उनके ऊपर अपने मन को केन्द्रित करने का प्रयत्न नहीं करना पड़ता था जैसा कि तुम लोगों को करना पड़ता है।" एरच कहते रहे," क्या तुम्हारे जीवन में ऐसा समय नहीं आया जब किसी व्यक्ति अथवा किसी स्थिति ने तुम्हें निरंतर दुख दिया हो? उस समय क्या होता है? तुम्हारा मन उस व्यक्ति अथवा उस स्थिति के बारे में निरंतर सोचता है। हमारे साथ भी ऐसा ही था। लेकिन यह उनकी कृपा अथवा सच्चा आशीर्वाद था। सालों तक उनके साथ रहकर कष्ट पाने के बाद, हमें उनकी याद निरंतर आती थी और हम उनके बारे में सोचने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते थे। और मैं तुम्हें बताता हूँ कि यही सच्चा आशीर्वाद है– निरंतर उनकी याद करना।"

एरच के साथ मेरी इस बातचीत को काफ़ी समय बीत गया है। उस समय, मैंने इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया। मैं अब प्रत्यक्ष अनुभव करता हूँ कि उस निरंतर याद की देन पाकर मंडली कितनी अधिक भाग्यशाली थी, विशेष रूप से, क्योंकि मैं बाबा की याद करने की कोशिश गंभीरतापूर्वक कर रहा हूँ। बाबा की याद करने का मेरा प्रयत्न, हालांकि यह मंडली की तरह और उतना अधिक स्वाभाविक अथवा निरंतर नहीं है, फिर भी मुझे इतना अधिक आनन्द देता है कि मुझे आश्चर्य होता है कि मंडली द्वारा बाबा की निरंतर याद को ध्यान में रखते हुये, मंडली को कितने अधिक आनन्द का अनुभव होता होगा।

13. उनकी सच्ची कृपा

एक व्यक्ति, जिसका मन संसार से ऊब गया था और जो ईश्वर की खोज कर रहा था, संयोगवश एक सन्त से मिला। सन्त को ईश्वर साक्षात्कार और दैवी आनन्द के बारे में बात करते सुनकर, उस व्यक्ति ने सन्त से पूछा, ''इसका क्या कारण है कि इतने अधिक प्रयत्न और संघर्ष के बाद भी, मुझे उस दैवी आनन्द का अनुभव नहीं होता है जिसके बारे में आप बता रहे हैं। मैंने इस आनन्द की एक क्षणिक झलक भी नहीं पाई है।''

सन्त ने उत्तर दिया, ''मुझे बताओ कि तुमने किस तरह के प्रयत्न वास्तव में किये हैं। मैं तुम्हारे भूत, भविष्य और वर्तमान को स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ, और मैंने तुम्हारे द्वारा किये गये किसी भी गंभीर प्रयत्न को नहीं देखा है।''

उस व्यक्ति ने इस बात का विरोध करते हुये कहा, ''लेकिन मैं ध्यान करता हूँ, तीर्थ स्थानों में जाता हूँ, सन्तों के पास जाता हूँ और ईश्वर को खोजने के लिये मेरे प्रयत्न के रूप में मैं आध्यात्मिक पुस्तकें भी पढ़ता हूँ।''

सन्त ने कहा, ''दिन का कितना समय तुम ईश्वर के बारे में सोचने और इन सबको करने में लगाते हो? यह एक प्रतिशत से भी कम है। तुम निन्यानबे प्रतिशत समय खाने के बारे में, अपने शरीर के आराम के बारे में अैर अपने काम के बारे में सोचने में बिताते हो। तुम्हें ईश्वर की खोज में और अधिक समय बिताना चाहिये जो कि सबसे अधिक महत्वपूर्ण काम है। जब तुम ईश्वर की खोज में बिताये गये समय को गंभीरतापूर्वक बढ़ाते हुये इस सीमा तक ले जाते हो कि तुम अपना निन्यानबे प्रतिशत समय ईश्वर के बारे में सोचने में बिताते हो और केवल एक प्रतिशत समय अपने शरीर की ज़रूरतों को पूरा करने में लगाते हो तभी, और केवल तभी, तुम यह दावा कर सकते हो कि तुम ईश्वर को खोजने का प्रयत्न गंभीरतापूर्वक कर रहे हो। जब तुम ऐसा करते हो, तब तुम निश्चित रूप से दैवी आनन्द का अनुभव करोगे।''

जब मैंने इस कहानी को पहली बार पढ़ा, मैं इसके आत्म–परीक्षण करने वाले सच से आश्चर्य चकित हो गया क्योंकि मैं जानता था कि मेरी भरसक कोशिशों के बावजूद, मेरा अधिकांश समय भोजन के बारे में, अपने शरीर के आराम के बारे में (विशेष रूप से मेरे ख़राब स्वास्थ्य के कारण) और मुझे दिन भर में जो भी काम करने होते थे, उनके बारे में सोचने में बीतता था। मुझ जैसे विवश प्रेमियों के प्रति यह बाबा की कृपा और दया है कि ऐसी कहानियों के माध्यम से, उनकी ज़्यादा से ज़्यादा याद करने में हमारी सहायता की जाती है।

मुझे एरच के शब्द याद आते हैं जब वह कहते थे, ''शुरू में मन इस तरह के अभ्यास को पसंद नहीं करता है, लेकिन एक समय ऐसा आयेगा जब तुम्हें उनकी याद करने में और उन सबको करने में, जो उनकी ज़्यादा से ज़्यादा याद करने में तुम्हारी सहायता करते हैं, आनन्द आने लगेगा। तुम्हें उनकी याद करने में केवल आनन्द ही नहीं आयेगा, बल्कि जितनी अधिक तुम उनकी याद करोगे, उतना अधिक तुम यह अनुभव करोगे कि तुम पर्याप्त मात्रा में उनकी याद नहीं कर रहे हो। यह भावना अधिक से अधिक उनकी याद करने के लिये तुमको उकसाती रहेगी। अन्त में एक समय ऐसा आयेगा जब सृष्टि की हर चीज़ तुम्हें उनकी याद दिलायेगी। यह उनकी सच्ची कृपा है।''

14. तैयारी की अवस्था

''जब शिष्य तैयार होता है, गुरु को आना पड़ता है, और ईश्वर को प्रकट होना पड़ता है,'' यह सद्गुरु रामकृष्ण का प्रिय उद्धरण (quote) था। यह बात समझाने के लिये कि हमें गुरु की खोज में जाने की ज़रूरत नहीं है, एरच रामकृष्ण के बारे में एक कहानी के साथ यह उद्धरण अक्सर बताते थे। वास्तव में ईश्वर की याद के द्वारा विषय वासनाओं जैसे काम, क्रोध, घृणा और लालच से छुटकारा पाने के द्वारा हमें स्वयं को आन्तरिक रूप से तैयार करना पड़ता है। जब कोई आन्तरिक रूप से तैयार होता है, तब गुरु आता है और ईश्वर प्रकट होता है। इसे अच्छी तरह से समझाने के लिये, एरच निम्नलिखित कहानी सुनाते थे।

''एक दिन रामकृष्ण के एक शिष्य ने उनसे पूछा, 'आप हमें बताते हैं कि जब हम तैयार होते हैं, तब ईश्वर प्रकट होता है। लेकिन क्या आप हमें बता सकते हैं कि वास्तव में ऐसा कब होगा? हम यह निश्चित रूप से कैसे जान सकते हैं कि गुरु से मिलने का समय आ गया है? हम यह कैसे जान सकते हैं कि आत्मा उत्साह की चोटी तक पहुँच गई है?'

''इसके प्रत्युत्तर में रामकृष्ण ने अपने शिष्य से अपने पीछे आने के लिये कहा। वे नदी की ओर चले जहाँ उन्होंने अपने कपड़े उतारे और अपने शिष्य से भी कपड़े उतारने को कहा। वे नदी में गये और जब वह छाती तक पानी के अंदर थे, उन्होंने अपने शिष्य का सर पकड़ा और बलपूर्वक पानी के नीचे डुबाये रखा और उसे साँस लेने के लिये ऊपर नहीं आने दिया।''

एरच ने थोड़ी देर रुककर कहा, ''क्या तुम जानते हो कि जब कोई तुम्हारा सर पानी के नीचे दबाकर रखता है और बाहर नहीं आने देता है तो कैसा अनुभव होता है? तुम हवा के लिये हाँफने लगते हो। तुम निराश होकर बाहर आना चाहते हो, क्योंकि अगर तुम पानी के अंदर ज्यादा समय तक रहते हो तो तुम मर जाओगे। और शिष्य को ऐसा ही अनुभव हो रहा था। वह अपने जीवन के लिये पानी से ऊपर आने के लिये संघर्ष कर रहा था, लेकिन रामकृष्ण उसे ऊपर नहीं आने देते थे। सद्गुरु होने के कारण, रामकृष्ण ने अपने शिष्य का सिर बिल्कुल अन्तिम क्षण तक पानी के नीचे रखा और फिर उसे बाहर खींच लिया।

''शिष्य गहरी गहरी साँसें लेता हुआ हाँफने लगा। उसे अपनी साँस और सामान्य अवस्था प्राप्त करने में थोड़ा समय लगा। रामकृष्ण ने फिर उससे पूछा, 'मेरे द्वारा पानी से बाहर खींचे जाने के पहले, तुम्हारे मन में अन्तिम विचार क्या आया?'

''उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मेरा अन्तिम विचार यह था कि अगर आप मुझे एक क्षण और पानी के नीचे रखते, तो मैं मर जाता।' रामकृष्ण ने कहा, 'जब ईश्वर के दर्शन के लिये और उसमें मिलकर एक हो जाने के लिये तुम्हारे मन में वही भावना होती है, जब तुम यह अनुभव करते हो

कि ईश्वर के दर्शन किये बिना तुम एक क्षण भी ज़िन्दा नहीं रह सकते हो–तब तुम जानोगे कि तुम तैयार हो और ईश्वर के प्रकट होने का समय आ गया है। लेकिन तुम्हारे हृदय में यह भावना निरन्तर होनी चाहिये। तुम्हें यह अनुभव होना चाहिये कि ईश्वर से एक क्षण के लिये भी अलग होना तुम सह नहीं सकते हो और उसकी उपस्थिति के बिना तुम मर जाओगे। जब ऐसी तीव्र आकांक्षा उत्पन्न होती है, तब ईश्वर तुरन्त प्रकट होता है।'''

15 भावना के साथ याद

मैंने एक बार भाऊ जी से पूछा कि क्या सारी समस्याओं, जिनमें शारीरिक समस्यायें भी शामिल हैं, का समाधान केवल बाबा की याद करने मात्र से संभव है। मैंने यह प्रश्न बाबा के इस संदेश के कारण पूछा था, ''सभी बीमारियों का इलाज मेरी निरंतर और सच्चे हृदय से याद करना हैं।''

भाऊजी ने तुरन्त उत्तर दिया, ''हाँ, सारी समस्याओं का समाधान, जिनमें शारीरिक समस्यायें भी शामिल हैं, केवल याद करने से संभव है–पर शर्त यह है कि याद भावना के साथ की गई हो।''

इसलिये मैंने पूछा, ''आप वह भावना कैसे उत्पन्न करते हैं?'' भाऊ जी ने उत्तर दिया, ''जब तुम्हारे संस्कार कम हो जाते हैं, जब तुम्हारे संस्कारों के बंधन कमज़ोर हो जाते हैं, तब वह भावना आयेगी।'' भाऊ जी ने थोड़ा रुककर आगे कहा, ''संस्कारों के बंधन तभी कमजोर होंगे जब तुम हर चीज़ को मन की स्थिरता और समान भाव से स्वीकार करोगे। अगर तुम हर परिस्थिति को उनकी मर्ज़ी समझकर बिना कोई शिकायत किये हुये स्वीकार करते हो तो संस्कारों के बंधन कमज़ोर होंगे। ऐसा करने के लिये तुम्हें हर क्षण उनकी याद करनी होगी– उन्हें निरंतर याद करना होगा।''

भाऊ जी ने यह कहते हुये अपनी बात समाप्त की कि बाबा ने हर व्यक्ति के हृदय में याद का बीज बो दिया है। ''अब तुम्हें प्रतिदिन इसमें

उस समय तक पानी डालना है जब तक यह बढ़कर पेड़ नहीं बन जाता है'' भाऊजी ने समझाया।

16 उनकी उपस्थिति को पैदा करो

जब भाऊजी पश्चिमी देशों के दौरों पर जाते थे, वह अक्सर मुंबई में रुकते थे और मुंबई के बाबा प्रेमियों की प्रार्थना पर सेंटर में वार्ता देते थे। अपनी वार्ता शुरू करने से पहले, भाऊ जी हमेशा लोगों को प्रश्न पूछने का अवसर देते थे। ऐसी ही एक वार्ता के समय, संयोगवश मैं वहाँ पर था जिस समय एक बाबा प्रेमी ने यह प्रश्न पूछा, ''क्या बाबा प्रेमियों के लिये केन्द्र में जाना और दूसरे बाबा प्रेमियों के साथ संबंध रखना आवश्यक है?''

भाऊ जी ने निम्नलिखित उत्तर दिया, ''अगर तुम अपने हृदय में मेहेर बाबा की उपस्थिति को निरंतर अनुभव कर सकते हो तो तुम्हें केन्द्र अथवा किसी भी व्यक्ति के साथ कोई भी संबंध रखने की ज़रूरत नहीं है। केवल बाबा के साथ तुम्हारे संबंध का महत्व है। तो भी, यह संबंध स्थायी होना चाहिए ताकि तुम उनकी (बाबा की) उपस्थिति को मीराबाई की तरह निरंतर अनुभव कर सको। मीराबाई हर व्यक्ति और हर वस्तु में कृष्ण को देखती थीं। उनके जीवन में हर वस्तु उनके प्रभु कृष्ण द्वारा दी गई थी। जब उन्हें ज़हर दिया गया, उन्होंने बिना कुछ सोचे,इसे तुरंत पी लिया क्योंकि उन्हें यह दृढ़ विश्वास था कि उनके प्रभु कृष्ण उसे दे रहे थे और ज़हर का उन पर कोई असर नहीं हुआ।

''उनकी चेतना सदैव कृष्ण के ऊपर केन्द्रित रहती थी और वह केवल कृष्ण की उपस्थिति के प्रति ही सचेत थीं। अगर तुम अपने हृदय में बाबा की ऐसी उपस्थिति और ऐसी भावना पैदा कर सकते हो जैसी कृष्ण के लिये मीराबाई के हृदय में थी, तो तुम्हें कहीं भी जाने की ज़रूरत नहीं है। वास्तव में दुनियाँ के लोग तुम्हारे पास आकर तुम्हें प्रणाम करेंगे जिस तरह वह मीराबाई को करते हैं जो कि एक सन्त मानी जाती हैं। फिर भी, सांसारिक लोगों के लिये, जो नौकरी कर रहे हैं, और एक परिवार की ज़िम्मेदारी उठा रहे हैं और जिन्हें अपने सांसारिक कर्त्तव्यों का पालन करना है, ऐसी अवस्था प्राप्त करना बहुत कठिन है। उनका ध्यान प्रतिदिन

की समस्याओं और तनाव में लगा रहता है और वे अपने मन को उन मायावी फंदों से छुड़ाने में असमर्थ होते हैं जिनमें वे फँसे होते हैं। ऐसे लोगों के लिये, अपने जीवन में बाबा की उपस्थिति को, बाबा की याद करने के द्वारा हर संभव ढँग से पैदा करना बहुत ज़रूरी हो जाता है। ऐसे लोगों के लिये बाबा की किताबें पढ़ने अथवा दूसरे बाबा प्रेमियों के साथ एकत्र होकर बाबा की कृपा और दया के बारे में बात करने; अथवा केन्द्र और बाबा से संबंधित दूसरे स्थानों में जाने के लिये, जहाँ बहुत स्वाभाविक ढँग से उनकी उपस्थिति का अनुभव किया जा सके, कोशिश करना और समय निकालना बहुत आवश्यक है।

''हाँ, ऐसे लोगों के लिये दिन में कम से कम थोड़ी देर के लिये उनकी उपस्थिति का अनुभव करने की कोशिश करना बहुत महत्वपूर्ण है। अन्यथा, संस्कारों का बोझ बढ़ता चला जायेगा और वे दुनियाँ से ऊबे हुये और भ्रमित होते जायेंगे। इसलिये अपने हृदय में उनकी उपस्थिति पैदा करने की याद रखो। कोशिश करो और किसी दिन, बाबा की कृपा से उनकी याद तुम्हारे जीवन का एक अभिन्न भाग बन जायेगी और तुम्हें लक्ष्य तक (ईश्वर–साक्षात्कार) ले जायेगी।''

17. उनकी याद का ही महत्व है

एक बार पूना के एक बाबा प्रेमी ने मेहेराबाद ट्रस्ट आफ़िस में छः महीनों तक काम किया। वह मानसिक रूप से अस्थिर था और अपनी बीमारी के बारे में हर व्यक्ति से बात किया करता था। वह इसका इलाज करा रहा था लेकिन उसकी हालत में सुधार नहीं हुआ। अपनी बीमारी के कारण वह किसी भी नौकरी में छः महीने या एक साल से अधिक समय तक नहीं रह सका। मेहेराबाद में उसकी नौकरी के साथ भी यही हुआ। मेहेराबाद से जाने के बाद, लगभग एक दशक तक उसके बारे में कोई समाचार नहीं मिला। इस अवधि में किसी भी व्यक्ति को यह नहीं मालूम था कि वह व्यक्ति कहाँ था।एक लम्बे समय की अनुपस्थिति के पश्चात् उसने ट्रस्ट के चेयरमैन और मेहेराबाद ट्रस्ट के अधिकारियों को पत्र लिखकर बताया कि उसका कैंसर अन्तिम अवस्था में था। उसका बहुत

मँहगा इलाज हुआ था और उसने ट्रस्ट से कहा कि उसके इलाज में खर्च हुआ धन उसे दे दिया जाये। उसने कई लाख रुपये माँगे जो एक बड़ी राशि थी।

ट्रस्ट ने उसके पत्र का उत्तर देते हुये लिखा कि वह अपने इलाज के सारे बिल और अपनी डाक्टरी जाँच की सारी रिपोर्ट ट्रस्ट को भेज दे और उस डाक्टर का एक पत्र भी भेज दे जिसने उसका इलाज किया था ताकि ट्रस्ट उसकी आर्थिक मदद कर सके। ट्रस्ट को एक कानूनी आज्ञा प्राप्त धर्मार्थ संगठन होने के कारण दान संबंधी कार्यो के संपादन के लिये नियुक्त किये गये अफ़सर (कमिश्नर) द्वारा निर्धारित कुछ कार्य विधियों का पालन करना पड़ता था। बाबा प्रेमी ने ट्रस्ट द्वारा भेजे गये पत्र का कभी भी उत्तर नहीं दिया।

ट्रस्ट के कार्य से बम्बई की मेरी एक यात्रा के समय, भाऊ जी ने मुझसे पुणे में रुककर इस व्यक्ति के बारे में पता लगाने के लिये कहा। उन्होंने मुझसे उसे यह भी समझाने के लिये कहा कि अगर वह ट्रस्ट से आर्थिक सहायता चाहता है तो उसके लिये अपने मेडिकल बिल और डाक्टरी जाँच की रिपोर्ट ट्रस्ट को भेजना क्यों ज़रूरी था। जब मैं पुणे में उसके घर पहुँचा तो मुझे उसको बिल्कुल स्वस्थ अवस्था में यहाँ वहाँ घूमते देखकर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे आशा थी कि वह बिस्तर से उठ नहीं पाता होगा और मरने वाला होगा।

मैंने उससे उसका हाल पूछकर बताया कि ट्रस्ट से आर्थिक मदद प्राप्त करने के लिए उसे क्या करना होगा। क्योंकि वह स्वयं एक मुनीम (Accountant) था, इसलिए मैंने सोचा कि वह समझ जायेगा। समझने के बजाय, उसने मेहेराबाद के सारे अधिकारियों (trustees) और मण्डली को, जिनमें मनी और एरच भी शामिल थे, बुरा भला कहना शुरू कर दिया। इससे मुझे गुस्सा आया किन्तु उसकी मानसिक स्थिति जानते हुए मैंने अपने ऊपर नियंत्रण किया और उसे बोलने दिया। जब वह बोल चुका, मैंने उससे जाने की अनुमति माँगी लेकिन उसने मुझसे रुकने की प्रार्थना की क्योंकि वह मुझे कोई महत्वपूर्ण बात बताना चाहता था।

फिर उसने कहा, ''बाबा मुझसे दिन भर बात करते हैं। जिस तरह तुम बैठकर मुझसे बात कर रहे हो, इसी तरह वह मुझसे बात करते हैं और हर बात में मेरा मार्गदर्शन करते हैं। वह मुझे सुबह जगाते हैं; वह मुझसे दाँतों में ब्रश करने को कहते हैं और मैं नाश्ते में क्या खाऊँ यह भी मुझे बताते हैं। एक माँ की तरह वह मुझ पर नज़र रखते हैं और दिन भर मैं क्या करूँ, मुझे बताते हैं।'' उसने कहना ज़ारी रखा, ''मुझसे मिलने के लिए तुम्हारे आने के ठीक पहले, बाबा ने मुझसे घूमने जाने के लिए कहा। रास्ते में बाबा ने मुझसे बैंक जाकर, कुछ रुपये निकालने के लिए कहा। फिर बाबा ने मुझसे जल्दी घर जाने के लिए कहा, इसलिए मैं घर आ गया। मेरे परिवार को रुपयों की ज़रूरत थी जो मैंने उन्हें दिये और, कुछ समय बाद तुम आ गये। वह हर छोटे छोटे काम को करने के लिए मुझे बताते हैं।'' अपनी बात ख़त्म करने के बाद, उसने मुझे जाने की अनुमति दे दी।

मैं नहीं जानता था कि इसका क्या अर्थ था। उसकी मानसिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए मैंने अनुभव किया कि वह निश्चित रूप से भ्रम में था। अहमद नगर लौटने पर, जब मैं भाऊजी से मिला, तो मैंने उस व्यक्ति से अपनी भेंट के बारे में उन्हें बताया। मैने कहा कि वह व्यक्ति मुझे मानसिक रूप से अस्थिर प्रतीत हुआ क्योंकि, कभी तो वह मंडली को गालियाँ देता था और कभी वह दावा करता था कि बाबा, एक माँ की तरह, हर बात में उसका मार्गदर्शन कर रहे थे। भाऊजी ने कहा, ''वह कितना अधिक भाग्यशाली है।''

उस मानसिक रूप से अस्थिर व्यक्ति के दैवी मार्गदर्शन प्राप्त करने के दावे से अधिक मुझे भाऊजी की प्रतिक्रिया पर आश्चर्य हुआ। मैंने भाऊजी से कहा, ''आप ऐसा क्यों कहते हैं? वह मुझे भ्रम में पड़ा हुआ प्रतीत होता है।''

भाऊजी ने कहा, ''किसी भी रीति से बाबा की याद करना, एक बहुत बड़ा वरदान है। अगर तुम भ्रम में भी हो, और इस भ्रम के कारण तुम कल्पना करते हो कि तुम हर क्षण उनसे मिल रहे हो, तो यह तुम्हारा अच्छा भाग्य है। वही याद तुम्हे लक्ष्य (ईश्वर साक्षात्कार) तक ले जायेगी।

इसका वास्तव में कोई महत्व नहीं है कि तुम मानसिक रूप से बहुत बुद्धिमान अथवा मूर्ख अथवा अस्थिर हो। जब तक तुम उनकी निरन्तर याद करते रहते हो, वह तुम्हारी ज़िम्मेदारी (लक्ष्य तक पहुँचाने की) लेते हैं।''

18. भाग्यशाली पागल आदमी

एरच द्वारा बताई गई निम्नलिखित कहानी एक भाग्यशाली पागल आदमी की है। यह उस समय की बात है जब बाबा हमीरपुर जिले की यात्रा कर रहे थे। बाबा हमीरपुर जिले के एक गाँव में थे, मुझे याद नहीं है कि कौन सा गाँव था। जब यह घटना घटी, उस समय बाबा अपने प्रेमियों को दर्शन दे रहे थे और हर व्यक्ति प्रोग्राम का आनन्द ले रहा था। उसी समय अचानक पीछे की तरफ कुछ हलचल हुई जिसने बाबा का ध्यान आकर्षित किया और बाबा ने मुझसे कहा कि मैं पता लगाऊँ कि वहाँ पर क्या हो रहा था।

''इसलिए मैंने पूँछताछ की और मुझे पता चला कि एक स्थानीय पागल आदमी ने अन्दर आने की कोशिश की थी और लोग उसे दूर भगाने की कोशिश कर रहे थे और इसीलिये सारी हलचल हो रही थी। मैंने बाबा को सब बताया। बाबा ने मुझसे उस पागल आदमी को अपने पास लाने के लिए कहा। इसलिए वह पागल आदमी बाबा के पास लाया गया। वह मस्त नही था बल्कि एक साधारण पागल आदमी था जो गाँव में घूमता हुआ, बिना सिर पैर की बातें बड़बड़ाता रहता था जैसा कि अक्सर पागल लोग करते हैं। जब वह बाबा के पास लाया गया, बाबा ने अपने दोनों हाथों से उसके दोनों गाल सहलाये और बड़े प्रेम के साथ उसे गले लगाया। वह पागल आदमी, जो निरंतर बड़बड़ाता रहता था, अचानक बिल्कुल मौन हो गया। ऐसा लगता था जैसे कि दैवी उपस्थिति ने उसके इधर उधर बिखरे हुये मन में प्रवेश कर लिया था। बाबा ने अपने प्रेमियों को उसकी देखभाल करने के लिए निर्देश देकर, कुछ समय बाद उसे भेज दिया।

''हम लोगों ने वह सब देखा। हमें बाद में, उस क्षेत्र के प्रेमियों के पत्रों द्वारा पता चला कि वह पागल आदमी, जिसकी आदत दिन रात

बड़बड़ाने की थी, अब बाबा का नाम बड़बड़ाता रहता था। बाबा के साथ उसकी भेंट ने, उसके बिखरे हुए मन पर गहरा प्रभाव डाला था, और वह बाबा की फ़ोटो पहचान सकता था। कुछ बाबा प्रेमियों ने उसे बाबा का नाम लेना सिखाया था और अब वह दिन भर बाबा का नाम लेता रहता था।

''समय समय पर बाबा प्रेमी, बाबा को इस पागल आदमी के बारे में सूचना देते रहते थे और एक दिन हमें खबर मिली कि अब वह इस दुनियाँ में नहीं था। जब मैंने बाबा को यह खबर पढ़कर सुनाई तो उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम नहीं समझ सकते कि वह पागल आदमी कितना अधिक भाग्यशाली था। वह अपने होठों पर मेरा नाम लिये हुए मरा, और वह मेरे पास आ गया है।'''

एरच ने टिप्पणी की, ''वह कितनी भाग्यशाली आत्मा थी कि पागलपन के कारण, उसने मुक्ति प्राप्त की। हमने पक्षियों और जानवरों के उदाहरण देखे हैं जो बाबा के साथ रहे। जब वे मरे, बाबा टिप्पणी करते थे कि वह कितने अधिक भाग्यशाली थे और हमें बताते थे कि उनके साथ रहने के कारण उन्हें आध्यात्मिक ठेल प्राप्त होगी। अपने अगले जन्म में उन्हें केवल मनुष्य योनि ही नहीं मिलेगी, बल्कि वे आध्यात्मिक मार्ग पर भी होंगे। उनकी कृपा और दया उनकी सृष्टि के सभी प्राणियों को प्राप्त होती है।''

19. पूर्ण समर्पण

निम्नलिखित कहानी उस समय की है जब हम रासायनिक कारखाने को बंद करवाने के लिए लड़ रहे थे। रासायनिक कारखाने के मालिक में, हालाँकि वह परेशानियाँ पैदा कर रहा था, कुछ अनोखे गुण थे जिससे हर व्यक्ति को कभी कभी अनुभव होता था कि उसका अपने पिछले जन्म में बाबा के साथ निकट संपर्क था। वह केवल विरोध ही नहीं करता था बल्कि ट्रस्ट के विरुद्ध झूठा प्रचार भी करता था और इस तरह बाबा का नाम दूर दूर तक फैला रहा था। जिस व्यक्ति का बाबा के साथ संबंध हो केवल वही व्यक्ति ऐसी भूमिका निभा सकता है।

मैं एरच से अक्सर मज़ाक में कहता था कि कारखाने के मालिक में ऐसे गुण थे जिनसे मुझे अनुभव होता था कि वह अपने पिछले जन्म में मंडली का सदस्य रहा होगा। एरच ने कहा, ''ऐसे कौन से मंडली जैसे गुण हैं जो तुम्हें उसमें दिखाई देते हैं?''

मैंने कहा, ''उसमें बहुत अधिक आकर्षण है जिससे अजनबी भी उससे प्रभावित होते हैं। वह किसी भी व्यक्ति को आकर्षित करके अपने पक्ष में कर लेता है और वह हमारे विरुद्ध हो जाता है। मैं कई लोगों के पास ठोस एवं लिखित प्रमाण लेकर जा चुका हूँ और प्रमाण को देखने के बाद भी, जब पक्ष लेने का समय आता है तो कारखाने का मालिक उनके हृदयों को पिघला देता है और वे उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करने लगते हैं। मंडली जनों में यह चुम्बकीय (अपनी ओर खींचने वाला) गुण है।''

एरच ने पूछा, ''दूसरे गुण क्या हैं?'' मैंने कहा, ''उसका पूरा परिवार, मित्र और घनिष्ठ जन उससे ऊब चुके हैं और वे अन्त तक अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के उसके ज़िद्दी व्यवहार के कारण, पीड़ा का अनुभव करते हैं। इस मामले को मित्रता पूर्ण ढँग से सुलझाने के लिए उसे कई सुझाव दिये गये थे लेकिन उसने उन्हें न मानने और अपने ही रास्ते पर चलने का निर्णय लिया। मंडली जन ऐसे ही हैं। वे इसी ढँग से अपने निकट के अन्तेवासी सहायकों को कष्ट देते हैं और उसका अन्तिम गुण यह है कि उसके व्यवहार के बारे में कोई अन्दाज़ नहीं लगा सकता। वह लगभग सनकी है। एक ओर वह ट्रस्ट और बाबा प्रेमियों पर दोषारोपण करेगा, दूसरी ओर, उसी समय वह मंडली जनों के लिए मिठाइयाँ और बधाई के कार्ड भेजेगा। कोई उसके इरादों को समझ नहीं सकता।''

मेरे ऐसा कहने पर एरच हँसे और कहा, ''हम लोग ऐसे हो गये हैं क्योंकि बाबा हमारे साथ ऐसे ही थे। इसलिये हम ऐसे बन गये हैं; यह सब उन्हीं के कारण है।''

बाबा के शरीर छोड़ने के तुरन्त बाद अलोबा के हृदय में बाबा के प्रचार के शोले भड़क रहे थे। वह अहमदनगर में लोगों के घरों और रेस्टोरेन्ट में जाते थे और बाबा के बारे में सिर्फ बात ही नहीं करते थे बल्कि

वहाँ पर बाबा की एक फोटो भी लटका देते थे। कारखाने के मालिक का घर उन घरों में से एक था जहाँ अलोबा ने अपने हाथों से बाबा की फ्रेम की हुई फ़ोटो लगाई थी। इसके परिणाम स्वरूप कारखाने के मालिक के माता पिता नियमित रूप से मेहेराबाद जाते थे। रासायनिक कारखाने की लड़ाई के समय उन्होंने (माता पिता ने) अपने पुत्र के व्यवहार का समर्थन नहीं किया।

सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा जीतने के बाद जब लड़ाई खत्म हो गई, मैंने अत्यंत शान्ति का अनुभव किया क्योंकि अत्यधिक कार्य का दबाव थका देने वाला था। फिर भी मैंने किसी भी तरह की खुशी का अनुभव नहीं किया। मेरा हृदय कारखाने के मालिक के लिये उदास था जो आर्थिक रूप से बरबाद हो गया था। मैं उससे अक्सर रास्ते में मिलता था और वह मेरे पास आकर मुझसे इस तरह व्यवहार करता था जैसे कि वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त था। जिस समय मुकदमा चल रहा था, उस समय भी वह इसी तरह व्यवहार करता था और कोई भी व्यक्ति यह कल्पना नहीं कर सकता था कि हम लोग विरोधी थे।

मुकदमा समाप्त होने के बाद, एक दिन मैं उससे संयोग से मिल गया और वह मुझसे बात करने लगा। मेरे मन में कुछ शंका थी इसलिये मैंने उससे पूछा, ''मुझे ईमानदारी से सच सच बताओ कि तुमने ऐसा क्यों किया? मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ। तुम अन्त तक मुकदमा क्यों लड़े और अपने आपको बरबाद कर लिया।'' उसने उत्तर दिया, ''ठीक है, मैं समझता हूँ कि यह मेरा भाग्य था।''

मैं अपनी बात पर अड़ा रहा और उसे कुरेदते हुये आगे कहा, ''अगर तुम इतिहास को देखो तो अवतार के विरुद्ध लड़ाई में कोई नहीं जीता है। दुर्योधन कृष्ण से और रावण राम से हार गया। तुम इतिहास जानते हो फिर भी तुमने अवतार मेहेरबाबा और उनकी मंडली के साथ लड़कर विनाश के मार्ग को चुना। तुमने ऐसा क्यों किया?''

मालिक ने तुरन्त उत्तर दिया, ''मेरी लड़ाई मेहेरबाबा के साथ कभी नहीं थी, मेरी लड़ाई तुम सब मेहेराज़ाद के लोगों से थी और उन लोगों

से थी जो तुम्हारी मदद कर रहे थे। तुम लोगों ने बार बार निरंतर यह कहकर कि यह लड़ाई मेहेरबाबा की है, मेहेरबाबा को तुम्हारा पक्ष लेने के लिये मज़बूर कर दिया। तुमने लड़ाई की ज़िम्मेदारी उनके कंधों पर डाल दी। तुम्हारे बार बार ऐसा करने से वह लड़ाई की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेने के लिये विवश हो गये और इस प्रकार बाबा लड़ाई में शामिल हुये।

"अपनी लड़ाई को पूरी तरह से उनको समर्पित करके, तुमने इसे उनकी (बाबा की) लड़ाई बना दिया और इसलिये उन्हें तुम्हारी ओर से इस लड़ाई में विवश होकर बीच में आना पड़ा। मैं तुम सबसे लड़ रहा था, उनसे नहीं। लेकिन तुमने उनसे प्रार्थना करके, उन्हें इस लड़ाई में मेरे विरुद्ध कर लिया। यही कारण है कि मैं हार गया। यह लड़ाई निष्पक्ष नहीं थी। तुमने इसे उनकी लड़ाई बनाकर, न्याय के पलड़े को अपने पक्ष में कर लिया।"

इस प्रकार की गहरी समझ मुझे अपने एक योग्य विरोधी से सीखनी थी जो अपने पिछले जन्म में बाबा के साथ निश्चित रूप से घनिष्ठ संबंध रखता था। आज भी, बिदा लेते समय कहे गये उसके शब्द और उनमें छिपे हुये सच को मैं याद करता हूँ। अगर मैं हर परिस्थिति को पूर्णरूप से बाबा को समर्पित कर पाता तो बाबा उस परिस्थिति को पूरी तरह अपने हाथ में ले लेते और मैं उस परिस्थिति से परेशान नहीं होता। मैं समझता हूँ कि आज भी, शत प्रतिशत ऐसा करने में मैं असमर्थ हूँ।

20. नकली गुरु कूड़े करकट का भण्डार हैं

एक बार मैं मंसारी के पास बैठा हुआ था और संयोगवश वहाँ पर एक तीर्थयात्री आया जो मनोविश्लेषक (Psychoanalyst) था। मंसारी ने उससे पूछा, "अगर तुम महासागर में एक कनस्तर कूड़ा करकट डाल दो तो क्या होगा? क्या महासागर दूषित (गंदा) हो जायेगा।"

तीर्थयात्री ने उत्तर दिया, "बिल्कुल नहीं।" तब मंसारी ने पूछा, "अगर तुम पानी के छोटे से तालाब में एक कनस्तर कूड़ा करकट डाल दो तो क्या होगा?"

तीर्थयात्री ने उत्तर दिया, "छोटा तालाब निश्चित रूप से दूषित हो जायेगा।" मंसारी ने कहा, "नकली गुरुओं की तुलना में सद्‌गुरुओं के साथ ऐसा ही होता है। सद्‌गुरु महासागर के समान होते हैं; एक असीम महासागर, जिसमें तुम अपने संस्कारों रूपी कूड़े को डाल सकते हो। ज्ञान, शक्ति और आनन्द का महासागर उस कूड़े को, स्वयं दूषित हुए बिना, अपने आप में समा लेता है। दूसरी ओर, नकली गुरु पानी के छोटे तालाब की तरह होते है। उन्होंने ईश्वर साक्षात्कार का अनुभव प्राप्त नहीं किया है, इसलिए वे ईश्वर की अनन्तता में डूबे नहीं हैं। हालाँकि, वे अनन्त होने का दिखावा करते हैं, लेकिन वे स्वयं सीमित होते हैं। उनके पास जो लोग आते हैं, वे अपने संस्कारों का कूड़ा उनके (गुरुओं के) सीमित तालाबों में डाल देते हैं जिनका प्रतिनिधित्व ये नकली गुरु करते हैं।

"समय के साथ, ये सीमित तालाब गंदे हो जाते हैं और उनसे बदबू आने लगती है। इन नकली गुरुओं की यही दशा होती है। जो लोग उनके पास आते हैं, उनके संस्कारों का कूड़ा वे ले लेते हैं और इससे उनका अपने संस्कारों का कूड़ा, जो उनके साथ पहले से ही था, बढ़ जाता है। उनका अपना संस्कारों का कूड़ा बहुत अधिक बढ़ जाता है और हालांकि वे धन और शक्ति का आनंद लेते हैं जो उनके पद के कारण उन्हें मिलता है, परन्तु अपने ऊपर इकट्ठा हुये सभी संस्कारों से छुटकारा पाने के लिये, उन्हें अपने अगले जन्म में बहुत अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। जो लोग इन नकली गुरुओं के पास श्रद्धा और भक्ति के साथ जाते हैं, उनको अपने संस्कारों का बोझ कम होने से लाभ होता है। जबकि नकली गुरु को संस्कारों का बोझ बढ़ जाने से बहुत अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। नकली गुरु कूड़ेदानों की तरह हैं जो तुम शहरों में जगह जगह पर रखे देखते हो। फिर भी, ये कूड़ेदान (नकली गुरु) अपनी सीमित योग्यताओं के कारण बदबू फैलाने लगते हैं जबकि महासागर (सद्‌गुरु, पूर्ण पुरुष) कूड़े को अपने में समा लेते हैं और बदबू नहीं फैलाते।"

मंसारी थोड़ी देर के लिये रुकी और तीर्थयात्री से पूछा, "क्या तुमने इस बात पर ध्यान दिया है कि जब कोई व्यक्ति तुम्हारे पास आकर, तुमसे अपने जीवन की समस्याओं और कठिनाइयों के बारे में बताता है, जैसे जैसे

वह व्यक्ति बताता जाता है, वह हल्केपन का अनुभव करता है, जबकि जो व्यक्ति सुनता है, वह मानसिक स्तर पर भारीपन का अनुभव करता है?''

मनोविश्लेषक होने के कारण, तीर्थयात्री ने उत्तर दिया, ''हाँ, मैं यह जानता हूँ। मनोविश्लेषण इसी सबके बारे में होता है। आप उस व्यक्ति से उसकी समस्याओं के बारे में बात करके, उसकी सहायता करते हैं।''

तब मंसारी ने कहा, ''क्या तुम जानते हो कि वह व्यक्ति अपने दिल में हल्केपन का अनुभव क्यों करता है? क्योंकि वह अपने संस्कारों का कुछ बोझ सुनने वाले व्यक्ति के ऊपर डाल देता है। कुछ समय बाद सुनने वाला व्यक्ति मानसिक अवसाद (depression) से भी पीड़ित हो सकता है।''

मनोविश्लेषक तीर्थयात्री बातों में रुचि लेता प्रतीत हुआ और उसने टिप्पणी की, ''यह सच है, क्योंकि कुछ समय बाद, मनोविश्लेषक को अपने गुरु अथवा सहकर्मी के पास तनावमुक्त होने अथवा अपने मन का बोझ हल्का करने के लिये जाना पड़ता है।'' उसने आगे कहा, ''मुझे यह वास्तविकता मालूम नहीं थी कि हम संस्कारों को इकट्ठा कर रहे थे। हम लोगों को अपने कार्य (profession) के कारण आने वाले संस्कारों के बोझ से बचने के लिये क्या करना चाहिये?''

मंसारी ने उत्तर दिया, ''यह बहुत आसान है और हर व्यक्ति को यह करना चाहिये भले ही उसका व्यवसाय (profession) कुछ भी हो, लेकिन तुम्हारे व्यवसाय के लोगों को विशेष रूप से करना चाहिये। यह समस्या उस समय होती है जब तुम उस व्यक्ति को निरोग (Cure) करने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेने लगते हो। जब तुम्हारा सीमित 'मैं' दृढ़तापूर्वक कहता है, 'मैं ज़िम्मेदार हूँ, मुझे इस व्यक्ति का इलाज करके, इसे निरोग करना है,' तब तुम उसके संस्कारों का बोझ अपने ऊपर ले लेते हो। यह उचित होगा कि हम बाबा की याद करें और अपने हर कार्य को उन्हें समर्पित करें। तुम उनकी उपस्थिति के लिये प्रार्थना करना शुरू करो, उनसे कहो कि उस मरीज़ का इलाज और उसे आरोग्य करने में तुम्हें माध्यम की तरह इस्तेमाल करें। तुम्हारा कार्य और ज़िम्मेदारी बाबा के कार्य के लिये पूर्णरूप से उनके (बाबा के) अधीनस्थ एक माध्यम बनकर,

अपनी ओर से भरसक प्रयत्न करना है। इससे सारे संस्कार और चिकित्सा तथा आरोग्य का सारा भार बाबा के ऊपर चला जाता है। याद रखो कि एक माध्यम के रूप में तुम्हें भरसक प्रयत्न करना है।''

मनोविश्लेषक ने मंसारी को धन्यवाद दिया और चला गया। कई वर्षों के बाद, उसने मंसारी को बताया कि उसने मरीज़ों का इलाज उसी तरह करने का अभ्यास किया था जैसा उन्होंने (मंसारी ने) बताया था और इससे उसे लाभ हुआ था।

21. पूर्ण पुरुष (Perfect one) के कार्य

एक अन्तेवासी ने, जो काफ़ी समय से मेहेराबाद में काम कर रहा था, एक बार भाऊजी से यह प्रश्न पूछा, ''शेरयार जी ने अपने जीवन का प्रारम्भ का समय, ईश्वर की खोज में घूमते हुये एक दरवेश की तरह व्यतीत किया और इस खोज में भयंकर आत्म संयम और तपस्या की। फिर भी, जब उन्होंने शादी की, उन्होंने पारिवारिक जीवन बिताया और उनके बच्चे हुये। ऐसे कई उदाहरण हैं जब सद्‌गुरुओं ने शादी की और उनके बच्चे हुये। बच्चे होने के लिये उत्पत्ति की क्रिया आवश्यक है; इसलिये, भाऊ जी, मुझे बताइये कि क्या ये महान और पूर्ण आत्मायें उत्पत्ति की क्रिया के समय साधारण आत्माओं की तरह, विषय सुख की तीव्र इच्छा का अनुभव करती हैं।''

भाऊ जी ने निम्नलिखित उत्तर दिया, ''यह बिल्कुल भिन्न होता है। शेरयार जी ने अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्ष ईश्वर की खोज में बिताये। उनका हृदय बेचैन था और ईश्वर के लिये तड़प की अग्नि से जल रहा था। वह एक बहुत पवित्र आत्मा थे। वह केवल एक महान आत्मा ही नहीं थे बल्कि उनके समान कोई नहीं था। यही कारण है कि अवतार के पिता की भूमिका निभाने के लिये उनको चुना गया। क्योंकि यह भूमिका निभाना उनका प्रारब्ध (destiny) था, इसलिये उन्हें विवाह करना पड़ा। लेकिन विवाह करने के बाद भी, उनका हृदय अपने प्रियतम के गीत गाता रहा। उनका मन अपने प्रियतम के विचारों पर ही केन्द्रित रहता था। संसार में रहते हुये भी, वह एक सांसारिक व्यक्ति नहीं थे और इसीलिये बच्चों को पालने की ज़िम्मेदारी शीरीनमाई को लेनी पड़ी।

"ऐसी आत्मायें साधारण मनुष्यों की तरह विषय सुख की तीव्र इच्छा का अनुभव नहीं करती हैं। जब तुम्हारे हृदय की प्रत्येक भावना और तुम्हारे मन का प्रत्येक विचार तुम्हारे प्रियतम ईश्वर का हो, तो विषय सुख की तीव्र इच्छा अनुभव करने का प्रश्न ही कहाँ है? साधारण मनुष्यों में, युगों पुरानी इच्छाओं के कारण, उनकी चेतना विषय सुख की तीव्र इच्छा से निरंतर धुँधली रहती है। अधिकांश मनुष्यों को कामुक विचारों और भावनाओं से संघर्ष करना पड़ता है।

शेरयार जी जैसी पवित्र आत्माओं के साथ ऐसा नहीं होता है। उनकी चेतना ईश्वर की उनकी खोज में पूर्णरूप से लीन रहती है। उनमें विषय सुख की और दूसरी कोई इच्छा नहीं रहती है। तो भी, उनके प्रारब्ध और उनके लिये निर्धारित भूमिका को निभाने के लिये, उत्पत्ति की क्रिया के समय एक प्रवृत्ति जाग्रत होती है और खाना, पीना, मल त्याग करना जैसे शारीरिक प्राकृतिक कार्यों की तरह, यह कार्य भी हो जाता है। वे साधारण आत्माओं की तरह विषय सुख की तीव्र इच्छा का अनुभव नहीं करती हैं लेकिन, उन्हें जो भूमिका निभानी है, उसके लिये उत्पत्ति की क्रिया आवश्यक है और यहाँ क्रिया निर्धारित समय में, झटपट, बिना किसी पूर्व विचार के हो जाती है।"

भाऊजी थोड़ी देर रुके और फिर कहा, "जहाँ तक सद्‌गुरुओं का संबंध है, वे पहले से ही ईश्वर के साथ एक होते हैं। ईश्वर की सत्यता का उनका अनुभव निरंतर रहता है। वे पूरे विश्व को सपने की तरह अनुभव करते हैं। वे उन आत्माओं की, जो सपना देख रहीं हैं, केवल सहायता करने और उनको जगाने के लिये ही इस स्वप्न में वापस आते हैं। यहाँ तक कि, जब वे दूसरों के साथ पारस्परिक संबंधों में व्यस्त होते हैं, उस समय भी वे अपनी ईश–अवस्था और अपनी स्वप्न–अवस्था के प्रति निरंतर सचेत रहते हैं।

"ऐसी आत्माओं (सद्‌गुरुओं) द्वारा स्वप्न की वस्तुओं के लिये तीव्र इच्छा का अनुभव करने का प्रश्न ही कहाँ उठता है? वास्तव में, उनका अनुभव होता है कि उनके अलावा किसी चीज का अस्तित्व नहीं और वह हर चीज़ हैं। इसलिये वे विषय सुख की तीव्र इच्छा का अनुभव किस प्रकार

कर सकते हैं? जब वह शादी करते हैं और उनके बच्चे होते हैं, उन्हें बच्चे उत्पन्न करने की क्रिया (Procreation) करनी पड़ती है लेकिन उनके लिये यह एक स्वप्न में किया गया कार्य होता है।

"अपनी ईश–अवस्था के प्रति निरंतर सचेत होने के कारण, उत्पन्न करने की क्रिया को करते समय भी, वह (सद्‌गुरु) इस तथ्य के प्रति निरंतर सचेत होता है कि वही सब कुछ है और उसके अतिरिक्त अन्य किसी भी चीज का अस्तित्व नहीं है। सद्‌गुरु द्वारा किये गये प्रत्येक कार्य का एकमात्र उद्देश्य मानवजाति को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर एक आध्यात्मिक ठेल देना और उन्हें मायाजाल के इस स्वप्न से जगाना होता है। इसके अतिरिक्त, इस सांसारिक मायाजाल में रहने का उनके पास कोई कारण नहीं होता है।"

यह समझने के लिये कि सद्‌गुरुओं द्वारा किये गये एक छोटे से कार्य का सम्पूर्ण विश्व को प्रतिघात (Repercussions) करता हुआ कैसा परिणाम होता है, भाऊजी ने निम्नलिखित कहानी सुनाई। द्रोपदी पाँच पांडवों की पत्नी थी। जब वे जंगल में वनवास में रह रहे थे, द्रोपदी भी उनके साथ गई। उसे देवताओं से वरदान में एक बर्तन मिला हुआ था, जो भोजन उत्पन्न करता था। इससे वह चाहे जितने लोगों को खाना खिला सकती थी और भोजन कभी भी खत्म नहीं होता था। फिर भी, इसके साथ एक शर्त थी : एक बार द्रोपदी ने खाना खा लिया तो फिर अगली बार भोजन के समय के पहले वह बर्तन खाना उत्पन्न नहीं करता था। इस शक्ति का उपयोग करके, पांडव स्वयं तो भोजन करते ही थे, परन्तु उनसे मिलने के लिये आने वाले सैकड़ों साधुओं, सन्तों और लोगों को भी खाना खिलाते थे। उनकी उदारता से हर व्यक्ति परिचित हो गया था।

"संयोगवश एक दिन, अपने हजारों शिष्यों के साथ दुर्वासा मुनि उस स्थान में पांडवों से भेंट करने आये। यह मुनि अपने गुस्से के लिये प्रसिद्ध थे। जब वह किसी व्यक्ति को गुस्से से देखते थे, वह जलकर राख हो जाता था। उनकी ऐसी शक्ति थी। जब वह पांडवों के पास आये, उन्होंने पांडवों से उनके और उनके हजारों शिष्यों के लिये भोजन तैयार करने के लिये कहा। फिर वह अपने शिष्यों के साथ, भोजन से पहले नदी में नहाने के लिये गये।

"जब द्रोपदी ने यह सुना, उसे बहुत चिंता हुई क्योंकि वह पहले ही खाना खा चुकी थी और वह बर्तन उस समय खाना उत्पन्न नहीं कर सकता था। मुनि के क्रोध को जानने के कारण, वह पांडवों की सुरक्षा के लिये बहुत अधिक चिंतित हो गई।

"उसने रोते हुये कृष्ण से मदद माँगी। कृष्ण प्रकट हुये और द्रोपदी के कुछ कहने से पहले, उन्होंने द्रोपदी से कहा, 'मुझे आज बहुत भूख लगी है, इसलिये तुरंत खाना तैयार करो।'

"यह सुनकर द्रोपदी रोने लगी। जब कृष्ण ने उससे पूछा कि क्या हुआ तो द्रोपदी ने उन्हें सारी समस्या बताई और कहा, 'मैंने आपको इस संकट के समय मेरी सहायता करने के लिये बुलाया है लेकिन, मेरी मदद करने के बजाय, मुझसे खाना माँगकर आपने मेरी चिन्तायें और बढ़ा दी हैं क्योंकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि अगले खाने के समय के पहले, बर्तन खाना उत्पन्न नहीं करेगा।'

"कृष्ण ने कहा, 'बर्तन लेकर मेरे पास आओ और मुझे स्वयं देखने दो।'

"द्रोपदी खाली बर्तन लेकर कृष्ण के पास आई जिन्होंने अंदर झाँककर एक कोने में पड़ा हुआ अनाज का एक टुकड़ा देखा। उन्होंने इसे द्रोपदी को दिखाया और फिर इसे उठाकर खा लिया। खाने के बाद उन्होंने द्रोपदी से कहा, 'अब मेरा पेट पूरी तरह भर गया है और अब मैं और अधिक नहीं खा सकता हूँ।'

"ठीक उसी क्षण, दुर्वासा मुनि और उनके हजारों शिष्य नहाने के बाद खाना खाने के लिये आ रहे थे। अचानक मुनि को, उनके हजारों शिष्यों सहित डकारें आने लगीं और उनके पेट भरे हुये प्रतीत हुये जैसे कि उन्होंने बहुत अधिक भोजन कर लिया हो। उनकी भूख गायब हो गई और वे भोजन करने के लिये, जिसकी उन्होंने माँग की थी, आने के बजाय वापस चले गये। इस तरह से, कृष्ण ने द्रोपदी को बचाया ।"

तब भाऊजी ने टिप्पणी की, "पूर्ण पुरुषों के कार्य ऐसे होते हैं। अगर ऐसी आत्माओं के द्वारा खाया गया अनाज का एक छोटा सा दाना, हजारों

लोगों का पेट भरने का प्रभाव डाल सकता है, तो कल्पना करो कि उसके अवतरण के दौरान, अवतार के गहन कार्य का प्रभाव समस्त मानव जाति पर क्या होगा?"

22. सर्वशक्तिमान ईश्वर

मंडली हाल में बैठे हुये बाबा प्रेमियों की एक भीड़ को संबोधित करते समय, एक दिन मनी ने कहा, "बाबा का बाहरी कष्ट, इसका रूप, बीमारी के कारण नहीं था बल्कि यह विश्वव्यापी कार्य के कारण था जो वह मानवजाति के लिये कर रहे थे।

"बाबा विश्वव्यापी कष्ट के तनाव से, जो वह अपने शरीर के ऊपर ले रहे थे, बहुत अधिक दुर्बल दिखाई देते थे। उन्होंने हमें संकेत दिये थे कि उनका अन्तिम समय आ गया था और वह भौतिक शरीर में अब और नहीं रहेंगे। उन्होंने हमें इसके लिये मानसिक रूप से तैयार करने का प्रयत्न किया, लेकिन हम इस बात को कभी नहीं समझ सके क्योंकि वह हमारी चेतना को पर्दे से ढँक देते थे।

"मुझे याद है उन्होंने हमें किस प्रकार बताया था कि उनका कार्य सौ फीसदी पूरा हो गया था और उसका परिणाम भी शत प्रतिशत होगा। वह हमें बताते थे, 'तुम देखोगे। मेरे प्रेमी किस प्रकार आयेंगे, पूरी दुनियाँ से मेरे छोटे बच्चे किस तरह आयेंगे।' मुझे उस समय आश्चर्य हुआ था कि बाबा ने, 'हम लोग देखेंगे', कहने के बजाय ऐसा क्यों कहा था कि 'तुम लोग देखोगे।'

"यह बात बहुत बाद में स्पष्ट हुई, लेकिन उस समय मैं समझ नहीं सकी। वास्तव में मैंने सोचा कि बाबा 'हम लोग देखेंगे' न कहकर यह कह रहे थे, 'तुम देखोगे' क्योंकि उन्होंने इसे पहले ही देख लिया था। मेरे मन में यह विचार था।

"बाबा ने अपने अन्तिम दिनों में जो कष्ट सहा, वह इतना भयंकर था कि उनके बहुत से प्रेमियों को उनके ईश्वरत्व के बारे में संदेह होने लगा। बहुत से प्रेमियों को आश्चर्य होता था, 'ईश्वर इतना कमज़ोर कैसे हो सकता है?'"

इससे मुझे फ्रांसिस ब्रैबेजोन की याद आई जो उस समय बाबा की मंडली के साथ मेहेराज़ाद में रहते थे। बाबा को उनके मंडली जन प्रतिदिन सुबह एक विशेष कुर्सी में उनके सोने के कमरे से मंडली हाल में ले जाते थे। वहाँ वह अपना काम करते थे और पुरुष मंडली जनों से मिलते थे। उनका काम समाप्त होने के बाद, उन्हें लिफ्ट चेयर (उठाकर ले जाने वाली कुर्सी) में उनके कमरे में ले जाया जाता था। जब बाबा मंडली हाल में होते थे, वह एक गद्दियों वाली कुर्सी (Cushioned chair) में बैठते थे और जब वह अपने कमरे में वापस जाना चाहते थे, फ्रांसिस को उन्हें बाँह पकड़कर, सहारा देते हुये, लिफ्ट चेयर तक जाने में उनकी सहायता करनी पड़ती थी।

''विश्वव्यापी (universal) कष्ट से उनका शरीर इतना अधिक कमज़ोर हो गया था कि लिफ्ट चेयर तक की थोड़ी सी दूरी तक भी वह चल नहीं पाते थे। अक्सर फ्रांसिस और एरच दोनों मिलकर, एक कुर्सी से दूसरी कुर्सी तक जाने में बाबा की सहायता करते थे। एक अवसर पर बाबा ने ताली बजाकर संकेत किया, 'मैं कमज़ोरी अनुभव कर रहा हूँ। मुझे मेरे कमरे में ले चलो।'

''फ्रांसिस मदद करने के लिये उठे। जैसे ही वह उठे, उनके मन में एक विचार आया, 'बाबा ईश्वर हैं। ईश्वर इतना कमज़ोर कैसे हो सकता है?' जैसे ही फ्रांसिस और एरच ने बाबा की बाँह को छुआ, बाबा ने अपनी दो तर्जनी उँगलियों से हल्का सा झटका दिया, मात्र हल्का सा झटका। फ्रांसिस और एरच इतनी जोर से पीछे गिरे कि वे मंडली हाल के बीच में जाकर जमीन पर गिरे। फ्रांसिस चकित थे और उन्हें गहरा आघात लगा। सबका यही हाल था। फ्रांसिस ने व्याकुलता के साथ बाबा को देखा और कहा, 'बाबा आप बहुत ताकतवर हैं' बाबा फ्रांसिस की ओर देखकर मुस्कुराये और संकेत किया, 'तुम यह बात कभी मत भूलना।' फिर, अगले ही क्षण बाबा वैसे ही कमज़ोर दिखने लगे और उन्होंने फ्रांसिस को संकेत किया, 'मुझे कमज़ोरी लग रही हैं, इसलिये अब आओ और मेरी मदद करो।''

मनी ने यह कहते हुये, अपनी बात समाप्त की, ''यह बात कभी मत भूलना कि वह ईश्वर हैं, सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो सम्पूर्ण सृष्टि का पालन करता है। अपने दुर्बल और चंचल मनों में इस बारे में संदेह न होने दो।''

23. खोया हुआ अवसर

कृष्णा जी नामक एक व्यक्ति के बारे में, जो थोड़े समय बाबा के साथ रहे थे, मेरे मन में एक प्रश्न बहुत समय से था। जो लोग नहीं जानते हैं, उनके लिये मैं बता दूँ कि कृष्णा जी एक परेशानी पैदा करने वाला व्यक्ति था जो शराब पीता था और अक्सर औरतों के पीछे लगा रहता था। उपासनी महाराज के शरीर छोड़ने के पश्चात्, गोदावरी माई के संरक्षण में रहने वाली महिला शिष्याओं (कन्याओं) को परेशान करने के इरादे से वह साकोरी आश्रम में आ गया। साकोरी में समस्यायें पैदा करने से उसको रोकने के लिये, बाबा ने उसे मेहेराबाद बुलाया। मैंने यह बात मंडली से सुनी।

बाबा उसके साथ कठोर व्यवहार (Strict) नहीं करते थे जैसा कि वह शेष मंडली के साथ करते थे। वास्तव में, बाबा उसके साथ राजसी व्यवहार करते थे और उसे हर तरह से संतुष्ट रखते थे। यहाँ तक कि उन्होंने भाऊजी को उसका व्यक्तिगत सहायक नियुक्त कर दिया। कृष्णा जी अथवा उसके व्यवहार को कोई भी मंडली जन सहन नहीं कर पाता था। तो भी, बाबा की आज्ञा का पालन करते हुये, भाऊजी ने कृष्णा जी की सेवा की।

कृष्णा जी बाबा के सामान्य निर्देश का पालन करने से ही इन्कार नहीं करते थे बल्कि बाबा द्वारा दी गई संयम की चेतावनी के बावजूद वह औरतों से संबंध बनाये रहे। एक अवसर पर, जब वह मेहेराज़ाद में रह रहा था, काका बारिया इतने अधिक परेशान हो गये कि उन्होंने बाबा को इस आशय का एक पत्र लिखा कि अगर कृष्णा जी मेहेराज़ाद में रहेंगे तो वह (काका) मेहेराज़ाद को छोड़कर चले जायेंगे। जब बाबा को यह पत्र मिला संयोगवश गुस्ताद जी उनके पास थे। बाबा जानते थे कि गुस्तादजी कृष्णा जी को नापसन्द करते थे और उन्हें कृष्णा जी असहनीय लगते थे। इस लिये, थोड़ा मज़ा लेने के लिये, बाबा ने गुस्तादजी को बताया, ''काका ने पत्र में यह भी लिखा है कि कृष्णा जी ने तुम्हारा सन्दूक तोड़ दिया है और तुम्हारे कपड़े पहनना शुरू कर दिया है।'' इससे गुस्तादजी इतने अधिक

परेशान हो गये कि उन्होंने बाबा से कहा कि वह उनके कपड़े जला दें क्योंकि वह उन्हें फिर कभी नहीं पहनेंगे।

बाबा हँस रहे थे और दूसरे मंडली जनों के साथ मज़ा ले रहे थे। लेकिन, थोड़े समय बाद, उन्होंने एक मंडली जन से कहा कि वह जाकर गुस्तादजी को सच बता दे क्योंकि गुस्तादजी दिल के मरीज़ थे और उन्हें दिल का दौरा पड़ सकता था। बाबा ने कृष्णा जी को इस ढँग से उस समय तक रखा जब तक साकोरी आश्रम सुरक्षित नहीं हो गया। उसके बाद बाबा ने भाऊजी को निर्देश दिया कि वह कृष्णा जी का काम करना बन्द कर दें ओर उनके साथ रूखेपन से पेश आयें। कृष्णा जी, जो दूसरों से शाही व्यवहार प्राप्त करने के अभ्यस्त हो गये थे, इस कठोरता को सहन नहीं कर सके जिसके लिये बाबा उसे विवश कर रहे थे और वहाँ से चले गये। इस समय कृष्णा जी अमरीका में हैं और अपने आपको सद्‌गुरु घोषित करते हैं।

जब मैंने कृष्णा जी के जीवन की यह कहानी सुनी, मेरे मन में कई सन्देह पूर्ण विचार आये। इसलिये मैंने भाऊजी से पूछा, ''इतने सालों से यहाँ रहते हुये, बाबा की बहिन मनी, एरच, आप और शेष मंडली जनों ने मुझे यह विश्वास दिलाया है कि मेहेराबाद की इस भूमि पर रहना, मात्र एक विशेष सौभाग्य ही नहीं है बल्कि केवल वे लोग, जिनका अपने पिछले जन्म में बाबा से संबंध था, यहाँ रह सकते थे। ऐसी आत्मायें, अपने प्रयत्न और अच्छे कर्म के द्वारा, अपने जीवनों में ऐसे अवसरों को आमंत्रित करती थीं। कृष्णा जी सभी प्रकार के बुरे कार्यो में लगे रहते थे, जैसे कि औरतों के साथ समागम, शराब पीना और बाबा की आज्ञाओं का पालन न करना। मैं समझता हूँ कि ये सभी कार्य बंधन पैदा करते और कष्ट को आमंत्रित करते हैं। मैं आपसे केवल यह जानना चाहता हूँ कि कृष्णा जी काफी समय तक बाबा के साथ रहे। दूसरी योग्य आत्माओं की तुलना में, जिन्हें यह अवसर नहीं दिया गया, क्या यह उसके अच्छे कर्म और पिछले जन्मों के प्रयत्नों का परिणाम था कि ऐसा अच्छा अवसर उसे दिया गया?

भाऊजी ने तुरन्त उत्तर दिया, ''केवल उन लोगों को, जिनका उनके (बाबा के) साथ अपने पिछले जन्मों में संबंध होता हैं, उनके अच्छे कर्म और प्रयत्न के द्वारा, इस प्रकार का अवसर दिया जाता है। कृष्णाजी को पिछले जन्मों के अच्छे कर्म और प्रयत्न के कारण यह अवसर दिया गया था। लेकिन इस जीवन में आगे आध्यात्मिक उन्नति के लिये इस अवसर का अच्छा प्रयोग करने के बजाय, उसने अपनी स्थूल जगत की इच्छाओं की पूर्ति के लिये इसका प्रयोग करना शुरू कर दिया। उसने बाबा के और अधिक निकट आने और अपनी इच्छाओं से और अधिक दूर जाने का एक आश्चर्य जनक अवसर खो दिया। अपनी इच्छाओं की पूर्ति में लगे रहने और सद्‌गुरु होने का ढोंग करने के द्वारा उसने अपने लिये इतने अधिक बुरे कर्म एकत्र कर लिये हैं कि अपने अगले जन्म में, इन नकारात्मक (negative) संस्कारों को मिटाने के लिये उसे भयंकर कष्ट भोगना पड़ेगा। अगर उसने शेष मंडली की तरह, इस अवसर से लाभ उठाया होता, तो उसकी भी आध्यात्मिक उन्नति हुई होती और वह बाबा के और जीवन में यथार्थ लक्ष्य के और अधिक निकट आ गया होता।''

24. कुचलने की क्रिया

एक बार भाऊजी के पास एक बाबा प्रेमी के बारे में शिकायत आई जो मेहेराबाद में किसी को ठग रहा था। भाऊजी थोड़े परेशान लगे क्योंकि यह विशेष बाबा प्रेमी ऐसे मामलों से अक्सर जुड़ा रहता था। मैंने भाऊजी से पूछा, ''मैं जानना चाहता हूँ कि बाबा की समाधि पर, जो सत्य के केन्द्र का प्रतिनिधित्व करती है, इतना अधिक असत्य क्यों रहता है। जो बाबा प्रेमी समाधि के इतने पास रहते हैं, इस तरह के क्रियाकलापों में कैसे लगे रहते हैं?''

भाऊजी ने उत्तर दिया, ''अगर चट्टान पर बीज बोया जाये तो क्या वह उग सकता है? अगर वहाँ पर पानी है तो बीज अंकुरित होगा, लेकिन शीघ्र ही मर जायेगा। यह उगकर पूरा पेड़ नहीं बन सकता। पेड़ के पूरी तरह से उगने के लिये आवश्यक है कि चट्टानों को तोड़ कर, कुचलकर धूल बना दिया जाये ताकि वे पेड़ों के उगने के लिये मिट्टी बन जायें। यह

सब मेहेराबाद में हो रहा है क्योंकि यहाँ पर बहुत सी चट्टानें हैं। यह चट्टानें उनके प्रेमियों के हृदय हैं जो धीरे धीरे कष्ट के द्वारा कुचलकर, धूल बना दिये जायेंगे। जब ऐसा होता है तो उनके हृदयों में प्रेम का बीज उगने लगेगा और किसी दिन, कई जन्मों के बाद, यह एक पूरा पेड़ बन जायेगा।''

25. मुख्य कार्य बाबा को प्रसन्न करना है

वर्ष के कुछ विशेष समयों में मेहेराबाद में काम की गति धीमी हो जाती थी। तो भी, उत्सवों के समय के आसपास अन्तेवासियों के लिये कार्य बहुत अधिक और तनावपूर्ण होता था। अन्तेवासियों पर पड़ने वाले काम के अतिरिक्त बोझ के कारण उनमें अक्सर रूखा व्यवहार, आपस में मुठभेड़ और छोटी–छोटी लड़ाइयाँ हो जातीं थीं। ऐसे क्षणों में मंड़ली उन्हें समझाती थी कि कोई भी परिस्थिति कितनी भी कष्टकारी हो, अगर हम कार्य करते समय यह याद रखें कि मुख्य कार्य बाबा को प्रसन्न करना है, तो इससे हमें हर परिस्थिति में एक दूसरे से अधिक प्रेम करने में सहायता मिलेगी। इसलिये, काम करते समय, हर समय यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि बाबा किस बात से प्रसन्न होंगे।

यह समझने में हमारी सहायता करने के लिये कि ऐसी ही परिस्थितियों का सामना उन्होंने किस तरह किया, मनी अपने अनुभव अन्तेवासियों को बताया करतीं थीं। एक बार उन्होंने हमें बताया, ''बाबा के शरीर छोड़ने के पश्चात् शुरू के दिनों में हमारे पास ट्रस्ट का काम अधिक नहीं था और हम उन प्रेमियों के साथ, जो तीर्थयात्रियों की तरह हमसे मिलने आते थे, अपना अधिकांश समय बिताया करते थे। यहाँ तक कि आफ़िस में भी तीर्थयात्री हमसे मिलने आते थे। और उनके पास बैठने, उनसे बातें करने और कभी–कभी उनमें से किसी का गाना सुनने का हमारे पास पर्याप्त समय होता था। लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता गया, मेहेराबाद आने वाले तीर्थयात्रियों की बढ़ती हुई संख्या के ठहरने की व्यवस्था करने के लिये, ट्रस्ट बढ़ने लगा और साथ ही ट्रस्ट का काम भी बढ़ने लगा।

''इसलिये आफ़िस के समय हमसे मिलने के लिये तीर्थयात्रियों के आने पर हमें रोक लगानी पड़ी। अक्सर कोई तीर्थ यात्री मिलना चाहता था और मैं उसे चाय के समय, जो कि कम होता था, आने की अनुमति दे देती थी। कुछ लोग गाना चाहते थे और मैं प्यार से प्रार्थना करती थी कि वह मेहेराज़ाद में गायें क्योंकि हम व्यस्त थे। यहाँ तक कि वे मुझे याद भी दिलाते थे, 'लेकिन आपने पाँच साल पहले मुझे आफ़िस में आपको गाना सुनाने की अनुमति दी थी।' और मैं उन्हें प्रेमपूर्वक बताती थी, 'लेकिन वह पाँच साल पहले था। घटनाक्रम की गति बहुत तेजी से बदल रही है।'''

मनी ने आगे कहना ज़ारी रखा, ''एक बार एक विशेष रूप से व्यस्त दिन को, जब मुझे साँस लेने की भी फ़ुर्सत नहीं थी, मैं किसी काम से ट्रस्ट के अहाते में स्थित पैट के आफ़िस गई थी। जब मैं उसके आफ़िस से बाहर आई, मेरा मन काम में इतना अधिक डूबा हुआ था कि मैं चल नहीं रही थी बल्कि लगभग दौड़ रही थी। पैट के आफ़िस के सामने, एक लकड़ी की बेंच पर बैठी हुई एक महिला तीर्थयात्री अपने कान में हेड फ़ोन लगाये हुये वॉकमैन (Walkman) से गाना सुन रही थी। जैसे ही मैं अपने आफ़िस की ओर तेज़ी से जाते समय, उसके पास से निकली, उसने मुझे पुकारा और कहा, 'मनी, क्या आप मुझे कुछ समय दे सकती हैं?' इसके साथ ही, उसने अपने कान से हेडफ़ोन खींचकर निकाले और मेरी ओर बढ़ा दिये। मैं आश्चर्य चकित हो गई और मैंने मन में दृढ़तापूर्वक कहा, 'बाबा, आज नहीं। मेरे पास बिल्कुल समय नहीं है।' लेकिन जब मैंने उसकी ओर देखा, तो जिस प्रेम और तड़प के साथ वह चाहती थी कि मैं वह गाना सुनूँ, मेरा हृदय पिघल गया।

''थोड़ा सा अतिरिक्त प्रयास करके, मैं उसके पास मुस्कुराते हुये पहुँची क्योंकि मैं जानती थी कि बाबा इससे प्रसन्न होंगे। मैंने उससे हेडफोन लेकर अपने कान में लगा लिया। इसके बाद जो हुआ वह एक बहुत ही यादगार क्षण था जिसकी याद मैंने अभी तक सँजो कर रखी है। संगीत के स्वरों की मधुरता आपको बर्फ से ढँके हुये पहाड़ की चोटी पर गिरते हुये बर्फ के टुकड़ों की याद दिलाती थी और उस क्षण मैं अपने कार्य

के व्यस्त वातावरण से बर्फ से ढँके हुये पहाड़ की चोटी पर गिरती हुई बर्फ के गिरने का आनन्द लेती हुई, पूर्णरूप से गंभीर वातावरण में पहुँच गई। यह कुछ क्षण रहा और इस दौरान मेरे मन ने पूर्ण विश्राम और ताज़गी का अनुभव किया। जब यह खत्म हो गया, मैंने तीर्थयात्री महिला को और बाबा को भी, उस आश्चर्य जनक, अप्रत्याशित विश्राम के लिये, जो उन्होंने मुझे दिया, धन्यवाद दिया।''

मनी ने आगे कहा, ''तुम चाहे कितने भी व्यस्त हो, एक अजनबी के प्रति प्रेम प्रकट करने का प्रयत्न करो, उसके लिये समय निकालो, किसी अजनबी को ऐसे ही मत जाने दो क्योंकि तुम यह कभी नहीं जान सकते, हो सकता है उस अजनबी के रूप में बाबा हों जो तुम्हारी सहायता करने आये हों। याद रखो कि मुख्य कार्य, तुम जो भी काम करते हो, उससे प्रियतम बाबा को प्रसन्न करना हो। काम चाहे कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो यह बात अधिक महत्वपूर्ण है कि तुम उसे करते हुये बाबा को प्रसन्न करते हो। जिस समय काम करते हो, याद रखो कि यह बाबा की प्रसन्नता है जिसका महत्व है।''

26. परम सत्य

एक बार मैं ट्रस्ट ऑफ़िस में काम कर रहा था जब मेहेराबाद का एक ट्रस्टी (धरोहर रखने वाला) उत्तेजित अवस्था में मनी के पास आया। ट्रस्टी बहुत परेशान था क्योंकि कई दिन पहले कोई घटना हुई थी जिसके बारे में उसे किसी ने भी सूचना नहीं दी थी। वह ट्रस्टी था और सबका मुखिया (incharge) माना जाता था लेकिन किसी अनोखे और व्याख्या न करने लायक कारण से, जो मेहेराबाद में अक्सर होता था, उसे सूचना नहीं दी गई थी। इसलिये वह इस बारे में मनी से शिकायत करने के लिये आया था।

मनी ने धैर्यपूर्वक उसकी बात सुनी और जब वह इस बारे में अपना सारा दुःख बता चुका कि उसके साथ कितना बुरा व्यवहार किया जाता था, मनी ने उससे कोमलता से कहा, ''हालांकि मैं अध्यक्ष (Chairman) हूँ फिर भी इस बारे में मैं भी अभी सुन रही हूँ। ऐसा मेरे साथ भी होता है। तुम

इसे व्यक्तिगत रूप से मत लो। लोग इतने अधिक व्यस्त हैं, वे बाबा कार्य की अपनी धारणाओं में पहले से ही इतने अधिक लीन हैं कि इस प्रकार की चूक अक्सर हो जाती है। बाबा के इस वातावरण में, संसार में रहने वाले लोगों की अपेक्षा, ऐसी बातें अधिक और बार–बार होती हैं।

''बाबा हर एक आत्मा पर कार्य कर रहे हैं और जिस गति से वह यह कर रहे हैं, वह व्याकुल करने वाली हो सकती है। यही कारण है कि लोग ऐसी बातों में चूक जाते हैं। तुम्हें ऐसी बातों की उपेक्षा करनी चाहिये और उन्हें दिल से नहीं लगाना चाहिये। इन बातों को छोड़ना और भूलना सीखो। बाबा की याद करो और इस आश्चर्य जनक अवसर का लाभ उठाओ जो उन्होंने तुम्हें दिया है। उनका गुणगान करके उनकी याद करो, अथवा उनकी दया, कृपा और दूसरे दैवी गुणों की याद करो। याद करो कि उन्होंने हमारे लिये किस प्रकार कष्ट सहा । ऐसी बातें याद करने और उनके बारे में बात करने लायक हैं। जब तुम ऐसा करते हो तुम उनका काम करते हुये बाबा को प्रसन्न करते हो।''

जब मनी की बात समाप्त हुई, ट्रस्टी शान्त हो गया था और वह चला गया। क्योंकि मैं आफ़िस में पास ही था, मैंने सारी बातचीत सुनी थी। जब मनी ने ट्रस्टी से कहा कि वह इस स्थिति के बारे में ट्रस्टी से ही सुन रहीं थीं, तो मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि मैंने स्वयं इस खास घटना के बारे में मेहेराज़ाद में संबंधित लोगों को व्यक्तिगत रूप से सूचना दी थी। मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि किसी ने भी मनी को यह सूचना नहीं दी क्योंकि मेहेराज़ाद एक छोटा और अंतरंग (intimate) स्थान था, इसलिये ऐसी भूलें बहुत कम होतीं थीं। मैंने मनी के पास जाकर उनसे कहा, ''मुझे आश्चर्य है कि आपको यह बात किसी ने भी पहले नहीं बताई क्योंकि मैंने स्वयं व्यक्तिगत रूप से यह बात मेहेराज़ाद में संबंधित लोगों को बताई थी और मेहेराज़ाद में हर व्यक्ति इसे जानता हुआ प्रतीत होता है। मनी ने मुस्कुराहट के साथ उत्तर दिया, ''हाँ, मुझे कई दिन पहले सूचना मिल गई थी।''

मैं उनकी विरोधी बातों से भ्रमित हो गया और उनसे कहा, ''लेकिन आपने अभी–अभी ट्रस्टी से कहा कि आप इस बारे में अभी–अभी सुन रहीं

थीं।'' मनी ने बहुत ही शरारती ढँग से पुनः उत्तर दिया, ''हाँ, यह सही है। मैं इस बारे में सुन रही थी जब वह बता रहा था और मैंने उसको वही बताया। जो मैंने उसे नहीं बताया वह यह है कि मैं इसके बारे में कई दिन पहले भी सुन चुकी थी।''

मैं मनी की बुद्धिमत्ता पर हँसा और मेरी यह समझ में आ गया कि बाबा के साथ रहने पर ये लोग यही करते थे। मनी ने मुझसे बहुत प्रेमपूर्वक कहा, ''मैंने यह सामंजस्य बनाये रखने के लिये किया। तुमने देखा कि ट्रस्टी किस तरह तुरन्त शान्त हो गया। बाबा के साथ हमारे जीवन में वह चाहते थे कि हम ऐसा ही करें। वह चाहते थे कि हम हर क़ीमत पर सामंजस्य बनाये रहें। जब मंडली जन, जो उनके साथ रहते थे, झगड़ों में पड़ते थे, बाबा यह कभी पसन्द नहीं करते थे। वह हमें डाँटते थे और अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करते थे। वह हमें निरन्तर याद दिलाते थे कि हम यहाँ पर उन्हें प्रसन्न करने के लिये थे और अगर हम ऐसा करने के लिये वास्तव में गंभीर थे, तब हमें अपने अहंकार, अपनी पीड़ा को निगलना होगा और सभी परिस्थितियों में अपने आपको मिटाना और एक दूसरे से प्रेम करना सीखना होगा।

''अगर कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ रूखा व्यवहार करता और तुम्हें चोट पहुँचाता था, तो बाबा चाहते थे कि हम उसे और अधिक प्यार करें, ऐसे लोगों को अपने आपको और अधिक दें। अगर हम यह करते थे तो बाबा बहुत प्रसन्न होते थे। वह ऐसी आत्माओं के बारे में एक माँ के गर्व के साथ बात करते थे, उस माँ की, जो बच्चे द्वारा सही कार्य करने पर खुश होती है। हमें निरन्तर इसी बात का प्रयत्न करना चाहिये। बाबा के साथ रहने का अर्थ है, हर समय उनको प्रसन्न करना, उनकी प्रसन्नता के प्रति निरंतर सचेत रहना। यही सबसे अधिक परम सत्य है जिसे हम अपने प्रतिदिन के जीवन में आचरण में ला सकते हैं।''

27. विश्वासघात तुम्हें ईश्वर तक ले जाता है

प्रारम्भिक वर्षो में, जब भाऊजी ट्रस्ट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (Chief Functioning Officer) थे, ट्रस्ट के सारे कामों का उत्तरदायित्व

उन पर था। वह तीर्थयात्रियों को ट्रस्ट द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं की व्यवस्था ही नहीं करते थे बल्कि ट्रस्ट के काम के सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरण का निरीक्षण भी करते थे। भाऊजी द्वारा किये गये कार्य की अधिकता और महत्व, और, इसे करने में व्यतीत होने वाला थकान पूर्ण लम्बा समय दोनों ही ऐसी बातें थीं जिनका एहसास केवल उनके सहायकों को था। उन दिनों भाऊजी काम की अधिकता के कारण बहुत क्रोधित रहते थे और सहायकों को उनके शब्दों रूपी हथौड़े के आघात को सहना पड़ता था।

संयोगवश, इसी समय के आसपास मैं भाऊजी के सहायक के रूप में कार्य कर रहा था और उनके शब्दों रूपी हथौड़े के आघात को मुझे लगभग रोज सहना पड़ता था। यह शारीरिक और मानसिक रूप से बहुत अधिक थकाने वाला होता था और हमें सान्त्वना और धैर्य प्राप्त करने के लिये अक्सर एरच के पास जाना पड़ता था। एरच एक दोस्त की तरह हमें सान्त्वना देते थे। वह हमें दर्द दूर करने वाला मरहम देते थे जो यह सब सहन करने की शक्ति देने के लिये हमारे लिये बहुत ज़रूरी था। वह हमें उदाहरण देकर बताते थे कि बाबा के साथ रहने पर ऐसी बातें और अधिक प्रचण्डता के साथ होतीं थीं, और इसका उद्देश्य बाबा के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने में हमारी सहायता करना होता था। ऐसी परिस्थितियों का सामना करने के उपाय वह हमें बताते थे और यह भी बताते थे कि भाऊजी के शब्दों के प्रहारों से हम किस प्रकार बचें और सम्पूर्ण तनावपूर्ण वातावरण को हँसी मज़ाक से किस तरह हल्का बनायें। वह हमेशा हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर खींचते थे कि यही असली जीवन था जिसका अनुभव हम बाबा के साथ करते थे।

तो भी, कई अवसरों पर स्वयं एरच अपने निकट के अन्तेवासियों पर शब्दों के हथौड़े चलाते थे। लेकिन वह यह जिस तरह करते थे, वह अति सूक्ष्म और बहुत अधिक पीड़ा दायक होता था। जब एरच ऐसा करते थे तो वह व्यक्ति अनुभव करता था कि उसके साथ विश्वासघात किया गया था। इसका मुख्य कारण यह था कि वह व्यक्ति एरच को अपना दोस्त समझने और उनसे सान्त्वना प्राप्त करने की आशा रखने का अभ्यस्त हो चुका होता था। अगर कोई व्यक्ति एरच के पास बार बार सान्त्वना प्राप्त

करने के लिये जाता था तो एरच इसे समझ जाते थे और सान्त्वना देने की जगह, वह उस परिस्थिति का उपयोग उस व्यक्ति को शब्दों के हथौड़े से और अधिक आघात पहुँचाने में करते थे। इस प्रकार का अनुभव उस व्यक्ति को मानसिक रूप से तबाह कर देता था, विशेष रूप से जब वह व्यक्ति देखता था कि किसी से सान्त्वना प्राप्त करने की अन्तिम आशा भी लुप्त हो गई है और इस प्रकार वह व्यक्ति सान्त्वना प्राप्त करने के लिये बाबा और एकमात्र बाबा की ओर मुड़ने के लिये विवश हो जाता था।

मैं जो कुछ कहने की कोशिश कर रहा हूँ, उस पर निम्नलिखित कहानी से थोड़ा प्रकाश पड़ेगा। एक बार एक लम्बे समय से अन्तेवासी पर भाऊजी अपने शब्दों के हथौड़े से आघात किया करते थे। भाऊजी कई दिनों तक ऐसा करते रहते थे और उस व्यक्ति को पूरे दिन उनकी डाँट सुननी पड़ती थी। हालांकि बौद्धिक स्तर पर हम जानते थे कि यह एक वरदान था लेकिन प्रतिदिन इसका अनुभव करना घोर पीड़ा दायक था। इसलिये यह खास अन्तेवासी सान्त्वना के लिये एरच के पास जाने लगा। वह एरच के पास बैठकर उस परिस्थिति के बारे में अपना दिल खोलकर बताता था जिससे भाऊजी नाराज हो गये थे। एरच कुछ दिनों तक उसे सान्त्वना देते और उसका मार्ग दर्शन करते रहे। फिर एक दिन, जब एरच भाऊजी के साथ शाम के समय बैठे हुये थे, उन्होंने कुछ ऐसा किया जिससे सभी अन्तेवासियों को, जो उस समय वहाँ पर थे, गहरा धक्का लगा।

मेहेराज़ाद जाने से पहले, एरच हमेशा भाऊजी से मिलने जाया करते थे। इस विशेष अवसर पर भाऊजी उस अन्तेवासी के व्यवहार की शिकायत करते रहे। भाऊजी ने कई बार एरच से इस बारे में शिकायत की थी और अन्तेवासियों को इसे भाऊजी का स्वभाव समझकर, इसकी आदत पड़ गई थी। सामान्यतया एरच भी चुपचाप सुनकर चले जाते थे, लेकिन इस विशेष अवसर पर एरच ने भाऊजी को उस अन्तेवासी की सारी गुप्त बातें बता दीं। अन्तेवासी ने एरच पर विश्वास होने के कारण सब बातें बताईं थीं लेकिन अब एरच भाऊजी से वे सभी बातें खुले आम कह रहे थे जो उस अन्तेवासी ने परिस्थिति के बारे में एरच को बताईं थीं।

जिस समय यह हुआ, मैं वहाँ बैठा हुआ था। मुझे इससे सदमा लगा और मैं मूक हो गया। मैंने देखा कि उसका चेहरा पूरी तरह से उजड़ गया था। मुझे नहीं मालूम था कि इसका क्या मतलब था क्योंकि एरच ने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। रात के भोजन के समय जब हम सब अन्तेवासी एक साथ बैठे हुये थे, इस अन्तेवासी ने अपने दिल की बात मुझे बताते हुये कहा कि वह बहुत अधिक उजड़ा अनुभव कर रहा था क्योंकि वह अनुभव करता था कि एरच ने उसके विश्वास को धोखा दिया था। मैं जानता था कि वह कैसा अनुभव कर रहा था क्योंकि मुझे भी गहरा सदमा पहुँचा था और मैं अभी तक इससे उबर नहीं पाया था। इसलिये मैंने उसके पास जाकर उसे गले लगाया और उसे याद दिलाया कि बाबा के साथ जीवन इसी प्रकार का था और हम यहाँ पर उसी अनुभव के लिये आये थे। मैंने उसे सान्त्वना देने की कोशिश की लेकिन मैं स्वयं बहुत अधिक व्याकुल था।

कुछ हफ़्तों के पश्चात्, मुझे एरच से इस घटना के बारे में बात करने का अवसर मिला। एरच ने इस बात पर ध्यान दिया था कि वह अन्तेवासी उनके पास बहुत समय से नहीं आया था। उन्होंने उसके बारे में पूछा और मैंने बिना कुछ सोचे समझे एरच से वह सब कुछ कह दिया जो मेरे मन में था। मैंने कहा, "मेरा अन्दाज़ है कि वह आपसे बच रहा है। वह अनुभव करता है कि आपने जो कुछ किया वह विश्वासघात है और इस सम्पूर्ण अनुभव को पचाने के लिये और आपके सामने आने से पहले, पहले जैसे सामान्य व्यवहार की स्थिति में आने के लिये, उसे अभी भी थोड़े समय की आवश्यकता है।"

एरच ने आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा, "लेकिन मैंने क्या किया?" मैंने एरच को सम्पूर्ण घटना का विवरण दिया और टिप्पणी की, "हम सबको, जो वहाँ पर थे, यह विश्वासघात जैसा ही लगा और मैं ईमानदारी से कहता हूँ कि मैंने भी इसी तरह से अनुभव किया।" एरच ने थोड़ी देर रुककर बहुत धीरे से कहा, "इस तरह अनुभव करना अच्छा है।"

व्याकुलता का अनुभव करते हुये, मैंने उनसे पूछा, "इसमें क्या अच्छा है?" एरच ने प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुये, बहुत, बहुत धीरे से उत्तर दिया, "विश्वासघात एक आवश्यक अनुभव है और यह मिथ्यापन से दूर होने और सत्य, ईश्वर की ओर मुड़ने में व्यक्ति की सहायता करता है।

लोग परिवार जनों और मित्रों से मदद मिलने का विश्वास क्यों करते हैं? हमारे सर्व प्रथम चुनाव, हमारे सबसे पहले विकल्प के रूप में हम उनसे (बाबा से) मदद क्यों नहीं माँगते हैं? हम ऐसा कभी नहीं करते हैं क्योंकि हमारे संस्कार ऐसे हैं कि हम हमेशा मिथ्यापन का ही सहारा लेते हैं। हम दोस्तों और परिवार के लोगों से सहायता की आशा करते हैं लेकिन उस एक से नहीं जो प्रारम्भ से अन्त तक हमेशा हमारे साथ है।

''हम ऐसा क्यों करते हैं? यह मिथ्यापन, माया के कारण है। जब हम इस मिथ्यापन, माया से बार बार धोखा खाते हैं, जब हमारा परिवार, मित्र और निकट संबंधी हमें बार बार धोखा देते हैं और हमारी आशा के अनुरूप जीने में सफल नहीं होते हैं, तब हम इस मिथ्यापन से दूर हटना शुरू करते हैं। ज़िन्दगी में होने वाले विश्वासघातों के कारण हम मिथ्यापन से दूर हटना और सत्य की ओर मुड़ना शुरू करते है। अगर तुम अपने प्रथम चुनाव के रूप में, बल्कि यथार्थ में तुम्हारे एक मात्र चुनाव के रूप में, सभी परिस्थितियों में, केवल उन पर निर्भर करते तब तुम कभी भी विश्वासघात का अनुभव नहीं करते। झूठा प्रेम धोखा देता है जब कि सच्चा प्रेम तुम्हारी यात्रा के अन्त तक तुम्हें सहारा देता है, जब तक तुम उस सच्चे प्रेम, सत्य में लीन नहीं हो जाते। यह इसी प्रकार होता है।''

28. मेहेरबाबा का मार्ग

अरनवाज़ दादाचाँजी और उसके परिवार का बहुत ही शुरू के दिनों से मेहेरबाबा के साथ निकट संबंध रहा है। यद्यपि वह संसार में रहती थी और नरीमन दादाचाँजी से उसने विवाह किया था, वह और नरीमन बाबा के अति घनिष्ठ लोगों में से थे जिन्हें लम्बे समय तक बाबा के साथ रहने और उनकी सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ था। बम्बई जाने पर बाबा कई बार उनके घर आशियाना में ठहरे।

बाबा अक्सर अपनी प्रियतमा, मेहेरा से अरनवाज़ के संबंध के बारे में टिप्पणी किया करते थे। अरनवाज़ भी स्वाभाविक रूप से मेहेरा के प्रति आकर्षण का अनुभव करती थी और बाबा की इच्छा के अनुसार मेहेरा को

प्रसन्न करने का भरसक प्रयत्न करती थी। उसका सम्पूर्ण जीवन बाबा को पूरी तरह से भेंट और समर्पित था। उसने बहुत कष्ट सहा लेकिन बाबा की मर्ज़ी के रूप में उसने इसे प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया। अपने कष्ट के बावजूद, वह तीर्थयात्रियों की, जो उसकी सलाह, उसके मार्गदर्शन के लिये उसके पास आते थे, हमेशा मदद करती थी और बीमारी के कारण बिस्तर से उठने में असमर्थ होने और अपने खराब स्वास्थ्य के बावजूद, वह अपने अन्तिम समय तक उन्हें सलाह और मार्गदर्शन देती रही।

जब मैं सर्व प्रथम बाबा के पास आया, मुझे अपने परिवार, विशेष रूप से अपनी माँ की ओर से बहुत अधिक विरोध का सामना करना पड़ा। मेरी समुद्रीय अभियन्ता (Marine-Engineer) की अत्यंत लाभदायक जीवन वृत्ति थी और, मेरी माँ आशा करती थी कि मैं एक सफल सांसारिक जीवन व्यतीत करूँ और शादी करके बच्चे पैदा करूँ और अपना परिवार बढ़ाऊँ। तो भी, जीवन में मेरा लक्ष्य, उनके लक्ष्य से भिन्न था। जब मंडली जन पूछते थे कि क्या मेरे और मेरी माँ के बीच परस्पर मतभेद था; मैं मसखरेपन से उत्तर देता था, ''हाँ, और इससे बचा भी नहीं जा सकता क्योंकि हम दोनों एक ही चीज़ चाहते हैं।''

आश्चर्य के साथ वे लोग मुझसे पूछते थे, ''अगर तुम दोनों एक ही चीज चाहते हो तो इसमें परस्पर मतभेद और कलह की क्या बात है?'' उनकी उत्सुकता जग जाने पर, वे आगे पूछते थे, ''वह कौन सी चीज़ है जिसे तुम दोनों चाहते हो? हमें बताओ।''

अपने शब्दों पर जोर देते हुये मैं बहुत धीरे से उत्तर देता था, ''हम दोनों मेरा जीवन जीना चाहते हैं। मैं अपना जीवन जीना चाहता हूँ और वह मेरा जीवन जीना चाहती हैं और यही कारण है कि हम दोनों में परस्पर मतभेद है, क्योंकि मैं बाबा को चाहता हूँ और वह संसार को चाहती हैं।''

इस बात पर मंडली जन हँसते थे। एक बार, जब अरनवाज़ ने मुझसे इस विषय में पूछा, मैंने उसे वही उत्तर दिया। वह हँसी लेकिन मुझसे बहुत कोमलता से पूछा कि इस विषय पर अपनी माँ को भावनात्मक चोट पहुँचाने के बारे में क्या मुझे अपराध बोध होता था। मैं अपनी भावनाओं के बारे में

निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता था लेकिन मैं जानता था कि कभी–कभी मुझे अपराध बोध होता था और मैं आशा के विपरीत, इस बात की आशा करता था कि मेरी माँ बिना किसी क्लेश के, मुझे मेरी खुशी प्राप्त करने की स्वतंत्रता देगी। जब मैंने अरनवाज़ से इस बात का ज़िक्र किया, उसने मुझे यह कहकर सान्त्वना दी, ''तुम मेहेरबाबा के मार्ग पर चल रहे हो। इसलिये दूसरों की भावनाओं की परवाह किये बिना, चलते रहो। तुम्हारा पहला कर्त्तव्य अपने ईश्वर के प्रति है; और जब तक तुम मेहेरबाबा के शब्दों की सत्यता का अनुसरण कर रहे हो, जीवन जी रहे हो; तब तक तुम्हें इस बात की बिल्कुल चिन्ता नहीं करना चाहिये कि तुम्हारे परिवार के लोग अथवा मित्र तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं। अगर वे तुम्हारा विरोध करने का निर्णय लेते हैं अथवा उनकी (परिवार की) आज्ञा के उल्लंघन में किये गये तुम्हारे कार्यों से भावनात्मक रूप से आहत होते हैं तो तुम अपराध की भावना से ग्रस्त न होओ, यह उनका चुनाव है। तुम उनकी चोट का कारण नहीं हो।

''अगर तुम मेहेरबाबा के शब्दों के अनुसार जीवन व्यतीत न करते हुये, कुछ गलत काम करते और तब तुम्हारे कार्यों से तुम्हारे परिवार के लोगों की भावनाओं को चोट पहुँचती, केवल तभी तुम उन्हें चोट पहुँचाने के लिये ज़िम्मेदार होते। दूसरी बातों के बारे में मत सोचो, केवल बाबा के बारे में सोचो, क्योंकि एक वही हैं जो तुम्हारी सभी समस्याओं को सुलझाने में मदद कर सकते हैं।''

अपनी बात समाप्त होने पर, अरनवाज़ ने मुझे बहुत प्रेम से गले लगाया। उसकी सलाह ने मेरे सभी अपराध बोध को दूर करने में सहायता की जिसका अनुभव मैं मेहेरबाबा के मार्ग का अनुसरण करने के अपने निर्णय के कारण शायद कर रहा था। अरनवाज़ की बात के अनुसार, हालांकि इसमें समय लगा, बाबा ने मेरे परिवार के लोगों को अपनी ओर मोड़ा।

29. बाबा का मौन

मंडली हाल में होने वाली बातचीत के दौरान एक बार एक तीर्थयात्री ने एरच से कहा, ''बाबा के कार्य का एक पहलू जिसने बाबा प्रेमियों के मनों

में बहुत अधिक वाद विवाद उत्पन्न किया है, मौन का टूटना है। अपना मौन तोड़ने के बारे में बाबा द्वारा दिये गये भिन्न–भिन्न प्रकार के कथन हैं और हम नहीं जानते हैं कि हम उनसे क्या समझें। यहाँ तक कि इस बारे में मंडली जनों के भी भिन्न–भिन्न दृष्टि कोण हैं। कुछ लोग अनुभव करते हैं कि बाबा ने अपना मौन तोड़ दिया है जब कि दूसरे लोग सोचते हैं कि उन्होंने मौन नहीं तोड़ा है। जब कभी इस विषय पर बात होती है, अन्ततः यह वाद विवाद में बदल जाती है। क्या आप बता सकते हैं कि बाबा ने, जो कि सर्वज्ञ ईश्वर हैं, इस प्रकार के वाद विवादों को उत्पन्न करने वाली परिस्थिति क्यों पैदा की?''

एरच थोड़ी देर सोचकर बोले, ''मैं नहीं जानता। उन्होंने हमें नहीं बताया और मैंने उनसे नहीं पूछा लेकिन इस विषय में मैं जो कुछ अनुभव करता हूँ, वह तुम्हें बता सकता हूँ। यह केवल मेरा विचार है। हर अवतरण में इस प्रकार का वाद विवाद उत्पन्न हुआ है। अगर तुम ईसामसीह के जीवन को लो तो जब उन्होंने घोषणा की कि स्वर्ग का राज्य पृथ्वी पर आ रहा है, वह भी इसी तरह का कार्य था जो उन्होंने किया। जैसे जैसे समय बीता, ईसामसीह ने घोषणा की कि स्वर्ग का राज्य बहुत पास था और बाद में उन्होंने यहाँ तक कहा कि स्वर्ग का राज्य लगभग यहाँ पृथ्वी पर था। दो हजार साल बीत गये हैं और ईसाई लोग अभी भी स्वर्ग के राज्य के बारे में बात करते हैं जिसे अभी भी आना है। इसलिये क्या हुआ? ईसामसीह जिस स्वर्ग के राज्य के बारे में बता रहे थे, वह कहाँ है?''

एरच ने समझाया कि ईसामसीह सांकेतिक रीति से बात कर रहे थे। ''वह स्वर्ग के जिस राज्य को, उद्धृत कर रहे थे, वह हृदय के अन्दर है। जब उन्होंने कहा कि स्वर्ग का राज्य शीघ्र ही आ रहा था, वह हृदयों की जागृति को उद्धृत कर रहे थे, ईश्वर की उपस्थिति में जिसका अनुभव करने के लिये हम तैयार हैं। ईसामसीह यही उद्धृत कर रहे थे और मैं अनुभव करता हूँ कि अपना मौन तोड़ने से मेहेरबाबा का यही तात्पर्य था। उनके मौन का टूटना प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में होगा और इसीलिये प्रकटीकरण भी हृदय में होगा मैं ऐसा ही अनुभव करता हूँ।

''बाबा ने अपने जीवन काल में अपना मौन खोलने के विषय में कई परिपत्र (Circular) जारी किये। यहाँ तक कि वह तारीखें भी दे देते थे, लेकिन वे (तारीखें) आती थीं और चली जाती थीं और कुछ नहीं होता था।

हमें कम से कम ऐसा ही दिखाई देता था। लेकिन फिर हमने पाया कि वादा तोड़ने के लिये बाबा प्रेमियों द्वारा बाबा को छोड़ने के बजाय, उनके प्रेमियों की संख्या बढ़ती चली गई। ऐसा क्यों हो रहा था? उनके द्वारा भेजे गये हर परिपत्र के साथ, बाबा प्रेमियों की संख्या अधिकाधिक बढ़ती चली गई। ऐसा क्यों था? ऐसा किस प्रकार संभव था? इसका कारण यह था कि वह इन सब लोगों के हृदयों में अपना मौन खोल रहे थे और अपने आपको उनके हृदयों में प्रकट कर रहे थे। ऐसा ही हो रहा था। मैं इस बारे में इस तरह से अनुभव करता हूँ।''

एरच ने और आगे कहा, ''जहाँ तक उनके मौन से जुड़े हुये वाद विवाद का संबंध है, इसके पीछे भी एक उद्देश्य है और वह भी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। बाबा ने अपने पीछे उन्हें याद करने की बहुत सी रीतियाँ और साधन छोड़े हैं। केवल निरंतर याद करने के द्वारा ही हम अंतिम लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। हमारे मन की इच्छाओं और कमज़ोरियों को जानते हुये और यह भी जानते हुये कि उनकी अनुपस्थिति में उनको याद करना कितना कठिन है, उनको याद करने में हमारी सहायता करने के लिये, वह (बाबा) इस प्रकार के वाद विवाद उत्पन्न करते हैं।

''हमारे मन निरंतर व्यर्थ की बक बक करते, प्रतिदिन की दिनचर्या, प्रतिदिन के कार्य और अपनी इच्छाओं को पूरा करने के बारे में सोचते रहते हैं। एक सामान्य व्यक्ति के लिये प्रतिदिन की बक बक के बीच बाबा पर अपना ध्यान केन्द्रित करना बहुत कठिन हो जाता है। ईश्वर की याद करने में ऐसे लोगों की सहायता करने के लिये, उन्होंने अपने पीछे ऐसे वाद विवादों को जान बूझकर छोड़ दिया है। वह ऐसा हर अवतरण में करते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि मन वाद विवादों से प्रेम करता है और उन्हें आसानी से स्वीकार कर लेता है। मन, अपने नकारात्मक स्वाभाविक गुण के कारण, नकारात्मक बातों को बहुत आसानी से स्वीकार कर लेता है। हम वाद विवादों और गपशप से प्रेम करते हैं। इस तरह से उनकी याद करना भी तुम्हें लक्ष्य तक ले जाता है। उनके मौन और मौन को तोड़ने से संबंधित सम्पूर्ण परिस्थिति को मैं इस ढँग से देखता हूँ।''

30. एक पैग़म्बर का अनुसरण करना

जब कभी कोई नया तीर्थयात्री मेहेराज़ाद आता था, एरच उसका पूरी तरह से ध्यान रखते थे ताकि वह अपने घर की तरह आनन्द अनुभव करे।

वह तीर्थयात्री से उसके काम के बारे में पूछते थे, वह कहाँ से आया था और उसे बाबा के बारे में किस प्रकार मालूम हुआ। इस तरह से, वह तीर्थयात्री को आगे आने और वहाँ एकत्रित प्रेमियों का हिस्सा बनने के लिये उत्साहित करते थे। एक अवसर पर, एक तीर्थयात्री ने अपनी कहानी बताते समय, अपने परिवार की पृष्ठभूमि का ज़िक्र करते हुये बताया कि वह जुरथस्त्र को मानने वाले एक पारसी परिवार से था। इससे एरच को एक घटना की याद आई जो बाबा के समय हुई थी और उन्होंने हमें निम्नलिखित कहानी सुनाई।

''एक सभ्य पारसी व्यक्ति अपने मित्रों के साथ बाबा से मिलने आया। वह बाबा प्रेमी नहीं था और केवल उत्सुकता वश आया था। उसके मित्र बाबा प्रेमी थे और क्योंकि वे बाबा के दर्शन के लिये आ रहे थे, उसने भी उनके साथ आने का निर्णय लिया। जब वे सब बाबा से मिले, तो उस दल (group) में जो बाबा प्रेमी थे, वे अपने प्रियतम से मिलकर अत्यंत प्रसन्न हुये। उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर बाबा के सामने माथा टेकते हुये, उनका अभिनन्दन किया और बाबा ने उनको गले लगाया। जब पारसी सज्जन पुरुष की बारी आई, वह बाबा के ठीक सामने खड़ा होकर बोला, 'बाबा मैं पारसी धर्म का सच्चा अनुयायी हूँ, इसलिये मैं आपके या किसी भी व्यक्ति के सामने माथा नहीं टेक सकता।' बाबा अत्यंत प्रसन्न प्रतीत हुये और चेहरे पर आश्चर्य के भाव के साथ उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, 'आज तुमसे मिलकर मैं बहुत अधिक प्रसन्न हूँ क्योंकि अन्ततः मैं एक सच्चे जरथुस्ती से मिला हूँ।'

''बाबा ने तब लोगों की ओर मुड़कर कहा, 'एक सच्चे पैग़म्बर (Prophet) के उपदेशों का अनुसरण करना एक बहुत बड़ी बात है। एक सच्चे पारसी को जुरथस्त्र के द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन हर कीमत पर करना चाहिये। उसे उनका पालन करने के लिये अपने जीवन का बलिदान करने की इच्छा रखनी चाहिये। और जुरथस्त्र के उपदेश क्या हैं जिनका पालन करने की आशा हर सच्चे जरथुस्ती से की जाती है? वे हैं अच्छे विचार, अच्छे कर्म और अच्छे वचन। यह बहुत सरल है। फिर भी इनका अनुसरण करना लगभग असंभव है क्योंकि इनका अनुसरण करने

के लिये हमें हर क्षण अच्छे विचार, अच्छे कर्म और अच्छे वचन को आचरण में लाना होगा।

"'अगर कोई व्यक्ति तुम्हें चोट या नुकसान पहुँचाये तो क्या होगा? क्या तुम ऐसे व्यक्ति के प्रति अच्छे विचार, अच्छे कर्म और अच्छे वचन को आचरण में ला सकोगे? क्या तुम ऐसे व्यक्ति के बारे में अच्छा सोचना और अच्छी बातें करना जारी रखोगे? क्या तुम ऐसे व्यक्ति के प्रति अपने व्यवहार से प्रेमपूर्ण और सहायक होना जारी रखोगे? यह असंभव है। केवल वही व्यक्ति, जो अपने मिथ्या 'मैं' के प्रति पूर्णरूप से मृत हो गया है, हर क्षण अच्छे विचार, अच्छे कर्म और अच्छे वचन का जीवन जी सकता है। यह केवल मेरी कृपा के द्वारा ही संभव है।'"

एरच ने अन्त में कहा, "हमें याद के द्वारा, उनसे गिड़गिड़ाकर भीख माँगते हुये, अगर आवश्यकता हो तो उनके चरणों पर अपने सर को फोड़कर, बाबा की कृपा प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करने के तरीक़े और साधन निरंतर खोजने चाहिये। केवल यही एकमात्र प्रयत्न है जो तुम्हें निश्चित रूप से लक्ष्य तक ले जायेगा। अज्ञानी मन के द्वारा किये गये दूसरे सभी प्रयत्न निश्चित रूप से असफल होंगे"।

31. आसक्तियों पर अपनी पकड़ को केवल छोड़ो

लोग मुझसे अक्सर पूछते हैं कि मैंने एक लाभदायक जीवनवृत्ति (नौकरी) को क्यों छोड़ा और मेहेराज़ाद में क्लेशपूर्ण जीवन जीना क्यों चुना? कठिनाइयों के बावजूद मैं वहाँ क्यों रहा? इसका मेरे पास यही उत्तर है कि मैं ईमानदारी से कहता हूँ कि मैं नहीं जानता कि मैंने ऐसा क्यों किया। मैं केवल इतना जानता हूँ कि मैंने मंडली के प्रति जिस आकर्षण का अनुभव किया, उसके कारण मंडली के द्वारा मुझे दिये गये कष्ट महत्वहीन प्रतीत हुये। मेरा अनुमान है कि मेरा हृदय मंडली जनों की उपस्थिति में अनुभव होने वाली बाबा की उपस्थिति का आनन्द ले रहा था, और मेरे लिये एकमात्र इसी आनन्द का महत्व था वरना मैं वहाँ किसी भी

तरह से रह नहीं सकता था। यह बाबा की उपस्थिति थी जिसने मुझे वहाँ रखा।

"तो भी, मुझे कुछ घटनायें अच्छी तरह याद हैं जिन्होंने नौकरी छोड़ने का साहसिक कदम उठाने में मेरी सहायता की। मेरे एक मित्र ने जिसे मैंने अपनी आध्यात्मिक रुझान के बारे में बताया, मुझे एक कहानी सुनाई जिसका मेरे ऊपर अत्यंत गंभीर प्रभाव हुआ। मैंने एक बार अपने इस मित्र को बताया कि मैं सांसारिक जीवन को छोड़कर, आध्यात्मिक जीवन बिताना चाहता था, लेकिन परिस्थितियाँ मुझे इसकी अनुमति नहीं देतीं थीं। उसने मुझसे कहा, "तुम संसार को छोड़ने के लिये तैयार नहीं हो।" जब मैंने अस्वीकार किया तो उसने कहा, "तुम इसके लिये तैयार नहीं हो। मैं तुम्हें एक कहानी सुना रहा हूँ जो मेरी बात समझने में तुम्हारी सहायता करेगी।" फिर उसने निम्नलिखित कहानी सुनाई।

"राजा जनक एक राजा और सद्गुरु थे। एक व्यक्ति, जो संसार से पूर्णरूप से ऊब गया था और अपनी समस्याओं से मुक्ति पाने के लिये ईश्वर को खोज रहा था, उनके पास मार्गदर्शन के लिये आया। जनक ने उसे समझाया कि उसकी आसक्तियाँ ही उसके कष्ट का कारण थीं। राजा जनक ने उस व्यक्ति को सलाह दी कि वह अपने सांसारिक कर्त्तव्यों को खत्म करके, उनके साथ रहने के लिये आये ताकि वह उसकी सहायता कर सकें। उस व्यक्ति ने कहा कि उसके दो छोटे लड़के थे जिनकी शिक्षा पूरी होने वाली थी और, एक बार उन्हें नौकरी मिल जाने पर, वह उनके साथ आकर रहने के लिये स्वतंत्र हो जायेगा। उसने कहा कि इसमें लगभग दो वर्ष लग जायेंगे। राजा जनक ने उसको दो वर्ष बाद वापस आने के लिये कहा।

"जब वह दो वर्ष बाद वापस आया, राजा जनक ने उससे पूछा कि क्या अब वह उनके साथ रहने के लिये तैयार था। उस व्यक्ति ने कहा कि उसके लड़कों ने व्यापार शुरू किया था और यह नया होने के कारण उन्हें उसकी थोड़ी सहायता की ज़रूरत थी। उसके दोनों बेटों के विवाह के लिये प्रस्ताव आ रहे थे और उसे इसका निर्णय भी करना था। और इसीलिये, शायद अगले दो सालों में वह उनके पास आकर रहने के लिये

स्वतंत्र होगा। राजा जनक ने उसको दो साल बाद आने के लिये कहकर वापस भेज दिया।

''दो साल बाद, जब वह व्यक्ति वापस आया, उसने जनक से शिकायत की कि हालांकि व्यापार अच्छा रहा था, उसकी दोनों बहुओं ने बच्चों को जन्म दिया था। और बच्चों को पालने में उन्हें (बहुओं को) उसकी सहायता की ज़रूरत थी। वह उत्तेजित नज़र आ रहा था। वह राजा जनक की ओर मुड़ा और बोला, 'मैं क्या कर सकता हूँ। मैं आपके पास आकर रहना चाहता हूँ लेकिन परिस्थिति ऐसी है कि मेरा परिवार मुझे छोड़कर जाने नहीं देता। आप कुछ क्यों नहीं करते और मेरी परिस्थिति को क्यों नहीं बदल देते?'

''राजा जनक ने उत्तर दिया, 'मैं तुम्हारी मदद करूँगा लेकिन सबसे पहले तुम एक समस्या को हल करने में मेरी मदद करो।'

''वह व्यक्ति व्याकुल हो गया, 'आपको मेरी मदद की ज़रूरत है?'

''राजा जनक ने कहा, 'चिन्ता न करो, यह बहुत सरल है और तुम मदद कर सकते हो।' वह व्यक्ति मदद करने के लिये तैयार हो गया। राजा जनक एक खम्भे के पास गये और उसे आलिंगन में ले लिया। खम्भे को बहुत मज़बूती से पकड़कर, उन्होंने सहायता के लिये चिल्लाना शुरू कर दिया और जोर से चिल्लाते हुये कहने लगे, 'कृपया मेरी मदद करो। इस खम्भे ने मुझे बहुत कस कर पकड़ लिया है, यह मुझे कुछ नहीं करने दे रहा है। मैं बहुत बेचैनी का अनुभव कर रहा हूँ और ऊब गया हूँ। मैं इधर उधर जाना चाहता हूँ, लेकिन यह खम्भा मुझे ऐसा नहीं करने दे रहा।'

''जनक ने उस व्यक्ति से मदद करने के लिये कहा। वह व्यक्ति राजा जनक के व्यवहार से, जो एक सद्गुरू थे, व्याकुल नज़र आ रहा था।

उस व्यक्ति ने राजा जनक से कहा, 'श्रीमान्, मैं इस ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि आप खम्भे को पकड़े हुये हैं, खम्भा आपको नहीं पकड़े है। आपको केवल यह करना है कि खम्भे पर अपनी पकड़ को छोड़िये और आप इससे मुक्त हो जायेंगे।'

''राजा जनक ने अपने हाथों को मुक्त कर लिया और उस व्यक्ति को उसकी सलाह के लिये धन्यवाद दिया। फिर उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, 'इतनी कठिन समस्या को हल करने में मेरी सहायता करने के लिये तुमको बहुत बहुत धन्यवाद।'

''उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा, 'लेकिन श्रीमान् यह तो व्यवहारिक ज्ञान की बात थी।'

''राजा जनक ने उस व्यक्ति से मुस्कुराते हुये कहा, 'तुम सही कह रहे हो। जैसे कि मैं खम्भे को पकड़े हुये था, उसी तरह अपने जीवन में उन परिस्थितियों के लिये, जिन्हें तुम कसकर पकड़े हुये हो, इसी व्यवहारिक ज्ञान का प्रयोग न करके, तुम क्यों चिल्ला रहे हो कि परिस्थितियाँ तुम्हें पकड़े हुये हैं? यह बहुत सरल है। सिर्फ परिस्थितियों पर अपनी पकड़ को छोड़ो और तुम वह सब करने के लिये स्वतंत्र हो जाओगे, जो तुम चाहते हो।'

मेरे मित्र ने कहानी समाप्त करके मुझसे कहा, ''जब तुम तैयार होते हो, परिस्थितियाँ तुम्हें बाँध नहीं पायेंगी।''

यह कहानी मेरी नौकरी छोड़ने की क्रिया का प्रारंभ थी। दूसरी घटना, जिसने नौकरी छोड़ने का निर्णय लेने में मेरी सहायता की, एक पश्चिमी बाबा प्रेमी के साथ मेरी मुंबई की यात्रा थी। हमने समय बिताने के लिये बातचीत शुरू की और कुछ समय बीतने के बाद उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं विवाहित था। मैंने उसे बताया कि मैं अविवाहित था और ऐसे ही रहना चाहता था। इस पर उसने कहा, ''अगर तुम अविवाहित रहने का इरादा रखते हो, तो अपने कुँवारेपन का अच्छा लाभ उठाओ। मैं अविवाहित हूँ लेकिन मैं इसका भरपूर लाभ उठाने में सफल नहीं हुआ।''

मैं उसकी बातों से थोड़ा भ्रम में पड़ गया और मैंने उससे अपनी बात को स्पष्ट करने के लिये कहा। उसने कहा, ''बहुत से ऐसे अविवाहित लोग हैं जो विवाहित लोगों की तरह जीवन व्यतीत करते हैं और पारिवारिक ज़िम्मेदारियों से बँधे रहते हैं। वे नौकरी करते हैं। अपने माता–पिता अथवा परिवार के साथ रहते हैं। वे अपनी सारी कमाई बचाते हैं और अन्त में मर जाते हैं। संक्षेप में, वे बहुत ही सामान्य जीवन बिताते हैं जैसा कि एक

विवाहित पुरुष, जो एक बड़े परिवार को सहारा देने की ज़िम्मेदारी से बंधा हुआ है, बितायेगा। इस तरह कुँवारापन लगभग बेकार चला जाता है।''

वह कहता रहा, ''ऐसे जीवन में किसी तरह का खतरा लेने अथवा इनाम का सवाल ही नहीं उठता। एक कुँवारे के रूप में हमें कुछ भिन्न काम करना चाहिये। ईश्वर जानता है हमने कितने जन्मों से कमाने, बचाने और परिवार की ज़िम्मेदारी उठाने का काम किया है, हो सकता है चौरासी लाख जन्मों में, जैसा कि बाबा ने कहा है। एक अविवाहित के पास कुछ भिन्न काम करने, खतरे लेने, रूढ़ियों के विरुद्ध जाने और अपने हृदय की इच्छा पूरी करने का अवसर होता है। उसे दुनियाँ भर की तीर्थयात्रा पर जाना चाहिये, अथवा मानवजाति की सेवा में अपने जीवन को लगाना चाहिये, अथवा किसी ऊँचे लक्ष्य को खोजना चाहिये, ध्यान करना और सच्ची इच्छा का अनुसरण करना चाहिये।'' उससे अलग होने के बाद, मैं उसके शब्दों की सच्चाई पर बार बार विचार करता रहा।

अन्तिम घटना, जिसने नौकरी छोड़कर बाबा के प्रेम के महासागर में गोता लगाने का निर्णय लेने में मेरी मदद की, मराठी में मधुसूदन द्वारा गाया गया एक गाना था। गाने की पंक्तियाँ हैं, **''कोटी जन्मात एक लावा दावा वरी''** जिनका मूल अर्थ है, जिये गये लाखों जीवनों में से, एक जीवन उनके लिये (बाबा के लिये) दाँव पर लगा दो। इस गाने का मेरे ऊपर, आत्मा को मथ देने वाला ऐसा प्रभाव पड़ा कि आज भी, शायद ही कोई ऐसा दिन बीतता है जब मैं इस गाने के शब्दों को याद नहीं करता।

मेरा मन इन शब्दों की गहराई को नापने का प्रयत्न करते हुये इस स्थिति की तुलना बैंक में जमा नकदी धन की स्थिति से करता है। मान लो एक व्यक्ति के पास बैंक में चौरासी लाख रुपये हैं और कोई व्यक्ति उससे एक रुपया माँगता है। क्या वह व्यक्ति एक रुपया देने के बारे में एक बार भी सोचेगा अथवा हिचकिचायेगा, विशेष रूप से, अगर वह व्यक्ति निश्चित ज़मानत के साथ जानता हो कि उस एक रुपये के बदले में उसे खुशियों का पूरा साम्राज्य मिल जायेगा? वास्तव में, बाबा हमसे, अथवा मुझसे एक रुपये से भी कम माँग रहे थे क्योंकि अपने जीवन का अधिकांश भाग मैंने शिक्षा और नौकरी में बिता दिया था।

इन तीनों घटनाओं ने मेरे मन को यह विश्वास दिलाने में सहायता की कि नौकरी छोड़कर बाबा के प्रेम में गोता लगाने में बुद्धिमानी है। मेरा हृदय एक अधिक गहरे स्तर पर यह पहले से जानता था कि सारी सांसारिक आसक्तियों और इच्छाओं का मूल्य शून्य था अर्थात् कुछ नहीं था। मेरे लिये इस बात का निर्णय लेने का प्रयत्न करना, कि मैं क्या करूँ, अधिक महत्व नहीं रखता था, क्योंकि यह मेरे हृदय और मन के बीच लड़ाई थी। क्योंकि मेरे मन को जुये में दाव लगाने का कारण मिल गया, इसने मेरे हृदय को बाबा के प्रेम में गोता लगाने और अपनी सच्ची इच्छा को खोजने की, जो मेरे लिये मेहेरबाबा का प्रेम है, अनुमति दे दी।

32. दया और कृपा

निम्नलिखित कहानी एरच ने सुनाई थी। ''एक सच्चा साधक और ईश्वर का प्रेमी था जो दिन का अधिकांश समय ईश्वर की याद और प्रार्थनाओं में बिताता था। हालांकि उसका हृदय शुद्ध था और वह ईश्वर के लिये तड़पता था, उसका सन्देह करने वाला मन उसकी भक्ति के रास्ते में अक्सर आ जाता था। एक बार उसका मन अपने चारों ओर की परिस्थितियों से बहुत अधिक परेशान था। तुम जानते हो कि मन कैसा है– एक बार कोई परेशान करने वाला विचार इसकी पकड़ में आ जाता है तो यह उसको जाने नहीं देता। ऐसा ही इस भक्त के साथ हुआ। जैसे जैसे समय बीतता गया, वह अपने मन को शान्त करने में असफल रहा और वह मन के उकसाने के आगे हार गया। उसने निश्चय किया कि उसे ईश्वर से कोई मतलब नहीं रखना और उसने प्रार्थना करना छोड़ दिया।

''इसका कारण यह था कि उसने इस दुनियाँ में अपने चारों ओर इतना अधिक अन्याय देखा कि उसे अनुभव होने लगा कि अगर ईश्वर ऐसा अन्याय होने देता है, तो वह उससे कोई मतलब नहीं रखना चाहता है। इसलिये उसने अपनी प्रार्थनायें बन्द कर दीं। जैसे ही उसने प्रार्थनायें बंद कीं, ईश्वर उसके सामने प्रकट हुये। देखो, ईश्वर अपना खेल किस तरह खेलता है? जब एक प्रेमी प्रार्थना करता है और अपने ईश्वर के लिये तड़पता है, वह (ईश्वर) उसकी ओर से उदासीन हो जाता है, लेकिन जैसे ही प्रेमी ईश्वर की ओर से उदासीन हो जाता हे, ईश्वर चिंतित हो जाता

है और प्रकट हो जाता है। यह सब उसकी लीला, उसके दैवी खेल की योजना है। इसलिये ईश्वर भक्त के सामने प्रकट हुये और उसे अपनी परेशानी बताने के लिये फुसलाने लगे। भक्त, जो कि बहुत परेशान था, बिना कुछ सोचे समझे बोलता है, 'आप किस तरह के ईश्वर हैं जो इस दुनियाँ में इस प्रकार का अन्याय होने देते हैं? ऐसा कैसे हो सकता है? मैं यह सब देखना सहन नहीं कर सकता हूँ और आप से कोई मतलब नहीं रखना चाहता हूँ।'

''ईश्वर आश्चर्यचकित प्रतीत हुये और उन्होंने कहा, 'दुनियाँ में अन्याय? ऐसा कैसे हो सकता है? यह असंभव है। मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा। मेरी न्याय की भावना मेरी दया और कृपा से सजी रहती है—जिसे बहुत कम लोग समझ अथवा ग्रहण कर पाते हैं।'

''भक्त और अधिक परेशान हो गया और बोला, 'मुझे अपने शब्दों के जाल में फँसाने की कोशिश न करिये; मुझे कुछ नहीं सुनना है।' इसलिये, प्रेम करने वाले माता पिता की तरह, ईश्वर ने उसे सान्त्वना देते हुये कहा, 'ठीक है, अगर तुम मुझे दुनियाँ में होने वाला एक अन्याय दिखा सको, तो मैं इसे तुरंत ठीक कर दूँगा।'

''इस प्रस्ताव से भक्त प्रसन्न हो गया और वह ईश्वर के साथ चल दिया। थोड़ी दूर चलने के बाद भक्त ने सड़क पर चलते हुये एक व्यक्ति की ओर इशारा किया। वह बहुत ईमानदार व्यक्ति था और उसके पैर में एक काँटा चुभ गया था और उससे बहुत अधिक खून बह रहा था। आस पास किसी तरह की डाक्टरी मदद उपलब्ध नहीं थी और उस व्यक्ति को भयंकर कष्ट हो रहा था।

''ईश्वर और भक्त थोड़ी दूर और गये और उन्हें एक व्यापारी मिला। वह व्यक्ति बहुत ही कठोर और घमंडी था। सभी तरह के गैर कानूनी काम करके, वह धनी हो गया था। उस व्यक्ति को चलते चलते रास्ते में एक थैला दिखता है। थैला उठाने पर, उस व्यक्ति को पता चलता है कि यह सोने से भरा हुआ है।

''ईश्वर को यह दिखाने के बाद, भक्त उन्हें गाँव के पास ले जाता है। वहाँ उन्हें एक मजदूर मिलता है। इस व्यक्ति ने अपनी पत्नी और

बच्चों का पेट भरने के लिये पर्याप्त धन कमाने के लिये, पूरे दिन कठिन परिश्रम किया था। उस दिन इस आदमी को चोरों ने पीटकर, उसका धन चुरा लिया। उसे और उसके परिवार को उस रात भूखा रहना पड़ा। ईश्वर को यह दिखाने के बाद, भक्त उनको एक बहुत ही नीच दिखने वाले, आदिवासियों के मुखिया के पास ले गया। वह अपनी जाति के लोगों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करता था जबकि वह स्वयं सारी सुख सुविधाओं, अच्छा खाना, शराब, धन और औरतों के साथ अच्छा समय बिता रहा था। उसकी जाति के लोग, जो उसके अधीन बहुत अधिक कष्ट पा रहे थे, प्रार्थना करते थे कि वे ऐसे अत्याचारी के चंगुल से मुक्ति प्राप्त कर सकें। ईश्वर को यह सब दिखाने के बाद, भक्त ने उनसे पूछा, 'अन्याय की इन सब घटनाओं के बारे में आपको क्या कहना है?'

''ईश्वर ने कृपापूर्ण दृष्टि से मुस्कुराकर कहा, 'वह ईमानदार मनुष्य, जिसके काँटा लगने से बहुत अधिक खून निकल रहा था, पिछले जन्म में एक खूनी था। अपने पिछले जन्म के कर्मों के कारण, इस जन्म में उसे मृत्यु दंड मिलने वाला था, लेकिन उसके अच्छे कर्मों के कारण, और दया करके, मैंने उस दंड को कम करके पैर में काँटा चुभने तक कर दिया।

'''वह व्यापारी, जो कठोर और घमंडी था और गैर कानूनी धंधा करता था, अपने पिछले जन्म में एक कर्मयोगी था और उसने दान पुण्य के बहुत से कार्य किये थे। अपने पिछले जन्म के कर्मों के कारण, उसे इस जन्म में सोने से भरा पूरा राज्य मिलने वाला था। लेकिन इस जन्म में उसके बुरे कर्मों के कारण, मैंने इसे कम करके एक थैला सोना कर दिया।'

''ईश्वर ने कहना ज़ारी रखा, 'उस साधारण मज़दूर की पिछले जन्म में अनाज की दुकान थी। उसने मुनाफ़ा कमाने के लिये, अकाल के समय अनाज जमा कर लिया जिससे हज़ारों लोगों की मृत्यु हो गई। इस जन्म में उसके और उसके परिवार के भाग्य में भूख से मरना लिखा था लेकिन, कृपा करके मैंने इसे कम करके एक रात भूखा रहने तक कर दिया। आदिवासियों के नेता को पूरे देश का शासक होना था क्योंकि अपने पिछले जन्म में वह बहुत उदार, दानी और सबकी सहायता करने वाला था। तो भी, इस जन्म में उसके स्वभाव को देखते हुये, मैंने इसे कम करके उसे एक छोटी जाति का नेता बना दिया।'

“फिर ईश्वर ने भक्त से पूछा कि क्या उसका मन शंकाओं के कारण अभी भी परेशान था। भक्त रोने लगा और उसने ईश्वर से क्षमा माँगी। अपनी दया और कृपा पूर्ण नज़र से देखते हुये, ईश्वर ने उसको क्षमा कर दिया और जाने से पहले भक्त को सलाह दी। 'भविष्य में, अगर तुम्हारे पैर में एक काँटा चुभता है और तुम्हारे मन को यह अन्याय प्रतीत होता है, उसी क्षण यह याद रखो कि शायद तुम्हें मृत्यु दंड मिलने वाला था लेकिन ईश्वर ने, अपनी दया और कृपा के कारण, इसे कम करके तुम्हारे पैर में एक काँटा चुभने तक कर दिया। अगर मैं न्याय को अपनी दया से न सजाऊँ, तो यह दुनियाँ असीमित कष्ट भोगेगी। मैं केवल न्याय ही नहीं करता हूँ बल्कि इसे अपनी दया और कृपा से सजा भी देता हूँ।'”

33. वह अपने हस्ताक्षर छोड़ देते हैं

मनी ने मंडली हाल में कई अवसरों पर निम्नलिखित कहानी सुनाई और यह मुझे बहुत प्रिय है; क्योंकि यह बाबा को याद करने में मेरी मदद करती है और एकान्त में उनकी उपस्थिति खोजने के बजाय, मेरे प्रति दिन के नित्य कर्मों में उनकी उपस्थिति खोजने में मेरी सहायता करती है।

“बाबा हमारे मानव धरातल पर इतनी पूर्णता से अवतरित हुये कि उनके साथ प्रतिदिन के संबंधों में, हम भूल जाते थे कि वह ईश्वर थे। कई अवसरों पर, जब हम उनके साथ स्वतंत्र होने लगते थे, उनकी बातों को गंभीरतापूर्वक न लेकर, उन पर ध्यान नहीं देते थे, तब बाबा हमें दृढ़तापूर्वक याद दिलाते थे, 'यह मत भूलो कि मैं ईश्वर हूँ।'

“यह भूलना बहुत सरल था क्योंकि वह बहुत अधिक मानवता से पूर्ण थे। वह हर व्यक्ति की चेतना के स्तर पर पूर्ण रूप से उतर सकते थे। वह सन्त के साथ सन्त, बच्चे के साथ एक बच्चा बन जाते थे–किसी व्यक्ति के हृदय को संतुष्ट करने के लिये, उसके स्तर पर पूर्णरूप से नीचे उतरना, एक ऐसा कार्य है जो केवल ईश्वर कर सकता है। बाबा हमें छोटे और बड़े तरीकों से, उनकी उपस्थिति का अनुभव करने देते थे क्योंकि वह जानते थे कि हमारे मानवी मन कितने कमजोर थे और उनके (बाबा के) प्रति हमारा विश्वास कितनी जल्दी टूटने वाला था। इसलिये वह समय समय

पर हमें झलक दिखलाकर उनके प्रति हमारे विश्वास का पोषण करते थे। अभी भी, अगर तुम सावधानी से अपने चारों ओर देखो तो तुम पाओगे कि वह अपने हस्ताक्षर (अपनी उपस्थिति का संकेत) सदैव पीछे छोड़ते जा रहे हैं, और लोगों को यह जानकारी दे रहे हैं कि वह वहाँ पर हैं और हर काम उनकी मर्ज़ी के अनुसार हो रहा है।

“नये बाबा प्रेमियों की कहानियों में, जिन्होंने बाबा को कभी नहीं देखा है– तुम देखते हो कि उन्होंने उनके चिन्हों, संकेतों का अनुसरण किया जिन्हें वे हमारे लिये पीछे छोड़ देते हैं, और वे इस तरह से बाबा के पास आये। इसी प्रकार का एक हस्ताक्षर, एक संकेत, जो बाबा ने निश्चित रूप से दिया, द्वितीय विश्व युद्ध था। बाबा ने कहा था कि उन्होंने, सद्‌गुरुओं के साथ, इसका संचालन किया था। हमारे मानवी मनों को प्रायः आश्चर्य होता है, 'ऐसा कैसे हो सकता है? इतनी बड़ी घटना, बाबा इसका संचालन कैसे कर सकते थे?' यह कल्पना के परे है, लेकिन ईश्वर से संबंधित किसी भी बात की कल्पना नहीं की जा सकती है। एक दिन मैं किसी बात के लिये बहुत चिन्ता में थी, जब मेरे मन में, अपने आप, क्राइस्ट 'CHRIST' शब्द के बारे में विचार आया। मुझे शब्दों से खेलना, उनके क्रम को बदलना और नये शब्द बनाना अच्छा लगता है। मैं अक्षरों को देख रही थी और क्राइस्ट शब्द के अक्षरों ने मेरे सामने वह रहस्य खोला जिसे मेरे लिये स्वयं सोचना संभव नहीं हो सकता थाः

सी – चर्चिल के लिये

एच – हिटलर के लिये

आर – रूज़वेल्ट के लिये

आई – दूसरे ड्यूक मुसोलिनी के लिये

एस – स्तालिन के लिये

टी – जापान के महाराज तोजो के लिये

"वे छः मुख्य नेता थे जिन्होंने दूसरे विश्वयुद्ध में भाग लिया था। मेरे लिये यह विचार कुछ और नहीं था बल्कि स्वयं बाबा अपने हस्ताक्षर पीछे छोड़ते हुये– हमारे सामने यह रहस्य खोल रहे थे कि दूसरे विश्व युद्ध के वही मुखिया (Incharge) थे ताकि हम उनकी उपस्थिति का अनुभव कर सकें और यह जानें कि संकट के समय भी वह वहाँ पर हैं, और उन्होंने हमें अकेले नहीं छोड़ा है। अगर तुम अपने दिन प्रतिदिन के नित्य कर्मों में, इस सचेतना के साथ कि वह (बाबा) सदैव वहाँ (तुम्हारे साथ) हैं, सावधानीपूर्वक देखो तो तुम्हें उनके हस्ताक्षर, उनके वहाँ होने के चिन्ह, निश्चित रूप से मिलेंगे।"

मैं प्रतिदिन के कार्यों में उनके हस्ताक्षर देखने का प्रयत्न करता हूँ। ऐसा करने से तुम्हारे जीवन के नित्य कर्म केवल रोचक ही नहीं हो जाते हैं, बल्कि उसे पाकर, जो तुम्हें निश्चित रूप से मिलेगा, तुम्हारा हृदय उनकी उपस्थिति का अनुभव करके आनन्द से भर जायेगा–एक ऐसे आनन्द से, जो केवल उनकी उपस्थिति दे सकती है।

34. तुम मेरे हो

एक बार, एक दिन, जब मेहेराज़ाद मंडली जन तीर्थयात्रियों से मिलते हैं, मैंने संयोगवश मनी से पूछा कि क्या वह अपने समय में से दो मिनट मुझे दे सकतीं थीं क्योंकि मुझे उनसे कोई ज़रूरी बात पूछनी थी। ऐसा कहने के पहले मैं प्रतीक्षा करता रहा जब तक वह सभी तीर्थयात्रियों से मिल नहीं चुकीं, और मैं सोचता था कि वह स्वीकार कर लेंगी क्योंकि मैंने केवल दो मिनट माँगे थे। इसलिये, मुझे आश्चर्य हुआ जब उन्होंने कहा, "मैं बहुत व्यस्त हूँ और तुमसे वादा नहीं कर सकती लेकिन बाद में, अपरान्ह के समय मेरे पास आने की कोशिश करो। उस समय अगर मुझे फ़ुर्सत होगी, तो मैं तुम्हें दो मिनट का समय दूँगी।"

बाद में, अपरान्ह के समय, मैं उन्हें ढूँढ़ता हुआ महिलाओं की ओर गया। जब तुम मंडली हाल के पीछे की ओर से निकलकर महिलाओं की ओर बने हुये बरामदे की दिशा में चलते हो तो रास्ते में बाईं ओर एक बेन्च है। एक तीर्थयात्री उस बेन्च पर बैठा था और मनी खड़ी हुई उससे बात

कर रहीं थीं। मैं यह देखकर खुश हुआ कि वह लोगों की भीड़ से घिरी हुई नहीं थीं। इसलिये मैं उनके पास पहुँचकर, मनी के पास खड़ा हो गया। मैं उनकी बातचीत ख़त्म होने का इन्तज़ार कर रहा था ताकि मैं एक निजी प्रश्न पूछने के लिये मनी से थोड़ा समय माँग सकूँ।

तीर्थयात्री बूढ़ा था और थोड़ा सनकी प्रतीत होता था। वह मनी से शिकायत कर रहा था कि अमरीका में छोटे बच्चों को आइसक्रीम खाने की लत थी और इसे अधिक मात्रा में खाकर, वह अपना स्वास्थ्य नष्ट कर रहे थे। वह कहता गया कि रासायनिक सुगंधों को इस प्रकार के पदार्थों में डाला जाता है और व्यवसायिकता तथा लुभाने वाले विज्ञापनों के कारण, लोग स्वास्थ्य संबंधी संकटों की उपेक्षा करके, इन चीज़ों को खाते थे। मनी ने बाबा के बारे में बात करके, बातचीत का विषय बदलने का प्रयत्न किया, लेकिन वह व्यक्ति मनी को बोलने नहीं दे रहा था। वह बोलता गया, बोलता गया और व्यवसायीकरण के बारे में शिकायत करता रहा।

यह सिलसिला दस अथवा पन्द्रह मिनट तक चला होगा और मैं बता सकता था कि मनी थोड़ा उत्तेजित हो रहीं थीं। वह वहाँ से जाने का अवसर ढूँढ़ रहीं थीं लेकिन तीर्थ यात्री उन्हें जाने नहीं दे रहा था। मुझे यह स्थिति बहुत विनोदपूर्ण लगी कि मेरे लिये मनी के पास दो मिनट का समय नहीं था और अब तीर्थयात्री उन्हें जाने नहीं दे रहा था। ऐसा नहीं था कि वह तीर्थयात्री किसी बुद्धिमत्ता पूर्ण विषय पर बात करने अथवा बाबा के बारे में कहानियाँ सुनने में उनका समय ले रहा था, बल्कि वह किसी बात पर बड़ बड़ कर रहा था और वह क्या कहने की कोशिश कर रहा था, यह न तो मेरी समझ में आ रहा था और न ही मनी की।

मैं चाहता था कि मनी उस व्यक्ति से रुखाई से कहकर चली जायें कि वह व्यस्त थीं, जैसा कि उन्होंने मुझसे सुबह कहा था, लेकिन मनी ने ऐसा नहीं किया। उस परिस्थिति पर उत्तेजित होने के बावजूद, वह ध्यानपूर्वक सुनने का नाटक करतीं रहीं। मैंने मनी को बचाने के इरादे से, बातचीत में कूदने का निश्चय किया, इसलिये मैंने उनसे कहा, "मनी, मुझे क्षमा करें, मैं अकेले में आपसे दो मिनट बात करना चाहता था और आपने मुझसे अपरान्ह में मिलने के लिए कहा था।"

मनी ने उस तीर्थयात्री से क्षमा माँगी और फिर मेरा हाथ पकड़कर मुझे दूर ले गईं। जब हम जा रहे थे, मनी ने छुटकारे की गहरी साँस ली और कहा, ''बाबा, आपको धन्यवाद।'' फिर उन्होंने मेरी ओर मुस्कुराते हुये देखकर कहा, ''यह व्यक्ति एक पागल प्रतीत होता है। मेरी कुछ समझ में नहीं आया कि वह क्या कह रहा था। वह एक ही बात लगभग आधे घंटे तक कहता रहा और मुझे विषय को बदलने ही नहीं दिया।''

मैं हँसा और मनी से कहा, ''मैं वहाँ था और आपकी दशा देख रहा था।'' फिर मैंने कहा, ''मनी, आपके पास मेरे लिये दो मिनट का समय नहीं था, लेकिन आपने एक पागल व्यक्ति को आधा घंटा दे दिया जो बेवकूफ़ी की बातें करता है।''

मनी ने मेरी ओर मुड़कर मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिये और उन्हें बहुत प्रेम और आत्मीयता के साथ पकड़े हुये कहा, ''लेकिन रुस्तम, तुम हममें से एक हो; तुम हमारे परिवार के हो, जबकि दूसरा व्यक्ति एक मेहमान है, एक भेंट करने वाला है। क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ एक मेहमान, एक बाहर के व्यक्ति की तरह व्यवहार करूँ? जब मैं तुम्हारे साथ—उन लोगों के साथ, जो हम लोगों में से एक हैं, हमारे परिवार के लोगों के साथ होती हूँ तो मैं अपने सामान्य रूप में होने में स्वतंत्रता का अनुभव करती हूँ, लेकिन बाहर वालों के साथ मुझे अपने सबसे अच्छे रूप में रहना पड़ता है। अक्सर मुझे नाटक करना पड़ता है। क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करूँ? मेरे भाई जाल, मुझसे अक्सर शिकायत करते हुये कहते हैं, 'तुम तीर्थयात्रियों से बड़े प्रेम से बात करती हो, और उनके लिए तुम्हारे पास हमेशा समय रहता है, लेकिन हमारे लिये नहीं', और मैं उनसे कहती हूँ, 'लेकिन जाल, आप मेरे हैं। आप मेरे दिल में हर समय हैं।'''

मनी ने फिर कहा, ''बाबा हमारे साथ ऐसे ही थे। वह अपनी मंडली के साथ कई अवसरों पर कठोर और उदासीन होते थे, लेकिन जहाँ तक उनके प्रेमियों का संबंध था, वह उन पर अपने प्रेम और आनन्द की वर्षा करते थे। जब हम शिकायत करते थे, बाबा हमेशा कहते थे, 'लेकिन तुम

लोग पहले से ही मेरे हो—तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं है। यह केवल बाहर के लोगों के लिए है ताकि किसी दिन वे भी मेरे हो जायें।'''

मनी ने तब मेरी ओर मुड़कर कहा, ''क्या तुम बाहर का व्यक्ति बनना चाहते हो?'' मैंने उत्तर दिया, ''मैं हमेशा आपका बनना चाहूँगा— हमेशा।'' मनी ने मुझे बहुत प्रेम पूर्वक आलिंगन दिया, ऐसा आलिंगन जिसे वह उन लोगों को देती हैं, जैसा कि वह कहती हैं, ''हममें से एक—हमारे परिवार के होते हैं।''

35. बाबा हमेशा अपना वादा पूरा करते हैं

एरच और मनी अक्सर एक साथ मंडली हाल में, बाबा प्रेमियों को बाबा के प्रेम की कहानियाँ सुनाया करते थे। वे दोनों एक दूसरे के गुणों और कहानी सुनाने के ढँग की प्रशंसा किया करते थे। ऐसे क्षणों में, जब वे साथ साथ कहानी सुनाते थे, कहानी का आनंद कई गुना बढ़ जाता था और हमें ऐसी खुशी मिलती थी जिसकी तुलना लगभग उस खुशी से की जा सकती थी जो बाबा की भौतिक उपस्थिति में मिलती।

निम्नलिखित कहानी ऐसे क्षणों का आनन्द और सार प्रकट करने वाली है। एरच बाबा के जीवन के अन्तिम दिनों के बारे में बता रहे थे, ''बाबा उस समय बहुत कठोर एकान्तवास में थे और किसी को भी उनसे मिलने की अनुमति नहीं थी। वह केवल अपने विश्वव्यापी कार्य में ही व्यस्त नहीं थे, बल्कि उस समय उनका स्वास्थ्य भी बहुत खराब था और वह बहुत कमज़ोर थे। इसलिए एक दिन, मैं इस अजीब दिखने वाली पश्चिमी महिला को मेहेराज़ाद रोड पर हमारी ओर आते देखकर, आश्चर्यचकित हो गया। मैं यह जानने के लिए उसके पास गया कि वह कौन थी और कहाँ से आई थी।

''उसका नाम मैरी बेनेट था और वह हिप्पी थी। वह आस्ट्रेलिया से आई थी। यह एक अजीबोगरीब दृश्य था जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। हमने पहले कभी किसी हिप्पी को नहीं देखा था। उसकी वेशभूषा, उसके बाल, उसका पूरा साज श्रृंगार, देखने लायक था। वह गिटार लिये

थी और, क्योंकि उन दिनों रिक्शा अथवा बसें नहीं थीं, मुझे आश्चर्य हुआ कि वह स्टेशन से मेहेराज़ाद तक, जो कि लगभग बीस किलोमीटर है, कैसे आई। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह इतनी दूर तक पैदल आई थी।

"मैंने उससे उसके आने का कारण पूछा। उसने मुझे बताया कि आस्ट्रेलिया के बाबा प्रेमियों ने मेहेरबाबा को देने के लिए उसे एक संदेश दिया था और वह, हिप्पी होने के कारण, भारत घूम रही थी और अन्ततः संयोगवश अहमदनगर आ गई। मैंने उसे बाबा के कठोर एकान्तवास के बारे में बताया, जहाँ पत्र व्यवहार की भी अनुमति नहीं थी, इसलिए उसकी प्रार्थना को स्वीकार करना संभव नहीं होगा। उसी समय, मनी महिलाओं की ओर से, मेरे लिए कोई संदेश लेकर आई। उसने उस महिला को देखा और उसके चेहरे पर आश्चर्य का जो भाव था, वह देखने लायक था। मनी को लगा कि मेहेरा इस दृश्य को देखकर प्रसन्न होगी, इसलिए वह मेहेरा से पूछने के लिए महिलाओं की ओर शीघ्र ही भागी। उसने वापस आकर बताया कि मेहेरा उससे मिलना चाहेगी। अब मनी तुम्हें बतायेगी कि औरतों की ओर क्या हुआ।"

मनी ने कहा, "जब मैंने उस महिला को पहले देखा, तो मेरी नज़रों ने जो दृश्य देखा, उससे मैं पूर्णरूप से आश्चर्यचकित हो गई। मेरा जबड़ा खुल गया और अविश्वास से मेरा मुँह खुला रह गया। मैंने ऐसा दृश्य पहले कभी नहीं देखा था और मैंने सोचा कि इससे मेहेरा और दूसरी महिलाओं का मनोरंजन होगा। इसलिए, मेहेरा से पूछने के बाद, मैं उसे महिलाओं की ओर, पीछे ले गई। हर एक की प्रतिक्रिया ऐसी थी जैसे कि उसने किसी अनोखे प्राणी को पहली बार देखा था। लेकिन प्रारम्भिक आघात और आश्चर्य के समाप्त होने के बाद, हम महिलाओं ने उससे बात करना शुरू कर दिया।

उसके पास गिटार था और, क्योंकि मेहेरा को संगीत पसंद था, उसने उससे गाने के लिए कहा। मेहेरा ने मैरी को गाते हुए फ़िल्म रिकार्ड करने के लिए भी कहा और हमने फ़िल्म बनाई।

अचानक, मेहेरा ने सोचा कि अगर बाबा भी मैरी से मिलें, तो उनका मनोरंजन होगा और उनके कार्य का बोझ हल्का होगा। इसलिए मेहेरा ने बाबा से पूछा। बाबा ने अपना स्वास्थ्य खराब होने की शिकायत की और कहा कि वह किसी से भी मिलना नहीं चाहते थे। जब मेहेरा ने विनयपूर्वक प्रार्थना की तो बाबा मान गये। वह कुछ मिनटों के लिए मैरी से मिलने के लिये मान गये। इसलिए उस महिला को बाबा से मिलने और आस्ट्रेलिया के बाबा प्रेमियों का संदेश उन्हें देने का अवसर मिला। कुछ मिनटों के बाद, बाबा ने मैरी से जाने के लिये कहा। मैरी ने बाबा को गाना सुनाने की इच्छा व्यक्त की। बाबा ने इन्कार कर दिया लेकिन उससे दर्शन प्रोग्राम में उपस्थित रहने के लिये कहा जो कुछ ही महीनों बाद पूना में गुरु प्रसाद में होने जा रहा था। बाबा ने कहा कि वह उस समय गा सकती थी।

"उसने उस समय उपस्थित होने में अपनी असमर्थता व्यक्त की। इस पर बाबा ने उससे कहा, 'मैं तुम से वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये यह संभव, करूँगा– तुम केवल उपस्थित ही नहीं रहोगी बल्कि गाओगी भी।" जब बाबा ने ऐसा कहा, मैंने सोचा, 'किसी व्यक्ति को, सान्त्वना देने के लिए बाबा जो वादे करते हैं, ऐसा ही एक और वादा।' इस पर, बाबा ने तुरंत मेरी ओर मुड़कर कहा, 'एकमात्र मैं ही ऐसा व्यक्ति हूँ जो सदैव अपना वादा पूरा करता है।' जैसे ही उन्होंने यह कहा, उन्होंने अपनी मुट्ठी दूसरे हाथ की हथेली पर मारते हुए अपने शब्दों पर ज़ोर दिया मानो कि वह वादे पर अपने दैवी अधिकार की मुहर लगा रहे थे, 'एकमात्र मैं ही ऐसा व्यक्ति हूँ जो अपना वादा सदैव पूरा करता है।'

"इसके बाद शीघ्र ही, बाबा ने अपना भौतिक शरीर छोड़ दिया और हर व्यक्ति सदमें में और दुख से स्तब्ध था। हमारी पूरी दुनियाँ उनके (बाबा के) चारों ओर घूमती थी और अब वह अपने भौतिक रूप में हमारे साथ नहीं थे। हम बाबा के शरीर को विश्राम देने के अन्तिम कार्य में व्यस्त हो गये। अपने प्रियतम की अन्तिम झलक पाने के लिए, पूरी दुनियाँ से बाबा प्रेमी आये। मेहेराबाद पहाड़ी पर बाबा का शरीर सात दिनों तक रखा गया। इन क्षणों की फिल्म बनाई गई थी और अन्ततः सातवें दिन, उनके शरीर को दफ़न किया गया।

''हम मेहेराबाद वापस आये और बाबा की भौतिक उपस्थिति की कमी को सहने का भरसक प्रयत्न किया। हम मेहेरा को सहारा देने के लिए, जिसका दुख हृदय विदारक था, अपने दुःख को छिपाने की कोशिश करते थे। क्योंकि गर्मी का समय आ रहा था और बाबा ने अपने प्रेमियों को एक बड़े दर्शन प्रोग्राम के लिए, पूना आने का निमंत्रण दिया था, इसलिये हम इसके लिए तैयार हो गये। हम जानते थे कि बाबा ने उनको बुलाया था और वह निश्चित रूप से उनको दर्शन देंगे, इसलिए हम प्रोग्राम के लिए गये।

''हमने निश्चय किया था कि हम बाबा प्रेमियों को बाबा को समाधि दिये जाने की फिल्म दिखायेंगे। वहाँ एकत्र हुए, हर प्रेमी ने बाबा की उपस्थिति को अनुभव किया। उन्होंने दर्शन देने का अपना वादा पूरा किया था लेकिन, जैसा कि उन्होंने कहा था, 'मैं विश्राम की अवस्था में दर्शन दूँगा और मेरी आँखें बन्द होंगीं' उस अवस्था में। जब बाबा की फ़िल्म दिखाने का समय आया, मुझे अपने जीवन का सबसे बड़ा आघात लगा। सबसे पहला दृश्य, आस्ट्रेलिया की हिप्पी, मैरी बेनेट का गिटार बजाते हुए था। हम उस फ़िल्म के बारे में बिल्कुल भूल गये थे और उसी रील में बाबा को समाधि देते समय की फ़िल्म ले ली थी। इस प्रकार से, बाबा ने अपना वादा पूरा किया और आस्ट्रेलिया की महिला को, गुरु प्रसाद दर्शन में बाबा के सामने गाने को मिला। मेरे मन में, वह क्षण बिजली की तरह कौंधा, जब बाबा मेरी ओर मुड़े थे और कहा था, 'मैं एकमात्र ऐसा व्यक्ति हूँ जो हमेशा अपना वादा पूरा करता हूँ।'''

36. जब पर्दा खींचा जाता है

मनी, बाबा की बहिन, सांसारिक ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान का सम्पूर्ण मिश्रण थीं। वह इसका श्रेय अपने माता पिता को देतीं थीं जिनके संरक्षण में वह पलीं, बढ़ीं। मनी हमें बतातीं थीं, ''मेरे पिताजी, शेरयार जी, एक साधु पुरुष थे। कोई भी क्षण ऐसा नहीं था जब ईश्वर का नाम जपते हुए उनके होंठ तुम्हें हिलते हुए न दिखें। उन्हें दुनियाँ और दुनियाँ की बातों का कोई ज्ञान नहीं था। वह गरम कपड़े पहनकर काम पर जाते थे। जब वह रात में घर लौटते थे, गरम कपड़े गायब होते थे। यह अक्सर

होता था। मेरी माँ, शीरीनमाई, उनसे इस बारे में पूछतीं थीं। वह उत्तर देते थे, ''अरे शीरीन, मुझे एक गरीब आदमी मिला जिसे बहुत ठंड लग रही थी, उसे गरम कपड़ों की मुझसे अधिक ज़रूरत थी।'' दूसरे अवसर पर, मेरे पिताजी उत्तर देते थे, ''अरे शीरीन, मैं एक बूढ़े आदमी से मिला जिसे ठंड लग रही थी लेकिन उसके पास कपड़े नहीं थे, इसलिए मैंने उसे दे दिये।'

''दूसरी ओर, मेरी माँ को सांसारिक ज्ञान था और यह एक सम्पूर्ण मिश्रण था। एक तरह से यह अच्छा था कि मेरी माँ वैसी थीं। जब पति सन्त हो और बेटा ईश्वर हो तो परिवार की देखभाल कौन करता? परिवार के पालन पोषण की ज़िम्मेदारी मेरी माँ के कंधों पर पड़ी। मैं अपने माता पिता को अक्सर कुछ खास विषयों पर बहस करते हुए सुनती थी। मेरी माँ, सांसारिक ज्ञान में चतुर होने के कारण, मेरे पिताजी के सामने अपना दृष्टिकोण रखतीं थीं।

''जब मैं उनकी बात सुनती थी, मैं अनुभव करती थी, 'हाँ, हाँ, वह जो कुछ कह रहीं हैं, सच है' फिर मेरे पिताजी, जिन्हें आध्यात्मिक ज्ञान था, अपना दृष्टिकोण रखते थे और उनकी बातें सुनकर, मैं अनुभव करती थी, 'हाँ, हाँ, मेरे पिता जी जो कुछ कह रहे हैं, वह भी सच प्रतीत होता है।'

''यह इसी तरह था। मैं एक ऐसी माँ के साथ बड़ी हुई जो बहुत चतुर और सांसारिक ज्ञान वाली थीं और एक ऐसे पिताजी के साथ बड़ी हुई जिनको आध्यात्मिक ज्ञान था।''

मनी ने कहना ज़ारी रखा, ''मेरे पिताजी के बारे में बाबा ने स्वयं कहा था, 'सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कोई भी ऐसी आत्मा नहीं है जो मेरे पिताजी से समानता कर सके। वह बेजोड़ थे।'

''मेरे पिताजी में कोई चीज़ ऐसी थी कि लोग स्वाभाविक रूप से उनके प्रति सम्मान का अनुभव करते थे। एक बार वह एक निजी पौधों के मालिक के यहाँ माली का काम करते थे। वह उसके फूलों के बाग की देखभाल करते थे। मेरे पिताजी की देखभाल में फूलों से एक विशेष सुगंध आती थी। जब मेरे पिता जी ने नौकरी छोड़ दी, तो मालिक मेरे पिता जी से मिलने के लिए अक्सर आया करता था।

''वह मेरे पिताजी को बताता था, 'शेरयार, तुम्हारे नौकरी छोड़ने के बाद बाग पहले जैसा नहीं रहा। हम चाहे जो कुछ करें, फूल वैसी गहरी सुगंध नहीं देते हैं जैसी तुम्हारे सामने देते थे। यहाँ तक कि फूलों के रंग भी वैसे सुंदर नहीं हैं। ऐसा लगता है कि तुम्हारे बाग को छोड़ने के साथ ही पौधों का जीवन खो गया है।'

''फिर वह मेरे पिताजी से प्रार्थना करता था कि वह समय समय पर कम से कम एक बार उसके बाग में आयें ताकि पौधे उनकी उपस्थिति का अनुभव कर सकें। मेरे पिता जी की उपस्थिति ऐसी थी कि लोगों को उनके आस पास एक प्रकार का आनन्द, शान्ति एवं मित्रता का अनुभव होता था। मेरे पिताजी का यही गुण मेरी माँ को सान्त्वना देता था।

''पूना में पारसी समाज बाबा का विरोध करता था और इससे मेरी माँ का जीवन कठिन हो गया था। परिवार को कष्ट देने के लिए वे हर तरह के काम करते थे। यहाँ तक कि वे बाबा के बारे में झूठी अफवाहें भी फैलाते थे और एक बार उन्होंने बाबा की गिरफ़्तारी की खबर का ताना बाना बुना। शीरीनमाई परेशान हो जातीं थीं और शेरयार जी उन्हें यह कहकर सान्त्वना देते थे, 'मेरवान का कोई बाल बांका भी नहीं कर सकता–इसलिए चिन्ता न करो।'''

मनी ने अपनी कहानी का वर्णन करते हुए आगे कहा, ''मेरे पिताजी फारसी के विद्वान थे। केवल फारसी के विद्यार्थी ही नहीं बल्कि फारसी के शिक्षक और प्रोफेसर भी किसी विषय के स्पष्टीकरण की खोज में, जो उन्हें समझ में नहीं आता था, मेरे पिताजी के पास आते थे।

''मेरे पिताजी फारसी की कविताओं से प्रेम करते थे और दूसरों को उनका अर्थ समझाया करते थे। मेरे पिताजी ने, जिन्हें फारसी का सम्पूर्ण ज्ञान था, औपचारिक रूप से किसी स्कूल में शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन ईश्वर की खोज में घूमते हुए दरवेश की तरह बिताया था। कई सालों तक खोजने और घूमने के बाद, उन्हें अन्तर्दृष्टि द्वारा मालूम हुआ कि वह अपने पुत्र के माध्यम से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। इसलिए उन्होंने घूमना छोड़ दिया और एक पारिवारिक जीवन में बस गये।

''जब मैं बाबा के साथ रह रही थी, तब मुझे अक्सर इस बात पर आश्चर्य होता था, 'औपचारिक शिक्षा प्राप्त न करने के बावजूद, मेरे पिताजी को फारसी भाषा का इतना ज्ञान कैसे हो गया?'

''मैंने बाबा से पूछने का निश्चय किया और एक बार, जब मुझे अवसर मिला, मैंने यह विषय छेड़ा। मैंने उनसे पूछा, 'बाबा, हमारे पिताजी को बिना किसी औपचारिक शिक्षा के, फ़ारसी भाषा का इतना अधिक ज्ञान किस प्रकार प्राप्त हुआ?'

''बाबा ने उत्तर दिया, 'उन्होंने इसे एक क्षण में प्राप्त कर लिया।'

''मैं नहीं समझ सकी कि ऐसा कैसे हो सकता था, इसलिये मैंने बाबा से पूछा, 'लेकिन बिना किसी प्रकार की शिक्षा के अथवा बिना कोई भी किताब पढ़े, कोई व्यक्ति फ़ारसी भाषा का ज्ञान एक क्षण में कैसे प्राप्त कर सकता है?'

''बाबा ने खिड़की पर पड़े हुये पर्दे की ओर संकेत किया और कहा, 'अगर तुम पर्दे को खींचकर एक ओर कर दो, तो प्रकाश को कमरे में आने में कितना समय लगेगा?'

''मैने उत्तर दिया, 'बाबा, यह तुरंत आ जायेगा।'

''बाबा ने मुझसे कहा, 'पिताजी ने इसी तरह ज्ञान प्राप्त किया–तुरंत।' ''

फिर मनी ने टिप्पणी की, ''सारा ज्ञान तुम्हारे अंदर है। जब पर्दा खींच कर एक ओर कर दिया जाता है, यह तुरंत प्रकट होता है।''

37. खोर्शिद के अन्तिम दिन

खोर्शिद बाबा की बिल्कुल प्रारंभ की मंडली में से एक थी। उन्होंने बाबा को सबसे पहले साकोरी में, उपासनी महाराज के आश्रम में देखा था और बाबा के साथ मंज़िल–ए–मीम के दिनों से जुड़ी हुई थीं। बाबा के शरीर छोड़ने के पश्चात्, खोर्शिद ने अपने जीवन का शेष भाग ट्रस्ट के अहाते में बिताया। उनका दत्तक पुत्र (गोद लिया हुआ), सुदाम और उसकी पत्नी, आशा, उनकी देखभाल करते थे क्योंकि स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण, खोर्शिद बहुत कम चल फिर पाती थीं। उनकी आँखें भी बहुत

कमजोर थीं और उनसे मिलने आने वाले लोगों का स्पष्ट चेहरा देखने के बजाय, वह केवल छाया ही देख पाती थीं। तो भी, वह हमेशा बहुत प्रसन्न रहती थीं और बाबा की कृपा से उनका हृदय सरल और याददाश्त बहुत तेज थी। उनसे परिचित होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ क्योंकि मैं भी ट्रस्ट के अहाते में रहता था।

शुरू में, मैं उनके पास बहुत कम जाता था लेकिन जैसे जैसे समय बीतता गया, उन्होंने अपनी इच्छा प्रकट की कि मैं उनसे रोज़ मिलूँ और मुझे ऐसा करके बहुत खुशी हुई। हम लोगों के बीच बाबा के प्रेम में एक प्रेम का बंधन विकसित हो गया था और, अगर मैं एक दिन भी उनसे नहीं मिलता था तो वह मेरे बारे में पूछती थीं और कभी कभी किसी व्यक्ति से संदेश भेजती थीं कि वह मुझसे मिलना चाहती थीं। जैसे ही मैं दरवाजे में घुसता था, वह पूछती थीं, ''कौन है?'' मैं मज़ाक में गुजराती में कहता था, ''रुस्तम, मकोड़ी पहलवान (रुस्तम, सीकिया पहलवान (बहुत दुबला, पतला))।'' जब भी मैं ऐसा कहता था खोर्शिद हँसती थीं। वह बहुत आसानी से और बहुत छोटी छोटी बातों पर हँसती थीं।

मैं फिर कहूँगा कि मैं भाग्यशाली था क्योंकि कभी कभी काम के बोझ के कारण, मैं खोर्शिद से मिलना भूल जाता था, लेकिन वह कभी नहीं भूलती थीं और मुझे याद दिलाती रहती थीं।

निम्नलिखित विवरण, खोर्शिद के साथ बिताये गये मेरे समय के सबसे अधिक अंतरंग समय का है, क्योंकि वह उनके अन्तिम दिनों में था।

वह चीज़ों को समेट रही थीं और मुझसे छोटे छोटे कामों में मदद करने को कहती थीं। हालांकि उन्होंने कभी भी मुझसे प्रत्यक्ष रूप से नहीं कहा कि वह शरीर छोड़ देंगी, फिर भी जैसे जैसे समय बीतता गया, उन्होंने मुझे पर्याप्त संकेत दे दिये थे कि उनका अन्तिम समय निकट था। मैंने सुदाम और आशा से इसकी चर्चा की, लेकिन उन्होंने मुझ पर विश्वास नहीं किया। फिर भी, मेरे सामने यह स्पष्ट था कि वह अन्तिम तैयारी कर रहीं थीं, इसलिये मैंने सभी अन्तेवासियों और बाबा प्रेमियों को; जो खोर्शिद के निकट और घनिष्ठ थे, कहा कि वह खोर्शिद के साथ समय बितायें क्योंकि वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहेंगी।

पहला संकेत इस तरह मिला। खोर्शिद और मैंने उनकी जीवन कथा को गुजराती में रिकार्ड करने के बारे में सलाह की। हालांकि उन्होंने इसे अंग्रेज़ी में रिकार्ड कर दिया था, किन्तु, क्योंकि उनकी अंग्रेज़ी कमज़ोर थी, इसलिये कहानी कुछ अलग प्रतीत होती थी और उसमें मज़ा भी इतना नहीं था। डेविड रैफो (David Raffo) ने इसे अंग्रेज़ी में रिकार्ड किया था और वह बाबा के साथ खोर्शिद के जीवन से संबंधित, एक पुस्तक पर काम भी कर रहा था।

खोर्शिद को यह विचार पसंद आया और वह इस काम को तुरंत शुरू करना चाहती थीं। यह जनवरी का महीना था और मैंने उनसे मई तक इन्तज़ार करने के लिये कहा क्योंकि मैं भाऊजी के साथ ट्रस्ट के कार्य में बहुत व्यस्त था और मुझे तभी खाली समय मिलता था जब भाऊजी अपने पश्चिमी देशों के दौरे पर जाते थे। मुझे थोड़े से अच्छी किस्म के कैसेटों का प्रबन्ध भी करना था। खोर्शिद इस पर सहमत हो गई। तो भी, जैसी कि हर मंडली जन की खासियत है, खोर्शिद मुझसे रोज़ इस बारे में पूछती थीं कि हम यह योजना कब शुरू करेंगे। वह मई महीना आने तक ऐसा करती रहीं। मई में, जब भाऊजी दौरे पर चले गये, तो मैंने अनुभव किया कि खोर्शिद को रिकार्ड कराने में अब कोई उत्सुकता नहीं थी और उन्होंने मुझसे इस बारे में पूछना बन्द कर दिया था। इसलिये मैंने उनसे इस विषय पर बात छेड़ी, ''खोर्शिद, आपकी कहानी को गुजराती में रिकार्ड करने की मैंने पूरी तैयारी कर ली है। और मेरे पास खाली समय भी है, इसलिये मुझे बताओ कि आप कब शुरू करना चाहती हैं।''

खोर्शिद के चेहरे पर उदासीनता का भाव था जब उन्होंने कहा, ''अब बहुत देरी हो गई है, रहने दो।''

पहले तो मुझे कुछ समझ में नहीं आया, इसलिये मैंने कहा, ''मई की छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं; जून में तीर्थयात्रियों के आने का समय होने तक हमारे पास बहुत समय है।''

खोर्शिद ने दूसरी बार स्पष्ट रूप से कहा, ''मेरे लिये अब बहुत देर हो चुकी है; मेरे पास पर्याप्त समय नहीं है। इसलिये इस योजना को भूल

जाओ। मेरे पास दूसरे काम हैं जिनमें मुझे तुम्हारी सहायता की ज़रूरत होगी।''

मैंने उस समय व्याकुलता का अनुभव किया, लेकिन मैंने इस घटना पर ध्यान नहीं दिया। मैंने सोचा कि कमरा बदलने से वह भ्रमित हो गई थीं (उनके कमरे की पुताई होने के कारण, वह थोड़े समय के लिये दूसरे कमरे में रहने लगी थीं।)

इसके बाद दूसरी घटना हुई। प्रतिदिन जब मैं उनसे मिलने जाता था, वह मुझसे समाचार पत्र में पन्ने का जन्मपत्रिका वाला भाग पढ़ने को कहती थीं। उसके बाद वह मुझसे मेहेराबाद आने वाले तीर्थयात्रियों की सूची पढ़ने को कहती थीं। जब वह अपने किसी घनिष्ठ का नाम सुनती थीं तो उनका चेहरा खिल जाता था।

एक दिन सामान्य रूप से, मैं तीर्थयात्रियों के नाम पढ़ रहा था और वह डेविड रैफो और बॉब अन्डरवुड के नाम सुनकर प्रसन्न हो गईं। डेविड उनके जीवन पर एक किताब लिख रहा था और खोर्शिद उसको, जिस समय और जैसे वह चाहे, उस पुस्तक को प्रकाशित करने का सर्वाधिकार और पूरा प्रभुत्व देना चाहती थीं। मुझे यह बात अजीब लगी कि बॉब का नाम पढ़ने और मुझसे उसके आने की तारीख पूछने के बाद, उन्होंने मुझसे तीर्थयात्रियों की सूची पढ़ना बंद करने के लिये कहा।

मैंने सूची पर नज़र डाली और नीला देवी का नाम देखा। क्योंकि वह भी खोर्शिद को बहुत प्रिय थी, इसलिये मैंने यह बात खोर्शिद को बताई। खोर्शिद ने टिप्पणी की, ''तब तक बहुत देर हो जायेगी।'' मुझे उनकी टिप्पणी अजीब लगी और मैंने उनका ध्यान नीला देवी के आगमन की ओर पुनः आकर्षित किया, लेकिन उन्होंने वही उत्तर दिया।

यह सोचकर कि वह थक गई थीं और चाहती थीं कि मैं चला जाऊँ, मैं जाने के लिये उठा, लेकिन खोर्शिद ने मुझसे बैठने के लिये कहा और दूसरे विषयों पर बात करने लगीं।

उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जानता था जो अप्राकृतिक निद्रा (कोमा, Coma) में रह चुका था और इस स्थिति में रहने

में क्या होता था? क्या कोई व्यक्ति अप्राकृतिक निद्रा में होते हुये, दूसरे लोगों की बातें सुन सकता था? मैंने उसे बताया कि बाबा की बहिन, मनी, इस बात पर जोर देतीं थीं कि अप्राकृतिक निद्रा में लोग सुन सकते थे। बाबा प्रेमियों के कई ऐसे उदाहरण थे जो अप्राकृतिक निद्रा में चले गये और मनी उनके रिश्तेदारों को संदेश भेजतीं थीं और उनसे बताने को कहतीं थीं।

कुछ बाबा प्रेमियों ने मनी को उत्तर देकर बताया कि उन्होंने वैसा ही किया जैसा कि मनी ने कहा था और उन्हें अप्राकृतिक निद्रा में चले गये व्यक्ति से, थोड़ा सा हाथ अथवा सर हिलाकर, प्रत्युत्तर मिला था।

खोर्शिद यह सुनकर प्रसन्न हो गईं। वह इस विषय पर कई दिनों तक बात करती रहीं और मैंने उनसे यहाँ तक कहा कि मैंने अप्राकृतिक निद्रा में चले गये लोगों के, जो महीनों अथवा सालों के बाद इससे बाहर आये, यथार्थ जीवन के अनुभवों की पुस्तकें पढ़ीं थीं जिनमें उन्होंने इस बात की पुष्टि की थी कि अप्राकृतिक निद्रा की अवस्था में जो भी घटित हुआ, उसकी उन्हें चेतना थी। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, ''अगर मैं अप्राकृतिक निद्रा में चली जाऊँ तो लोगों से कहना कि मुझसे बातें करें, और हाँ, मुझे अस्पताल न ले जाना। मैं नहीं चाहती कि मुझे कृत्रिम रूप से ज़िन्दा रखा जाये। अभी मुझे कुछ काम करने हैं और मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है।''

उनकी आवाज में अन्तिम निर्णय सा था जिससे मेरा दिल डूबने लगा।

उनके पास उनके जीवन की कहानी की एक अपूर्ण (rough) प्रतिलिपि थी जिसकी फोटोकापी कराने के लिये, उन्होंने मुझसे कहा। मैंने ऐसा ही किया और फिर उन्होंने मुझसे कहा कि मैं कुछ विशेष तीर्थयात्रियों से मिलकर उन्हें बताऊँ कि वह उनसे (खोर्शिद से) मिलकर, अपनी प्रतिलिपि ले लें। ऐसा करने के बाद भी, उनके पास कुछ प्रतिलिपियाँ अभी भी बच गईं थीं, इसलिये उन्होंने फिर मुझसे, हर प्रतिलिपि पर उस तीर्थयात्री का नाम लिखवाया जिसे वह प्रतिलिपि देना चाहती थीं। फिर

उन्होंने मुझे वे सारी प्रतिलिपियाँ दे दीं। उन्होंने मुझे निर्देश दिया, ''इन्हें अपने पास रखो और जब वे तीर्थयात्री यहाँ आयें, उन्हें दे देना।''

मैंने दृढ़तापूर्वक अस्वीकार करते हुये कहा, ''खोर्शिद, अगर आप स्वयं उन्हें देंगी तो उन्हें अच्छा लगेगा।''

खोर्शिद ने कहा, ''तुम दे देना। जब वे यहाँ आयेंगे, तब तक बहुत देर हो जायेगी।''

मुझे मेरे पूरे शरीर में एक खालीपन का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ क्योंकि मैं जानता था कि उस समय तक वह नहीं रहेंगी।

मैंने खोर्शिद के साथ हँसी मज़ाक करना और उनके साथ समय बिताना ज़ारी रखा। अगले कुछ दिनों में वह अपने सभी प्रिय पकवान खाती रहीं, लेकिन वह केवल एक या दो कौर खाकर वापस कर देती थीं।

उन्होंने मुझसे कहा, ''मुझे यह सब खाने में बहुत आनंद आता था लेकिन अब नहीं आता।''

मैंने कहा, ''खोर्शिद, ऐसा प्रतीत होता है कि आपके खाने के सभी संस्कार समाप्त हो गये हैं।'' वह हँसने लगीं लेकिन अब यह और भी अधिक स्पष्ट हो गया था कि वह जाने के लिये तैयार थीं। एक बार वह इस बारे में बात करने लगीं कि ऋषिकेश में लोग शवों के दाह संस्कार में पर्याप्त मात्रा में घी और लकड़ी का प्रयोग नहीं करते थे और फिर आधे जले शवों को कुत्ते खा जाते थे। उन्होंने मुझसे यह देखने के लिये कहा कि जब उनका दाह संस्कार हो, तब पर्याप्त मात्रा में घी और लकड़ी का प्रयोग किया जाये, और उन्होंने मुझे निर्देश दिया कि उनके शरीर की थोड़ी सी राख मेहेराबाद के पेड़ों पर और थोड़ी सी नदी में डाली जाये। उन्होंने उस समय वर्षा होने की इच्छा भी प्रकट की।

अहमदनगर में अग्नि मंदिर का पारसी पुरोहित उनका मित्र था। उन्होंने उसे बुलाने के लिये मुझे दो बार भेजा और यद्यपि उसने आने का वादा किया, दोनों बार वह नहीं आया।

जब मैंने खोर्शिद से कहा कि मैं जाकर उसको फिर से याद दिलाऊँगा तो उन्होंने कहा, ''अभी दूसरे काम भी करने हैं। और समय नहीं है, इस लिये अभी छोड़ो।

इसी दौरान डेविड रैफो आ गया। मैंने डेविड को वह सब कुछ बताया जो हुआ था और उसे यथाशक्ति खोर्शिद के साथ रहने के लिये उत्साहित किया। डेविड के जाने के बाद बॉब अन्डरवुड आया और मैंने उससे भी अपनी चिन्ता बताई।

उस समय भाऊजी पश्चिमी देशों के दौरे पर थे। खोर्शिद ने मुझसे पूछा कि वह कब वापस आ रहे थे और जब मैंने उनको तारीख बताई तो उन्होंने सरलता से कहा, ''तब तक बहुत देर हो जायेगी।''

जब मैंने पूछा कि क्या उनको भाऊजी से कुछ काम था, उन्होंने कहा, ''नहीं, वह सुबह आफ़िस जाने से पहले मुझसे मिलने आया करते थे, इसलिये मुझे उनकी याद आई।''

मुझे यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे नहीं मालूम था कि भाऊजी उनसे मिलने के लिये रोज सुबह आते थे।

तब एक समय ऐसा आया जब खोर्शिद ने उन सब कामों की सूची पर नज़र डाली जो उन्हें करने थे, और कहा, ''आखिरकार सारा काम हो गया।'' मैं किसी एक अथवा दूसरे काम की ओर उनका ध्यान आकर्षित करता रहा जो उन्हें करना था लेकिन वह उसमें रुचि लेती प्रतीत नहीं होती थीं। उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा, ''अब तुम मेहेराबाद में काम करना बंद कर दो और केवल ट्रस्ट आफ़िस में काम करो।''

मुझे आश्चर्य हुआ कि वह आग्रह कर रही थीं कि मैं मेहेराबाद न जाऊँ। मैंने उनको बताया कि मुझे वहाँ पर कुछ काम करना था लेकिन अगर उनको मेरी ज़रूरत हो तो सुदाम से फोन करवा दें, मैं तुरन्त आ जाऊँगा। वह मान गईं। उन दिनों मैं दो जगहों में काम किया करता था—सोमवार से गुरुवार शाम तक मैं ट्रस्ट आफ़िस में काम करता था और गुरुवार शाम से सोमवार सुबह तक मैं मेहेराबाद में काम करता था।

इसलिये मैं गुरुवार की शाम को सामान्य रूप से मेहेराबाद चला गया। उस समय मुझे इस बात का अनुमान नहीं था कि अब खोर्शिद का सारा काम समाप्त हो जाने से वह जाने के लिये तैयार थीं।

शनिवार की शाम को पिलग्रिम सेन्टर के चौकीदार ने मुझे बताया कि एक पश्चिमी प्रेमी मुझे ढूँढ़ रहा था। क्योंकि चौकीदार मुझे उस पश्चिमी प्रेमी का न तो नाम बता सका और न ही उसका हुलिया बता सका, इसलिये मैंने इसे अधिक महत्व नहीं दिया और मेहेराबाद में रात में स्टाफ क्वार्टर्स में सो गया। अगले दिन किसी ने मुझे बताया कि एक पश्चिमी प्रेमी मुझे ढूँढ़ रहा था। मैं सोच में पड़ गया कि क्या खोर्शिद मुझे बुला रही थीं लेकिन मैंने इस विचार पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि मैंने खोर्शिद से मुझे फ़ोन करने के लिये कहा था और उन्होंने सुदाम से फ़ोन करने के लिये कहा होता।

रविवार को दोपहर में मैं सैवेजेस किचन (रसोई घर) में था जब मुझे स्टीव माइरो मिला जिसने मुझे बताया, ''रुस्तम, बॉब अन्डरवुड तुम्हें कल से ढूँढ रहा है।'' मैं डर गया। मुझे विश्वास हो गया कि खोर्शिद ने बॉब से संदेश भेजा था। मैंने स्टीव से पूछा, ''क्या तुम्हें मालूम है कि वह क्यों ढूँढ़ रहा था?'' स्टीव ने कहा, ''उसने कुछ नहीं कहा''। मेरा हृदय धड़कने लगा। ज़रूर खोर्शिद का संदेश होगा। उन्होंने मुझे मेहेराबाद जाने के लिये मना किया था।

मैंने अपने कपड़े समेटे और मोटर साइकिल से अहमद नगर आ गया। जैसे ही मैंने ट्रस्ट आफ़िस में प्रवेश किया, बाहर बरामदे में आशा और सुदाम को देखा। उन्होंने मुझे बताया कि खोर्शिद को कम्पन का बहुत बुरा दौरा पड़ा था और उनका पूरा शरीर काँप रहा था। यह आधे घण्टे तक रहा। वहाँ पर डाक्टर थे और उनको खोर्शिद को नींद का इंजेक्शन देना पड़ा।

मैंने पूछा, ''अब वह कैसी हैं।'' आशा ने उत्तर दिया, ''वह सो रही हैं।'' मैंने पूछा, '' क्या मैं उनके पास बैठ सकता हूँ?'' आशा ने सहमति में सिर हिलाया और कहा कि खोर्शिद मुझे याद करती रही थीं। जैसे ही

मैंने खोर्शिद के कमरे में प्रवेश किया, उन्होंने दवाओं के नशे से बाहर आते हुये अपनी आँखें खोलीं और पूछा, ''कौन हैं?'' मैंने सहज रूप से उत्तर दिया, ''रुस्तम, मकोड़ी पहलवान।'' खोर्शिद ने अभी भी, नींद में, मुझे प्रेम से डाँटा, ''मैंने तुमको कहीं भी जाने के लिये मना किया था। अगर मैं मर जाती तो क्या होता? अब तुम यहीं रहो और कहीं मत जाओ।''

मैंने कहा, ''ठीक है'' और उनके पास पूरी शाम और रात में बैठा रहा। सबकुछ सामान्य प्रतीत होता था। डाक्टरों ने उनके खून की जाँच की थी और सब कुछ सामान्य था, लेकिन मैं जानता था कि खोर्शिद का अन्त आ गया था। मैं रात में देर तक उनके पास बैठा रहा और उन्होंने मुझे फिर से उन कामों की याद दिलाई जो उन्होंने मुझे करने के लिये दिये थे।

एक समय उन्होंने अपने बिस्तर के अन्तिम सिरे की ओर संकेत किया और कहा, ''बाबा बिस्तर के किनारे बैठे हुये हैं।'' डॉ0 एन अन्दर आईं और उन्होंने उनसे भी यही कहा और उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ पर बाबा बैठे हुये थे। अन्त में उन्होंने मुझसे जाकर सोने के लिये कहा क्योंकि वह भी आराम करना चाहती थीं और मुझसे सुबह आने के लिये कहा। उनकी पोती मीरा को (सुदाम की पुत्री) मेडिकल कॉलेज में प्रवेश लेने के लिये उसी रात को जाना था।

अगले दिन सुबह, जैसे ही मैंने खोर्शिद के कमरे में प्रवेश किया, मैंने उनको बहुत बेचैन पाया। वह बिना रुके, एक के बाद दूसरी बाबा की आरती बोल रही थीं। मुझसे पहले, बाबा की मंडली की मेहरू अभी अभी अन्दर आई थीं। खोर्शिद ने मेहरू से उनकी पीठ मलने के लिये कहा क्योंकि उनकी पीठ में दर्द हो रहा था। मेहरू के जाने के बाद, उन्होंने मुझसे पीठ मलने के लिये कहा। इसी समय मेहेराज़ाद से एरच की कार आई। मैंने खोर्शिद से एरच से मिलकर आने की अनुमति माँगी।

जब मैं एरच से मिला, उन्होंने मुझसे खोर्शिद का हाल पूछा। मैंने उत्तर दिया, ''एरच, वह बाबा के पास जाने के लिये तैयार हैं। इस अवस्था में आप उनसे मिलना चाहते हैं?'' एरच उनके कमरे में जाना चाहते थे, लेकिन कुछ अन्तेवासियों ने उन्हें रोक लिया। उन्होंने अपनी चिन्ता व्यक्त

की कि उन्हें (एरच को) श्वास की नली के दो कोष्ठों (Bronchial) से संबंधित संक्रमण आसानी से हो सकता था जो खोर्शिद को था। एरच मान गये और उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उनकी ओर से खोर्शिद को ''जय बाबा'' कह दूँ और यहाँ पर जो कुछ हुआ वह सब कुछ बता दूँ।

मैंने ऐसा ही किया और खोर्शिद ने कहा, ''पिछली बार मुझे यह संक्रमण होने पर एरच दरवाज़े तक आये थे और मुझसे दूर से जय बाबा की थी।'' मैंने खोर्शिद से पूछा, ''क्या मैं जाकर एरच को यह बता दूँ।'' खोर्शिद ने कहा, ''समय नहीं है। जाने दो।''

खोर्शिद की बेचैनी बढ़ती जा रही थी और वह अपनी पीठ में दर्द की शिकायत कर रही थी। मैंने उनकी पीठ मलनी चाही, लेकिन उन्हें चिन्ता थी कि मैं थक जाऊँगा। उस समय मैं योग की क्रियायें करने के कारण ताकतवर था और मैंने उनको यह बताया। मैं आधे घण्टे से लेकर एक घण्टे तक उनकी पीठ की मालिश आसानी से कर सकता था। वह मुझसे आधा घण्टा मालिश करवाने के लिये तैयार हो गईं। डॉ0 एन ने आकर, खोर्शिद का निरीक्षण किया और चली गई। खोर्शिद ने मुझसे बाहर बैठने के लिये कहा क्योंकि उन्हें मलत्याग करने की इच्छा हो रही थी लेकिन उन्होंने मुझे कहीं न जाने की चेतावनी दी।

इसलिये मैं उनके कमरे के बाहर बैठा हुआ था। मुश्किल से कुछ मिनट ही बीते होंगे जब आशा ने मुझे पुकारा और अन्दर आने के लिये कहा। यह सोचकर कि खोर्शिद ने मलत्याग कर लिया था, मैं अन्दर गया और यह देखकर घबरा गया कि खोर्शिद का पूरा शरीर काँप रहा था। आशा उनके आक्सीजन लगाने की कोशिश कर रही थी। मैंने जाकर खोर्शिद का हाथ पकड़ा जब कि आशा आक्सीजन लगाने के लिये संघर्ष कर रही थी। मैंने आशा से जाकर डॉ. एन और सुदाम को बुलाकर लाने के लिये कहा। डॉ. एन अन्दर आईं। खोर्शिद का शरीर काँप रहा था और इतनी जोर से हिल रहा था कि उनको पकड़ने में बहुत अधिक शक्ति का प्रयोग करना पड़ रहा था। वह बाबा को पुकार रही थीं और उनसे आने के लिये कह रही थीं। इसके साथ ही वह डॉ. एन से उनके शरीर के कम्पन को रोकने के लिये दवा देने के लिये कह रही थीं। वह समय समय

पर अपनी पोती मीरा का नाम लेकर उसे भी पुकार रही थीं। डॉ0 एन ने उनको शान्ति प्रदान करने वाली दवा (Sedative) दे दी।

शान्ति प्रदान करने वाली दवा का असर शुरू होने के पहले आधे घण्टे तक खोर्शिद का शरीर काँपता रहा। इस दौरान सुदाम आ गया था और उसने यह सोचकर कि मैं थक गया होऊँगा, खोर्शिद का हाथ मेरे हाथ से लेना चाहा। लेकिन खोर्शिद ने आग्रह किया कि मैं उनका हाथ पकडूँ और मैं उनका हाथ तब तक पकड़े रहा जब तक वह सो नहीं गई। मैंने अनुभव किया कि उन्होंने अपना वादा पूरा किया क्योंकि मैं आधे घण्टे तक उनका हाथ पकड़े रहा हालाँकि मुझे उनकी पीठ नहीं मलनी पड़ी।

जिस समय वह निद्रालु हो रही थीं, उन्होंने हँसना शुरू किया। डॉ. एन ने पूछा, ''खोर्शिद आप हँस क्यों रही हैं?'' खोर्शिद धीरे से कुछ बुदबुदाईं जो सुनाई नहीं पड़ा। हमने उनको उनके बिस्तर पर लिटा दिया और मैं कमरे के बाहर आ गया। एलन वैगनर (Allan Wagner) खोर्शिद से मिलने आया था और वह उनके लिये अदरक का केक लाया था जो उसने खोर्शिद के लिये स्वयं बनाया था। दवाओं के असर से खोर्शिद को अभी अभी झपकी आ गई थी और उसने सोचा कि खोर्शिद से बाद में मिलना ज्यादा अच्छा रहेगा। मैंने एलन को रोका और आग्रह किया, ''वह अभी सोई नहीं हैं, उनसे अभी मिलो। मैं नहीं सोचता कि वह उठेंगी।''

मैं एलन के साथ अन्दर गया। वह पूरा जोर लगाकर बोला। खोर्शिद ने अपनी आँखें खोलीं और उसे पहचाना। वह कुछ बुदबुदाईं जो सुनाई नहीं पड़ा। एलन ने अदरक के केक के बारे में बताया और खोर्शिद से सोने के लिये कहा। उसने कहा कि जब वह जागेंगी तब वह उनसे मिलेगा। जाते समय एलन ने कहा, ''जयबाबा''। खोर्शिद ने अपने हाथ जोड़े और ''जय मेहेर बाबा'' कहकर उत्तर दिया जो उनको व्यक्तिगत रूप से अधिक प्रिय था। जो लोग उनका ''जयबाबा'' कहकर अभिवादन करते थे, उन्हें वह प्रेम पूर्वक डाँटकर ''जय मेहेर बाबा'' कहने के लिये कहती थीं। यह अन्तिम शब्द थे जो खोर्शिद ने झपकी लेने और अप्राकृतिक नींद में जाने से पहले कहे।

यह सब सुबह ग्यारह बजे हुआ। तीन बजे हम सब एरच की मेज के पास एकत्र हुये। एरच ने उनके बारे में पूछा और अब यह स्पष्ट था कि वह अप्राकृतिक निद्रा में थी। मैंने एरच को बताया कि मैंने खोर्शिद से उनकी ''जयबाबा'' कह दी थी और खोर्शिद की टिप्पणी भी बता दी कि पिछली बार जब उनको श्वास का संक्रमण हुआ था, उन्होंने दरवाज़े पर आकर उनसे जयबाबा की थी।

एरच ने मुझसे कहा, ''तुमने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया?'' मैंने उत्तर दिया, ''उन्होंने मुझे रोक दिया और मुझसे कहा कि मैं उनको छोड़कर न जाऊँ।'' एरच ने थोड़ी देर सोचा और फिर यह कहते हुये उठ गये, ''हमें जाकर खोर्शिद से मिलना चाहिये।''

कुछ अन्तेवासियों ने, जिन्हें अभी भी चिन्ता थी कि एरच को कोई संक्रमण हो जायेगा, दृढ़ता पूर्वक विरोध किया, लेकिन एरच ने हाथ हिलाकर उन्हें रोका और खोर्शिद के कमरे के अन्दर गये। वह थोड़ी देर तक खोर्शिद के बिस्तर के पास हाथ जोड़कर बैठे रहे और शायद अपने दिल में उनसे बात करते रहे। फिर वह उठे और झुककर ''जय मेहेरबाबा'' कहा और चले गये।

जैसे ही खोर्शिद के अप्राकृतिक निद्रा में जाने की बात हर जगह फैली, एक एक करके अन्तेवासी, तीर्थयात्री और खोर्शिद के मित्र उनसे मिलने आये। उनकी इच्छा के अनुसार उनको अस्पताल नहीं ले जाया गया और उनके पास आने वाले हर व्यक्ति को यह बता दिया गया कि यह खोर्शिद की इच्छा थी कि लोग उनसे बात करें क्योंकि वह सुन रही होंगी। टेड ने गाने गाये; मीरा मेडिकल कॉलेज से वापस आ गई और उसने वह शाम और रात अपनी दादी के पास बिताई।

अगले दिन भी लोग आते जाते रहे और तीसरे दिन सुबह लगभग सात बजे (आरती का समय) खोर्शिद अपने प्रियतम बाबा के पास चली गईं। इतने सालों में, उन्होंने सुबह बाबा की आरती करने का कड़ा नियम बना लिया था और उन्होंने आरती के समय ही अपनी अन्तिम साँस ली।

जिस समय खोर्शिद को बाबा की समाधि, मंडली हाल और अन्त में दाह संस्कार की जगह पर ले जाया गया, कुछ घण्टे बीत गये होंगे। उन घण्टों में खोर्शिद के रूप और उनके चेहरे के भावों का पूर्ण रूप से रूपान्तरण हो चुका था। वह चमक रहीं थीं और उनके चेहरे पर मुस्कुराहट थी। मृत्यु से पहले, उन्हें अक्सर स्वप्न दिखते थे कि वह बाबा और मेहेरा के साथ घूमने जा रहीं थीं। उनके चेहरे के भावों से ऐसा प्रतीत होता था कि वह वास्तव में अपने प्रियतम के साथ घूम रहीं थीं। अतिरिक्त मात्रा में लकड़ी और घी का प्रयोग किया गया था, और उनकी चिता जल जाने के बाद, हमें उनकी हड्डियाँ ढूँढ़ने में बहुत कठिनाई हुई जो कि लगभग पूरी जल गई थीं। हमें छोटे टुकड़े मिले जिनमें से थोड़े हमने मेहेराबाद के पेड़ों में डाल दिये। अगले दिन हम टोका के पास एक नदी में गये और उनकी थोड़ी सी राख वहाँ पर डाली। शेष राख, जैसी कि बाबा की इच्छा थी, उनकी समाधि के समीप, एक ऐसे स्थान में, एक कब्र में गाड़ दी गई जो बाबा ने उन लोगों के लिये आरक्षित कर दिया था जो उनके हृदय के समीप थे और जिन्होंने अपना सब कुछ उन्हें अर्पित कर दिया था।

हर साल खोर्शिद को मेहेराज़ाद में बाबा द्वारा लगाये गये पेड़ से एक आम मिलता था। यह पेड़ उस आम की गुठली से उगा था जिसे बाबा ने खाया था और जो एक मस्त द्वारा बाबा को दिया गया था। मरने के पहले अन्तिम चीज़ जो खोर्शिद ने खाई, वह उनका आम का प्रसाद था। खोर्शिद बाबा के पास 4 अगस्त 1999 को चली गईं।

38. प्रेम की कहानी

मैंने एक बार मेहेरू से, जो बाबा की महिला मंडली जनों में से एक हैं, निम्नलिखित प्रश्न पूछा, ''बाबा ने एक बार कहा था कि वह यह शरीर नहीं हैं, फिर भी हम देखते हैं कि मंडली भी उनके रूप के मोह में पड़ी हुई थी। अक्सर मंडली जन जिस ढँग से बाबा के साथ अपने जीवन की कहानियाँ सुनाते हैं, वह बाबा के निराकार स्वरूप के लिये, जिसका वह प्रतिनिधित्व करते हैं, तड़पने के बजाय, उनके और उनके भौतिक स्वरूप के लिये उनकी तड़प को प्रदर्शित करती हैं। मेहेरा, जो बाबा की प्रियतमा

थीं, इतनी अधिक शोकाकुल थीं कि उनको देखकर दिल फट जाता था। वह इस दशा में एक लम्बे समय तक रहीं। मेरी तरह दूसरे बाबा प्रेमी हैं जो बाबा का अनुसरण करने में शक्ति प्राप्त करने के लिये मंडली को आदर्श के रूप में देखते हैं। मेहेरा को इस तरह शोकाकुल देखकर हम लोग भ्रमित हो गये। ऐसी स्थितियों में हम साहस कैसे रख सकते हैं जब कि मेहेरा इतनी अधिक शोकाकुल होती हैं? वह शोकाकुल क्यों हुईं? क्या आप मेरे भ्रम को दूर कर सकती हैं?''

मेहेरू ने कहा, ''मैं नहीं जानती कि मैं इस कठिन प्रश्न का उत्तर कैसे दूँ। तुम्हारे प्रश्न ने मेरे हृदय में बहुत सी भावनाओं की हलचल मचा दी है। मैं नहीं जानती कि मैं क्या कहूँ। फिर भी मैं किसी प्रकार से कोशिश करूँगी।''

मेहेरू थोड़ी देर रुकीं जैसे कि कुछ याद कर रहीं हो और फिर कहा, ''अवतार द्वारा मनुष्य रूप लेने का एक मात्र कारण हमें उस रूप के साथ संबंध स्थापित करने का अवसर देना है। निराकार ईश्वर हमारे कल्याण के लिये मनुष्य रूप लेता है। जब ईश्वर मनुष्य रूप में अवतरित होता है, वह हमारी चेतना के स्तर पर इतनी पूर्णता से नीचे उतरता है कि वह अपनी दिव्यता को छिपा लेता है और हमारे कल्याण के लिये एक साधारण मनुष्य की तरह आचरण करता है। यह सब उसकी लीला, उसका दैवी खेल है।

''वह एक साधारण मनुष्य की भूमिका अदा करने के द्वारा हमारे सामने उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वह यथार्थ में प्रेम और सेवा का जीवन जीकर हमें सिखाते हैं कि प्रेम और सेवा का एक आदर्श जीवन किस प्रकार जिया जाये। जीवन जीकर हमें यह दिखाने के लिये कि प्रेम कैसे किया जाये, वह स्वयं प्रेमी बन जाते है। मेहेरा ने बाबा की प्रेमिका की भूमिका अदा की। अपनी प्रियतमा (प्रेमिका), मेहेरा, से प्रेम करने के द्वारा, बाबा ने पूरी दुनियाँ को यह दिखाया कि प्रेम कैसे किया जाता है। बाबा, एक प्रेमी के रूप में अपनी प्रियतमा मेहेरा को प्रसन्न करने के लिये कुछ भी कर

सकते थे और किसी भी सीमा तक जा सकते थे। वह उसकी छोटी सी छोटी इच्छा पूरी करते थे।

''एक बार मनी ने बाबा से यहाँ तक कहा, 'बाबा, आप हमेशा मेहेरा का पक्ष लेते प्रतीत होते हैं। अगर दिन के समय वह दावा करे कि रात है, तो मेरा अनुमान है कि आप कहेंगे कि वह ठीक कह रही है।' बाबा ने कहा, 'हाँ, मैं ऐसा ही कहूँगा।'

''बाबा ने अपने उदाहरण से हमको दिखाया कि अपनी प्रियतमा के लिये एक प्रेमी का प्यार कितना सम्पूर्ण होना चाहिये। प्रेमी के मन में केवल अपनी प्रियतमा की खुशी और आराम का विचार ही सर्वोपरि होना चाहिये। बाबा ने मेहेरा को चुना क्योंकि वह बाबा से जैसा प्रेम कर सकती थी, वैसा और कोई नहीं कर सकता था। बाबा के लिये उसका प्रेम इतना पवित्र और तीव्र था कि वह निरंतर उनके बारे में सोचती रहती थी। उसका जीवन पूरी तरह उनके लिये था और वह पूरी तरह से उनकी (बाबा) थी। वह केवल बाबा के आराम, बाबा की खुशी और बाबा के कष्ट के बारे में सोचती थी। उसका पूरा जीवन पूर्ण रूप से बाबा के इर्द गिर्द घूमता था और उसके लिये जीवन में किसी और के लिये कोई जगह नहीं थी। वह केवल उन्हीं के लिये जीवित थी।

''इसी कारण, बाबा उसके प्रियतम हो गये। अपने प्रियतम के लिये उसका प्रेम इतना पूर्ण और पवित्र था कि अपने प्रेम के कारण, वह अपने प्रियतम की प्रियतमा बन गई। इस तरह से, मानवीय स्तर पर, प्रेमी और प्रियतम एक दूसरे में विलीन हो गये जहाँ हम इसे स्पष्ट रूप से देख और सीख सकते हैं। यह सब खेल क्यों? यह हमारी सहायता करने और हमें दिखाने के लिये था कि शुद्ध प्रेम क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जाये। केवल शुद्ध प्रेम ही हमें लक्ष्य (ईश्वर) तक ले जा सकता है।

''बाबा के शरीर छोड़ने के पश्चात्, मेहेरा ने जिस शोक का अनुभव किया, वह एक सामान्य आत्मा का, अपने प्रिय की मृत्यु पर होने वाला शोक नहीं था। उसका शोक अपने प्रियतम से बिछड़ने का था। उसने जिस दर्द का अनुभव किया, वह ऐसा दर्द था जो एक प्रेमी अपने प्रियतम

से बिछड़ने पर अनुभव करता है। मेहेरा के लिये ऐसी भूमिका निर्धारित करके, बाबा एक बार पुनः, मानवीय स्तर पर, हमारे लिये सच्चे प्रेम का चित्र प्रस्तुत कर रहे थे।

"ऐसा प्रेम, जो प्रियतम की उपस्थिति में, केवल उसकी खुशी को खोजता है; बिछड़ने पर मिलने के लिये शोकाकुल होता और तड़पता है। यही कारण है कि बाबा ने मेहेरा को उस परिस्थिति में रखा। बिछड़ने के बाद मेहेरा ने जिस शोक का अनुभव किया, उसने बाबा के लिये उसकी तड़प को और बढ़ा दिया। वह अपने हृदय में तीव्र तड़प के साथ बाबा की याद करती हुई, रात में देर तक जागती रहती थी। वह अपने बिस्तर के पास खड़ी होकर, बाबा की फोटो देखती रहती थी। यहाँ तक कि जिस जगह पर खड़े होकर, वह सालों तक ऐसा करती रही थी, वहाँ फ़र्श पर अभी भी उसके पैरों के निशान हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी तड़प की आग ने फर्श पर वे निशान बना दिये थे। केवल उसके हृदय में ही ऐसी तीव्र तड़प थी और इसी के द्वारा उसका अपने दैवी प्रियतम से मिलन हुआ। बाबा, जो सबके प्रियतम हैं, एक प्रियतमा की रचना करते हैं और सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण के लिये, सम्पूर्ण प्रेम कहानी को, अपने आचरण द्वारा स्थापित करते हैं।

"पहले चरण में, प्रेमी प्रियतम की खुशी को खोजता है। फिर, बिछड़ने का शोक और मिलन के लिये तीव्र तड़प और अन्ततः, अन्तिम मिलन होता है। इसी तरह से दैवी प्रेम का खेल खेला जाता है।"

39. विरह की वेदना

मेरी पीठ में दर्द को शुरू हुये चार साल बीत चुके हैं। मुझे अपना अधिकांश समय बिस्तर में लेटकर बिताना पड़ता है। हालाँकि शारीरिक रूप से जीवन बहुत सीमित हो गया है लेकिन बाबा की उपस्थिति इस सम्पूर्ण अनुभव को आत्मा को अत्यधिक मुक्त करने वाला बना देता है।

यह अप्रैल 2009 का समय है जब मैं यह कहानी लिख रहा हूँ। भाऊजी का स्वास्थ्य बहुत खराब है फिर भी वह पश्चिमी देशों के प्रेमियों से किये गये अपने वादे को पूरा करने के लिये अथवा ये समझिये बाबा

से किये गये अपने वादे को पूरा करने के लिये, पश्चिमी देशों के दौरे पर जा रहे हैं। वह वहाँ पर मरने और वहाँ से वापस न आने की बात करते हैं। हालाँकि वह यह बात पिछले सालों में भी कहते थे, लेकिन इस बार मुझे यह भिन्न प्रतीत होती है। इस विचार से मेरा हृदय भारी हो जाता है कि वह (भाऊजी) अपना भौतिक शरीर छोड़ देंगे।

मैं भाऊजी को अक्सर फ़ोन करता था और वह कृपापूर्वक अपनी व्यस्त दिनचर्या में से मुझे समय देकर, मुझसे बात करते थे। उनके शब्दों को सुनकर, मेरे हृदय की बेचैनी शान्त हो जाती थी। मेरे लिये जैसे स्वयं बाबा बात करते थे और भाऊजी केवल माध्यम थे। पिछले कुछ सालों में, मुझे भाऊजी के रूप में एक महासागर दिखने लगा था जो और कुछ नहीं बल्कि स्वयं बाबा थे। जब मैं उनसे मिलता था, हमारा परिचित भाऊजी का व्यक्तित्व लुप्त हो जाता था और मुझे केवल इस बात की चेतना रहती थी कि मेरा हृदय बाबा से संबंध स्थापित कर रहा था, एक बूँद महासागर से मिल रही थी।

मंडली के साथ अपने शुरू के दिनों में, मैंने इस बात का अहसास नहीं किया। मैं अपने दिमाग का प्रयोग कर रहा था और मुझे मंडली में वे सब कमज़ोरियाँ नज़र आती थीं जो दूसरे लोग देखते थे। लेकिन आध्यात्मिक प्रशिक्षण के दौरान, मंडली द्वारा चलाये गये शब्दों के हथौड़ों और मेरे अस्तित्व को झकझोर दिये जाने के कारण उत्पन्न हुये उपद्रव ने, मेरे मन और इसके मिथ्यापन को वश में कर लिया था और मेरे हृदय को खोलने में मदद की थी। अपने दिमाग के बजाय हृदय का प्रयोग करने से, मुझे बाबा के साथ संबंध स्थापित करने के लिये, मंडली जनों को एक सीधे मार्ग के रूप में समझने में सहायता मिली। अब मुझे उन अवसरों के लिये, जो मैंने अन्तेवासी के रूप में सर्वप्रथम आने पर गँवा दिये थे, अफ़सोस होता था और मैं बचे हुये अवसरों का अधिकाधिक लाभ उठाना चाहता था। यही कारण था कि मैं भाऊजी को बार बार फ़ोन करता था।

हालाँकि उनसे बात करके, मेरे हृदय की बेचैनी शान्त हो जाती थी, लेकिन यह केवल कुछ दिनों के लिये होता था और फिर मेरा हृदय उनसे बात करने के लिये पुनः तड़पने लगता था। यह नियमित रूप से चलता

रहा। जब भाऊजी के पश्चिमी देशों में जाने का समय पास आया, मुझे यह जानकर और अधिक बेचैनी होती थी कि वह लम्बे समय के लिये चले जायेंगे और इसीलिये मैंने उन्हें पुनः फ़ोन किया। वह व्यस्त थे और मुझसे बात नहीं कर सके जिससे मेरी बेचैनी और अधिक बढ़ गई। उनके खराब स्वास्थ्य को देखते हुये, मेरे मन में विचार आया कि शायद मैं उनसे पुनः बात न कर सकूँ और अचानक मैंने सोचा कि भाऊजी के माध्यम से बाबा के साथ मेरे सम्पर्क का द्वार शायद बन्द हो जाये। इस विचार ने मेरे हृदय में विरह की वेदना के साथ साथ, तीव्र तड़प और आग प्रज्वलित कर दी। यह अनुभव इतना तीव्र था कि मेरे लिये इसे सहना बहुत कठिन था। मुझे तुरंत मेहेरा की याद आई क्योंकि उनका शोक इससे बहुत, बहुत अधिक रहा होगा। मैं उनके दुख का अनुमान नहीं लगा सका और तब मेरे मन में यह विचार आया कि दूसरे मंडली जनों ने भी विरह की इस वेदना को सहा होगा। और फिर भी वे कई दशकों से अपना दिन प्रतिदिन का बाबा कार्य करते जा रहे थे। और उन्हें देखकर यह अनुमान लगाना कठिन था कि उन्हें किस हालत से गुज़रना पड़ रहा था। वे ऐसा कैसे कर सकते थे? मैंने मेहेरवान जसावाला को फ़ोन करके, उनसे सीधे पूछने का निश्चय किया। मैंने पूछा, ''जब बाबा ने शरीर छोड़ा, क्या आपने भी उनसे बिछड़ने के दुख का अनुभव किया?''

मेहेरवान ने उत्तर दिया, ''हाँ, शुरू में यह अनुभव बहुत तीव्र था और मुझे किसी भी चीज़ में, यहाँ तक कि अपने स्वास्थ्य में भी, कोई रुचि नहीं रही।'' मैंने पूछा, ''आपने इस कष्ट को किस तरह सहा?'' मेहेरवान ने उत्तर दिया, ''बाबा ने स्वयं हमसे कहा था कि हम उनकी याद करते रहें और मैंने यही किया और यह सहायक रहा। एक लम्बे समय के बाद, मैंने फिर से सामान्य कार्यों को करना शुरू किया, लेकिन अब मैं इन्हें उनके लिये करता हूँ। हमें किसी भी चीज़ में कोई रुचि नहीं थी, लेकिन उनके लिये (बाबा के) हमें सभी कार्य करते रहना था, और इसीलिये हमने सब कार्य उनके लिये किये।

''इस तरह से, उनके बिछड़ने का दुख हमारे लिये हमारी सांसारिक इच्छाओं से मुक्त होने में सहायक था। अब हम उनके अलावा न तो किसी

चीज़ की परवाह करते थे और न ही किसी चीज़ के लिये तड़पते थे। इस तरह से हम संसार में रहते थे लेकिन हम संसार के नहीं थे। हम केवल उनके (बाबा के) लिये जीते थे।''

मैंने मेहेरवान से पूछा, ''क्या आपके हृदय में विरह की वेदना अभी तक है?''

मेहेरवान ने उत्तर दिया, ''हाँ, यह अभी भी है; लेकिन उनकी मर्ज़ी के अधीन हो जाने और सब कुछ उनके लिये करने से दुख और बेचैनी पर नियंत्रण है। इस तरह से तुम्हारे हृदय में उनके लिये तड़प की आग जल रही है और जलती हुई रखी जाती है, और वह मानवजाति की सहायता करने के अपने काम में तुम्हारा प्रयोग करते हैं।''

मेहेरवान ने जो कुछ कहा था, उससे मुझे थोड़ा भ्रम हुआ, इसलिये मैंने अपने सन्देह को प्रकट किया, ''अगर कोई व्यक्ति उनकी मर्ज़ी के पूर्णतया अधीन है, तो उसे किसी भी तरह के शोक अथवा तड़प का अनुभव बिल्कुल भी नहीं होना चाहिये। बाबा ने ऐसा कहा है।''

मेहेरवान ने उत्तर दिया, ''यह सही है, ये दो विपरीत शक्तियाँ हैं। विरह की वेदना का अनुभव और उनकी मर्ज़ी के अधीन होना, कार्य में पूर्णरूप से विपरीत हैं। इसलिये कोई व्यक्ति, जो विरह की वेदना से पीड़ित है, केवल तभी सामंजस्य को प्राप्त करता है जब वह अपने भरसक प्रयत्न द्वारा उनकी मर्ज़ी के अधीन होकर, इस दुख पर नियंत्रण प्राप्त करता है। जब वह सामंजस्य को प्राप्त करता है, तभी वह मानवजाति की सहायता करने के बाबा के कार्य में, उनकी सेवा करने के योग्य होगा, अन्यथा वह कुछ नहीं कर सकेगा।''

मेहेरवान जो कुछ कह रहे थे, वह गहरी रुचि के साथ सीधा मेरे हृदय में समा रहा था लेकिन फिर भी मुझे थोड़ा सा सन्देह था। ''लेकिन बाबा ने कहा है कि जब हमें तीव्र तड़प, हृदय की वेदना का अनुभव होता है, तब वह प्रकट होते हैं और हृदय मिलन का आनंद प्राप्त करता है।''

मेहेरवान ने उत्तर दिया, ''यह सही है लेकिन ऐसी कोई बिरली आत्मा होती है जो तैयार होती है और जो इतना तीव्र कष्ट सहने की

क्षमता रखती है तथा मिलन के लिये इतनी तीव्र तड़प से होकर गुज़र सकती है। यह वेदना इतनी तीव्र होती है कि इससे आत्मा धमाके के साथ फट जाती है और उसके टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं और उस विस्फोट से मिलन प्राप्त होता है लेकिन ऐसी आत्मा मानवजाति की सहायता करने के उनके कार्य में मदद नहीं कर सकती। केवल वही आत्मायें, जिनकी तड़प उनकी (बाबा) मर्ज़ी के अधीन होने से संतुलित होती है, ऐसा कर सकती हैं।''

मेहेरवान से यह सब सुनकर, ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे कि मैं साक्षात् बाबा से सुन रहा था। मेरे बेचैन हृदय पर जैसे चंगा करने वाला मरहम लग गया। मेहेरवान ने आगे कहा, ''केवल कोई बिरली आत्मा ही, उनकी मर्ज़ी के प्रति पूर्ण समर्पण कर सकती है। ऐसी आत्मा को कोई तड़प, कोई वेदना नहीं होती और ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है। लेकिन फिर ऐसी आत्मा बाबा का कार्य नहीं कर सकती। जब दो शक्तियाँ–विरह की वेदना अथवा मिलन के लिये तड़प, और उनकी मर्ज़ी के प्रति पूर्णतया अधीन होना–संतुलित होती हैं, केवल तभी आत्मा शरीर को धारण करने में समर्थ होती है और मानव जाति की सहायता करने के बाबा के कार्य को करना ज़ारी रखती है।'' जब मेहेरवान ने अपनी बात खत्म की, मैंने उन्हें और बाबा को अपने बेचैन हृदय को शान्त करने के लिये धन्यवाद दिया।

40. संगीत और कला तुमको ईश्वर तक किस तरह ले जाते हैं

एक बाबा प्रेमी ने एक बार एरच से पूछा ''ऐसा क्यों है कि हम संगीत और कला के द्वारा ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कर सकते हैं?'' एरच बहुत देर तक रुककर, धीरे से बोले, ''संगीत और कला किसी व्यक्ति को ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव नहीं करा सकते। तो भी, बिरली स्थितियों में, जहाँ कलाकार अथवा संगीतज्ञ कार्य में पूरी तरह से लीन हो जाता है, यह उस पुरुष अथवा महिला को अपने आपको पूरी तरह से भूलने के लिये विवश कर देता है। जब हम पूरी तरह से अनुपस्थित होते हैं, तब ईश्वर

उपस्थित होता है और हम उसकी उपस्थिति का अनुभव करते हैं अर्थात् जब हमें अपनी चेतना नहीं रहती है, तभी हम ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करते हैं।

''दूसरी ओर, कलाकार अथवा संगीतज्ञ, कला की रचना करते समय अगर नाम अथवा प्रसिद्धि के बारे में सोच रहा है, तब उस व्यक्ति का अहं उपस्थित रहता है। अगर तुम्हारा मिथ्या अहं (मैं) उपस्थित रहता है, तब तुम उसकी उपस्थिति का अनुभव नहीं कर सकते और तुम जो भी कार्य करते हो, उससे तुम्हारे लिये उतना ही बंधन उत्पन्न होता है जितना किसी और काम को करने से होता है। इसलिये कोई भी काम, जो उसमें पूरी तरह लीन होकर किया जाता है, जहाँ तुम अपने आपको भूल जाते हो, तुम्हें ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कराता है और यह सम्पूर्ण अनुभव तुम्हें आनन्द का अनुभव करा सकता है। दूसरी ओर, अगर तुम किये गये कार्य के प्रति निरंतर सचेत हो, और तुम अपने कार्य के बारे में सोच रहे हो, 'मैं इतना अच्छा कार्य कर रहा हूँ,' अथवा, 'मेरा कार्य दूसरे लोगों के कार्य से अधिक अच्छा है,' तब यह कार्य केवल मिथ्या मैं (अहं) को मज़बूत करता है और आत्मा के लिये और अधिक बंधन बढ़ाता है। इस प्रकार के कार्य से न तो आनन्द का अनुभव होता है और न ही ईश्वर की उपस्थिति का।''

एरच ने आगे कहा ''इसलिये, तुम कोई भी कार्य करो, अपने मिथ्या अहं, 'मैं' (मैं कर रहा हूँ) की स्वीकारोक्ति के प्रति सावधान रहो। तुम्हें कार्य से स्वयं अनुपस्थित हो जाना है और तब वह (बाबा) उपस्थित होंगे। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? उनके लिये कार्य करने के द्वारा, और हमें यही करना चाहिये।''

तब एरच ने कृष्णा मस्त की कहानी सुनाई। ''क्या तुमने कृष्णा मस्त की कहानी सुनी है? उत्तर भारत में एक व्यक्ति था जो रेलवे में गार्ड के पद पर कार्य करता था। वह भगवान कृष्ण का भक्त था और वह अपने इष्ट की स्तुति गाते हुये, अक्सर भजन, कीर्तन करता था। एक अवसर पर इसी तरह के एक प्रोग्राम के दौरान, वह अपने इष्ट की स्तुति के आनन्द में इतना अधिक डूब गया कि उसे समय का कोई ध्यान नहीं रहा। वह पूरी तरह से अपना होश खो बैठा। वास्तव में, उसे किसी चीज़ का होश

नहीं था। इस विस्मृति (भूलने) की अवस्था में काफ़ी समय रहने के बाद; उसे पुनः होश आया। उसे अनुभव हुआ कि अपने कार्य के लिये उसे बहुत देर हो गई थी।

"वह रेलवे में एक गार्ड के पद पर कार्य करता था और उसे जिस ट्रेन के साथ जाना था, उसके जाने का समय कई घंटे पहले था। अपने भजन, कीर्तन के उत्साह में डूबकर, उसे समय का होश नहीं रहा था और अब होश आने पर वह विचार कर रहा था क्योंकि वह जानता था कि उसकी गाड़ी जा चुकी थी। वह स्टेशन की ओर दौड़ा।

"रेलवे गार्ड को देखकर स्टेशन मास्टर को आश्चर्य हुआ, और उसके कुछ कहने के पहले, स्टेशन मास्टर ने उससे पूछा 'तुम यहाँ पर क्या कर रहे हो? क्या ट्रेन के साथ कोई दुर्घटना हो गई?'

"गार्ड की समझ में नहीं आया कि स्टेशन मास्टर की बात का क्या अर्थ था। उसने कहा, 'मैं नहीं जानता, मैं अभी अभी यहाँ आया हूँ।' इस पर, स्टेशन मास्टर चौंक पड़ा और आश्चर्य से चिल्लाया, 'तुम क्या कह रहे हो? तुमने मेरे सामने रजिस्टर में दस्तख़त किये थे। हमने साथ साथ चाय भी पी थी और साथ साथ ट्रेन तक गये थे और मैंने तुम्हें गाड़ी में जाते देखा था।'

"गार्ड पूरी तरह से आश्चर्य चकित था और उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे। वह ज़ोर देकर कहता रहा कि गाड़ी लेकर जाने वाला वह नहीं हो सकता था क्योंकि वह उसी क्षण वहाँ आया था और स्टेशन मास्टर से कोई ग़लती हो गई थी। इस पर, स्टेशन मास्टर उसे लेकर गया और उसे रजिस्टर दिखाया और निश्चित रूप से, गार्ड के हस्ताक्षर उसमें थे।

"अपने हस्ताक्षर देखकर गार्ड घबरा गया और फिर अचानक, उसे अनुभव हुआ कि क्या हुआ था। जिस समय वह ईश्वर की स्तुति गाने में लीन था, ईश्वर ने उसका स्थान लेकर, उसके लिये उसकी नौकरी की थी। और उसी क्षण, गार्ड मस्त हो गया। उसने अपनी नौकरी छोड़ दी, और एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमना शुरू कर दिया। वह घूमते हुये हमेशा कृष्णा, कृष्णा, कहता रहता था।

"इसीलिये, वह कृष्णा मस्त के नाम से प्रसिद्ध हो गया और, जब बाबा उत्तर भारत में थे, वह उससे मिलना चाहते थे। लेकिन मस्त एक बेचैन आत्मा था और उसे ढूँढ़ना बहुत कठिन था। वह एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमता रहता था और जहाँ जहाँ वह जाता था, वह अपने प्रभु का नाम, निरंतर लेते रहने के अलावा, लिखता भी रहता था।

"हमें समाचार मिलता था कि वह एक विशेष स्थान में था, लेकिन जब तक हम वहाँ पहुँचते थे वह वहाँ से गायब हो जाता था। उस स्थान की हर दीवार पर, उसके द्वारा लिखा गया ईश्वर का नाम 'कृष्ण' दिखाई देता था लेकिन वहाँ पर मस्त नहीं होता था। इस प्रकार प्रभु अपने प्रेमी को ढूँढ़ते रहे। और फिर एक दिन उन्होंने उसे पा ही लिया।

"और वह कैसा देखने लायक दृश्य था। बाबा और मस्त, दोनों ने एक दूसरे को देखा और वे दौड़कर एक दूसरे के गले मिले और आलिंगन के चाव में, वे दोनों ज़मीन पर गिर पड़े और एक दूसरे के आलिंगन में बँधे हुये जमीन पर लोटते रहे। यह कैसा सुंदर दृश्य था जिसमें प्रेमी और प्रियतम दोनों दैवी आलिंगन में बँधे हुये थे।" एरच ने गहरी साँस ली और कहा, "यह दृश्य स्वर्ग से देवताओं के देखने लायक था।"

41. मन को शान्त करो

जब हम लोग खोर्शिद के साथ बात करते थे, तो अक्सर व्यक्तिगत चीज़ों के बारे में, थोड़ी देर बात होती थी। अगर हम कोई छोटी, सकारात्मक, अच्छी घटना उसे बताते थे तो वह सुनकर खुश होती थी। लेकिन अगर कोई, मेहेराबाद की किसी स्थिति के बारे में बात करता था, जो उसे पसंद नहीं थी, अथवा उस जगह की 'राजनीति' के बारे में अथवा किसी नकारात्मक स्थिति के बारे में, जो वहाँ पर थी और उसे ठीक करने का कोई प्रयत्न नहीं किया जा रहा था, तो खोर्शिद नाराज़ हो जाती थी और ऐसी बातों के प्रति असहमति प्रकट करती थी। वह उस व्यक्ति को बहुत प्रेम से रोकते हुये कहती थी, "क्या तुमने तुकाराम की यह पंक्ति सुनी है, 'तुका महने उगीच राहा, जे जे होई, ते ते पाहा' " (जिसका अर्थ

है, तुकाराम कहते हैं कि चुप रहो और अपने चारों ओर जो कुछ हो रहा है, उसे देखो)।

फिर खोर्शिद ने समझाया, ''अगर हर स्थिति के प्रति तुममें समान भाव, संतुलन है, केवल तभी तुम हर चीज को इससे प्रभावित हुये बिना अथवा कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किये बिना, चुपचाप देख सकते हो। और तुममें वह समभाव, संतुलन तभी होगा जब तुम्हारा मन शान्त होगा। और तुम अपने मन को शान्त किस तरह करोगे? योगी मन को शान्त करने के लिये, पहाड़ों पर बैठकर ध्यान करते हैं, लेकिन, क्योंकि हम ऐसा नहीं कर सकते हैं, इसलिये बाबा ने हमें एक सरल मार्ग बताया है। इसके लिए हमें सिर्फ़ बाबा की निरंतर याद करनी है।

''अगर तुम्हारे अंदर वासना, लालच, घृणा और क्रोध के बुरे विचार आते हैं तो उनके अनुसार तुरंत कार्य मत करो। बाबा की याद करके, सिर्फ थोड़ी देर तक अपने ऊपर नियंत्रण रखो और कुछ क्षणों के बाद, वह विचार चला जायेगा। पूरे दिन इसका अभ्यास करते रहो। बाबा हमारे बीच आये हैं और उन्होंने हमारी भलाई के लिये यह संदेश दिया है, ताकि हम इसका अभ्यास कर सकें। उन्होंने मनुष्य शरीर धारण किया और हमारे लिये कष्ट सहा? इसलिये इस बात को गंभीरता से लो। पूरी गंभीरता के साथ इसका अभ्यास करो।''

फिर वह तीर्थयात्री को प्यार से कुरेदती हुई पूछती थी कि क्या वह बाबा द्वारा दी गई प्रार्थनायें रोज करता था। अगर तीर्थयात्री प्रार्थनायें नहीं करता था, तो वह उस तीर्थयात्री को प्रेम से इस तरह डाँटती थी, ''तुम क्या सोचते हो, बाबा ने किसके लिये प्रार्थनायें दी हैं? क्या ये उनके लिये ज़रूरी थीं अथवा उन्होंने अपना समय बिताने के लिये ये प्रार्थनायें दीं थीं?''

इस पर वह तीर्थयात्री व्याकुल होकर उत्तर देता था, ''मुझे विश्वास है उन्होंने हमारी भलाई के लिये प्रार्थनायें दी हैं।'' खोर्शिद तीर्थयात्री को फिर यह कहकर उत्साहित करती थी, ''तब बाबा ने तुम्हारी अपनी भलाई के लिये जो कुछ दिया है, उसका पूरा लाभ उठाना चाहिये। उनकी याद

यथाशक्ति अधिकाधिक करने की कोशिश करो। अपने जीवन में सब कुछ उनके द्वारा दिया गया समझो और उनके लिये ही सारे काम करो– इस तरह से उनकी निरंतर याद होती है।''

उसके बाद, खोर्शिद वहाँ एकत्र सभी लोगों को मिठाई और भुने चने का प्रसाद बाँटती थी। इससे मुझे एक घटना याद आती है जब एक बाबा प्रेमी अपनी समस्याओं को लेकर, जो अधिकांश रूप से मानसिक थीं, भाऊजी से सलाह लेने के लिये, बार बार जाता रहा। भाऊजी उसे अच्छी सलाह देते थे लेकिन वह उसको मानता नहीं था और भाऊजी के पास शिकायत लेकर फिर से आ जाता था और उनसे फिर सलाह माँगता था।

यह देखकर, मैंने एक बार भाऊजी से पूछा, ''क्या आप सोचते हैं कि उसकी समस्याओं का कभी हल होगा?'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''उसकी सारी समस्यायें हल हो जायेंगी अगर वह मेहेरबाबा के मार्ग का अनुसरण करेगा और अपने हृदय की बात सुनेगा। लेकिन अगर वह अपने मन के उकसाने पर चलेगा, जो इच्छाओं का घर है, तो उसे बहुत कष्ट भोगना होगा। यह बात हर व्यक्ति के लिये और हर परिस्थिति में सच है।''

42. प्रार्थना की शक्ति

एक बार भाऊजी ने मुझसे पूछा, ''क्या तुम प्रायश्चित प्रार्थना करते हो?'' मैंने कहा, ''हाँ, भाऊजी।'' उन्होंने मुझसे आगे पूछा, ''क्या तुम इसे अपने पूरे हृदय से करते हो?'' मैंने उत्तर दिया, ''मैं बाबा के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करने का भरसक प्रयत्न करता हूँ, लेकिन मेरा मन दूसरे विचारों के कारण बाबा पर से हट जाता है।''

भाऊजी ने टिप्पणी की, ''प्रार्थनायें एक बहुत ही शक्तिशाली हथियार हैं जो बाबा ने हमारे लिये छोड़ा है। अगर तुम इन्हें लगन से, अपने पूरे दिल से करते हो और अपने सारे संस्कार अथवा अपने पापों को पूरी तरह से उनको अर्पण करने की भावना से करते हो, तब केवल एक प्रार्थना, जो स्वयं प्रभु द्वारा दी गई है, तुम्हारे सारे संस्कारों को मिटा देने की क्षमता रखती है।''

मेरे चेहरे पर अविश्वास, आश्चर्य और चकित होने के मिले जुले भाव एक साथ थे। मैंने आश्चर्य से कहा, ''केवल एक प्रार्थना ऐसा कर सकती है? अगर ऐसा है, तो क्या कारण है कि आज तक किसी को भी वह अनुभव नहीं हुआ जिसके बारे में आप बात कर रहे हैं?''

भाऊजी ने उत्तर दिया, ''इसका कारण यह है कि लोग प्रार्थनाओं को हृदय से, भावना के साथ नहीं करते हैं। यह भावना उन लोगों को, जो अपने मनों में बिना किसी सन्देह के मेहेरबाबा के शब्दों को सत्य के रूप में स्वीकार करते और उन पर दृढ़ विश्वास और निष्ठा रखते हैं, बाबा का उपहार है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि बाबा प्रेमी क्या करते हैं। तुम प्रतिदिन बहुत से लोगों को समाधि पर जाकर माथा टेकते हुये देखते हो। वे प्रायश्चित प्रार्थना करते हैं और अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा अपने सारे संस्कार उनके (बाबा के) चरणों में डाल देते हैं और प्रभु से विनती करते हैं कि वह इन्हें ले लें। यहाँ तक कि, जिस समय वे बाबा को सबकुछ अर्पित करते हैं, अगर वे एक क्षण के लिये शब्दों की गहराई में पूरी तरह से डूब जाते हैं, तो वे सफलतापूर्वक इस भावना को पैदा करते हैं।

''फिर भी, कुछ समय बाद, जब वे समाधि से जाने लगते हैं, उनका मन सक्रिय हो जाता है। यह हर तरह के संदेह उत्पन्न करता है, और उनके संदेहों के कारण, वह अपने सारे संस्कार वापस अपने ऊपर ले लेते हैं– सब कुछ, जो उन्होंने अर्पित किया था, वापस ले लेते हैं। जब तुम कोई चीज़ पूरी तरह से अर्पित करते हो, तो इसका अर्थ है कि तुम इस बारे में भूल जाओ। तुम इसके बारे में फिर क्यों सोचते हो? तुम संदेह क्यों करते हो? इसका अर्थ है कि तुमने इसे कभी अर्पण किया ही नहीं।'' हालाँकि भाऊजी ने जो कुछ कहा, उसे मैं समझ गया, लेकिन मैं आज तक ऐसा करने के लिये संघर्ष कर रहा हूँ।

एक दूसरे अवसर पर, एरच ने हमें प्रार्थनायें करने के महत्व को समझाने के लिये निम्नलिखित कहानी सुनाई। ''अपने जीवन के अन्तिम समय की तरफ़ बाबा हमसे रोज़ प्रार्थनायें करने के लिये कहते थे। जैसा कि तुम जानते हो उनका शरीर कमज़ोर हो गया था और उनके शरीर के

ज़रा सा हिलने डुलने से उन्हें बहुत कष्ट हो जाता था। फिर भी, वह खड़े होकर प्रार्थनाओं में भाग लेते थे। जैसे–जैसे उनकी असमर्थता बढ़ती गई वह हमसे प्रार्थनाओं को रोज़ जल्दी, और जल्दी कहने के लिए आग्रह करते थे। अन्त में, एक समय आया जब मैं उनके निर्देशों के अनुसार प्रार्थनाओं को इतनी जल्दी–जल्दी कह रहा था कि मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या कर रहा था क्योंकि शब्दों के बारे में सोचने या ध्यान देने का समय ही नहीं था। मेरे लिये यह एक मात्र मशीनी कार्य हो गया था, जिसे मैं करता था क्योंकि वह ऐसा चाहते थे। एक अवसर पर, जब मैं सामान्य रूप से प्रार्थनायें कह रहा था, एक हास्यास्पद विचार मेरे मन में आया और मैं जोर जोर से हँसने लगा। तुम जानते हो कि मन कैसा होता है। प्रार्थनायें कहते समय, मुझे स्टेशन से जाती हुई एक तीव्र गति वाली (एक्सप्रेस) ट्रेन का ध्यान आया और मैं हँसने लगा।

''जब प्रार्थनायें खत्म हो गईं, बाबा ने मुझसे पूछा, 'तुम क्यों हँस रहे थे?' मैंने कहा कि प्रार्थनायें कहते समय मुझे स्टेशन से गुजरती हुई ट्रेन का विचार आया और मैं हँसने लगा। मैंने इस बात पर भी आश्चर्य प्रकट किया कि प्रार्थनाओं को इतनी जल्दी जल्दी कहने से क्या फ़ायदा था। बाबा ने मुझसे कहा, 'तुम्हें ज़रा सा भी अन्दाज़ नहीं है कि इन प्रार्थनाओं में मेरे भाग लेने का क्या अर्थ है। इन प्रार्थनाओं में मेरे भाग लेने से, जो भी व्यक्ति ये प्रार्थनायें कहता है, अगर वह मशीन की तरह भी इन्हें कहता है, तो भी उसे लाभ होगा। यह इसलिये है क्योंकि मैंने इनमें भाग लिया है।'''

तीर्थयात्रियों को संबोधित करते हुये, एरच दृढ़तापूर्वक प्रार्थनाओं के महत्व पर ज़ोर देते हुये कहते थे, ''बाबा ने हमारे लिये उनके प्रेम के कारण, अपने शरीर को इतने अधिक कष्ट और दर्द को सहने दिया। उन्होंने यह आश्चर्यजनक अवसर हमें एक प्लेट में रखकर भेंट किया है: अगर हम मशीन की तरह भी उनकी प्रार्थनायें कहेंगे, हमें लाभ होगा। उन्होंने हमारे लिये यह बहुत सरल कर दिया है। यह जानते हुये कि हमारे मन कैसे हैं, बाबा ने हमारे लिये रिआयत कर दी है, और मशीन की

तरह याद करने से भी लाभ दिया है। इसलिये, उन्होंने हमें यह जो आश्चर्यजनक अवसर दिया है, उसका भरपूर लाभ उठाओ।''

43. अचल विश्वास

प्रार्थनायें, भले ही यांत्रिक रूप से कही गई हों, उस व्यक्ति का कल्याण करती हैं। फिर भी, जब वे हृदय में भावना और दृढ़ विश्वास के साथ कही जाती हैं, तो वे व्यक्ति के अंदर अत्यंत महत्वपूर्ण रूपान्तरण कर सकती हैं। मंडली से यह बात सुनकर, मुझे अक्सर भगवान शिव और उनकी पत्नी पार्वती की यह कहानी याद आ जाती थी।

एक बार मानव जाति के कष्ट को देखकर, पार्वती बहुत अधिक व्याकुल हो गईं और भगवान शिव के पास जाकर प्रार्थना की कि वह दुखी आत्माओं की मदद करें। शिवजी ने उन्हें बताया कि दुखी आत्माओं की मदद करने के लिये उन्होंने यथासंभव कार्य किया है। तो भी, मानव जाति में दृढ़ विश्वास की कमी होने और उन्होंने उनको जो सरल नियम दिये थे, उनका पालन करने की उनकी असमर्थता के कारण ही, इतना अधिक कष्ट है।

पार्वती बार बार प्रार्थना करतीं रहीं और अन्त में शिवजी को मानना पड़ा। उन्होंने पीड़ित मानव जाति की सहायता करने के लिये, उनके अनुसरण करने के लिये एक बहुत आसान चीज़ भेंट में देना स्वीकार किया और वादा किया कि अगर वे (मानव जाति) दृढ़ विश्वास के साथ उसका पालन करेंगे तो उनका कष्ट दूर हो जायेगा। इसलिये, योजना के अनुसार, वह एक सन्त के सम्मुख प्रकट हुये जिसका आस पास के गाँवों के लोग बहुत सम्मान करते थे। यह सन्त एक पहाड़ी की चोटी पर एकान्त में रहते थे। शिवजी ने उसके सम्मुख प्रकट होकर उससे कहा कि वह एक बड़ा शिव मंदिर बनवाये और सभी लोगों को बताये कि वह (शिवजी) उस स्थान पर आये थे और जो भी व्यक्ति उस मंदिर में आकर, शिवलिंग के सामने माथा टेकेगा, वह अपने सभी पापों से मुक्त हो जायेगा। वहाँ पर अपने आने के प्रमाण के रूप में, शिवजी ने अपने पीछे एक बड़ा शिवलिंग छोड़ दिया।

जब गाँव वालों को सन्त से यह बात पता चली, वह अत्यन्त प्रसन्न हुये और शिव मंदिर बनाने के कार्य में शीर्घतापूर्वक लग गये और, यह सोचकर कि अब हजारों लोग यहाँ पर आयेंगे, उन्होंने तीर्थ यात्रा की सुविधाओं और एक बड़े तीर्थयात्री केन्द्र का निर्माण किया। इस स्थान का नाम और ख़्याति चारों ओर फैल गई और प्रतिदिन वहाँ पर लाखों लोग आने लगे। यह सब देखकर, पार्वती बहुत प्रसन्न हुईं।

फिर भी, कई सालों के बाद, पार्वती ने देखा कि मानव जाति का कष्ट अभी भी वैसा ही था। इसमें कोई अंतर नहीं आया था। इसलिये वह पुनः शिवजी के पास गईं। शिवजी ने उनसे कहा, ''मैंने तुम्हें बताया था कि उनमें दृढ़ विश्वास नहीं है और, क्योंकि तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं है, इसलिये अपनी बात की सच्चाई मैं तुम्हारे सामने सिद्ध करूँगा।''

शिवजी ने एक मरणासन्न (मरने वाले) वृद्ध मनुष्य का रूप धारण किया और वह उस रास्ते के बीच में जाकर लेट गये जहाँ से मंदिर से आने वाले तीर्थयात्री उन्हें देख सकते थे। क्योंकि प्रतिदिन लाखों तीर्थयात्री आते थे, इसलिये मंदिर के अंदर जाने और बाहर आने के रास्ते अलग अलग थे। मंदिर से बाहर आने वाला लगभग हर एक तीर्थयात्री मरणासन्न व्यक्ति को देख सकता था। मदद करने की इच्छा से, बहुत से लोग उसके पास गये। तब मरणासन्न व्यक्ति उन्हें बताता था कि अगर तीर्थयात्रा से लौटने वाला व्यक्ति उसे एक गिलास पानी दे, तो उसका जीवन बच सकता था, लेकिन उसे पानी देने वाले व्यक्ति को सभी पापों से मुक्त होना चाहिये। अन्यथा, दोनों व्यक्ति मर जायेंगे क्योंकि उसके ऊपर एक श्राप था।

यह सुनकर, हर व्यक्ति डरकर चला जाता था। ऐसा कई दिनों तक होता रहा। एक दिन, मंदिर से बाहर आने वाली सड़क पर चलते हुये, एक जवान लड़की मरणासन्न व्यक्ति के पास पहुँची जिसने अपनी भयानक स्थिति लड़की को बताई। लड़की पानी का गिलास लाने के लिये तैयार हो गई। मरणासन्न व्यक्ति ने कहा, ''मेरी बच्ची, क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम सभी पापों से मुक्त हो? तुम्हारा पेशा क्या है? तुम कौन हो जो सभी पापों से मुक्त होने का ऐसा दावा कर रही हो? यह कैसे हो सकता है कि तुमने एक भी पाप नहीं किया?''

मरणासन्न व्यक्ति की बात पर लड़की मुस्कुराई और नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, ''श्रीमान्, आप चिन्ता न करें। लेकिन, केवल आपके मन को शान्त करने के लिये, मैं अपनी कहानी सुनाऊँगी। मैं एक वेश्या हुआ करती थी और मैंने बहुत से पाप किये हैं, लेकिन कई साल पहले मैं एक सन्त से मिली थी जिन्होंने हमें बताया कि हमारे जैसे पापियों के लिये, किस तरह शिवजी इस स्थान पर आये थे और यह मंदिर बनाया गया, जहाँ, अगर हम माथा टेकें, तो हमारे सारे पापों को क्षमा कर दिया जायेगा।

''मैंने अभी अभी अपनी तीर्थयात्रा पूरी की है इसलिये, चिन्ता न करें। भगवान द्वारा बिना किसी शर्त के दिये गये क्षमादान के कारण, मेरे सभी पाप धुल गये हैं और मैं उनसे मुक्त हूँ। भगवान शिव के वचन पर विश्वास रखिये। हम लोगों को कुछ नहीं होगा। आप स्वस्थ हो जायेंगे।''

जब लड़की ने यह कहा, मरणासन्न व्यक्ति अदृश्य हो गया और उसकी जगह शिवजी अपने असली रूप में प्रकट हो गये और उन्होंने उस लड़की को अपना असली दर्शन और आशीर्वाद दिया। पार्वती को, जो यह सब देख रहीं थीं, समझ में आ गया कि मानव जाति क्यों कष्ट भोग रही थी।

44. बाबा का विश्वव्यापी कष्ट

एक तीर्थयात्री ने एक बार एरच से पूछा, ''जो बाबा प्रेमी तीव्र कष्ट भोग रहे हैं, क्या वे भी बाबा के विश्वव्यापी कष्ट और कार्य में भाग ले रहे हैं?'' एरच मन ही मन हँसे और कहा, ''यह विचार मात्र ही कि कोई व्यक्ति ईश्वर के कार्य अथवा कष्ट में भाग ले सकता है, असंगत है। स्वयं बाबा हमें इस बात की अक्सर याद दिलाते थे। उनका कष्ट इतना अधिक था कि इसे कोई भी बाँट नहीं सकता था। बार बार हम उन्हें शारीरिक कष्ट पाते हुये देखते थे। जब वह अपना विश्वव्यापी कार्य करते थे, उस समय बीमारी के अचानक रहस्यपूर्ण शारीरिक लक्षण प्रकट होते थे और काम खत्म हो जाने पर गायब हो जाते थे।

''प्रायः दुनियाँ में किसी संकट के समय के साथ ही और कभी कभी अपने किसी प्रेमी की मदद करने के लिये, जो उसी समय किसी संकट का सामना कर रहा होता था, ऐसा होता था। यह कार्य वह अकेले ही कर सकते हैं। जब कार्य तीव्र होता था, उनका कष्ट भी तीव्र होता था। हम, मंडली जन केवल उनके शारीरिक कष्ट को देख सकते थे और उनको आराम पहुँचाने की भरसक चेष्टा करते थे। कभी कभी शारीरिक कष्ट इतना तीव्र होता था कि हमारे लिये उसे देखना भी असहनीय होता था। हम उनसे प्रार्थना करते थे कि वह अपने बोझ में से थोड़ा हिस्सा हमें भी दें, और बाबा टिप्पणी करते थे, 'अगर मैं अपने बोझ का एक छोटा सा हिस्सा भी तुम्हारे कंधों पर डाल दूँ, तो यह तुम्हें तोड़ देगा। केवल मैं ही इसे सह सकता हूँ।'

''ऐसे कुछ उदाहरण हैं जब मंडली ने उनसे अपना बोझ उनके साथ बाँटने की प्रार्थना की। परिणामस्वरुप, इन प्रेमियों को इतने गहरे संकट और इतने तीव्र कष्ट का सामना करना पड़ा कि वे बाबा के पास दौड़ते हुये आये और उनसे प्रार्थना की कि वे उन्हें उनकी भयानक स्थिति से छुटकारा दिलायें। बाबा कहते थे, 'मैंने अपने कष्ट का बहुत थोड़ा सा बोझ तुम्हारे कंधों पर रखा है और तुम चिल्ला रहे हो। मैं पूरी सृष्टि का बोझ अपने, ऊपर किस तरह से लिये हूँ, तुम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते हो।' उनके कष्ट में भाग लेना तो दूर की बात है, उसको समझ पाना भी हमारे लिये बहुत कठिन था।''

तीर्थयात्रियों को बात समझने का समय देने के लिये, एरच थोड़ी देर चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, ''लेकिन उनके कष्ट को कम करने के लिये हम सब, उनके प्रेमी के रूप में, एक काम कर सकते हैं। हम ऐसा कैसे कर सकते है? उनके बोझ को और न बढ़ाकर हम उनके बोझ को कम कर सकते हैं–इसलिये इसके लिये हमें क्या करना चाहिये? हमें अपने दिन प्रतिदिन के कार्यों और मामलों में उनकी आज्ञाओं का पालन और उनका अनुसरण करना चाहिये। इससे उनका बोझ कैसे कम होता है? यह बहुत आसान है। हर कार्य, जो भी व्यक्ति करता है, बंधन पैदा करता है। अगर वह व्यक्ति यह सोचता है कि इस कार्य को वह (महिला अथवा

पुरुष) कर रहा है तो यह मिथ्या मैं (अहं) है जो स्वयं को दृढ़तापूर्वक स्थापित कर रहा है और उन मिथ्या स्वीकारोक्तियों के द्वारा अपने को मज़बूत बना रहा है और इस प्रकार आत्मा के लिये बंधन पैदा कर रहा है।

"पूरे दिन लोगों के विचार इसी मिथ्यापन के चारों ओर केन्द्रित रहते हैं। व्यक्ति सोचता है, 'मैं यह कर रहा हूँ, मुझे यह कार्य करना है, मैं सही हूँ, मैं गलत हूँ, और मुझे उसको सुधारना चाहिये, मुझे उसको सजा देना चाहिये, वह व्यक्ति दुर्व्यवहार कर रहा है' आदि आदि। अधिकांश लोगों के मनों में यही विचार प्रमुख रूप से रहते हैं। इन सामान्य विचारों के अलावा, व्यक्ति अपनी उपलब्धियों पर गर्व का अनुभव करता है, अपनी मनचाही वस्तु न मिलने पर गुस्सा, वासना, लालच आदि का अनुभव करता है। इस तरह से मिथ्या मैं की सीमा मज़बूत होती जाती है। सामान्य परिस्थितियों में व्यक्ति अपने प्रयासों के द्वारा, इस मिथ्या मैं से मुक्त नहीं हो सकता है। इस मिथ्या मैं से मुक्त होने में हमारी सहायता करने के लिये, बाबा ने हमें एक रास्ता बताया है—ईश्वर की याद और उनका नाम लेना।

"उनकी याद इस सीमा तक करो कि तुम अपने आपको भूल जाओ। तुम जो कुछ करो, हर कार्य में उनकी याद करो ताकि उनके प्रति सचेत रहो और मिथ्या 'मैं' अदृश्य हो जाये। जब तुम ऐसा करते हो तो तुम स्वयं को बंधन में नहीं डालते हो। क्यों? क्योंकि मिथ्या 'मैं' के प्रति तुम सचेत नहीं हो, तुम स्वयं कोई कार्य नहीं करते हो, वह सबकुछ करते है उनके प्रति तुम्हारी सचेतनता इतनी अधिक है और अब केवल उनका अस्तित्व रहता है और किसी चीज़ का नहीं।

"ऐसा करके तुम उनके बोझ को हल्का करने में सहायता करोगे। जितना ज्यादा तुम मिथ्या के बंधन में फँसोगे, उतना अधिक उन्हें तुमको इस बंधन से मुक्त करने के लिये कष्ट सहन करना होगा। जब कि, जितना अधिक तुम उनकी याद, सेवा और प्रेम के साथ उनका अनुसरण करने का प्रयत्न करते हो, उतना ही अधिक तुम सत्य का अनुभव करने और मिथ्या (माया) का नाश करने के लक्ष्य के और अधिक निकट आते हो। इस तरह से, सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त करने के लक्ष्य तक पहुँचने में तुम्हारी सहायता

करने में उनकी (बाबा) सहायता करने के द्वारा, तुम उनके बोझ को हल्का करते हो।

45. बाबा की भेंट

मेरे एक बाबा प्रेमी मित्र ने मुझे निम्नलिखित कहानी सुनाई थी। उसके एक बच्चा है जो डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित है। उसने उन कठिन अवसरों के बारे में मुझे बताया जिनका सामना उसे बच्चे के पालन पोषण के दौरान करना पड़ा और इसने उसकी आध्यात्मिक परिपक्वता में सहायता की। उसका अनुभव निम्नलिखित है।

"गर्भावस्था के दौरान मैंने बाबा का एक स्वप्न देखा । अपने सपने में मैंने बाबा को देखा, और वह अपने चेहरे पर चिन्ता का भाव लिये हुये खड़े थे। उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा, 'मेरे पास एक ऐसी चीज है जो मुझे बहुत प्रिय और मेरे लिये बहुत कीमती है। अगर मैं इसे तुम्हें दे दूँ, तो क्या तुम इसकी अच्छी तरह देखभाल करोगी?'

"मैंने कहा, 'हाँ, बाबा मैं करूँगी।'

"बाबा ने फिर से दोहराया, 'मुझसे वादा करो कि इसकी अच्छी तरह देखभाल करोगी, क्योंकि यह मुझे बहुत प्रिय और मेरे लिये बहुत कीमती है।'

"मैंने बाबा से कहा, 'मैं वादा करती हूँ कि मैं यथाशक्ति उसकी देखभाल करूँगी।' बाबा के चेहरे से चिन्ता के भाव गायब हो गये और वह मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने एक उपहार का डिब्बा निकालकर उसे खोला। इसमें से प्रकाश की एक किरण निकलकर मेरे शरीर में प्रवेश कर गई। मैं इस सपने के कारण बहुत प्रसन्नता का अनुभव करती हुई जाग गई। कुछ महीनों के बाद मेरे बच्ची हुई।'

"बच्ची को देखने के बाद, मेरा सारा संसार चूर चूर हो गया। बच्ची को डाउन सिन्ड्रोम था। मैं यह नहीं समझ पा रही थी कि बाबा मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते थे। मैंने अनुभव किया जैसे कि वह मेरे प्रति बहुत

निर्दयी थे और मुझे सजा दे रहे थे। मैं समझ नहीं सकी कि मैंने ऐसा कौन सा काम किया था जिसकी मुझे यह सजा मिली थी। फिर भी, मैंने सारे विचारों को पीछे हटाकर, बच्ची की देखभाल करना शुरू किया। ऐसे बच्चे की देखभाल करने में बहुत सी कठिनाइयाँ थीं और मैं इनसे संघर्ष कर रही थी। मेरा सम्पूर्ण जीवन अब बच्ची की देखभाल करने में केन्द्रित था। और, हालाँकि उसकी देखभाल मैं यथाशक्ति अच्छी तरह कर रही थी, मैं उससे पूरे हृदय से प्रेम नहीं कर पा रही थी। मेरे दिल में कुछ रुकावटें थीं जो उसे प्यार करने से मुझे रोकतीं थीं।

''कभी कभी उसकी ज़रूरतों के कारण, बंधन का अनुभव करके मुझे बहुत क्रोध आता था। मैं बार बार मेहेराज़ाद मंडली के पास आती थी क्योंकि उनसे मिलकर मुझे शक्ति और शान्ति मिलती थी। एक दिन मनी ने मंडली हाल में, इस प्रकार के विशेष बच्चों के लिये बाबा के प्रेम और चिन्ता के बारे में बताना शुरू किया। एक बार बाबा को एक समाचार पत्र का एक लेख पढ़कर सुनाया गया जिसमें यह लिखा था कि शारीरिक विकृतियाँ, जैसे कि डाउन सिन्ड्रोम और दूसरे विकार, गर्भावस्था की प्रारंभिक अवस्था में जाँच द्वारा जाने जा सकते थे और गर्भावस्था का अन्त किया जा सकता था। बाबा बहुत उदास और चिन्तित लग रहे थे और उन्होंने संकेत द्वारा कहा, 'ऐसी बहुत सी आत्माओं को जन्म लेने और आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये इस अनुभव को प्राप्त करने की ज़रूरत है उनका क्या होगा?'

''तब बाबा ने टिप्पणी की कि जो भी व्यक्ति ऐसे बच्चे को दुनियाँ में जन्म देगा और उसकी देखभाल करेगा, उसकी केवल आध्यात्मिक उन्नति ही नहीं होगी बल्कि उसके कई जन्मों के संस्कार भी मिट जायेंगे।

''जब मैंने मनी से यह कहानी सुनी, मुझे गर्भावस्था के दौरान देखे गये स्वप्न की याद आई और यह भी कि जब बाबा ने मुझे अपनी भेंट दी थी, उस समय वह कितने अधिक चिन्तित लग रहे थे और जब मैंने देखभाल करना स्वीकार किया था, उस समय वह कितने प्रसन्न लग रहे

थे। तब मुझे अपने उस स्वप्न का महत्व समझ में आया। उसके बाद से मेरे हृदय की सारी रुकावटें दूर हो गईं और मैं अपनी बेटी को बाबा द्वारा दी गई भेंट के रूप में प्रेम करने लगी।

46. असली भेंट

हाल ही में मेरी पत्नी ने भाऊजी से पूछा, ''रुस्तम काफी लम्बे समय से बीमार है, उसे इतना अधिक कष्ट क्यों भोगना पड़ रहा है?'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''अगर रुस्तम को कष्ट नहीं होता तो उसकी कोई कीमत नहीं होती।'' क्योंकि भाऊजी जो कुछ कहने की कोशिश कर रहे थे, हमारी समझ में नहीं आया, इसलिये मैंने पूछा, ''कोई कीमत न होने से आपका क्या मतलब है?''

भाऊजी ने मुझसे कहा, ''अगर तुम स्वस्थ होते तो तुम क्या करते ? तुम ट्रस्ट के लिये जो अच्छा कार्य कर रहे थे, उसे और अधिक, और अधिक करते रहते, और यद्यपि यह कार्य अच्छा और उपयोगी है, तुम्हारे गर्व के मार्ग में आने का खतरा सदैव रहता है और इससे तुम्हारा अहं मज़बूत होता है।

''तुम यह अनुभव करने लगते, 'मैं इतना अच्छा कार्य कर रहा हूँ। मेरे जैसा कोई नहीं है।' काम करते समय, अगर तुम्हारे अन्दर यह भावना है, तो तुम बाबा का कार्य नहीं कर रहे हो। जब तुम काम करते समय स्वयं को भूलकर, बाबा को याद करते हो, केवल तभी, तुम्हारा कार्य, बाबा का कार्य होता है लेकिन, कष्ट के कारण तुम यह सब अच्छा कार्य नहीं कर सके और कार्य करने के बजाय, तुम्हें ज्यादा से ज्यादा बाबा की याद करते हुये और उनकी मर्ज़ी के पूर्णतया अधीन होने की कोशिश करने में, अपना समय बिताना पड़ा।

''तुम्हें यह सब करना पड़ा क्योंकि तुम्हें कष्ट था। यह बाबा की सच्ची कृपा थी क्योंकि इसके द्वारा, वह तुम्हें अपने और अधिक निकट ले गये और तुम्हारे हृदय में उनके लिये भावनायें जगा दीं।

''अब, दूसरों को यह अनुभव बताने के बाद दूसरे लोगों को इससे समझने और अपने संदेहों को दूर करने में मदद मिली है। कष्ट के तुम्हारे अनुभव और उसके बाद होने वाली तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा, बाबा ने बहुत सी आत्माओं की सहायता की है। इसलिये अब अपने शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता मत करो और ज्यादा किताबें लिखना ज़ारी रखो। यहाँ तक कि, अपने शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में भी मत सोचो और इसके बारे में बाबा से शिकायत भी मत करो। इसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करो क्योंकि यह तुम्हारे लिये उनकी (बाबा की) असली भेंट है।''

भाऊजी के शब्दों की सच्चाई अब मेरी समझ में आती है। हालाँकि इस बीमारी ने शारीरिक रूप से मुझे नष्ट कर दिया है, इसने आन्तरिक रूप से मुझे बदल दिया है, वरना मैं आध्यात्मिक रूप से नष्ट हो गया होता।

47. असली कष्ट

एक बार मैंने एरच से कहा, ''मैंने कितनी बार मंडली को हमें यह समझाते हुये सुना है कि सब कुछ मिथ्या है। प्रसन्नता अच्छा स्वप्न है और कष्ट बुरा स्वप्न है। सब कुछ एक स्वप्न है और जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य इस स्वप्न से जागना है। हमें यह विश्वास दिलाया गया है कि हम गुरु की कृपा से इस स्वप्नावस्था से बिना कष्ट के जाग सकते हैं।

''एरच, मुझे बताइये कि मानव जाति के सम्पूर्ण आध्यात्मिक इतिहास में क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो बिना कष्ट के इस स्वप्न से जागकर लक्ष्य तक पहुँचा हो? सभी प्रसिद्ध संतों की जीवनी पढ़ने के बाद हम जानते हैं कि उन्होंने तीव्र कष्ट सहा है। इसलिये क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने बिना कष्ट के इस लक्ष्य को प्राप्त किया हो।''

उत्तर देने के पहले एरच थोड़ी देर चुप रहे। ''मुझे लगता है कि अभी तक ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ है।'' एरच ने थोड़ी देर रुककर फिर

कहा, ''फिर भी, सांसारिक कष्ट और ईश्वर को खोजने वालों के कष्ट में अन्तर है। एक बीमारी के कारण कष्ट पाता है दूसरा दवा के कारण। आध्यात्मिक साधक (ईश्वर को खोजने वाला) ईश्वर के लिये अपनी तड़प के कारण तीव्र कष्ट पाता है। अपने प्रियतम का विरह उसे बेचैन कर देता है और वह उससे मिलने के लिये तड़पता है। यह बेचैनी और तड़प, हालाँकि उसकी पीड़ा का कारण होती है, फिर भी यह उसे संसार की याद भुला देती है। वह इस तड़प में इतना अधिक लीन हो जाता है कि उसे तड़प की पीड़ा के अलावा, जो कि असहनीय होती है, और किसी भी चीज़ का होश नहीं होता। वह इस पीड़ा के कारण तीव्र कष्ट पाता है। और फिर भी यही दर्द उसके जीने का सहारा होता है और उसे आनन्द देता है।

''यही पीड़ा साधक को प्रियतम की अपनी खोज में आगे बढ़ाती है। और जब यह पीड़ा अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाती है, तब प्रियतम प्रकट होते हैं और प्रेमी और प्रियतम के मिलन से तड़प मिट जाती है।

''दूसरी ओर, सांसारिक कष्ट भ्रम और इच्छाओं तथा आकांक्षाओं के कारण होता है और जिस तरह इच्छायें और आकांक्षायें अनन्त हैं, इसी तरह सांसारिक कष्ट का कोई अन्त नहीं है। साधक, जो कष्ट पाता है, वह अन्ततः ईश्वर के लिये उसकी तड़प के द्वारा, जिसका परिणाम मिलन होता है, समाप्त हो जाता है। दूसरी ओर, भ्रम में फँसा हुआ व्यक्ति अनन्त रूप से कष्ट भोगता रहता है। यह इसी तरह होता रहता है।''

दूसरे अवसर पर, मैंने भाऊजी से यही प्रश्न पूछा, ''भाऊजी हमें यह विश्वास दिलाया गया है कि यह सब एक स्वप्न है और इससे जागना ही जीवन का लक्ष्य है। इसके अलावा, हमें यह बताया गया है कि बिना किसी अतिरिक्त कष्ट का अनुभव किये हुये कोई व्यक्ति गुरु की कृपा से जल्दी जाग सकता है। मुझे बताइये कि मानव जाति के सम्पूर्ण इतिहास में क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने बिना कष्ट के इस अवस्था को प्राप्त किया हो?''

भाऊजी ने उत्तर दिया, ''हाँ यह संभव है। गुरु की कृपा से, सबकुछ संभव है। अगर उनकी (गुरु की) मर्ज़ी हो तो वह बिना किसी परीक्षा

अथवा उसके द्वारा बिना कोई कष्ट भोगे हुये, किसी भी व्यक्ति को ईश्वर–साक्षात्कार करा सकते हैं।''

मैं अपने प्रश्न पर दृढ़ रहा, ''भाऊजी, मैं आपसे यह नहीं पूछ रहा हूँ कि ऐसा होना संभव है या नहीं, मेरा प्रश्न यह है कि क्या आप ऐसी एक भी घटना के बारे में जानते हैं जिसका इस प्रकार की घटना के घटित होने के उदाहरण के रूप में ज़िक्र किया जा सके? क्या आप मानवजाति के सम्पूर्ण इतिहास में किसी भी ऐसे सन्त अथवा महान आत्मा के बारे में जानते हैं जिसने बिना कष्ट भोगे हुये, इस अवस्था को प्राप्त किया हो?''

भाऊजी ने इस बारे में थोड़ी देर सोचा और फिर उत्तर दिया, ''ऐसा लगता है कि हर एक को अपनी प्यास बुझाने और प्रियतम से मिलन के पहले विरह की तीव्र वेदना और तड़प सहनी पड़ी थी तो भी, यह असली कष्ट है और यह कष्ट तुम्हें उस अवस्था में ले जायेगा जहाँ सारे कष्टों का अन्त हो जायेगा। जिस तरह हम काँटा निकालने के लिये, काँटों का प्रयोग करते हैं, इसी तरह से यह कष्ट सभी कष्टों का अन्त कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है कि इसके अलावा इस समस्या का कोई हल नहीं है। लक्ष्य तक पहुँचने के लिये हर व्यक्ति को इस आध्यात्मिक मार्ग पर तीव्र पीड़ा का अनुभव करना पड़ता है।''

48. कष्ट क्यों आवश्यक है

जब उपासनी महाराज के एक भक्त ने उनसे पूछा कि उनके घनिष्ठ प्रेमी इतना तीव्र कष्ट क्यों भोग रहे थे, तो उन्होंने निम्नलिखित छोटा सा उपदेश दिया, ''जब एक निम्न स्तर की चेतना का जीव, उच्च स्तर की चेतना के जीव की चेतना प्राप्त करना चाहता है तो ऐसा तभी हो सकता है जब यह उच्च स्तर की चेतना के जीव का भोजन बनकर उसमें मिल जाने के लिये तैयार हो।

''जब उच्च स्तर की चेतना का जीव निम्न स्तर की चेतना के जीव को पूरी तरह से अपने आप में समा लेता है, तब निम्न स्तर की चेतना का जीव उच्च स्तर की चेतना वाले जीव की चेतना के साथ एक हो जाता है। जिस प्रकार एक कीड़ा एक चिड़िया का भोजन बनकर चिड़िया की चेतना

प्राप्त कर लेता है, उसी तरह से एक मेमना जब शेर का भोजन बनता है, तो यह शेर में मिल जाता है और इसके साथ एक हो जाता है। और जिस तरह से शेर अपने भोजन को निगलने और हजम करने के लिये, फाड़कर टुकड़े कर देता है ताकि यह उसकी चेतना के साथ एक हो जाये, उसी तरह से मैं अपने प्रेमियों के साथ करता हूँ। अगर मेरा प्रेमी, मेरी ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त चेतना की उच्च अवस्था को प्राप्त करने के लिये गंभीर है, तो उसे अपने आपको मुझे भोजन के रूप में भेंट करना होगा। इस भोजन को हजम करने के लिये मुझे इसके टुकड़े करने होंगे जिससे मुझे भोजन को पूरी तरह से पचाने में सहायता मिलेगी। तभी, और केवल तभी, यह भोजन, जिसका प्रतिनिधित्व मेरा प्रेमी करता है, मेरी चेतना के साथ एक होता है। यही कारण है कि कष्ट अथवा मेरे प्रेमी के अहं के टुकड़े टुकड़े होना बहुत आवश्यक है।''

उन्होंने आगे समझाया, ''क्या तुमने कभी सुनार के पास जाकर उसको एक सोने का टुकड़ा बेचने की कोशिश की है? सुनार के पास सोने का बड़ा भंडार रहता है। जब तुम उसे सोने का एक टुकड़ा देते हो, वह इसे पिघलाकर अपने भंडार में तुरन्त नहीं मिलाता है। वह पहले सोने की शुद्धता की जाँच करता है। वह इसकी जाँच रगड़कर, हथौड़े से पीटकर और दूसरे कठिन परीक्षणों द्वारा करता है।

''अगर परीक्षणों के बाद उसे यह दृढ़ विश्वास हो जाता है कि सोना पूर्णतया शुद्ध है तब वह इस सोने को तेज आँच में डालकर पिघलाता है। अब यह सोना उस सोने के भंडार में मिलाया जाता है जो उसके पास है। अगर कोई व्यक्ति मेरे सोने के भंडार में, जिसका मैं प्रतिनिधित्व करता हूँ, शामिल होना चाहता है, तो मैं उसकी शुद्धता की जाँच करने के लिये, उसकी कई कड़ी परीक्षायें लेता हूँ। केवल तभी मैं उसे अपने में मिलने की अनुमति देता हूँ।''

उपासनी महाराज से, जब गुरु के अपने कष्ट के बारे में पूछा गया तो उन्होंने निम्नलिखित व्याख्या की। ''गुरु अपने कष्ट के द्वारा केवल अपने घनिष्ठ प्रेमियों के संस्कारों को ही अपने ऊपर नहीं लेते हैं बल्कि इस प्रकार की स्थितियों के द्वारा अपने घनिष्ठ प्रेमियों के हृदय में, गुरु के प्रति

दया, करुणा, समर्पण और भक्ति की भावनायें भी उत्पन्न करते हैं। गुरु की कठोरता, उसके घनिष्ठ शिष्यों को अक्सर स्वभाव से कड़वा बना देती है, लेकिन जब वे गुरु के कष्ट को देखने लगते हैं तो उनकी कड़वाहट पिघल जाती है और उसकी जगह गुरु के प्रति प्रेम और करुणा ले लेती है। इसके बदले में, उन्हें सेवा के लिये समर्पित जीवन बिताने की प्रेरणा मिलती है और उनके हृदय में गुरु के कष्ट को कम करने के लिये, कठिनाइयों का सामना करने की इच्छा उत्पन्न होती है।

''मेरे प्रेमियों के लिये ऐसा करना बहुत महत्वपूर्ण है, और मैं अपने लिये कष्ट उत्पन्न करके, उनकी सहायता करता हूँ। इस माध्यम से मेरा प्रेमी अन्ततः मुझसे मिलकर एक हो जाता है।''

इससे मुझे एक बात याद आई जो मनी ने हमें मंडली हाल में बताई थी। ''मैंने बाबा से पूछा था कि जब आप ईसामसीह थे, उस समय आपके जीवन के अन्तिम क्षणों के दौरान, पीटर ने, जिसने आपके लिये इतना अधिक कार्य किया था और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, आपको पहचानने से इनकार किया। आपने उसके लिये वह भूमिका क्यों लिखी? उस घटना के अलावा, उसने एक सच्चे साथी की भूमिका निभाई। उसके लिये इस भूमिका से गुजरने की क्या आवश्यकता थी?''

''बाबा ने उत्तर दिया, 'पीटर को शक्तिशाली बनने और उस महान कार्य को करने के लिये, जो उसने बाद में मेरे लिये किया, उसके मुझे पहचानने से इनकार करने के कारण, पश्चाताप का अनुभव करना, आवश्यक था।'''

मनी ने आगे कहा, ''पीटर ने उसके बाद जो महान कार्य किया उसको देखो। केवल कार्य ही नहीं, जब शूली पर चढ़ने की पीटर की बारी आई, तो उसने शूली को उल्टा कर देने की इच्छा प्रकट की।''

49. उन पर विश्वास करना

कई बाबा प्रेमियों ने मुझसे पूछा है कि कई वर्षों के कष्ट के दौरान क्या कभी मैंने आत्म हत्या करने का विचार किया था। ईमानदारी से कहूँ

तो यह सच है। हाँ, मैंने आत्म हत्या करने की कोशिश भी की थी। बाबा ने मुझे रोका। अगर मेरी कहानी पाठक के लिये किसी तरह से उपयोगी है अथवा पाठक की नज़रों में उसका कोई मूल्य है, तो यह निम्नलिखित है।

मेरी बीमारी के शुरू में, लगभग दो वर्ष तक संघर्ष करने के पश्चात्, मैं पूरी तरह से ऊब चुका था। मैं अत्यधिक थकान से पीड़ित था और अपने प्रतिदिन के व्यक्तिगत ज़रूरी कार्यों के लिये मेरे बिल्कुल ताकत नहीं थी। इसके अलावा मेरे पैरों में भयंकर दर्द था, और मैं बैसाखी की सहायता से बहुत कठिनाई से चल पाता था।

मैं ज्यादातर घर में ही रहता था और भयंकर अवसाद से ग्रस्त होता जा रहा था। यह लगभग अक्टूबर 2001 की बात है, जब मैं दहानू में अपनी बहन के फार्म हाउस में रह रहा था। मैं इस आपदा से, जो मेरे जीवन में आ गई थी, और मेरे भरसक प्रयत्नों के बावजूद कम नहीं हो रही थी, इतना अधिक परेशान हो गया था कि मैंने इससे छुटकारा पाने का एक सरल रास्ता चुनने, आत्महत्या करने का निर्णय लिया।

मेरी बहिन के फार्म हाउस से लगभग सौ गज की दूरी पर रेलवे लाइन है। कम से कम पच्चीस गाड़ियाँ वहाँ से गुजरतीं थीं और आत्म हत्या करने में कोई कठिनाई नहीं थी। मैं केवल शारीरिक कष्ट ही नहीं, बल्कि अपनी असहायता और दूसरों पर निर्भर होने के कारण, अपने कुछ मित्रों और परिवार के लोगों द्वारा अपमानित होने के कारण, बहुत ऊब और थक गया था। इसलिये एक दिन, अपने हृदय में बाबा से बात करने के पश्चात् मैं रेलवे लाइन की ओर चल दिया। मैं बाबा का नाम लेता रहा और बात करते हुये, उनसे अपने खराब स्वास्थ्य के बारे में शिकायत करते हुये बताया कि मैं कितना अधिक असहाय हो गया था और क्योंकि उन्होंने इससे मुक्त होने में मेरी मदद करने से इनकार कर दिया था, इसलिये मैं यह कठिन कदम उठाने के लिये विवश हो गया था। मैंने उनको बता दिया कि अगर वह चाहें, तो मुझे रोक सकते थे।

मैं चुपचाप घर से बाहर आकर जैसे ही रेलवे लाइन की ओर चला, दो पालतू कुत्ते, जो हमेशा सामने के बरामदे में रहते थे, मेरे पीछे आ गये।

मैं इस स्थिति को पाठकों को अच्छी तरह समझाने के लिये विषय को थोड़ा सा मोड़ रहा हूँ।

मेरी बहिन अफ़साना, उसके पति सोहराब, उसकी बेटी परीनाज़ और मैं, हम सब कुत्तों से प्रेम करते है। उनके फार्म हाउस में लगभग आठ या दस कुत्ते थे।

इन कुत्तों में से एक पामेरियन, जिसका नाम टिप्सी था, जहाँ कहीं मैं जाता था, हमेशा मेरे साथ रहती थी। अगर मैं कुर्सी में बैठता था तो वह आकर, कूदकर मेरी गोद में बैठ जाती थी। दूसरी डॉबरमैन थी जिसका नाम डेन्टी था। वह भी हर जगह मेरा पीछा करती थी और टिप्सी की तरह मेरी गोद में बैठने की कोशिश करती थी। वह काफी बड़ी थी और मेरी गोद में बैठने की उसकी कोशिशों से मुझे बहुत हँसी आती थी क्योंकि वह बार बार गिर जाती थी। यही दो कुत्ते मेरे पीछे पीछे रेलवे लाइन तक आये।

रेल की पटरी के पास एक टीला है जहाँ मैं जाकर बैठ गया और ट्रेन के आने का इन्तज़ार करने लगा। कुत्ते थोड़ी देर तक मेरे चारों ओर चक्कर लगाते रहे, और फिर वे टीले से उतरकर, पटरियों के बीच में जाकर खड़े हो गये। मेरी बहिन के कई पालतू कुत्ते ट्रेन से मर चुके थे।

इसलिये मैंने पत्थर उठाकर, इस आशा से कुत्तों पर फेंकना शुरू किया ताकि वे रेल की पटरी से दूर भाग जायें। कुत्ते मेरे पत्थरों से बचते थे लेकिन रेल की पटरी से दूर नहीं जाते थे। मैंने बहुत कोशिश की, लेकिन वे नहीं गये। इस स्थिति में मैं केवल एक काम कर सकता था। मुझे घर वापस लौटना था, क्योंकि मैं जानता था कि वे मेरे पीछे पीछे आयेंगे। मैं कुत्तों के साथ घर वापस आया और मैंने अगले दिन आत्महत्या करने की कोशिश करने का निश्चय किया। मेरी बहिन के फार्म हाउस में पीछे एक दरवाज़ा है और कुत्ते हमेशा सामने के बरामदे में रहते थे, इसलिये मैंने निश्चय किया कि अगले दिन मैं पीछे के दरवाज़े से जाऊँगा।

दूसरे दिन मैं टीले पर अकेला बैठा हुआ प्रसन्नता पूर्वक ट्रेन के आने का इन्तज़ार कर रहा था। मैं बाबा की याद कर रहा था तभी अचानक मुझे अपने पास किसी के बैठे होने का अहसास हुआ। यह मेरी माँ थी। जब मैंने उनसे आने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि उन्होंने मुझे आते हुये

देखा था इसलिये वह भी आकर मेरे पास बैठ गईं। मैंने उनसे कहा कि मैं अकेले रहना चाहता था और उनसे प्रार्थना की कि वह मुझे अकेला छोड़ दें। उन्होंने इनकार कर दिया इसलिये मैं थोड़ी देर के बाद घर आया। मुझे अनुभव हुआ कि मेरी माँ को मेरे इरादों के प्रति सन्देह हो गया था इसलिये मैने पुनः अगले दिन आत्महत्या करने का निश्चय किया।

आत्महत्या करने के ये दोनों प्रयत्न मैंने शाम के समय किये थे क्योंकि दिन की अपेक्षा शाम और रात में कई गाड़ियाँ चलतीं थीं। लेकिन मेरे परिवार के अधिकांश लोग दोपहर के समय थोड़ी देर सोते हैं इसलिये तीसरे दिन, मैं दोपहर के समय घर से निकला। मैं पीछे के दरवाज़े से बाहर निकलकर रेल की पटरियों की ओर बढ़ा। इस बार, टीले पर बैठने के बजाय, मैं इसके नीचे उतरकर रेल की पटरियों के पास बैठ गया, क्योंकि वहाँ से मुझे कोई भी घर से नहीं देख सकता था। मैं धैर्य के साथ ट्रेन के आने का इन्तज़ार करने लगा और अचानक यह थोड़ी दूर पर नज़र आई। मैं बहुत खुश था कि इस बार कुछ भी गड़बड़ नहीं हुआ और ट्रेन के पास आने का इन्तजार करने लगा। मैंने पूरे समय बाबा का नाम लेते हुये रेल की पटरियों की ओर चलना शुरू किया। अचानक, हमारे परिवार के मित्रों में से एक मित्र, रेल की पटरियाँ पार करता नज़र आया। वह हमसे मिलने आ रहा था और क्योंकि वह पटरियाँ पार कर रहा था, उसने मेरा हाथ पकड़कर यह कहते हुये मुझे दूर धकेल दिया, ''रुस्तम, इस समय मत पार करो। ट्रेन बहुत पास है। और इन बैसाखियों के कारण, तुम खतरा मोल ले रहे हो।'' मैं इस घटना से और जिस तरह यह घटित हुई, आश्चर्य चकित हो गया।

ट्रेन के जाने के बाद, उस मित्र ने पटरियों को पार करके उस पार जाने में मेरी मदद करने का प्रस्ताव रखा क्योंकि वह समझ रहा था कि मैं पटरियों के उस पार रहने वाले दूसरे परिवारिक मित्र के घर जा रहा था। मैंने उससे कहा कि वह परेशान न हो लेकिन उसने जाने से मना कर दिया और ज़िद करने लगा कि उसे कोई ज़रूरी काम नहीं था, और वह मेरी सहायता करना चाहता था। कोई उम्मीद न देखकर मैं वापस आ गया और आत्महत्या करने की योजना किसी दूसरे दिन के लिये स्थगित कर दी।

यह मेरा आत्महत्या करने का चौथा प्रयत्न होने वाला था, इसलिये मैं बहुत सावधान था और मैंने अपने मन में कुत्तों, परिवार के लोगों और दोस्तों से बचने की एक योजना बनाई। मैं अपरान्ह के समय पीछे के दरवाज़े से निकलकर पटरियों की ओर चला। मैं टीले से नीचे उतरकर, घर से दूर, दूसरी दिशा में चलने लगा। इस तरह से, अगर परिवार का कोई मित्र रेल की पटरियाँ पार कर रहा होता, तो मुझे नहीं देख पाता। टीले के नीचे, पटरियों के पास कुछ झाड़ियाँ थी। मैं दो झाड़ियों के बीच में छिप गया।

मैं पूरे समय मन में बाबा का नाम ले रहा था और उनसे बातें कर रहा था। मैंने उन्हें बताया कि मैं क्या और क्यों करने जा रहा था। मैंने उनसे कहा कि अगर वह चाहें, तो अभी भी मुझे रोक सकते थे। किसी भी प्रकार से, मैं यह कभी समझ नहीं पाया कि पिछले तीन दिनों की घटनायें, जिन्होंने मेरे आत्महत्या के प्रयत्नों को विफल किया था, बाबा द्वारा आयोजित की गईं थीं। मैं यह समझने में असफल रहा और उनसे कोई ठोस और प्रत्यक्ष प्रमाण चाहता रहा। ट्रेन दिखने के पहले, लगभग आधे घंटे तक मैं इन्तज़ार करता रहा। इसके पास आने पर, मैं उठकर पटरियों की ओर चलने लगा।

देश के अधिकांश भागों में रेल की पटरियाँ थोड़ी ऊँचाई पर होती हैं और उनके सहारे के लिये पत्थरों का छोटा टीला सा होता है। मैं जाकर इस पत्थर के टीले के नीचे खड़ा हो गया। मैं बाबा का नाम ले रहा था और खुश था कि अब सब कुछ खत्म होने जा रहा था। ट्रेन पास आ गई और यह कुछ सेकेंड में मेरे पास आने वाली थी, इसलिये मैं पटरियों पर खड़े होने के लिये, टीले पर चढ़ने लगा।

लेकिन जैसे ही मैंने कदम रखने की कोशिश की, मेरा पूरा शरीर जम गया, मेरे भरसक प्रयत्न करने के बावजूद, मैं अपनी जगह से हिल नहीं सका। मैंने अपने हृदय में बाबा को स्पष्ट रूप से कहते सुना, ''रुस्तम, इससे तुम्हारे कष्ट का अन्त नहीं होने वाला है। तुम्हें अपने अगले जन्म में यह कष्ट फिर से, पूरी तरह से भोगना होगा और साथ ही आत्म हत्या से होने वाला अतिरिक्त कष्ट भी भोगना होगा। इसलिये जब मैं यहाँ पर

तुम्हारी मदद करने के लिये हूँ तो इसे अभी इसी जीवन में क्यों नहीं सह लेते हो? मेरा विश्वास करो, इस कष्ट के दौरान मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा और हर कदम पर तुम्हारी मदद करूँगा। मेरा विश्वास करो, मैं तुम्हारे साथ कभी भी विश्वासघात नहीं करूँगा।'' मैं बाबा की बात सुनता हुआ, वहाँ पर निश्चल खड़ा रहा और ट्रेन हवा के झोंके की तरह मेरे पास से निकल गई।

जैसे ही ट्रेन की आखिरी बोगी मेरे पास से निकली, मेरे कंधे से एक समाचार पत्र टकराया जिसे शायद कोई आदमी, भीड़ से भरे डिब्बे के दरवाज़े के पास बैठा हुआ, अपने हाथ में पकड़े था। मैं स्वयं आत्महत्या के इतना अधिक निकट था। मैं उस स्थान पर थोड़ी देर खड़ा रहा जो मुझे अनन्त प्रतीत हुआ और जो कुछ हुआ था, उसे समझने की कोशिश करता रहा।

मेरा पूरा अस्तित्व कष्ट में था, और मैं यह सब ख़त्म करना चाहता था। और यहाँ पर बाबा मुझसे जीने के लिये कह रहे थे। उनके शब्द मेरे हृदय में अभी भी गूँज रहे थे, ''मुझ पर विश्वास करो, मैं इस सबके दौरान तुम्हारी देखभाल करूँगा।'' मैं जानता था कि अगर मैं वापस लौटा तो मुझे और अधिक कष्ट सहना होगा। मेरे दिलो दिमाग में केवल बाबा के शब्दों की, ''मुझ पर विश्वास करो, मैं इस सबके दौरान तुम्हारी देखभाल करूँगा'' गूँज ने मुझे वापस लौटने के लिये विवश किया। यह शायद अन्तिम बार था जब मैंने आत्म हत्या करने के बारे में सोचा। हाँ, उस समय से मेरा शारीरिक कष्ट और दुर्बलता कई गुना बढ़ गया है लेकिन, अपने वचन के अनुसार, बाबा ने अपनी उपस्थिति भी बढ़ा दी है। वह अक्षरशः मेरे साथ हैं, हर कदम पर मेरी सहायता कर रहे हैं और यह सब सहन करने में मेरी सहायता कर रहे है। मेरे साथ उनकी यह उपस्थिति मुझे केवल सहारा ही नहीं देती बल्कि मुझे बहुत अधिक आनन्द और प्रसन्नता देती है। कई बार मैं केवल उनकी प्यार भरी, मुझे अपने आलिंगन में भरे हुये उपस्थिति के प्रति सचेत होता हूँ जो मेरे चारों ओर रहती है और मैं सबकुछ और अपनी पीड़ा को भी भूल जाता हूँ। मुझे याद नहीं है कि जब मैं स्वस्थ और सक्रिय था, मैंने कभी बाबा की ऐसी उपस्थिति का अनुभव किया हो। मेरे

शरीर के अस्वस्थ और दुर्बल होने के बाद ही ऐसा हुआ। वास्तव में यह बाबा की दया और कृपा थी।

पिछली बातों पर विचार करने पर, मैं कह सकता हूँ कि यह सब कष्ट केवल आवश्यक ही नहीं था बल्कि इसके माध्यम से मुझे वह मिला जिसे मैं खोज रहा था। बाबा की वास्तविक दया यह थी कि उन्होंने मेरी शारीरिक बीमारियों को दूर करने की प्रार्थनाओं का प्रत्युत्तर नहीं दिया। वस्तुतः इसके द्वारा वह मेरी बीमार आत्मा का इलाज कर रहे थे। मेरे दृष्टि कोण से, अगर यह सब नहीं हुआ होता तो मेरा जीवन व्यर्थ हो गया होता। और इसीलिये, मेरा कष्ट भी व्यर्थ हो गया होता। बाबा ने अपनी दया के द्वारा ऐसा नहीं होने दिया। यह अजीब लग सकता है कि अपनी शारीरिक अस्वस्थता और दुर्बलता के दौरान ही मैंने उनकी सदैव सहारा देने वाली उपस्थिति और सच्ची प्रसन्नता को पाया जिसका स्त्रोत सदैव मेरे अन्दर था।

50. बाबा को ईश्वर के रूप में स्वीकार करना

मैं जब भी मंडली जनों को बीमार देखता था, परेशान हो जाता था और खोर्शिद से इस बारे में शिकायत करता था। विशेष रूप से उन दिनों में, जब वे अधिक दुर्बल और संघर्ष करते हुये लगते थे, मैं बाबा के प्रति झूठा गुस्सा प्रकट करता था। मैं खोर्शिद से कहता था, ''अब यह बहुत ज्यादा है। मैं मंडली के साथ ऐसा होते हुये नहीं देख सकता। मैं अब जाकर बाबा से लड़ूँगा।''

मेरे ऐसा कहने पर खोर्शिद मुझे डाँटती थी और फिर समझाती थी, ''तुम इस तरह से अनुभव करते हो क्योंकि तुम्हें बाबा के ईश्वर होने में संदेह है।'' इस पर मैं दृढ़ता पूर्वक कहता था, ''आप ऐसा क्यों कहती हैं? मैं उन्हें ईश्वर मानता हूँ। वह कम से कम मंडली के लिये, जिन्होंने अपने जीवन उन्हें समार्पित कर दिये, स्थितियों को बदल सकते हैं। वह ऐसा क्यों नहीं करते हैं?''

खोर्शिद ने पुनः कहा ''तुम बाबा पर सन्देह करते हो। अगर तुमने उनको वास्तव में ईश्वर मान लिया होता तो उनके किसी भी कार्य पर

किसी भी तरह से संदेह करने का प्रश्न ही नहीं उठता? जिन लोगों ने उन्हें सौ फीसदी ईश्वर मान लिया है, उन्हें उनके किसी भी कार्य पर संदेह नहीं होता। वे ऐसी बातें नहीं कहते, 'वह मंडली के साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं?' अथवा 'संसार की हालत इतनी खराब क्यों है' अथवा इस प्रकार के दूसरे प्रश्न नहीं करते हैं। वे जानते हैं कि वह ईश्वर हैं और प्रत्येक व्यक्ति के लिये सबसे अच्छा क्या है, इसका निर्णय उनके ऊपर है। जब तुम उन्हें पूरी तरह से ईश्वर मानते हो, तब किसी भी बात की शिकायत करने का प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिये एक बार और हमेशा के लिये यह निर्णय ले लो कि क्या तुम उन्हें पूर्ण रूप से ईश्वर मानते हो और विश्वास करते हो। एकमात्र यही निर्णय वास्तव में तुम्हें दृढ़तापूर्वक लेना है। यह निर्णय लेने के पश्चात् निश्चय करने के लिये कुछ भी शेष नहीं रह जाता, क्योंकि ईश्वर सबकुछ जानता है और सबकुछ करता है।''

बाबा की मंडली, खोर्शिद से, ऐसी गंभीर सलाह पाकर, मेरा हृदय अत्यंत प्रभावित हुआ। वह अपने जीवन के पिछले बीस सालों से कुर्सी पर बैठी रहती थी और चल नहीं सकती थी। उसकी दृष्टि धुंधली थी और वह व्यक्ति की केवल छाया देख सकती थी। लेकिन खोर्शिद की अन्तर्दृष्टि बहुत ही स्पष्ट थी और संदेहों से पूर्ण रूप से स्वच्छ थी।

51. विश्वास

एक कहानी जो मुझे याद आ रही है, वह एक चुटकुला है जिसे एरच मंडली हाल में अक्सर सुनाया करते थे। यह इस प्रकार है।

''एक बार एक व्यक्ति लम्बी ढालुआँ पहाड़ी के पास टहल रहा था। वह कंकड़ों पर फिसलकर किनारे पर गिर गया। गिरते हुये उसने पहाड़ी के बगल से उगते हुये एक पेड़ की शाखा पकड़ ली।''

थोड़ी देर रुककर एरच फिर बोले, ''तुमने देखा होगा कि पहाड़ी की बगल से पेड़ किस तरह उगते हैं। यह आश्चर्य की बात है कि पेड़ ज़िन्दा रहता है। लेकिन किसी तरह से ऐसा होता है। इसलिये यह भाग्य की बात थी कि उस मनुष्य ने पेड़ की शाखा पकड़ ली जो पहाड़ी की बगल से बाहर की ओर निकली हुई थी। अपने प्रिय जीवन की रक्षा के लिये शाखा से लटके हुये वह व्यक्ति सहायता के लिये ऊँचे स्वर से चिल्लाया, 'क्या

कोई व्यक्ति ऊपर है? क्या कोई व्यक्ति ऊपर है जो मेरी सहायता कर सके?'

"जब वह व्यक्ति चिल्ला रहा था, पहाड़ी की चोटी से एक ऊँची गरजती हुई आवाज़ आती हुई प्रतीत हुई। उस आवाज़ ने उससे कहा, 'मैं ईश्वर हूँ और तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। लेकिन मेरी शर्त यह है कि तुम्हें मुझ पर विश्वास रखना और मेरी आज्ञा का पालन करना होगा।' उस व्यक्ति ने शीघ्र ही उत्तर दिया, 'हाँ, मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करूँगा, लेकिन पहले मेरी जल्दी से सहायता करो क्योंकि शाखा पर मेरी पकड़ ढीली हो रही है।' उस आवाज़ ने उससे कहा, 'तब शाखा को छोड़ दो और मैं तुम्हारे जीवन की रक्षा करूँगा।'

"इस पर पूर्ण रूप से मौन छा गया। उस व्यक्ति ने काफी देर तक कोई उत्तर नहीं दिया। थोड़े समय के बाद उस व्यक्ति ने पुनः चिल्लाना शुरू कर दिया, 'क्या कोई और व्यक्ति ऊपर है?'" सब लोग हँसने लगे।

एरच ने आगे कहा, "जब बाबा पर विश्वास करने और उनकी आज्ञाओं का अक्षरशः पालन करने की बात आती है, तो हम सब उस व्यक्ति की तरह करते हैं। वह हमारे बीच आये हैं। वह हमें केवल माया के चंगुल से बचाने के लिये ही अवतरित हुये हैं; हमें सिर्फ उन पर विश्वास करना है और माया पर अपनी पकड़ को छोड़ देना है जिसे हम मज़बूती से पकड़े हुये हैं। लेकिन जिस प्रकार वह व्यक्ति शाखा को छोड़ने में कठिनाई का अनुभव करता है, उसी प्रकार हम कई जन्मों से सभी प्रकार के माया के आकर्षणों में फँसे हुये, उनको छोड़ने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।"

52. उत्तरदायित्व

जब मैं मेहेराबाद में रहने के लिये पहली बार आया तो मैं अत्यधिक उत्साह से भरा हुआ था और मैं उस सीमा तक काम करता रहता था जब तक थक कर चूर नहीं हो जाता था। बाबा का कार्य करने के अपने उत्साह में, नये अन्तेवासी अक्सर ऐसा ही करते हैं। जैसे जैसे समय बीतता गया, मैंने अपनी क्षमता के अनुसार काम करना सीखा। मैं उतना ही काम लेता था जितना मैं कर सकता था। फिर भी, जैसे जैसे समय बीतता गया, मैं

कभी कभी अपने लिये थोड़े से खाली समय की ज़रूरत अनुभव करता था जैसे कि कहीं पर अकेले जाना अथवा बिल्कुल अकेले रहना। यह एक ऐसा विशेष सुख था जो मंडली के आस पास रहने वाले अन्तेवासियों को नहीं दिया जाता था।

निःसंदेह एक पाठक को यह बहुत अधिक कठोर लग सकता है, लेकिन जैसा कि एक बार एरच ने मुझसे कहा था, "बाबा के साथ जीवन बहुत अधिक कठोर था; तुम लोगों को अच्छा खाना, अच्छी नींद मिलती है, नियम से नहाने को मिलता है, तुम मित्रों से मिल सकते हो, छुट्टियों में जा सकते हो, और तुम हर समय एक ही जगह पर रहते भी हो। यहाँ तक कि तुम्हें सोचने की स्वतंत्रता भी है। तुमसे यह पूछने वाला कोई नहीं हैं कि तुम क्या सोच रहे हो। जब हम बाबा के साथ रहते थे, हमें यह सब उपलब्ध नहीं था। हमारा जीवन केवल कठोर ही नहीं था, बल्कि अलग थलग और कष्टपूर्ण था।"

जब मैं मेहेराज़ाद में रह रहा था, उस समय की एक घटना मैं बताना चाहूँगा। मुझे दिसम्बर 1989 में मेहेराज़ाद में रहने के लिये पहली बार बुलाया गया था। क्योंकि फालू, जो मेहेराज़ाद की देखभाल करते थे, अपने किसी व्यक्तिगत कार्य से और अपने परिवार के साथ कुछ समय बिताने के लिये भी, दो हफ़्ते के लिये मुम्बई जाने की योजना बना रहे थे। मैं बहुत अधिक प्रसन्न था क्योंकि मैं नया अन्तेवासी था और जून 1989 में ही आया था। मेरे अच्छे भाग्य और बाबा की कृपा से मेहेराबाद में रहने वाला मैं पहला अन्तेवासी था जिसे मेहेराज़ाद में रहने के लिये बुलाया गया था। उन दिनों फालू और डॉ. शैली दो अन्तेवासी थे जो स्थायी रूप से मेहेराज़ाद में रहते थे। फालू मेहेराज़ाद की देखभाल करते थे और शैली मंडली की डाक्टर थी। केसी और दवाना वहाँ पर दिन में काम करतीं थीं लेकिन वे ट्रस्ट के अहाते में रहतीं थीं।

इसलिये मुझसे कुछ कपड़े लेकर एक खास तिथि में मेहेराज़ाद आने के लिये कहा गया। वहाँ पहुँचने पर मुझे मेरा कमरा दिखा दिया गया और मैंने अपना सामान निकाल लिया। मनी मेरे पास आईं और कहा, "मेरे बच्चे, आखिर तुम घर आ ही गये।" मनी से ये शब्द सुनकर मेरा हृदय

और आत्मा बाबा के प्रेम से भर गये, क्योंकि मुझे वास्तव में ही अनुभव हो रहा था कि मैं अन्ततः घर आ गया था। मैंने मनी से यह कहा और हर चीज़ के लिये उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने मुझे याद दिलाई कि मैं बाबा को धन्यवाद दूँ किसी अन्य व्यक्ति को नहीं। मुझे आशा थी कि मुझे कोई काम अथवा कोई डयूटी दी जायेगी जैसा कि मेहेराबाद में होता था जहाँ का वातावरण काम के चारों ओर ही घूमता रहता था। फिर भी मुझसे काम के बारे में अथवा देखभाल करने के बारे में कुछ नहीं कहा गया। फालू ने मुझे कोई निर्देश नहीं दिये थे और मुझे साधारण रूप से उस स्थान के आसपास ही रहने के लिये कहा था। उसने कहा था कि अगर किसी तरह की सहायता की ज़रूरत होगी तो लोग मेरे पास आयेंगे। तीर्थयात्रियों के मेहेराज़ाद आने के दिनों में जब एरच और दूसरे मंडली जन आस पास होते थे, मैं उनके साथ मंडली हाल में बैठता था और वे जिस तरह से चाहते थे, मैं उनकी मदद करने की कोशिश करता था। तो भी, वहाँ पर ज्यादा काम नहीं था और विशेष रूप से तीर्थयात्रियों के मेहेराज़ाद न आने के दिनों में, जब एरच, मनी और बाल नातू काम के लिये ट्रस्ट आफ़िस चले जाते थे, उन दिनों तो बहुत कम कार्य रहता था। मैंने अपने कमरे में बाबा की किताबें पढ़कर, इस अवसर का लाभ उठाया।

कई दिनों तक ऐसा करने के बाद मैं बेचैन हो गया क्योंकि बिना काम के व्यर्थ में समय बिताने की मेरी आदत नहीं थी। इसलिये एक दिन शाम को लगभग 5 बजे मैंने बाल नातू के पास जाकर पूछा कि अगर मैं मेहेराज़ाद आने वाली सड़क पर टहलने के लिये चला जाऊँ तो क्या यह उचित होगा। बाल ने मुझे इस बारे में एरच से पूछने के लिये कहा। जब मैंने इस बारे में एरच से पूछा, उन्होंने कठोरता पूर्वक मुझसे कहा, ''तुम यहाँ घूमने के लिये आये हो अथवा यहाँ पर देखभाल करने के लिये आये हो?'' मैंने एरच से नम्रतापूर्वक पूछा, ''लेकिन यहाँ पर देखभाल के लिये मुझे क्या काम करना होगा?'' ''तुम्हारा काम हर समय हमारे आस पास रहना है ताकि हमें ज़रूरत पड़ने पर तुम हमारी सहायता कर सको। अगर तुम घूमने चले जाते हो तो आपातकालीन स्थिति में, हम तुम्हें कैसे ढूँढेंगे, हम तुम्हारे पास कैसे पहुँचेंगे? हम लोग बूढ़े हैं, हम इधर उधर दौड़ नहीं सकते हैं। हमारी मदद करने के लिये, हमें लोगों की ज़रूरत है और

इसीलिये तुम यहाँ पर हो। यह याद रखो यहाँ पर तुम्हारे रहने का यही उद्देश्य है। अगर तुम इधर उधर टहलने जाते हो, तो तुम अपने उद्देश्य में असफल रहोगे।''

एरच फिर रुके और मुस्कुराते हुये प्रेमपूर्वक, नम्रता के साथ बोले, ''अगर तुम चाहो तो जा सकते हो, लेकिन 15 मिनट में लौट आना और रोज़ मत जाना।'' एरच ने मुझे इतनी अच्छी तरह से बात समझा दी थी कि मैं कभी भी घूमने के लिये नहीं गया। बाद में, जब एरच ने मुझसे पूछा कि क्या मैं घूमने गया था और मैंने कहा नहीं, तो उन्होंने टिप्पणी की, ''यह अच्छी बात है। इससे बाबा प्रसन्न होंगे।'' उन्होंने आगे कहा, ''सेवा करने के बारे में लोगों का विचार है कि अपने फुर्सत के समय में बाबा के लिये कुछ कार्य करना। वे यह नहीं समझते हैं कि बाबा की सेवा करने का अर्थ है कि तुम्हारे पास फुर्सत का समय नहीं होना चाहिये। तुम्हारा सारा समय, तुम्हारे सारे क्षण उनके (बाबा के) हैं। वास्तव में तुमसे यह आशा की जाती है कि तुम अपना सारा समय ही नहीं बल्कि स्वयं अपने आपको भी पूर्ण रूप से उन्हें दे दो। संक्षेप में, उनके दास बन जाओ और तुम पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो जाओगे।''

एक दूसरे अवसर पर एक नये अन्तेवासी को, जो अपनी ड्यूटी के प्रति लापरवाह था क्योंकि वह समाधि के आस पास रहना पसन्द करता था, मनी ने डाँटा। अन्ते वासी को कई बार प्रेम से उसके उत्तरदायित्वों की याद दिलाई गई, लेकिन जब उसने मंडली के द्वारा नम्रतापूर्वक दिये गये मार्गदर्शन का अनुसरण नहीं किया, तो एक दिन मनी ने बहुत कठोरता से उसको डाँटा। जब अन्तेवासी ने दृढ़ता पूर्वक अस्वीकार करते हुये कहा, ''मनी, मुझे समाधि में रहना अच्छा लगता है,'' तो मनी ने कठोरता पूर्वक उससे कहा, ''तुम यहाँ पर अपनी मनमानी करने नहीं, बल्कि तुमसे जो कहा जाता है वह करने आये हो। अगर तुम यह नहीं कर सकते तो तुम्हें यहाँ पर नहीं रहना चाहिये।''

अक्सर प्रेमपूर्वक, अक्सर कठोरता के साथ, मंडली अन्तेवासियों का मार्गदर्शन करती थी और वहाँ रहने के उनके उद्देश्य की उनको याद दिलाती थी।

53. जिनसे तुम प्रेम करते हो उनको कैसे प्रसन्न करो

भाऊजी के साथ कई वर्ष काम करते हुये मैंने केवल बाबा के लिये ही नहीं, बल्कि एरच, मनी और मेहेराज़ाद मंडली के लिये भी, उनका प्रेम देखा। भाऊजी उनको प्रसन्न करने के लिये किसी भी सीमा तक जा सकते थे और उनकी छोटी से छोटी इच्छा भी पूरी करने की कोशिश करते थे। मेरे लिये यह सब देखना एक शिक्षा ग्रहण करने वाला अनुभव था, विशेष रूप से यह सीखने का कि जिनसे हम प्रेम करते हैं उनको किस तरह से प्रसन्न करें। निम्नलिखित घटना उनकी (भाऊजी) इस छवि को स्पष्ट करती है।

मेहेराबाद में एक विशेष अन्तेवासी भाऊजी के पास शिकायतें लेकर अक्सर आता था। वास्तव में, वह भाऊजी के पास जब भी आता था, अपनी ज़रूरतों का रोना रोता था और कहता था कि न्यास (ट्रस्ट) की धरोहर रखने वाले (ट्रस्टी) उसकी ज़रूरतों की उपेक्षा करते और उसे परेशान करते थे। भाऊजी, अपने गर्म स्वभाव के बावजूद, धैर्यपूर्वक उसकी बात सुनते थे और यथाशक्ति उसकी सहायता करने का आश्वासन देकर उसे शान्त करने का प्रयत्न करते थे। एक अवसर पर यह अन्तेवासी अपनी सामान्य शिकायतें लेकर ट्रस्ट आफ़िस में आया। वह न्यास की धरोहर रखने वाले सभी लोगों की आलोचना करता रहा और मेहेराबाद में विभिन्न स्थितियों के लिये भाऊजी की आलोचना करने लगा। हालाँकि वह भाऊजी के सामने ही उनकी आलोचना कर रहा था, वह शान्तिपूर्वक सुनते रहे। उन्होंने उस अन्तेवासी को बार बार अपनी सहायता का आश्वासन देने का प्रयत्न किया और उससे प्रार्थना की कि वह सबसे प्रेम से बात करे और कोई चीज़ न मिलने पर गुस्सा न करे। अन्तेवासी ने भाऊजी के व्यवहार की उपेक्षा की और आलोचना करता रहा।

भाऊजी के नम्र भाव को देखकर, उसकी शायद हिम्मत बढ़ गई और उसने एरच की आलोचना करने की भूलकर दी। कुछ बातें ऐसी हैं जो तुम्हें भाऊजी के सामने नहीं करना चाहिये और उनमें से एक बात यह है कि एरच अथवा मनी की कभी भी आलोचना करना। अचानक भाऊजी का संतुलन गायब हो गया और उनका गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने अन्तेवासी से कहा, ''एरच के खिलाफ एक शब्द भी कहने की हिम्मत न करना। मैं सहन नहीं करूँगा और तुम्हें उठाकर बाहर फेंक दूँगा। क्या तुम्हें थोड़ी सी भी चेतना है कि एरच कौन हैं? तुमने उनकी आलोचना करने का साहस कैसे किया? क्या तुम जानते हो कि मनी और एरच कितनी ऊँची आत्मायें हैं? तुमने उनकी आलोचना करने की हिम्मत कैसे की? तुम किसी भी व्यक्ति के बारे में कुछ भी कह सकते हो और यहाँ तक कि मेरे बारे में भी कुछ भी कह सकते हो लेकिन अगर तुम उनके बारे में एक भी शब्द कहते हो तो मैं इसे सहन नहीं करूँगा। अगर तुम पुनः ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा और तुम्हारे लिये मुझसे बुरा और कोई व्यक्ति नहीं होगा।'' अन्तेवासी घबड़ाकर चुप हो गया और नम्रता पूर्वक वहाँ से चला गया।

दूसरी घटना, जो मुझे याद आ रही है उस समय की है, जब मेहेराज़ाद में काम करने वालों ने समस्यायें पैदा कर दी थीं। यह संकट इसलिये आया क्योंकि वहाँ पर काम करने वाले संघ के नेता के (Union leader) उकसाने से, जो कि एक राजनीतिक कार्यकर्त्ता और स्थानीय गुंडा था, संघ (Union), में शामिल हो गये थे। उसके प्रभाव के कारण, उन्होंने हड़ताल करने और मेहेराज़ाद में सारा काम रोक देने की धमकी दी। सरकारी अफसरों के साथ काम करने के मेरे अनुभव के कारण भाऊजी ने मुझसे इस नई परिस्थिति से निबटने के लिये कहा।

इस स्थिति पर बहस करने और इसका सबसे अच्छा हल निकालने के लिये, मेहेराज़ाद में मंडली जनों की एक सभा हुई। मेहेराज़ाद मंडली को इस बात से गहरा सदमा पहुँचा कि जो कर्मचारी मंडली जनों से इतने घनिष्ठ थे और परिवार की तरह माने जाते थे, ऐसा कर सकते थे। जब कर्मचारियों ने उनके (मंडली के) पास अपनी माँगों के लिये सीधे आने के बजाय, एक बाहरी व्यक्ति और वह भी एक स्थानीय गुंडे से मदद माँगी तो मंडली जनों को विश्वासघात का अनुभव करके चोट पहुँची। इससे मंडली जन बहुत अधिक परेशान हो गये।

डॉ. गौहर, जो एक गुस्सैल महिला और अधीर स्वभाव कीं थीं, अपने कर्मचारियों को नौकरी से तुरन्त निकालना चाहतीं थीं। भाऊजी ने प्रेम पूर्वक समझाया कि उन्होंने जिन एडवोकेट से सलाह ली थी, उन्होंने इस प्रकार का कोई भी कार्य न करने की सलाह दी थी। कानून के अनुसार कार्य करने का एक ढँग था और हमें उसी पर चलना होगा और इसमें समय लगेगा। अगर ऐसा नहीं किया गया और निकाला गया कर्मचारी कोर्ट पहुँच गया तो कर्मचारी को नौकरी पर फिर से रखना होगा और हमें उस कर्मचारी और कोर्ट केस से दस वर्ष तक निबटना होगा।

तो भी, गौहर ज़िद पकड़े थीं और ज़िद कर रहीं थीं कि कर्मचारियों को निकाल देना चाहिये और वह इन कर्मचारियों को देखना भी नहीं सह पा रहीं थीं। उन्होंने यह भी शिकायत की कि संघ में शामिल होने के बाद कर्मचारी कहना नहीं मानते थे और रुखाई से पेश आते थे। जब गौहर ने आग्रह किया कि कर्मचारियों को तुरन्त हटा दिया जाये, तो एक लम्बे समय से रहने वाले अन्तेवासी ने, जो इस घटना में शामिल था, गौहर से एकाएक कहा, ''नहीं, नहीं, नहीं, आप ऐसा नहीं कर सकतीं। यह कानून के खिलाफ़ है और ग़ैर कानूनी है।'' अन्तेवासी को भाऊजी ने तीव्रता से सम्बोधित करते हुये कहा, ''तुम चुप रहो और मुझे बात करने दो।''

अन्तेवासी चुप हो गया और भाऊजी गौहर को स्थिति की जटिलताओं के बारे में प्रेमपूर्वक समझाते रहे। उन्होंने गौहर के सामने यह प्रस्ताव रखा कि उन कर्मचारियों को किसी दूसरे विभाग में भेजकर उनकी जगह दूसरे कर्मचारी रख दिये जायें। उन्होंने गौहर को यह भी आश्वासन दिया कि परेशानियाँ पैदा करने वाले लोग अन्ततः नौकरी से निकाल दिये जायेंगे। इससे डॉ0 गौहर थोड़ी शान्त लगीं और उन्होंने इस हल को स्वीकार कर लिया।

जब सारे मंडली जन चले गये, भाऊजी ने उस अन्तेवासी से गुस्से से कहा, ''मिस्टर, तुम इतने लम्बे समय से यहाँ पर रह रहे हो और तुम यह नहीं जानते हो कि मंडली से किस तरह बात की जाती है? डॉ. गौहर से बात करने का यही तरीका है? क्या तुम्हें ज़रा सा भी अन्दाज़ है कि ये कैसी आत्मायें हैं? क्या तुम उनसे प्रेम पूर्वक बात नहीं कर सकते हो? तुमने जो कुछ किया मैंने देखा था। तुम केवल असभ्य ही नहीं थे बल्कि

डॉ. गौहर के सामने दृढ़तापूर्वक अपनी बात कह रहे थे। मैं इसे सहन नहीं करूँगा।''

अन्तेवासी को आश्चर्य हुआ और उसने दृढ़ता पूर्वक अस्वीकार करते हुये कहा, ''लेकिन मैंने क्या किया? मैंने उनको केवल यह बताया था कि वह कर्मचारियों को हटा नहीं सकतीं थीं क्योंकि यह कानून के विरुद्ध था।''

भाऊजी ने गुस्से से कहा, ''कानून के कहने की कौन परवाह करता है। तुम्हारा उससे बात करने का तरीका ग़लत था। क्या तुमने मुझे उन लोगों से बात करते हुये नहीं देखा? तुम्हें उनसे प्रेमपूर्वक और नम्रता से बात करना चाहिये, वे लोग साधारण नहीं हैं। क्या तुम्हें ज़रा सा भी अन्दाज़ है कि वे लोग कौन हैं और तुम किन लोगों से बात कर रहे हो? ईश्वर के आन्तरिक मंडल (Inner Circle) के साथ व्यवहार करने का तुम्हारा यही तरीक़ा है?'' अन्तेवासी ने प्रार्थना की, ''मुझे अफ़सोस है, लेकिन मैं उन्हें केवल कानून बता रहा था।'' भाऊजी ने उससे फिर कहा, ''मैं कानून की परवाह नहीं करता हूँ, हमें उसको प्रेम से समझाना है। इस बारे में कोई समझौता नहीं हो सकता और अगर गौहर अभी भी कानून के विरुद्ध जाकर उस कर्मचारी को निकालने का निर्णय लेतीं हैं तो उनका साथ देना और कानून के अन्दर ही कोई रास्ता ढूँढ़ना हमारा कर्तव्य है।'' मुझे इस सारी बातचीत से और मेहेराज़ाद मंडली जनों के लिये, जिनमें से अधिकांश लोग प्रारंभिक दिनों से बाबा के साथ थे, भाऊजी के प्रेम और भक्ति से आश्चर्य हुआ।

कुछ दिनों बाद हमें समाचार मिला कि डॉ0 गौहर ने उस कर्मचारी को निकाल दिया था जिसे देखना भी उन्हें सहन नहीं था। कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी और उन्होंने किसी भी कर्मचारी को मेहेराज़ाद नहीं आने दिया। अपनी बात के अनुसार, भाऊजी ने स्थिति का सामना किया और अन्ततः सारा झगड़ा मित्रतापूर्ण ढँग से हल हो गया और सारे मंडली जन अन्त में प्रसन्न थे। इस घटना ने मेरे मन पर गहरा प्रभाव डाला और मुझे समझ में आया कि अपने प्रियतम को खुश करने के लिये, एक प्रेमी को किस सीमा तक जाना चाहिये।

54. तथ्यों और सत्य के बीच अन्तर

किसी घटना से संबंधित तथ्यों को गलत दिखाकर, किसी अन्तेवासी को बातों की सुइयाँ चुभाने की मंडली की अजीब आदत थी। इससे संबंधित अन्तेवासी क्रोधित हो जाता था क्योंकि लगभग हम सभी लोग सत्य के बारे में लौकिक विचार रखते हैं जो सांसारिक सत्य कहा जाता है और हम इसी धारणा के साथ बड़े होते है। मंडली जनों द्वारा तथ्यों को ग़लत बताना, हमें, विशेष रूप से मुझे, झूठ और व्याकुल करने वाला प्रतीत होता था। इस तथ्य ने, कि बाबा की मंडली, जिसने ईश पुरुष के साथ रहते हुये कई दशक व्यतीत किये हैं, ऐसा कर रही थी, मेरे अन्दर और अधिक मानसिक उपद्रव पैदा कर दिया। मैं बिल्कुल भी समझ नहीं पा रहा था कि इसका क्या अर्थ है।

मैंने सिर्फ़ अन्दाज़ लगाया कि बाबा उनके साथ लगभग रोज ही ऐसा करते थे, और इसीलिये उनकी चेतना उसी कार्य क्रम के अनुसार निर्धारित हो गई थी और वे हमारे साथ वैसा ही करने के अलावा और कुछ कर ही नहीं सकते थे। मैंने एरच, भाऊजी और दूसरे मंडली जनों को अक्सर इस बारे में यही कहते सुना, था, ''हमसे मत पूछो, हम नहीं जानते कि हम ऐसा क्यों करते हैं।'' इसलिये इस विचार से मुझे ढाढ़स होता था कि मुझे बाबा के साथ के जीवन का वास्तविक अनुभव प्राप्त हो रहा था और मैं अपने दुखी मन को इस प्रकार शान्त करता था।

फिर भी, एक अवसर पर किसी अन्तेवासी से बात करते समय भाऊजी ने इसकी इतनी स्पष्ट व्याख्या की कि मेरे सारे संदेह दूर हो गये। अन्तेवासी भाऊजी से शिकायत कर रहा था कि किस तरह से एक स्थिति, जिसमें वह भी शामिल था, किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि स्वयं मंडली द्वारा गलत ढँग से बताई जा रही थी। हर व्यक्ति उसी गलत बात को दोहरा रहा था क्योंकि मंडली इसे हर व्यक्ति से बार बार कह रही थी। स्थिति को स्पष्ट करने का बार बार प्रयत्न करने के बावजूद, उसे कोई सफलता नहीं मिली। लोगों ने कहानी को अपने ही ढँग से दोहराना जारी रखा जैसे कि यही सच्चाई हो। अन्तेवासी को आश्चर्य हो रहा था कि ऐसा क्यों था।

भाऊजी ने मुस्कुराते हुये उत्तर दिया, ''तुम तथ्यों को केवल उसी तरह से बताते हो जैसा कि तुम जानते हो, लेकिन मंडली जन सच बोलते हैं क्योंकि उन्होंने बाबा के साथ वैसा जीवन जिया है।''

भाऊजी के उत्तर से हम सबको आश्चर्य हुआ। क्योंकि हमारी समझ में नहीं आया, इसलिये भाऊजी ने व्याख्या की, ''अगर कोई व्यक्ति तथ्यों को गलत ढँग से बताता हैं तो तुम परेशान क्यों होते हो? यह मिथ्या अहं के कारण होता हैं। यहाँ पर रहने का उद्देश्य इस अहं का नाश करना है। इस मिथ्या अहं पर कार्य करने के लिये, बाबा अपनी मंडली को अपने हथियार के रूप में प्रयोग करते हैं। यही उनका असली कार्य है। मंडली यह सब तुम्हारी भलाई के लिये कर रही है अन्यथा, ऐसा करके मंडली को क्या मिलेगा? उनके लिये यह आसान होगा कि वह चुप रहें और लोग जैसा चाहते है उन्हें करने दें और उनसे अच्छी अच्छी बातें कहें जैसी कि वे सुनना चाहते हैं। लेकिन क्या इससे अन्तेवासियों को अपने मिथ्या अहं से छुटकारा पाने में सहायता मिलेगी? क्या इससे उन्हें उस सत्य का अनुभव करने में सहायता मिलेगी जिसका साक्षात रूप मेहेर बाबा हैं? इसलिये याद रखो, हो सकता है मंडली जन तथ्यों का वर्णन उस तरह से न करें जैसा कि तुम इन्हें देखते हो, लेकिन वे सच बोलते हैं।''

55. यह सब एक सपना है

1995 के आस पास, भाऊजी को बड़ी आँत का कैंसर हो गया। उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया और उनका आपरेशन हुआ। जब वह अस्पताल से आये वह बहुत कमज़ोर और दुर्बल नज़र आते थे और हर व्यक्ति को लगता था कि उनके जीवन का अन्त होने वाला है। उस समय भाऊजी अभी भी ट्रस्ट कार्य के मुख्य अधिकारी थे। अस्पताल से आने के बाद वह रोज शाम को ट्रस्ट के अहाते में रहने वाले सभी अन्तेवासियों और ट्रस्ट के सभी कर्मचारियों को, वार्ता देने के लिये बुलाते थे। प्रतिदिन, जब हम अपने कार्य में व्यस्त होते थे, कोई व्यक्ति आकर हमें सूचित करता था कि भाऊजी चाहते थे कि हम सब उनके कमरे में 4 बजे एकत्र हों। इसलिये हम अपने काम को रोककर, भाऊजी के कमरे में इकट्ठा हो जाते थे।

इन वार्ताओं के दौरान, भाऊजी काम के बारे में कोई बात नहीं करते थे बल्कि कार्य करते समय एक कार्यकर्ता की जो मानसिक अवस्था (Attitude) होनी चाहिये, उसके बारे में बात करते थे। किसी व्यक्ति में जो मूल (Basic) गुण होने चाहिये, वह उन्हें विशेषरूप से बताते थे जैसे कि नम्रता, अपमानित होने के लिये सम्मति, अहं का नाश, पूर्ण ईमानदारी और उनकी (बाबा की) मर्ज़ी के प्रति पूर्ण समर्पण, जो हर स्थिति में मानसिक संतुलन बनाये रखने में किसी व्यक्ति की सहायता करते हैं। भाऊजी अपनी वार्ताओं में हमेशा इस बात पर ज़ोर देते थे कि यह सब एक सपना है।'' वह हमसे बार बार कहते थे, ''याद रखो, यह एक सपना है। यह सत्य नहीं है। एकमात्र वह (बाबा) सत्य हैं, उनके अलावा किसी भी चीज़ का अस्तित्व नहीं है। यह मत भूलो कि एकमात्र वही (बाबा) सत्य हैं।''

काफी लम्बे समय तक, प्रतिदिन यही होता रहा। अन्ततः, मुझे यह अजीब लगने लगा कि भाऊजी, हमें यह बताने के लिये कि हमें कैसे काम करना चाहिये, लगभग रोज हमारे काम में बाधा डालते थे। मुझे आश्चर्य होता था कि वह रोज़ उसी बात को बार बार क्यों दोहराते जाते थे और उन्होंने इसे अपनी आदत बना लिया था।

कई वर्षों बाद, जब मैं मंडली के साथ बिताये गये अपने समय के बारे में याद कर रहा था, केवल तभी मुझे अचानक यह समझ में आया कि भाऊजी अपने इस कथन पर, ''यह सब एक सपना है, केवल वह (बाबा) यथार्थ हैं। उनके अतिरिक्त और किसी चीज़ का अस्तित्व नहीं है'' बहुत ज़ोर देते थे। इससे मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उन्हें यह सब एक सपने की तरह दिखाई दे रहा था?

क्या वह माया की शून्यता को देख सकते थे? क्या वह (भाऊजी) इस यथार्थता का अनुभव कर रहे थे कि मेहेरबाबा सब कुछ हैं। मुझे यह बात अब समझ में आई कि भाऊजी इस बात को अपनी आदत के कारण नहीं दोहरा रहे थे बल्कि वह अपने विश्वास के कारण, जो कुछ वह अनुभव कर रहे थे, कह रहे थे ताकि वह इस अनुभव के प्रति सचेतनता और भावना उत्पन्न करने में हमारी सहायता कर सकें।

यह प्रत्यक्षीकरण (Realization) मुझे अचानक हुआ और इसने मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को विद्युत शक्ति से भर दिया। फिर भी मेरे मन में सन्देह था इसलिए मैं भाऊजी से इस विषय पर बात करने की प्रतीक्षा करने लगा। इस प्रकार के नाजुक विषय पर भाऊजी से बात करने के लिए, मुझे धैर्य के साथ प्रतीक्षा करनी पड़ी। भाऊजी ऐसे प्रश्नों का उत्तर तीर्थ यात्रियों अथवा कर्मचारियों के सामने कभी नहीं देते थे। जब वह अकेले और काम में व्यस्त नहीं होते थे, केवल तभी वह अपने अंतरंग कार्यकर्त्ताओं को अपने ह्रदय के रहस्य बताते थे।

धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने के पश्चात् अन्ततः मुझे उस समय अवसर मिल ही गया जब भाऊजी ने अपने आप भूतकाल की घटनाओं को याद करना शुरू कर दिया। उन्होंने अस्पताल के अपने अनुभवों के बारे में बताना शुरू कर दिया जब उन्हें कैंसर था। मैंने अवसर का लाभ उठाते हुए उनसे पूछा, ''क्या आपको याद है कि आप रोज़ शाम को हमें वार्ता के लिये बुलाते थे और इस बात पर ज़ोर देते रहते थे कि यह सब एक सपना है।'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''हाँ, मुझे याद है।'' मैंने उनसे पूछा, ''क्या आप इसको सपने की तरह अनुभव करते हैं?'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''नहीं, मैं नहीं करता।'' मैंने दृढ़तापूर्वक कहा, ''लेकिन आप इतने अधिक विश्वास के साथ यह बात कहते थे। अगर आप इसका अनुभव नहीं करते थे तो आप इतने अधिक विश्वास के साथ कैसे कहते थे?''

भाऊजी मुस्कुराये और कहा, ''मैं इसको स्वप्न की तरह अनुभव नहीं करता, लेकिन मुझे हर समय ऐसा महसूस होता है। यह भावना, कि यह सब सपना है, हर समय रहती है। यह एक सचेतनता है कि यह एक सपना है। मैं इसके प्रति हर समय सचेत रहता हूँ।''

इससे मुझे मंडली के कुछ विवादास्पद कार्यों को समझने में सहायता मिली जिनका उस समय कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि मंडली जन अन्तेवाासियों को जिस तरह से इधर उधर दौड़ा रहे थे, उसका कारण यह सचेतनता थी कि यह केवल एक सपना था।

एक बार एरच यह समझा रहे थे कि, ''बाबा के अलावा कुछ नहीं है। वह सभी अस्तित्वों का अस्तित्व हैं।'' जब उन्होंने ऐसा कहा, तो मैंने उनसे

पूछा, ''क्या आपको ऐसा अनुभव होता है?'' एरच ने कहा, ''नहीं।'' वह थोड़ी देर रुके और फिर बहुत धीरे धीरे कहा, ''नहीं, मैं इसे अनुभव नहीं करता, लेकिन हृदय से महसूस करता हूँ।'' एरच और भाऊजी, दोनों के उत्तर, दूसरे कई विषयों पर भी बहुत समान होते थे।

56. सब कुछ बाबा ही हैं

मैं भाऊजी के पास बैठा हुआ था जब उनके एक सहायक ने उनसे कहा ''रुस्तम हमें कहानियाँ सुनाता है कि शुरू के दिनों में आप उस पर और आपके साथ काम करने वाले हर एक व्यक्ति पर किस तरह से शब्दों के हथौड़े चलाते थे।'' भाऊजी मुस्कुराये और सिर हिलाकर बोले, ''यह उसके और दूसरों के लिए, बाबा की रीतियों से प्रशिक्षित होने के लिए आवश्यक था।'' भाऊजी ने रुककर फिर कुछ याद करते हुए टिप्पणी की, ''मुझे विश्वास नहीं होता है कि मैं उस समय इतना अधिक गुस्सैल था। क्या मैं ऐसा नहीं था?'' मैंने कहा, ''हाँ, आप थे। आपके गुस्से की आग के कारण, आपके आफ़िस का तापमान, बाहर के तापमान की अपेक्षा सदैव कुछ डिग्री अधिक रहता था।''

भाऊजी हँसने लगे और मैंने इस अवसर का लाभ उठाकर उन्हें और कुरेदा। मैंने कहा, ''मुझे विश्वास नहीं होता कि आप इतने अधिक बदल गये हैं। आपको इस तरह देखकर मैं बहुत खुश हूँ। यहाँ तक कि आफ़िस के समय भी, बाबा प्रेमियों से मिलते हुए, उनको कहानियाँ सुनाते हुए, आप बहुत अधिक शान्त रहते हैं। पहले आप ऐसा कभी नहीं करते थे। तब आप हर व्यक्ति पर केवल शब्दों के हथौड़े चलाते थे। उस समय आप इतने अधिक क्रोधी क्यों थे?''

भाऊजी ने उत्तर दिया, ''उस समय जो कार्य था, वह बहुत गहन था और उससे गुस्सा आता था।'' मैंने पूछा, ''फिर परिवर्तन कैसे आया ?''

भाऊजी ने कहा, ''सब कुछ बाबा ने ही किया। जब मुझे कैंसर हुआ और मैं अस्पताल में था, मुझे बाबा से सचेतनता प्राप्त हुई। वह, और बाबा से मुझे प्राप्त हुये दूसरे अनुभव, बहुत ही स्वाभाविक ढँग से मेरे अंदर

परिवर्तन लाये। सब कुछ बाबा ने ही किया, मुझमें जो परिवर्तन हो रहा था, उसके प्रति मैं सचेत नहीं था। इसके अलावा, अधिक तीर्थ यात्रियों का निरंतन आगमन, मनी और एरच का उन्हें कहानियाँ सुनाने के लिये उपलब्ध न होना, ऐसे में मुझे दूसरी, बिल्कुल अलग भूमिका निभानी पड़ी। बाबा ऐसा ही चाहते थे, सब कुछ वही हैं।''

इससे मुझे याद आया कि स्वयं बाबा अपने जीवन के बाद के वर्षों की तुलना में, जब वह सार्वजनिक दर्शन देते थे और जनता की भीड़ पर अपना प्रेम बरसाते थे, अपने शुरू के दिनों में कितने अधिक गुस्सैल थे।

57. हृदय को पढ़ना

मंडली के साथ अपने जीवन में, मैंने पाया कि उनमें पूर्वाभास का गुण था। वे लोग केवल मेरे विचार ही नहीं पढ़ लेते थे, बल्कि वे ऐसा इतनी अधिक बार करते थे कि मुझे आश्चर्य होता था कि क्या उनमें किसी के मन को पढ़ने की क्षमता थी। एक दो बार ऐसा होना संयोग माना जा सकता है लेकिन जब ऐसा मंडली के साथ रहने वाले लगभग सभी लोगों के साथ बार बार दोहराया जाता है, तो इससे आाश्चर्य होने लगता है। अन्तेवासियों और तीर्थयात्रियों ने ऐसा कई बार देखा है और मंडली से अक्सर पूछा है कि वे यह कैसे जानते थे, कि वे क्या सोच रहे थे, अथवा उनकी व्यक्तिगत समस्यायें अथवा संबंध क्या थे। मंडली जन सिर्फ अपने कंधे झटक कर आग्रहपूर्वक कहते थे, ''हम कुछनहीं जानते हैं। हम किसी के मन की बात नहीं जान सकते हैं; सबकुछ मेहेर बाबा करते हैं। जब हम कुछ कहते हैं वह हमें ऐसा कहने के लिए प्रेरित करते हैं और यह सुनने वाले की समस्या का हल निकल आता है, लेकिन हम यह नहीं जानते थे।''

कई अवसरों पर, मैंने, मेरे विचारों को बताने के लिए उनका सामना किया है हालाँकि मैंने उस विषय अथवा समस्या पर उनसे कभी बात नहीं की थी। जब मैं उनसे पूछता था, ''आपने जो कुछ कहा, क्यों कहा? यह व्यक्तिगत समस्या मुझे परेशान कर रही है और मैंने किसी से इस बारे में

बात नहीं की है, इसलिए जब तक आपमें मेरे मन की बात जानने की क्षमता नहीं है, आप इसको कैसे जानते हैं?'' हमेशा मंडली जन अपने कंधे झटक कर कह देते थे, ''हम नहीं जानते कि हमने ऐसा क्यों कहा; यह अवश्य मेहेर बाबा होंगे।''

एक अवसर पर मैं भाऊजी के साथ बैठा था जब एक अन्तेवासी अन्दर आया। वह कुछ समस्याओं का सामना कर रहा था और भाऊजी के पास सहायता के लिए आाया था। भाऊजी ने उसका यथाशक्ति मार्गदर्शन किया लेकिन वह अप्रसन्न प्रतीत हुआ और चला गया। यह विशेष अन्तेवासी अक्सर झगड़ों में पड़ जाता था और हमेशा ट्रस्ट से किसी न किसी तरह की सहायता माँगता रहता था।

जब अन्तेवासी आफ़िस से चला गया, भाऊजी ने टिप्पणी की, ''लोग मेरे पास आकर हर तरह की बातें करते हैं, लेकिन वे मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते, मैं जानता हूँ कि उनके हृदयों में क्या है।''

इस विषय पर भाऊजी से और अधिक बातें सुनने के लिए, मैंने उनसे पूछा, ''भाऊजी, क्या आप किसी व्यक्ति के मन को पढ़ सकते हैं?'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''नहीं, मैं किसी व्यक्ति के मन को नहीं पढ़ सकता हूँ, लेकिन मैं किसी व्यक्ति के हृदय को पढ़ सकता हूँ। इसलिए मैं जानता हूँ कि उसके हृदय में क्या है और वह वास्तव में क्या चाहता है। मैं शब्दों को महत्व नहीं देता हूँ।'' मैंने उनसे फिर प्रश्न किया; ''क्या आप समझा सकते हैं कि, 'व्यक्ति के हृदय को पढ़ने से' आपका क्या तात्पर्य है?''

भाऊजी ने उत्तर दिया, ''लोग मेरे पास आकर कहते हैं कि वे बाबा से कितना प्रेम करते हैं। वे बाबा की सेवा और उनको प्रसन्न करने की बात करते हैं, लेकिन ये सब शब्द हैं क्योंकि अपने हृदयों में वे अपनी स्वार्थी इच्छाओं, सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति चाहते हैं। वे सत्य और लक्ष्य की बातें करते हैं, लेकिन उनके हृदय इच्छाओं के पीछे भाग रहे हैं। तुम मंडली को बेवकूफ नहीं बना सकते हो। वे समझ सकते हैं कि सत्य के लिए कौन तड़प रहा है क्योंकि वे हृदय को देखते हैं।''

यह पहला और एकमात्र अवसर था जब भाऊजी ने अपना दिल खोलकर यह राज़ प्रकट किया कि मंडली कैसे जानती थी कि लोग क्या करते थे।

फिर भी, इससे यह पूर्णरूप से स्पष्ट नहीं हुआ कि वह लोगों के आत्मीय विचारों को कैसे जान लेते थे।

ऐसे ही बाबा प्रेमी की एक घटना, बाबा की बातें करते समय जिसका मन अपनी इच्छाओं के पीछे भागता रहता था, मुझे याद आ रही है जो निम्नलिखित है–

एक पुराने बाबा प्रेमी को, जो रोज़ शराब पीता था, खराब स्वास्थ्य के कारण डाक्टर ने शराब की मात्रा कम करने की सलाह दी। यह बाबा प्रेमी भाऊजी की सलाह लेने के लिए आया और उनसे पूछा, ''क्या बाबा ने शराब पीने के लिए मना किया है? मैं समझता हूँ कि बाबा ने अपने प्रेमियों को शराब पीने की और यहाँ तक कि माँस भी खाने की अनुमति दी थी।'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''आध्याात्मिक दृष्टि से, जब तक तुम्हारा हृदय मेहेरबाबा पर केन्द्रित है, तुम क्या खाते अथवा पीते हो, इसका कोई महत्व नहीं है।

''बिल्कुल मस्तों के समान, जिनका हृदय और मन ईश्वर की याद में डूबा रहता है और उन्हें अपने शरीर का कोई होश नहीं रहता है। वे गंदी जगहों में रहते हैं और हर चीज़ खाते हैं। लेकिन उनके स्वास्थ्य को कुछ नहीं होता है। वे हमेशा स्वस्थ रहते हैं क्योंकि वे हमेशा ईश्वर की याद में डूबे रहते हैं। उन्हें अपने शरीर की कोई चेतना नहीं रहती है और यहाँ तक कि रोज़ जमीन के पत्थर और लकड़ी खाने के बावजूद, मस्त बहुत स्वस्थ रहते हैं। अधिकांश मस्तों की खाने की आदतें बहुत बुरी होती हैं। अक्सर वे चाय पीते हैं, तम्बाकू चबाते हैं और इसके अलावा और कुछ नहीं खाते हैं।

''तो भी साधारण मनुष्य ऐसा नहीं कर सकते हैं वरना वे बीमार पड़ जायेंगे। उनके लिये यही सबसे अच्छा है कि वे स्वास्थ्य वर्धक, पौष्टिक भोजन करें। अगर उनकी कोई स्वास्थ्य संबंधी समस्या है तो डाक्टर की सलाह लेनी चाहिये। अगर स्वास्थ्य के कारण डाक्टर उन्हें कुछ खाने या पीने के लिये मना करता है, तो उन्हें उसके निर्देशों का पालन कड़ाई के साथ करना चाहिये। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से हमारा भोजन महत्वपूर्ण है।

लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इसका कोई महत्व नहीं है कि तुम क्या खाते अथवा पीते हो।''

बाबा प्रेमी भाऊजी को उनकी सलाह के लिये धन्यवाद देकर चला गया। कुछ दिनों बाद हमने सुना कि वह बाबा प्रेमी किस तरह से हर व्यक्ति को बता रहा था कि भाऊजी ने उसके शराब पीने को सही बताया था और क्योंकि बाबा ने भी शराब पीने की अनुमति दी थी, इसलिये उसने बाबा और उनकी मंडली की बात मानने का और सांसारिक डाक्टर की बात न मानने का निर्णय लिया था। क्योंकि, बाबा ईश्वर थे और वह उसकी देखभाल करेंगे। जब भाऊजी ने यह सुना उन्होंने टिप्पणी की ''लोग बाबा की बातें करते हैं लेकिन अपने हृदय की स्वार्थी इच्छाओं के पीछे भागते हैं। वे सत्य को सुनना नहीं चाहते। यहाँ तक कि जब तुम उन्हें सत्य बताते हो, वे तुम्हारे शब्दों को तोड़ मरोड़कर गलत ढँग से बताते हैं और इसका प्रयोग अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिये करते हैं।''

58. बाबा की असली खुशी

बाबा प्रेमी मंडली जनों को, जिनसे उनका घनिष्ठ संबंध था, अक्सर पत्र लिखते थे। कुछ लोग अपनी समस्याओं के बारे में लिखकर उनसे सलाह माँगते थे, दूसरे केवल उनके संपर्क में बने रहने के लिये लिखते थे। एक अवसर पर, एक बाबा प्रेमी महिला ने, जो बराबर भाऊजी के संपर्क में रही थी, अपनी होने वाली शादी के बारे में उन्हें लिखा। यह महिला एक ऐसे आदमी से शादी करने जा रही थी जिसके साथ वह पिछले कुछ महीनों से रह रही थी। उस आदमी का विवाह एक दूसरी औरत से लगभग तीस साल पहले हो चुका था। उनको जानने वाले सभी लोग उनको एक प्रसन्न दम्पति समझते थे और उनके विवाह को इतना लम्बा समय बीत गया था कि इस समाचार से भाऊजी और उस दम्पति को जानने वाले लोगों को निराशा हुई। उस महिला ने अपने पत्र में लिखा था कि इस व्यक्ति के माध्यम से वह बाबा के साथ एक दृढ़ संबंध का अनुभव करती थी और, उससे शादी करके वे लोग केवल बाबा की इच्छा की पूर्ति ही नहीं कर रहे थे बल्कि उनको प्रसन्न भी कर रहे थे।

भाऊजी ने हमारी ओर देखकर टिप्पणी की, ''यह सोचकर लोग अपनी स्वार्थी इच्छाओं का पीछा करते हैं, अपने आपको धोखा देते हैं कि बाबा यही चाहते हैं और ऐसा करके वे बाबा को प्रसन्न कर रहे हैं। तुम स्वार्थी इच्छाओं का पीछा करके बाबा को प्रसन्न नहीं कर सकते। उन्हें प्रसन्न करने के लिए तुम्हें बलिदान देना होगा और स्वार्थी इच्छाओं को छोड़ना होगा। ऐसा करने के लिये तुम्हें हर तरह की कठिनाइयों और कष्ट का सामना करना होगा, तभी तुम बाबा को प्रसन्न कर रहे हो। अगर तुम किसी को दर्द व कष्ट देने का कारण बनते हो, तो क्या तुम समझते हो कि तुम बाबा को प्रसन्न कर रहे हो? इस सम्पूर्ण सृष्टि में हर एक से प्रेम करो, लेकिन संबंधों और विवाह के द्वारा मोह के बंधन क्यों पैदा करो? केवल बाबा के बंधन में फँसो, अपना सारा प्रेम और भावनायें उन्हें अर्पित करो, उनके साथ संबंध बनाओ, जो आत्मा का परमात्मा के साथ यथार्थ संबंध है, तब तुम बाबा को प्रसन्न कर रहे हो। ऐसे सारे शारीरिक संबंध, जो लोग एक दूसरे के साथ यह सोचकर बना रहे हैं कि वे बाबा को प्रसन्न कर रहे हैं, अपने आपको धोखा देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं, और यह उनके कष्ट का कारण होगा।''

भाऊजी किसी पत्र को पढ़ने के पश्चात्, अक्सर उसका उत्तर बोलकर लिखाते थे। इस विशेष अवसर पर कोई ज़रूरी काम आ जाने से उन्हें संबंधित बाबा प्रेमी महिला को उत्तर देने का अवसर नहीं मिला। अगले दिन, मुझे आश्चर्य हुआ जब भाऊजी ने इस बाबा प्रेमी को दिये गये अपने उत्तर में, इस समाचार पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, उन्हें बधाई दी और आशा व्यक्त की कि उनका विवाह उनको बाबा के प्रेम में मज़बूती से एक दूसरे के पास लायेगा और वे बाबा के और अधिक निकट आयेंगे।

मुझे भाऊजी के उत्तर से बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि पिछले दिन वह बहुत परेशान प्रतीत होते थे। इसलिये पत्र समाप्त होने पर मैंने पूछा, ''भाऊजी, आपने पत्र में जो कुछ लिखवाया, विशेष रूप से यह कि इस समाचार से आप प्रसन्न हुये, क्या वास्तव में आप प्रसन्न हैं?''

भाऊजी ने सीधा उत्तर दिया, ''नहीं''। मैंने पूछा, ''तब आपने ऐसा क्यों लिखवाया?'' भाऊजी ने कहा, ''वास्तव में सत्य को कोई भी सुनना नहीं चाहता। ऐसे लोग बहुत कम हैं जो ऐसा जीवन जीना चाहते हैं

जिससे बाबा प्रसन्न हों। उनको मैं कड़वा और कठोर सच बताता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि वे सही प्रयत्न के द्वारा इसे अपने जीवन में आचरण में लायेंगे। दूसरे लोगों को मैं वह बताता हूँ जो वह सुनना चाहते हैं, क्योंकि भूतकाल में उनको अपनी खुशी से अधिक बाबा की खुशी को महत्व देकर, बाबा को प्रसन्न करने का महत्व पहले ही बता चुका हूँ और उन्होंने सुनने अथवा समझने से इन्कार कर दिया।

''इसलिये वे जो कुछ चाहते हैं, मैं उन्हें करने देता हूँ। जैसी कि बाबा की मर्ज़ी है, मैं इस आशा से उन्हें अपने साथ लगाये रखता हूँ कि किसी दिन जब वे पर्याप्त कष्ट सह लेंगे, वे मिथ्या का त्याग करके बाबा की खुशी को ढूँढ़ेंगे। अगर मैं ऐसा नहीं करता हूँ, तो ऐसे लोग मेरी आलोचना करेंगे और बाबा के खिलाफ़ हो जायेंगे। और जब मैं ऐसा करता हूँ तो दूसरे बाबा प्रेमी, जो सोचते हैं कि वे बाबा का अनुसरण कर रहे हैं, मेरी आलोचना करेंगे। मेरी ऐसी स्थिति और कष्ट है।'

''मुझे हर व्यक्ति की सहायता करनी है। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि पीठ पीछे वे लोग मेरी आलोचना करेंगे फिर भी मैं ऐसा क्यों करता हूँ? क्योंकि मेरे लिये यह बाबा की इच्छा और उनकी खुशी है।''

भाऊजी की बात से, मुझे मंडली द्वारा लिये गये कई विवादास्पद निर्णयों को, जो सांसारिक दृष्टि से सही नहीं लगते थे; समझने में सहायता मिली। वे लोग इस ढँग से आचरण कर रहे थे; जो वैसा ही था जैसा बाबा अपने भौतिक शरीर में होने पर करते। वे बाबा की इच्छा का सम्मान कर रहे थे।

59. सब कुछ वही हैं

निम्नलिखित कहानी एक दम्पति के बारे में है जो भाऊजी को जानता था। पत्नी एक अधिकार जताने वाली भौतिक वादी महिला थी और अपने सामाजिक जीवन में व्यस्त रहती थी, जब कि पति का स्वभाव कोमल था और वह बाबा के प्रोग्रामों में भाग लेने और बाबा कार्य में व्यस्त रहता था। वे केवल स्वभाव में ही एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत नहीं थे बल्कि जीवन के प्रति अपने उद्देश्य और बाबा के प्रति अपने दृष्टिकोण में भी एक

दूसरे के विपरीत थे। पत्नी की घर के कार्यों में कोई रुचि नहीं थी। इस लिये उसने खाना बनाने और घर के दूसरे कार्यों के लिये दो नौकर पूरे समय के लिये रखे हुये थे। इस तरह वह अपने मित्रों से मिलने जुलने के लिये स्वतंत्र थी।

अपने अधिकार जताने वाले स्वभाव के कारण उसने नौकरों को भी निर्देश दे दिये थे कि उसके अलावा परिवार के किसी भी सदस्य का कहना न मानें। इस तरह घर का सारा काम पूरी तरह से उसी की इच्छानुसार चलता था, क्योंकि उसके डर से नौकर परिवार के लोगों के कहने पर कोई काम नहीं करते थे जब तक वह इसे करने के लिये नहीं कहती थी। पति अपने काम में पूरा दिन व्यस्त रहने और अधिकांश समय बाबा की याद में डूबे रहने के कारण, यह सब शान्ति पूर्वक स्वीकार करता था और अपनी पत्नी से प्रेम करने और उसकी इच्छाओं की पूर्ति करने में लगा रहता था।

एक अवसर पर, भाऊजी इस बारे में बात कर रहे थे कि किसी व्यक्ति को संसार में किस तरह रहना चाहिये। उन्होंने कहा ''अगर कोई व्यक्ति सब कुछ उनकी (बाबा की) मर्ज़ी समझकर स्वीकार कर सकता है तब शिकायत करने का प्रश्न ही कहाँ रहता है। हम शिकायत करते हैं क्योंकि हम घटनाओं को उनकी मर्ज़ी से होता हुआ स्वीकार नहीं करते। याद रखो कि तुम्हारे जीवन में सब कुछ केवल उनके द्वारा दिया गया ही नहीं है बल्कि सब कुछ वही हैं। अगर तुम इसका शत प्रतिशत अभ्यास कर सकते हो तो तुम्हें कुछ भी प्रभावित नहीं करेगा और तुम उनकी उपस्थिति को सभी चीज़ों में अनुभव करोगे।''

फिर भाऊजी ने उस व्यक्ति की ओर संकेत करते हुये कहा, ''यह व्यक्ति व्यवहार में कोमल है और सब कुछ बाबा की मर्ज़ी समझकर स्वीकार करता है। कई बार वह घर से नाश्ता किये बिना चला जाता है। हालाँकि घर में खाना बनाने के लिये नौकर हैं, परन्तु पत्नी देर तक सोती रहती है। क्योंकि पत्नी ने नौकरों को निर्देश नहीं दिया है, इसलिये वह कुछ पकाने से इनकार कर देते हैं, और यह व्यक्ति बिना शिकायत किये अथवा कोई अपशब्द कहे बिना चुपचाप काम पर चला जाता है। सांसारिक दृष्टि से यह व्यक्ति कायर लग सकता है लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से यह

महानता मानी जायेगी। ऐसा नहीं है कि वह अपनी पत्नी के साथ लड़ नहीं सकता है, लेकिन वह सबकुछ बाबा की मर्ज़ी समझकर स्वीकार करता है। वह शिकायत नहीं करता है। जब तुम्हारी ऐसी स्थिति होती है, तब सारे कष्ट और कठिनाइयाँ तुम्हारे संस्कारों को मिटाने में सहायता करते हैं और तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति होती है। यह ऐसा होता है जैसे कि वह (बाबा) मौजूद हों और तुम्हें सारे कष्ट दे रहे हों।

''ऐसा कैसे हो सकता है? यह संभव है क्योंकि वह सब कुछ हैं, लेकिन कष्टों का सामना करते समय तुम्हारे हृदय में यह भावना होनी चाहिये। इसलिये यह व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नति करेगा क्योंकि वह ऐसा जीवन बिता रहा है। लेकिन फिर पत्नी का क्या होगा? उसकी स्थिति स्वार्थी होने के कारण, उसके लिये बंधन पैदा करती है और उसके लिये कष्ट लायेगी। एक ही स्थिति बंधनकारी और मुक्त करने वाली हो सकती है, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि परिस्थिति का सामना करते हुये व्यक्ति का दृष्टिकोण कैसा है और वह इसे (परिस्थिति) किस तरह देखता है।''

इससे मुझे बाबा के इस कथन की याद आई, ''मुक्त होने के लिये तुम्हें कोई भिन्न काम नहीं करना है, तुम्हें उसी काम को अलग ढँग से करना है।''

60. उनकी उपस्थिति सहारा देती है

मंडली के आसपास रहते हुये और उनके साथ काम करते हुये, कई सालों में मैंने देखा है कि उनके स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें किस तरह से बढ़ती जातीं थीं। भाऊजी के संबंध में यह विशेष रूप से सत्य है। उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें इस प्रकार की हैं कि चिकित्सा जगत में यह एक चमत्कार है कि वह जिंदा हैं, लेकिन इतना ही आश्चर्य चकित करने वाला यह तथ्य है कि हालाँकि वह अपनी बीमारियों के कारण शारीरिक रूप से धीमी गति से कार्य करने लगे थे, लेकिन जितना कार्य वह करते हैं वह पहले की अपेक्षा और भी अधिक है।

मुझे ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि भाऊजी के माध्यम से बाबा कार्य कर रहे थे। अगर ऐसा केवल एक या दो बार हुआ होता तो इसे संयोग कहा जा सकता था, लेकिन लगभग रोज़ ऐसा होते हुये देखना मेरे मन को निश्चित रूप से आश्चर्य में डाल देता था। मानसिक रूप से यह समझना बहुत कठिन था कि वह ऐसी व्यवस्था किस तरह करते थे। कोई भी मनुष्य ऐसी वीरता का कार्य नहीं कर सकता था।

जब भी मैं इस विषय को छेड़ता था, वह इस पर ध्यान न देते हुये, कहते थे, ''यह सब मेहेर बाबा करते हैं। मैं कुछ नहीं करता हूँ, मुझे कोई विशेष व्यक्ति होने अथवा मुझमें कोई विशेष शक्तियाँ होने की कोई चेतना नहीं है, मैं तो मात्र एक आलू हूँ। मुझे केवल उनकी (बाबा की) इच्छा की चेतना है और मैं उनके प्रति अपने कर्तव्य को, उनकी इच्छा समझकर पूरा करता हूँ।'' मुझे सचमुच विश्वास है कि भाऊजी अपने शब्दों के प्रति पूरी तरह ईमानदार थे, क्योंकि मैं यह सब रोज़ देखता था और आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि बाबा उनको अपना जॉन कहते थे और एरच ने एक बार टिप्पणी की थी कि भाऊजी अद्वितीय थे।

निम्न कहानी भाऊजी के व्यक्तित्व के केवल उस अद्वितीय रूप को प्रकट करती है जो मन को अक्सर आकर्षित करता है और जिसने मेरे तीव्र कष्ट और अक्षमताओं (कुछ भी करने के लायक न होना) के दौरान मुझे सहारा दिया। हाल ही में 2009 में भाऊजी का स्वास्थ्य इतना अधिक खराब था कि उनके आसपास रहने वाले सहायक और डाक्टर, उनके स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता के कारण, उनसे आराम करने की, विशेष रूप से जब उनका स्वास्थ्य गंभीर संकट में होता था, प्रार्थना करते थे। भाऊजी का उत्तर लगभग हमेशा वही होता था, ''मुझे अपने कर्त्तव्य पूरे करने हैं, मैं जो काम कर रहा हूँ उसे तुम लोग नहीं समझते हो। एक दिन तुम्हें यह स्पष्ट रूप से समझ में आ जायेगा।''

इस टिप्पणी के साथ भाऊजी अपने काम में लग जाते थे और अपने शरीर से इतना अधिक परिश्रम करते थे कि साधारण शरीर ऐसी स्थिति में बिल्कुल टूट कर बिखर जाता। एक अवसर पर भाऊजी बीमार थे और कई दिनों से दुर्बलता का अनुभव कर रहे थे; लेकिन वह आराम किये बिना, दिन भर कार्य में अत्यंत व्यस्त रहे। यह सोमवार का दिन था और उस

दिन भाऊजी शाम को मेहेर पिलग्रिम सेंटर में शाम को जाकर तीर्थयात्रियों को वार्ता देते थे। इस विशेष दिन, क्योंकि भाऊजी की तबियत खराब थी, इसलिये हमने सोचा कि वह अपना कार्यक्रम निश्चित रूप से स्थगित कर देंगे। हमने उन्हें हर संभव तरीके से मनाने की कोशिश की, उन्हें समझाया कि तीर्थयात्री उनकी हालत को समझेंगे लेकिन भाऊजी ने सुनने से भी इनकार कर दिया और जाने के लिये तैयार हो गये।

क्योंकि उनके सभी सहायकों की प्रार्थनायें उन्हें रोकने में सफल नहीं हुईं थीं, इसलिये मैंने एक आखिरी, निराशापूर्ण प्रयास किया। मैने कहा, ''भाऊजी, मैं जानता हूँ कि आप अपने शरीर को इतना अधिक कष्ट इसलिये दे रहे हैं क्योंकि आप ऐसा अनुभव करते हैं कि यह बाबा के प्रति आपका कर्तव्य है; इसलिये अगर आपका जाना ज़रूरी ही है तो जाइये, लेकिन कृपा करके थोड़े समय ही वार्ता दीजिये। इस तरह से अपने आपको थकाइये नहीं और न ही अपने शरीर से इतना परिश्रम कीजिये। लगभग आधा घण्टा और आपकी इच्छा हो तो अधिक से अधिक एक घण्टा बोलिये और इससे अधिक नहीं। यहाँ तक कि तीर्थयात्री भी थक जाते हैं; कुछ समय बाद उनका मन नहीं लगता है। जब आप इतने दुर्बल हो रहे हैं तो आप क्यों बोलते चले जाते हैं? आप अपने शरीर पर इस तरह दबाव क्यों डालते हैं?''

भाऊजी ने मेरी ओर देखते हुये मुस्कुराकर कहा, ''जब मैं बाबा के बारे में बात करना शुरू करता हूँ, मैं सबकुछ भूल जाता हूँ। उनकी उपस्थिति मेरे अस्तित्व में समा जाती है और मैं नहीं जानता कि फिर क्या होता है। उस क्षण मैं जिस आनन्द का अनुभव कर रहा होता हूँ, वह इतना अधिक तीव्र होता है कि मैं शारीरिक कष्ट और दर्द को भूल जाता हूँ। मुझे किसी भी बात का और इस बात का भी होश नहीं रहता है कि मैं कितनी देर से बोल रहा हूँ। मुझे केवल उनकी उपस्थिति के आनन्द का होश रहता है जो मेरे द्वारा बोलता है। अगर तीर्थयात्रियों को उनकी (बाबा की) उपस्थिति का आनन्द नहीं आ रहा है तो इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता है, क्योंकि मुझे इसका (उपस्थिति का) बहुत अधिक आनन्द आता है। उस क्षण, मैं उनकी उपस्थिति के आनन्द में पूरी तरह से डूब जाता हूँ और अन्य सबकुछ भूल जाता हूँ।''

भाऊजी से यह सुनकर मेरी यह समझ में आ गया कि इतने खराब स्वास्थ्य के बावजूद उनका शरीर बाबा की उपस्थिति के द्वारा किस तरह जीवित था। हमने उन्हें तीर्थयात्रियों से बात शुरू करने से पहले बहुत दुर्बलता का अनुभव करते देखा है। फिर भी जैसे ही वह तीर्थयात्रियों को संबोधित करके वार्ता शुरू करते हैं, भाऊजी का पूरी तरह से रूपान्तरण हो जाता है और हर व्यक्ति भाऊजी के माध्यम से प्रवाहित होने वाली बाबा की शक्ति और आभा को प्रत्यक्ष रूप से देखता है। वार्ता के पहले वाली दुर्बलता और खराब स्वास्थ्य तत्काल अदृश्य हो जाते हैं।

इससे मुझे गुरु प्रसाद में दर्शन कार्यक्रमों से पहले के बाबा की बहुत अधिक याद आती है। दर्शनों से पहले बाबा पीले नज़र आते थे और उनका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब लगता था। दर्शन की कुर्सी तक जाने के लिये भी उन्हें मदद की ज़रूरत होती थी। लेकिन जैसे ही दर्शन शुरू होता था, दर्शन के लिये आये हुये प्रेमी केवल उनकी शक्ति और शोभा को देखते थे ऐसी ईश्वर की शक्ति थी।

61. पर्दे के पीछे ईश्वर

हमने अक्सर यह पढ़ा है कि बाबा किस तरह से बार बार कहते थे कि मंडली के जन विशेष आत्मायें थीं और वे उनके (बाबा के) साधन थे जिनके माध्यम से वह अपना कार्य करते थे। बाबा ने यह भी कहा था कि मंडली के सदस्य–उनके आंतरिक मंडल (Inner circle) के सदस्य–चेतना में उनके समान थे लेकिन सिर्फ़ यह अन्तर था कि उन्होंने (बाबा ने) अपने कार्य के लिये उनको पर्दे के पीछे रखा हुआ था क्योंकि इसके (पर्दे के) बिना वह कार्य नहीं कर सकते थे। बाबा ने तो यहाँ तक कहा है कि उनकी योजना के अनुसार, बाबा को उनसे जो काम करवाना है, उसको करने के बाद, उनके सभी मंडली जन, अपने अगले एक या दो जन्मों के अंदर, ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे।

बाबा ने कहा है कि मंडली के संस्कार, साधारण आत्माओं के संस्कारों से भिन्न थे। उन्होंने बताया कि मंडली के संस्कार विज्ञानी थे इसलिये, वे जो कुछ भी करते थे, नये संस्कारों का बंधन उन्हें नहीं बाँध

सकता था। वे केवल अपने पहले के ही संस्कारों के अनुसार कार्य करते थे, और जब वे सब दो या तीन जन्मों में समाप्त हो जाते थे, तब उनको ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त हो जाता था और उस समय अवतार की तरह, उनके भी योगायोग संस्कार हो जाते थे। बाबा मंडली को, मानवजाति के साथ अपने कार्य के लिये, मंडली के इन विज्ञानी संस्कारों पर कार्य करने के द्वारा, अपने औजारों की तरह इस्तेमाल कर रहे थे।

हालाँकि हमने इस बारे में सब सुना और पढ़ा था फिर भी मंडली के साथ अपने प्रतिदिन के पारस्परिक संबंध में, हमने उनको एक साधारण मनुष्य की तरह पाया। वास्तव में, जैसा कि एरच ने एक बार कहा था ''हम, मंडली जन, सांसारिक बातों के प्रति इतने अधिक सीधे सादे व सरल हैं कि कोई भी व्यक्ति, अगर वह चाहे तो, हमें बेवकूफ़ बना सकता है अथवा ठग सकता है। हमारा दुनियाँ के साथ कोई संबंध नहीं है, हमारा जीवन बाबा के लिये था।''

हमने मंडली को बहुत सरल व साधारण पाया। अक्सर वे साधारण लोगों की तरह बेवकूफ़ी से भरी गल्तियाँ करते थे और फिर भी उसके साथ साथ उनके व्यक्तित्व में अत्यंत बुद्धिमानी नज़र आती थी। उनकी सरलता और सादगी; उनकी बुद्धिमत्ता और महानता को अपने नीचे ढँक लेती थी। अगर यह ऐसा नहीं होता तो हम जिस स्तर पर उनके साथ पारस्परिक संबंध रखते थे, हम वैसा नहीं कर पाते। उनकी बुद्धिमत्ता, उनकी महानता और इस तथ्य के प्रति हमारी सचेतनता ने, कि वे कौन थे, मेरे जैसे व्यक्ति को पूरी तरह से अभिभूत कर दिया होता। मैं कोई भी कार्य करने में असमर्थ होकर, उनकी प्रशंसा में लीन होकर, उनके पास सिर्फ़ बैठा रह जाता।

लेकिन उनके बाबा के जैसे गुण, अधिक से अधिक अक्सर ढँके रहते थे, और उनके साथ काम करने वाले अन्तेवासियों को कभी कभार इसकी झलक मिल जाती थी। आध्यात्मिक प्रशिक्षण अक्सर कठोर प्रतीत होता था और शरीर तथा मन को थका देता था, लेकिन यह मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य था कि मुझे मंडली की महानता की कई झलकें मिलीं और इससे मुझे सहायता ही नहीं मिली बल्कि इसने मुझे यह दृढ़तापूर्वक विश्वास दिला

दिया है कि मंडली चाहे कुछ भी करे, उनका कार्य कितना भी बुरा दिखाई पड़े, लेकिन यह हमेशा भलाई के लिये होता है और समय बीतने के साथ हमें इसका अनुभव हो जाता है।

मंडली के कार्य अपने आप में कुछ नहीं थे, बल्कि उनके द्वारा बाबा उस व्यक्ति के अन्तिम कल्याण के लिये उसकी आत्मा पर कार्य कर रहे थे। मैं जानता हूँ कि बहुत से लोग मेरी बात से सहमत नहीं होंगे। उनसे मैं सिर्फ यह कहता हूँ, ''इस तथ्य को अस्वीकार करना, जिसे बाबा ने अपने साहित्य में दृढ़तापूर्वक कहा है, बाबा को झूठा कहना है। मंडली की आलोचना करना अथवा उनके कार्यों के उचित, अनुचित होने का निर्णय करना, उतना ही बुरा है जितना बाबा के बारे में निर्णय करना।'' कम से कम मुझे यह ऐसा प्रतीत होता है। यह कहना बेवकूफ़ी होगी कि ईश्वर ने मंडली को चुनने में ग़लती की। सर्वज्ञ ईश्वर, जो सृष्टि में हर एक के भूत, वर्तमान और भविष्य को जानता है, क्या यह नहीं जानता था कि उसके शरीर छोड़ने के चालीस वर्ष बाद उसकी मंडली क्या करेगी? मुझे तो, ऐसा सोचना ही बेवकूफ़ी लगती है।

मैंने बहुत से बाबा प्रेमियों द्वारा की गई आलोचनात्मक टिप्पणियाँ सुनी हैं। लेकिन ऐसी टिप्पणियाँ मंडली और मेहेर बाबा की सत्यता के प्रति उनके अज्ञान को प्रकट करती हैं। उन्होंने बाबा और उनकी मंडली, दोनों के बारे में अपने सांसारिक दृष्टिकोण के आधार पर निर्णय लिया है। बाबा द्वारा अपने पीछे छोड़े हुये, विशाल साहित्य के बावजूद, वे यह समझने में असफल रहे हैं कि बाबा और मंडली चेतना में समान हैं। बाबा का कार्य कोई आश्रम और इमारतों का निर्माण करना अथवा कोई गंभीर वातावरण पैदा करना नहीं था। वह मिथ्या के स्वप्न को और भी सुखद बनाकर, इसे लम्बे समय तक चलने देना नहीं था। उनका कार्य हमें और अधिक तेजी से जगाने के लिये स्वप्न को दुखद बनाना था। यही कारण है कि आज दुनियाँ में इतना अधिक उपद्रव है। जैसे जैसे जागने का समय और अधिक पास आ रहा है, वैसे वैसे स्वप्न और अधिक दुखद होता जा रहा है। जो लोग इसे स्वीकार नहीं करते हैं, उनको मैं आगे की आध्यात्मिक यात्रा के लिये अपनी शुभकामनायें देता हूँ, हालाँकि मैं यह अनुभव करता हूँ कि उनकी नाव बिल्कुल छूट गई है। यह मेरे अनुभव के आधार पर, मेरी

व्यक्तिगत भावना है; कोई व्यक्ति इसे स्वीकार कर सकता है अथवा इसे कल्पना समझकर इसका त्याग कर सकता है।

अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में आगे लिखने से पहले मैं यह कहना चाहता हूँ कि ऐसा करते हुये मुझे बहुत अधिक व्यग्रता का अनुभव हो रहा है। फिर भी, कई बाबा प्रेमियों की आग्रहपूर्ण प्रार्थनाओं और अपने हृदय में बाबा द्वारा उकसाये जाने के कारण, मैं आगे लिख रहा हूँ।

मंडली के साथ अपने प्रतिदिन के पारस्परिक संबंधों में, मैंने उनके बारे में इसके अलावा कोई भी असाधारण बात नहीं देखी कि वे लोग किस तरह से अन्तेवासी सहायकों को कष्ट देते थे और तीर्थयात्रियों पर प्रेम बरसाते थे। वे कोई चमत्कार नहीं करते थे और न ही वे समस्याओं अथवा कठिनाइयों को दूर कर सकते थे। तो भी, जब मैं उनके पास होता था तो उनकी उपस्थिति में मेरे हृदय को आनन्द होता था और मेरे मन का उपद्रव शान्त हो जाता था। इसी बात से मैं मंडली की ओर आकर्षित हुआ और सारी कठिनाइयों के बावजूद, उनके पास रहने की मेरी इच्छा तीव्र हुई।

समय बीतने के साथ, मैं मंडली में, असाधारण गुण देखने लगा, ऐसे गुण, जिन्हें मैंने अब तक किसी भी व्यक्ति में नहीं देखे थे। वे हर एक के दिल की बात जानते थे और जब अन्तेवासी उनके लिये प्रेम अथवा क्रोध का अनुभव करते थे, वे उसे भी जानते थे, फिर भी वे हर एक से प्रेम करते थे और हर व्यक्ति की सहायता करते थे यहाँ तक कि उनकी भी, जो उनसे नाराज़ थे अथवा उनकी आलोचना करते थे। केवल बाबा ही ऐसा कर सकते थे। जिस तरह से वे दूसरों को अपना समय देते थे, विशेष रूप से जब वे अस्वस्थ होने के कारण शरीर से अशक्त होते थे, यह एक ऐसा कार्य था जिसे कोई भी व्यक्ति करने में समर्थ नहीं होता, और वे यह ख्याति अथवा धन अथवा तीर्थयात्रियों के प्रेम के लिये नहीं करते थे, बल्कि केवल बाबा को प्रसन्न करने के लिये करते थे।

यह देखकर आश्चर्य होता था कि किस तरह से, कई भिन्न भिन्न अवसरों पर, किसी प्रमुख कार्यक्रम के ठीक पहले, कुछ मंडली जन गंभीर रूप से बीमार होते थे और फिर भी, कार्यक्रम के दिन पूर्णरूप से स्वस्थ

प्रतीत होते थे और वे कार्यक्रम में केवल भाग ही नहीं लेते थे बल्कि उनके प्रेमियों पर उनके (बाबा के) प्रेम और उपस्थिति की वर्षा करते थे। यह मेरे लिये मेहेरबाबा के अलावा और कोई नहीं हो सकता था।

उनके कई निर्णय, जो मुझे उस समय सही नहीं लगते थे, वर्षों बाद वास्तव में मेरे लिये इतने अधिक लाभदायक और सहायक हो गये कि मैं उनके और बाबा के प्रति कृतज्ञता का अनुभव करता हूँ। मैं और अधिक लिख सकता था। लेकिन सिर्फ़ इतना कहना पर्याप्त है कि उनके साथ मेरे जीवन के कुछ मोड़ों पर, इन सब बातों को सिर्फ संयोग समझकर, उनको अनदेखा करना असंभव था, विशेष रूप से उस समय, जब वह प्रतिदिन हो रहा था। मैंने एक नई सचेतनता का अनुभव किया जैसे मैंने पहले कभी नहीं किया था, एक ऐसी सचेतनता, जहाँ बाबा और मंडली एक हो जाते थे और मैं उनके द्वारा बाबा की उपस्थिति का आनन्द प्राप्त कर सकता था। अक्सर मैं इस बात के प्रति सचेत नहीं होता था कि मैं मंडली के पास बैठा हुआ, मंडली से बात कर रहा था– मेरा संबंध सिर्फ़ मेहेरबाबा के साथ होता था।

अगर कोई व्यक्ति मुझसे मंडली के साथ रहने के मेरे अनुभव को एक वाक्य में बताने के लिये कहे तो मैं कहूँगा, ''मेरे अनुभव के अनुसार, मंडली जन वास्तव में वही हैं जैसी कि बाबा ने उनके बारे में घोषणा की है– चेतना में ईश्वर के समान लेकिन पर्दे के पीछे (अर्थात् उनकी चेतना पर पर्दा पड़ा रहता है)।''

62. विलक्षण अनुभव

मंडली के साथ कुछ विलक्षण बातें होतीं थीं जिन्हें मैं बताना चाहूँगा। एक बार भाऊजी के आफ़िस जाने के लिये, जब एरच मेरे कमरे के पास से जा रहे थे, संयोगवश मैं ठीक उसी समय कमरे से बाहर आया। मैं उनसे लगभग टकरा गया। उस समय मैं फरामजी के कमरे में रहता था जो भाऊजी के आफ़िस के सामने था। जब मैंने एरच का अभिनन्दन किया, उन्होंने मज़ाक में मेरी गर्दन पकड़ ली और इसे दबाने लगे। मैंने उनसे

कहा, ''एरच, आपको इसे ताकत के साथ जोर से दबाना है; मुझे अपनी सहायता करने दीजिये।''

इसके साथ, मैंने अपना हाथ एरच के हाथ पर रखकर, उनके हाथ को कसकर दबाना शुरू किया। एरच ने मुझसे पूछा, ''क्या तुम मरने से नहीं डरते हो?'' मैंने उनसे कहा, ''आप मज़ाक कर रहे हैं, मंडली के हाथों मौत, मेरे लिये वरदान होगा, इसलिये मैं क्यों डरूँ? इसके अलावा, यह घटना इतिहास में लिखी जायेगी।'' एरच ने हँसते हुये, अपनी पकड़ ढीली कर दी और कहा, ''मैं तुम्हें इतनी आसानी से मुक्ति नहीं दूँगा। तुम्हें इसके लिये कड़ी मेहनत करनी होगी।'' उनकी बात को मैंने अधिक महत्व नहीं दिया और इसे मज़ाक के रूप में लिया।

इसी प्रकार की एक दूसरी घटना भाऊजी के साथ हुई। भाऊजी ने मुझसे मेहेराज़ाद में किये जाने वाले एक कार्य में शामिल होने के लिये कहा। जब मुझे कार्य की पूरी योजना समझाई गई, तो मैं इसे स्वेच्छा से करने के लिये तैयार हो गया क्योंकि मैं जानता था कि इससे भाऊजी तथा दूसरे मंडली जन बहुत प्रसन्न होंगे। भाऊजी ने मेरी ओर देखकर टिप्पणी की, ''यह अच्छी बात है कि तुम इसे करने के लिये स्वेच्छा से तैयार हो गये, अब तुम्हें तीव्र कष्ट मिलेगा।''

मैंने उत्तर दिया, ''भाऊजी, पिछले कई सालों से आपने मुझ पर शब्दों के हथौड़े चलाये हैं। आप मुझसे कोई काम करने के लिये कहते हैं और फिर सबके सामने, उसे ग़लत ढंग से करने के लिये डाँटते हैं। आप दूसरों के द्वारा किये गये कामों के लिये मुझ पर दोष लगाते हैं। संक्षेप में, आप मुझे डाँटते हैं, मेरे बारे में नकारात्मक बातें कहते हैं, यहाँ तक कि जब मैं बिल्कुल उसी ढँग से काम करता हूँ जिस तरह से करने के लिये आपने मुझसे कहा है, तब भी आप मुझ पर शब्दों के हथौड़े चलाते हैं। अब मैं आपकी इस डाँट का अभ्यस्त (आदी) हो गया हूँ और अब मुझे इसमें आनन्द आने लगा है। इसलिये अब आप और क्या करेंगे जिससे मुझे वह कष्ट मिलेगा जिसके बारे में आप कह रहे हैं।''

भाऊजी ने हँसकर कहा, ''इस बार मैं तुम्हें मार डालूँगा''। मैंने अपने दाहिने हाथ की हथेली बढ़ाते हुये कहा, ''भाऊजी, मुझसे वादा कीजिये कि आप मुझे मार डालेंगे।'' भाऊजी ने अपना हाथ पीछे खींच लिया और कहा, ''नहीं, नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा।'' उन्होंने ठहरकर, आगे कहा, ''अगर मैं तुम्हें मार डालता हूँ, अगर तुम किसी भी मंडली जन के द्वारा मार डाले जाते हो, तो तुम्हें उसी क्षण ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त हो जायेगा।'' मैंने उनकी बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया क्योंकि भाऊजी ऐसी बातें अक्सर कहा करते थे।

इसी तरह की एक तीसरी घटना बाबा की बहिन मनी के साथ हुई जिससे मैं आश्चर्यचकित हो गया। एक बार मैं किसी काम से आफ़िस में था। मनी ने मुझे बुलाया और मेरे अंदर जाने पर पर्यावरण को दूषित करने वाले रासायनिक कारखाने के विरुद्ध, जो मेहेराज़ाद और गाँव वालों को प्रभावित कर रहा था, लड़ाई में मेरे द्वारा किये गये कार्य की प्रशंसा करने लगीं। बाबा की कृपा से, कारखाने को विवश होकर बंद कर दिया गया। मनी प्रसन्न थीं और मुझे कुछ देना चाहतीं थीं। उन्होंने कहा, ''तुम क्या चाहते हो? मुझे बताओ और तुमको वह देकर मुझे खुशी होगी।''

मैंने कहा, ''कुछ नहीं, वास्तव में मैं यहाँ रहकर और सहायता करके बहुत प्रसन्न हूँ।'' मनी ने कहा, ''मुझे कुछ भी देने में कोई परेशानी नहीं है, इसलिये कुछ माँगो।'' वास्तव में उस समय मैं कुछ नहीं चाहता था और मेरा मन खाली था, इसलिये मैंने पुनः कहा, ''कुछ नहीं, मैं कुछ नहीं चाहता।'' जब मनी ने कुछ माँगने के लिये तीसरी बार मुझ पर दबाव डाला, मैं नहीं जानता कि मैं कैसे एकदम से बोल पड़ा, ''अगर आप दे सकती हैं, तो मुझे बाबा दे दीजिये।'' हो सकता है कि यह बात मैंने एकदम स्वाभाविक ढंग से कही क्योंकि मनी हमसे सदैव असली चीज़– केवल ईश्वर– को माँगने के लिये कहतीं थीं।

मनी के शरारती स्वभाव को जानते हुये, मैं आशा कर रहा था कि वह बाबा का एक लाकेट अथवा चाकलेट का बाबा का प्रसाद, जो वह हमेशा अपनी जेब में रखतीं थीं, निकालकर मुझे देंगी और कोई परिहासपूर्ण टिप्पणी करेगीं जैसा कि वह प्रायः करतीं थीं। लेकिन उन्होंने इनमें से कुछ

नहीं किया। उन्होंने जो किया, उससे मुझे आश्चर्य हुआ। वह आफ़िस की दीवार पर लटकी हुई, बाबा की फ़ोटो की ओर मुड़ीं। वह एक या दो मिनट तक मौन रहकर सर झुकाये नमन करती रहीं, फिर उन्होंने मेरे सिर पर अपना हाथ रखा और इसे मेरे चेहरे की ओर, नीचे की तरफ़ सरकाते हुये कहा, "मेरे बच्चे, उनकी कृपा सदैव तुम्हारे साथ रहेगी।"

फिर मनी ने मुझसे कहा, "ठीक है, यह तो वह चीज़ है जो तुम चाहते थे, लेकिन हम लोग भी तुम्हें कुछ देना चाहते हैं जो तुम्हें लेना होगा। यह एक बाबा का तमगा (medal) है।" उन्होंने मुझे बाबा की फ़ोटो पर चढ़ाने के लिये एक हार और एक सुनहरा तमग़ा (काँसे का) दिया जिस पर बाबा का चेहरा खोदकर बनाया गया था। मैं इस घटना से चकित था और मेरे मन में बहुत से विचार तेजी से आ रहे थे। मनी ने इस तरह व्यवहार किया था जैसे कि उनको मुझे बाबा को उपहार में देने का अधिकार था। उन्होंने मुझे इस तरह आशीर्वाद दिया था जैसे कि मेरी इच्छा पूरी करना संभव था। उन्होंने यह बिल्कुल नहीं कहा, "नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती, केवल बाबा ऐसा कर सकते हैं।"

क्योंकि, जो कुछ हुआ और मनी ने जो किया, वह क्यों किया, मैं इसका तात्पर्य नहीं समझ सका इसलिये मैंने यह सोचकर इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया कि यह मंडली से संबंधित उन बातों में से एक थी, जिन्हें समझने का प्रयत्न हमें नहीं करना चाहिये। हालाँकि मैंने इस घटना को अपनी डायरी में लिख लिया, परन्तु मैंने इसे अधिक महत्व नहीं दिया। दिन प्रतिदिन के कार्य के दबाव में, जो बहुत अधिक था, मैं इसे भूल गया। इसके अलावा, मनी सहित सभी मंडली जनों के साथ पारस्परिक संबंध में, वे मात्र साधारण मनुष्यों की तरह व्यवहार करते थे। स्वयं बाबा के अलावा, कोई भी व्यक्ति तुमको बाबा कैसे दे सकता था?

63. जब बाबा अपनी मंडली के द्वारा बोलते हैं

सन् 2000 में मेरा स्वास्थ्य पूरी तरह से नष्ट हो चुका था। मैं बहुत अधिक थकान का अनुभव करने लगा जिसके कारण मैं बिना सहारे के आसपास भी नहीं जा सकता था। मैंने यह सोचकर कि कुछ दिनों में मैं ठीक हो जाऊँगा, प्रतिदिन के कार्यों में मेरी सहायता करने के लिये, एक

सहायक नियुक्त किया। लेकिन जब हालात और अधिक बिगड़ गये, तो मुझे और अधिक सहायता और देखभाल की आवश्यकता हुई। मैं इस आशा से बम्बई चला गया कि किसी इलाज से मैं ठीक हो जाऊँगा। मैं मंडली के ऊपर बोझ भी नहीं बनना चाहता था क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैं उस हालत में वहाँ रहा तो वे मेरे स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता करते रहेंगे।

कुछ महीनों के इलाज के बाद, मेरी तबियत और अधिक खराब लगी और जो कुछ हो रहा था, उससे मैं बहुत घबड़ा गया। मुझे इस आशा से मंडली के पास वापस आने की ज़रूरत अनुभव हुई कि मेरी व्याकुलता और बीमारी ठीक हो जायेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उस समय, मैं कोई भी काम करने में असमर्थ था इसलिये मैं भाऊजी के आफ़िस में सिर्फ़ बैठा रहता था। मैंने ऐसा पहले कभी नहीं किया था क्योंकि पहले मेरी दिनचर्या बहुत व्यस्त थी और मेरा कार्य अक्सर बाहर जाने का होता था। इसलिये यह एक नया अनुभव था, और यह कुछ ऐसा था जिससे मेरा हृदय प्रसन्न और मेरे लिये कष्ट सहने लायक हो जाता था।

जब मैं आफ़िस से चला आता था, दर्द और कष्ट बढ़ जाता था और मुझे इसका एहसास होने लगता था, लेकिन जब मैं भाऊजी के साथ होता था, तब मेरा ध्यान इस ओर नहीं जाता था। जब मैं उनके साथ होता था, मैं अपनी बीमारी, दर्द और अक्षमताओं की व्यवस्था अधिक अच्छी तरह से कर लेता था। जब भाऊजी के पास अधिक काम नहीं होता था, मैं उन्हें चुटकुले सुनाता अथवा किसी की नकल करता और उन्हें हँसाता था। भाऊजी एक बच्चे की तरह दिल खोलकर हँसते थे, और इससे सभी लोग बहुत प्रसन्न हो जाते थे।

एक दिन, भाऊजी अपना काम समाप्त करके, मनोरंजन के लिये मेरी ओर मुड़े। मैंने अन्तेवासियों की नकल उतारी जिससे उनको बहुत आनन्द होता था और जब मैं नकल कर चुका, भाऊजी दिल खोलकर हँसे और कहा, "तुम मुझे हँसाते हो और मुझे तुम्हारा साथ अच्छा लगता है। मेरी इच्छा है कि तुम यहाँ रहते, लेकिन तुम्हारे स्वास्थ्य का क्या किया जाये। तुम्हारी इस हालत में यह कठिन होगा।" इसलिये मैंने इस अवसर का

लाभ उठाया क्योंकि भाऊजी बहुत अच्छे मनोभाव (Mood, मूड) में थे, और कहा, ''भाऊजी मुझे आशीर्वाद दीजिये। आप मुझे आशीर्वाद देंगे तो मैं ठीक हो जाऊँगा।''

भाऊजी ने अगले क्षण जो कुछ किया, वह अजीब था। वह अक्सर, जो तीर्थयात्री उनके अधिक निकट थे, उनसे मज़ाक करते थे और उन्हें विभिन्न आध्यात्मिक उपनाम (titles) देते थे और उन्हें 'Divine Mother' (डिवाइन मदर, दैवी माँ), 'योगी महाराज', 'मुक्तानन्द', 'शिवा', 'Creator' (क्रियेटर, उत्पन्न करने वाला) आदि, आदि नामों से बुलाते थे। लेकिन जब मैंने उनसे मुझे आशीर्वाद देने के लिये कहा, उन्होंने कुछ असाधारण कार्य किया। अपनी अच्छी मुद्रा (Mood) में, उन्होंने आगे आकर, अपना हाथ बढ़ाया जैसे कि मुझे आशीर्वाद देने जा रहे हों, लेकिन अचानक वह आधे रास्ते में रुक गये। उन्होंने अपना हाथ खींच लिया और अपनी जगह वापस चले गये। वह गंभीर हो गये और अपना चेहरा घुमाकर कुछ काम देखने लगे। उन्होंने किसी अनावश्यक विषय पर, पत्र बोलकर लिखाना शुरू किया अैर लिखाते गये, लिखाते गये।

मैं समझ गया कि भाऊजी मेरी प्रार्थना को अनसुना करके, उससे बच रहे थे और इससे मुझे व्याकुलता और कष्ट हुआ। मेरे मन में हर तरह के विचार आने लगे। मैं जानता था कि वह मुझे वास्तव में चाहते थे और चाहते थे कि मैं वहाँ पर रहूँ, तब वह मुझे आशीर्वाद देने से इनकार क्यों कर रहे थे? अगर उनका आशीर्वाद मुझे ठीक नहीं करता, तो भी, कम से कम मज़ाक में ही वह ऐसा कर देते। वह हर समय इस तरह की बातों पर मज़ाक करते थे। इससे मुझे कम से कम खुशी तो हुई होती, लेकिन उन्होंने मुझे आशीर्वाद नहीं दिया।

आगे कुछ लिखने से पहले; मैं पाठकों को, विशेष रूप से उन्हें, जिनको मंडली से मिलने और उनसे संबंध स्थापित करने का अवसर नहीं मिला है, निम्नलिखित बात बताना चाहता हूँ वरना मुझे जो कुछ कहना है, उसका अर्थ उन्हें समझ में नहीं आयेगा। केवल मैंने ही नहीं, बल्कि कई अन्तेवासियों और तीर्थयात्रियों ने, जिन्होंने मंडली के साथ कुछ समय बिताया है, इस बात पर ध्यान दिया है कि वे अक्सर कोई बात अचानक, बिना कुछ सोचे समझे कहते हैं और बाद में वह बात सच होती है। मैं ऐसे

कई बाबा प्रेमियों से मिला हूँ और उनसे बात की है जिनको ऐसा अनुभव हुआ है, और यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि कई अवसरों पर मैंने ऐसा घटित होते देखा है।

इस बारे में मंडली जनों से प्रश्न करने पर, वह कहते हैं कि उन्हें किसी तरह का पूर्वज्ञान अथवा विशेष शक्तियाँ प्राप्त नहीं हैं। फिर भी, ऐसी घटनायें सामान्य थीं और अगर आप मानसिक रूप से अपने कार्य में व्यस्त नहीं हैं, तो आप इस पर ध्यान देंगे। मेरा अपना विचार यह है कि मंडली को इस सबका ज्ञान नहीं था और यह स्वयं बाबा हैं जो उनके द्वारा काम करते हैं, क्योंकि वे (मंडली) उनके औजार हैं। इसलिये जब मैंने भाऊजी से मुझे आशीर्वाद देने के लिये कहा, मेरे मन में यह विचार था कि अगर उन्होंने मुझे आशीर्वाद दे दिया तो मैं शारीरिक रूप से स्वस्थ हो जाऊँगा और यही कारण है कि जब उन्होंने आशीर्वाद नहीं दिया तो मेरी भावनाओं को चोट पहुँची। क्योंकि मेरे मन में बहुत से विचार, और अधिक संदेह पैदा करते हुये आये, इसलिये मैंने उनका सामना करने और भाऊजी से बात करके इस विषय को स्पष्ट करने का निर्णय लिया। इसलिये मैंने लम्बे पत्र के समाप्त होने का इन्तज़ार किया और फिर मैंने उनसे बात करना शुरू किया। ''भाऊजी, मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। कृपया विषय को टालिये नहीं। जब मैंने आपसे मुझे आशीर्वाद देने के लिये कहा, आपने लगभग दे ही दिया, और फिर आप रुक गये और आशीर्वाद नहीं दिया। आपने ऐसा क्यों किया? आपने मुझे आशीर्वाद क्यों नहीं दिया?''

भाऊजी ने अपना सामान्य उत्तर दिया, ''अरे, मैं मात्र एक आलू हूँ और किसी को आशीर्वाद नहीं दे सकता; मेरे पास कोई विशेष शक्ति अथवा अधिकार नहीं है, केवल बाबा ऐसा कर सकते हैं।''

मैंने आग्रह किया, ''लेकिन मैंने आपको दूसरों को आशीर्वाद देते देखा है।'' भाऊजी ने उत्तर दिया, ''लेकिन वह सिर्फ़ एक मज़ाक है।'' लेकिन मैं माना नहीं। मैंने कहा, ''माना कि आप सिर्फ़ एक आलू हैं, परन्तु आपने मुझे मज़ाक में ही आशीर्वाद दे दिया होता।''

भाऊजी गंभीर हो गये और बहुत धीरे धीरे कहा, ''मेरे आशीर्वाद का मतलब तुम्हारा नाश होता और मैं वह नहीं कर सकता, मंडली से कभी भी आशीर्वाद न माँगो, केवल प्रेम आशीर्वाद माँगो।'' इससे मैं घबड़ा गया और मैंने मनी और मेरे बीच घटी वह घटना बता दी जब उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया था।

भाऊजी ने मुझसे पूछा, ''लेकिन तुमने यह क्यों माँगा।''

मैंने कहा, ''मनी मुझ पर कुछ माँगने के लिये दबाव डाल रहीं थीं और मेरे मन में वही आया।''

भाऊजी कुछ देर चुप रहे और फिर इस तरह बोले जैसे कि मेरी जगह अपने आप से बात कर रहे थे, ''मैं समझ सकता हूँ कि तुम क्यों कष्ट सह रहे हो।'' फिर उन्होंने मेरी ओर देखकर कहा, ''बिना कोई शिकायत किये इस कष्ट को सहो। इसे प्रसन्नता पूर्वक सहो और बाबा इसमें तुम्हारी सहायता करेंगे।'' भाऊजी ने जो कुछ कहा, मैंने उस पर अधिक ध्यान नहीं दिया क्योंकि मेरा मन मेरी बीमारी के लिये, जिसने मुझे असमर्थ बना दिया था, कोई इलाज ढूँढ़ने में व्यस्त था।

कुछ दिनों के बाद भाऊजी ने मुझसे कहा, ''तुम मेहेरबाबा के बारे में कोई पुस्तक क्यों नहीं लिखते हो?'' मैं भाऊजी के प्रस्ताव पर चकित रह गया। मैं आश्चर्य से बोला, ''मैं बाबा पर पुस्तक लिखूँ? मैंने अपने जीवन में पहले कभी कुछ नहीं लिखा है। इसके अलावा मैं मेहेर बाबा अथवा किताबें लिखने के बारे में बहुत कम जानता हूँ और उनके जीवन के बारे में पहले से ही बहुत अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।

भाऊजी ने कहा, ''लेकिन तुम यहाँ मंडली के साथ कई साल रहे हो। तुम उसके बारे में लिख सकते हो।'' मैंने कहा, ''हाँ, अच्छा है। मैं इस बारे में बात करता हूँ लेकिन पुस्तक लिखना मुझे नहीं आता। मैंने पहले कभी नहीं लिखा है।''

भाऊजी ने कहा, ''सिर्फ दिल लगाकर लिखना शुरू करो, और इसे बाबा लिखेंगे।''

मैंने उनकी सलाह की अगले दो वर्षो तक उपेक्षा की और अपनी बीमारी का इलाज ढूँढ़ता रहा। इसके पश्चात् मेरी इस खोज का अन्त लिखने से हुआ और, मैं सच कहता हूँ, मैं नहीं जानता कि यह सब कैसे हुआ। मैं अनुभव करता हूँ कि स्वयं बाबा ने लिखा और मैं उनके हाथों में सिर्फ़ एक पेन्सिल था। जब मैंने ''असली खज़ाना'' (The Real Treasure) के दो भाग लिख दिये तो मुझे लगा कि मैंने सबकुछ लिख दिया था। भाऊजी ने फिर एक दिन मुझसे कहा, ''तुम्हें और पुस्तकें लिखना है। तुम जो कुछ लिखते हो अपने हृदय से लिखते हो। यह अच्छा है और मुझे अच्छा लगता है। सभी लोग इसे पसंद करते हैं। तुम्हें और लिखना चाहिये, कम से कम कई भाग और लिखना चाहिये।'' मैंने दृढ़तापूर्वक कहा, ''लेकिन भाऊजी, मुझे अब अच्छी कहानियाँ नहीं आती हैं। मैं थकान अनुभव करता हूँ और मेरा स्वास्थ्य भी बहुत खराब है।''

भाऊजी ने उत्तर दिया, ''चिन्ता मत करो, कहानियाँ याद आयेंगी। अगर तुम यह हृदय से करते हो, तो वह (बाबा) तुम्हारे लिये यह काम करेंगे। इसलिये चिन्ता मत करो, ऐसा होगा।''

मैं और अधिक भागों के लिखने के बारे में नहीं जानता, लेकिन तीसरा भाग बाबा मेरे माध्यम से लिख रहे हैं। जब भाऊजी ने मुझसे और अधिक लिखने के लिये कहा, उसी समय मैं एक दिन मेहरू से मिला और उन्होंने मुझसे कहा, ''हमें दूसरे भाग में आनन्द आया और अब हम तीसरे भाग का इन्तज़ार कर रहे हैं।'' क्योंकि मेरे पास लिखने के लिये और कुछ नहीं था, इसलिये मैंने उनसे कहा, ''मैं ईमानदारी से कहता हूँ कि मेरे पास लिखने के लिये और कुछ नहीं है। यहाँ तक कि मैंने दो भाग लिखे हैं, इसी पर मुझे आश्चर्य होता है कि ये कहानियाँ कहाँ से आईं? यह स्वयं बाबा होंगे जिन्होंने मेरा पेंसिल की तरह प्रयोग करके उन्हें लिखा होगा।''

मेहरू ने मुँह बंद करके हँसते हुये कहा, ''बाबा तीसरा भाग लिखकर तुम्हें पुनः आश्चर्यचकित कर सकते हैं और हम इसका इन्तज़ार कर रहे हैं।'' मैंने उत्तर दिया, ''अगर उनकी ऐसी मर्ज़ी है, तो ऐसा ही होगा।'' वास्तव में, मंडली के साथ मेरे जीवन में मुझे इस बात पर आश्चर्य होता था कि किस तरह से मंडली द्वारा कही गई कोई बात सच होती थी। वास्तव में बाबा और उनकी मंडली, आश्चर्यों से भरे हुये हैं।

64. मेहेरा का अन्तिम जन्मदिन

हर वर्ष मेहेरा का जन्मदिन प्रायः 22 दिसम्बर को मनाया जाता था। इस दिन मेहेरा, मेहेराज़ाद मंडली के साथ, अपरान्ह 4 बजे बाबा की समाधि पर आतीं थीं। आरती, प्रार्थनाओं के बाद, अन्तेवासियों द्वारा अभिनीत बाबा के जीवन पर आधारित नाटक देखने के लिये मंडली समाधि के निकट खुले मैदान में बने हुये रंगमंच की ओर जाती थी। क्योंकि रंगमंच खुले मैदान में था, इसलिये मंडली जनों और तीर्थयात्रियों को धूप से बचाने के लिये एक विशाल पंडाल (tent) बनाया जाता था। टेड जडसन, लम्बे समय से मेहेराबाद में रहने वाला अन्तेवासी और शिल्पकार (architect), अपने कार्यकर्ताओं की टोली के साथ, सारे प्रबंधों की देखभाल करता था।

दिसम्बर 1988 में; मैं अपनी छुट्टियों में एक तीर्थयात्री की तरह मेहेराबाद गया था। मेहेराज़ाद जाने के दिनों के अलावा, मैं अपना अधिकांश समय बाबा की समाधि के अंदर बैठकर बिताता था, क्योंकि मैं यह जानता था कि यह अवसर हमेशा नहीं मिलेगा, इसलिये मैं इसका यथा शक्ति लाभ ले लेना चाहता था। मेहेरा के जन्मदिन पर, मेहेर पिलग्रिम सेंटर में नाश्ता करने के बाद, मैं समाधि के अंदर शान्तिपूर्वक बैठने के इरादे से, हमेशा की तरह, ऊपर पहाड़ी की ओर चल दिया। समाधि के पास पहुँचने पर, मैंने एरच को बाहर खड़े हुये देखा। मैंने उनकी ओर देखकर हाथ हिलाया और उन्होंने भी मुस्कुराते हुये मुझे देखकर हाथ हिलाया।

जैसे ही मैं पास पहुँचा, मैंने देखा कि एरच अचानक गंभीर हो गये और वह मेरे पीछे किसी चीज़ की ओर इशारा कर रहे थे। मैं देखने के लिये मुड़ा और पंडाल को जलते देखकर, मैं बहुत भयभीत हो गया। मैं किसी तरह से मदद करने की आशा से पंडाल की ओर दौड़ा। सभी तीर्थयात्री, काम करने वाले और अन्तेवासी, जो उस समय वहाँ पर थे, आग बुझाने के इरादे से पंडाल की ओर भागे। तो भी, ज्यादा कुछ नहीं हो सका क्योंकि पास में पानी का कोई स्त्रोत नहीं था। कपड़े में बहुत तेज़ी से आग फैल गई और मिनटों में पंडाल जल गया, हालाँकि लकड़ी का काम जैसे का तैसा रह गया।

हम इस घटना से बहुत दुखी हुये और ऊपर गये जहाँ पर एरच खड़े थे। एक तीर्थयात्री जले हुये पंडाल से, कपड़े का एक छोटा सा टुकड़ा लाकर एरच को दिखाते हुये बता रहा था कि केवल यही टुकड़ा आग से बचा था। एरच ने उससे कहा, ''मेहेरा के अन्तिम जन्मदिन की याद में इसे संभाल कर रखो।'' यह अजीब था कि एरच ने ऐसी बात कही, क्योंकि यह मेहेरा का अन्तिम जन्मदिन सिद्ध हुआ।

20 मई, 1989 को मेहेरा की मृत्यु हो गई। वास्तव में, उस जन्मदिन के उत्सव में मेहेरा ने भी सलाह दी थी कि भविष्य में उनका जन्मदिन न मनाया जाये और अपनी इच्छा व्यक्त की थी कि बाबा प्रेमी केवल बाबा पर अपना ध्यान केन्द्रित करें।

मेहेरा की मृत्यु के पश्चात्, जब तीर्थयात्रियों के मेहेराबाद जाने का समय शुरू हुआ, वहाँ जाने वाले तीर्थयात्रियों को मेहेरा की अनुपस्थिति बहुत अधिक अनुभव हुई। वे मंडली हाल में मेहेरा के साथ अपने अनुभव बताया करते थे। वह तीर्थयात्री भी वहाँ पर था जिससे एरच ने जले हुये पंडाल का बचा हुआ कपड़े का टुकड़ा संभाल कर रखने के लिये कहा था। पंडाल में लगी हुई आग के अनुभव का वर्णन करने के पश्चात्, उसने एरच की ओर मुड़कर पूछा, ''आपने यह कैसे जाना कि यह उनका अन्तिम जन्मदिन था? आपने जो कुछ कहा था, वह क्यों कहा?'' एरच ने एक गहरी साँस लेकर टिप्पणी की, ''मैं नहीं जानता हूँ कि मैंने यह क्यों कहा। लोग मुझसे अक्सर पूछते हैं कि मैं ऐसी बातें क्यों कहता हूँ जो घटित हो जाती हैं। मैं ईमानदारी से कहता हूँ कि मैं नहीं जानता कि ऐसा क्यों होता है। उस समय मेरे मन में जो आया, मैंने तुरंत कह दिया, अवश्य ही यह बाबा होंगे। इसके अलावा, मेरे पास इस विषय पर कहने के लिये और कुछ नहीं है।''

65. उनके यन्त्रों का प्रताप

कुछ बाबा प्रेमियों ने, जो मंडली के बारे में मेरे विचारों से सहमत नहीं हैं, शिकायत की है कि मैंने उनको बहुत अधिक महत्व दे दिया है। उनसे मैं कहता हूँ, ''आप मंडली को महत्व कैसे नहीं देंगे? प्रभु से संबंधित सभी चीजें महत्वपूर्ण हैं और उनमें उसके यन्त्र भी सम्मिलित हैं।''

मैं अपने स्वामी के यन्त्रों के चुनाव को कम महत्व कैसे दे सकता हूँ? मेरा हृदय अपने प्रभु के चुनाव के प्रताप का वर्णन किये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि मैं उनके साथ रहा और उनके विशाल हृदयों में, जहाँ मुझे बाबा का केवल शुद्ध प्रेम मिला, झाँकने का सौभाग्य मिला।

मैं पाठकों को एक कहानी सुनाना चाहता हूँ जो बाबा और एरच के बीच हुई एक घटना से संबंधित है। यह कहानी बाबा ने एरच को, अपनी मंडली की महानता समझाने के लिये, स्वयं सुनाई थी। नये बाबा प्रेमियों के अलावा, अधिकांश लोगों ने मंडली हाल में एरच से यह कहानी सुनी होगी। यह कहानी छपी हुई भी है और बहुत से प्रेमियों ने इसे पढ़ा होगा। मैं इस समय यह कहानी बता रहा हूँ ताकि पाठक को यह समझने में सहायता मिले कि आगे क्या होता है।

मंडली हाल में तीर्थयात्रियों की भीड़ को संबोधित करते हुये एरच ने कहा, ''बाबा हमें अक्सर बताते थे, हमें बार बार याद दिलाते थे कि हम, मंडलीजन, कितने भाग्यशाली थे कि हम उनके साथ थे। वह हमें बताते थे कि योगियों को भी, जो हजारों साल तपस्या करते थे, ऐसा अवसर नहीं मिलता था जैसा मंडली को मिला था। इस तरह बाबा कहते रहते थे। कभी कभी वह अपनी मंडली के सदस्यों की महानता और कभी कभी उनके अच्छे भाग्य के बारे में बात करते थे। फिर भी, हमें ऐसा कुछ अनुभव नहीं होता था। बाबा के द्वारा निरंतर कष्ट पहुँचाये जाने के अलावा, हमें किसी भी तरह का आन्तरिक अनुभव नहीं था। इसलिये, एक दिन बाबा जब इसी बात को दोहरा रहे थे कि मंडली जन कितने भाग्यशाली थे, मैं ऊब गया और तुरंत बोला, 'लेकिन आप जो कुछ कह रहे हैं, हम ऐसा कुछ भी अनुभव नहीं करते हैं।

'हम अपने हृदयों में अच्छे भाग्य अथवा भाग्यशाली होने का अनुभव नहीं करते हैं।' अवश्य बाबा ने ही यह सब कहने के लिये मुझे उकसाया होगा ताकि वह मुझे इसका उत्तर दे सकें। उन्होंने निम्नलिखित कहानी सुनाकर, इसका उत्तर दिया।

''नारद भगवान कृष्ण के प्रेमी थे। वह मंडली के सदस्य थे जो भगवान कृष्ण के बहुत निकट थे। भगवान अपने घनिष्ठ जनों को उनके अच्छे भाग्य के बारे में निरंतर याद दिलाते थे, इस अवसर का सर्वाधिक लाभ उठाने के लिये, जिसके लिये योगी और देवदूत भी तरसते हैं, बार बार उत्साहित करते थे। एक दिन, जब भगवान ऐसा कह रहे थे, नारद उत्तेजित होकर तुरंत बोले, 'लेकिन हम कुछ भी अनुभव नहीं करते हैं। आप ऐसा कहते हैं और हम सुनते हैं, लेकिन हमें कोई आन्तरिक अनुभव नहीं है।'

''भगवान कृष्ण ने नारद से कहा, 'तो तुम अनुभव चाहते हो? ठीक है, मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हें बहुत जल्दी अनुभव दूँगा जिससे तुम मेरे साथ रहने के अपने सौभाग्य को समझ सकोगे। कुछ ही दिनों में, मैं तुम्हें अनुभव दूँगा, जो तुम्हारी महानता को सिद्ध करेगा।'

''कुछ दिनों के बाद कृष्ण ने नारद को बुलाया और नदी के किनारे एक विशेष स्थान पर जाने के लिये कहा जहाँ वे लोग पहले जा चुके थे और कहा कि वहाँ पर उनको वह अनुभव मिलेगा, जो भगवान की बात की सत्यता का प्रमाण होगा।

''इसलिये नारद नदी किनारे जाकर, चारों ओर देखते हुये, किसी चीज़ को देखने का इन्तज़ार करते हैं ताकि वह चीज़ उस अनुभव का प्रमाण हो जो भगवान उन्हें देना चाहते थे। कोई चीज़ न पाकर, वह जाने ही वाले थे जब उनकी नज़र मनुष्य की टट्टी के ढेर पर पड़ी। तुमने देखा होगा कि गाँव के लोग किस तरह बाहर जाकर, खुले मैदान में दूर किसी जगह टट्टी करते हैं क्योंकि वहाँ शौचालय नहीं होते हैं। इसलिये नारद को यही दृश्य दिखा।

''जैसे ही नारद ने टट्टी को देखा, उन्होंने एक कीड़े को बाहर निकलते देखा। कीड़े ने नारद को देखा और मर गया। नारद सोचने लगे, 'क्या यही देखने के लिये भगवान ने मुझे यहाँ भेजा है? क्या यही मेरा अच्छा भाग्य है? क्या मुझे यही अनुभव होना है कि मैं एक कीड़े को देखता हूँ और यह मर जाता है?' इसलिये नारद भगवान के पास वापस जाते हैं और अपना निराशापूर्ण अनुभव उन्हें बताते हैं।

''कृष्ण उन्हें आश्वासन देते हैं, 'बहुत जल्दी तुम्हें ऐसा अनुभव होगा जो तुम्हारी महानता को सिद्ध करेगा। मैं तुमसे वादा करता हूँ ऐसा जल्दी ही होगा।'

"कुछ दिनों के बाद, कृष्ण ने नारद को बुलाया और उनसे एक विशेष जगह पर, एक पेड़ के पास जाने को कहा जो वहाँ पर होगा और उसे वहाँ पर अनुभव होगा। नारद उस जगह, पेड़ के पास जाते हैं और चारों ओर देखते हैं लेकिन उनको वहाँ पर कुछ नहीं मिलता है। वह वहाँ पर किसी चीज़ के मिलने, किसी घटना के घटने की आशा से, कुछ देर इन्तज़ार करते हैं अन्त में, कुछ देर निरर्थक प्रतीक्षा करने के बाद, वह जाने का निश्चय करते हैं। जैसे ही वह चलने के लिये तैयार होते हैं, वह एक प्रकार के छोटे तोते (Parakeet) का गाना सुनते हैं– जो उस पेड़ पर था। वह पक्षी को देखते हैं, उनकी आँखें आपस में मिलती हैं और पक्षी मर जाता है। इससे नारद व्याकुल हो जाते हैं और आश्चर्य करने लगते हैं, 'क्या यही अच्छा भाग्य है जिसके बारे में मेरे प्रभु बात करते हैं? जिसे देखता हूँ, वह मर जाता है। क्या मैं मृत्यु का दूत बन गया हूँ? मेरे प्रभु मेरे साथ कैसा मज़ाक कर रहे हैं?'

"मन में यह सोचते हुये, वह वापस आये। जब कृष्ण ने नारद से उनका अनुभव पूछा तो उन्होंने जो कुछ हुआ था, उन्हें बता दिया। कृष्ण ने उनको फिर आश्वासन दिया कि उनको अपनी महानता का अनुभव बहुत जल्दी होगा। कुछ दिनों में वहाँ का राजा कृष्ण के दर्शन के लिये आया क्योंकि उसकी पत्नी के लड़का हुआ था। राजा बहुत प्रसन्न था और चाहता था कि कृष्ण आकर, उसके बेटे को, उसके सिंहासन के भावी उत्तराधिकारी को आशीर्वाद दें। कृष्ण व्यस्त थे और स्वयं नहीं जा सकते थे। फिर भी, राजा के बहुत प्रार्थना करने पर, कृष्ण अपने आन्तरिक मंडल के एक सदस्य को उनके बेटे को आशीर्वाद देने के लिये, भेजने को तैयार हो गये। नारद, जो वहाँ पर बैठे हुये बातचीत सुन रहे थे, बहुत शंकित हो गये। वह अपने हृदय में प्रार्थना करते हुये, आशा कर रहे थे कि कृष्ण उन्हें न भेजकर, किसी और को भेजें। सबके हृदय की बात जानने वाले भगवान, नारद की ओर इशारा करते हुये राजा से कहते हैं कि उनकी जगह नारद जाकर बच्चे को आशीर्वाद देंगे।

"नारद को अनुभव हुआ कि वह फँस गये थे और उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। उनके मन में सभी तरह के सन्देह आ रहे थे। अगर उनके देखते ही बच्चा मर गया तो क्या होगा? राजा उन सबको

अपने राज्य से बाहर निकाल देगा। लेकिन नारद के पास दूसरा कोई रास्ता नहीं था इसलिये उनको इच्छा न होते हुये भी जाना पड़ा। उनके जाने के दिन, बच्चे के कल्याण के लिये, शाही पुरोहित द्वारा पूजा की जा रही थी। नारद के पहुँचते ही बहुत आदर के साथ उनका स्वागत करके, उनको आसन दिया जाता है। नारद बहुत ही डरे हुये थे और बिल्कुल प्रसन्न नहीं लग रहे थे। वह बच्चे की ओर न देखकर, पूरे समय अपनी नज़र दूसरी ओर किये रहे। जब समारोह समाप्त हो गया तो राजा ने नारद से आकर बच्चे को आशीर्वाद देने के लिये कहा। नारद की समझ में नहीं आया कि क्या करें।

"डर के कारण नारद उठे और बच्चे की ओर देखे बिना उसे आशीर्वाद दिया। यहाँ तक कि राजा भी नारद के अजीब व्यवहार से घबड़ा गया। नारद दूसरी ओर देखते हुये, बच्चे को आशीर्वाद देते हैं और उसके बाद शीघ्र ही जाने लगते हैं। जैसे ही वह दरवाजे की ओर मुड़ते हैं, उनको एक आवाज़ सुनाई पड़ती है जो उन्हें पुकारती है। यह बच्चे की आवाज़ है जो पालने से पुकारता हुआ कहता है, 'नारद, नारद, आप मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं। जब मैं एक कीड़ा था, आपने मेरी आँखों में देखा, मैं मर गया और एक पक्षी बन गया। जब आपने मेरी आँखों में एक पक्षी के रूप में देखा, मैं मर गया और एक लड़का हो गया। अगर अब आप मेरी आँखों में देखेंगे तो मैं मर जाऊँगा और ईश्वर के साथ एक हो जाऊँगा। आप मुझे यह देने से इनकार क्यों करते हैं?'

"जब नारद ने यह सुना तो उनको इस पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि प्रभु की दया से, उनके अनजाने में उनमें यह शक्ति आ गई थी कि वह किसी आत्मा को जीवन का अन्तिम लक्ष्य, परमात्मा के साथ एकता, ईश्वर–साक्षात्कार दे सकते थे।

"जब नारद ने जाकर कृष्ण को सारी घटना बताई, तो उन्होंने कहा, 'क्या अब तुम इस बात को अनुभव करते हो कि मेरे साथी होने के कारण तुम कितने अधिक भाग्यशाली हो?'

"नारद शर्मिंदा हुये और प्रभु पर संदेह करने के लिये उनसे क्षमा माँगी।" एरच ने अन्त में कहा, "यह कहानी हमारे प्रभु मेहेरबाबा ने मुझे

यह समझाने के लिये स्वयं सुनाई थी कि उनकी मंडली और उनके साथी कितने महान और कितने भाग्यशाली थे। हालाँकि हम कुछ भी अनुभव नहीं करते हैं फिर भी हम इतना जानते हैं कि सृष्टि का स्वामी होने के कारण वह जानते हैं कि वह क्या कह रहे हैं और यह सच होना चाहिये।''

66. बाबा अपने कार्य के लिये अपनी मंडली का किस तरह प्रयोग करते हैं

अभी हाल ही में, एक बाबा प्रेमी ने, जिसने मेरी पुस्तक असली खज़ाना पढ़ी थी, मुझसे मेरी आन्तरिक अवस्था का वर्णन करने के लिये कहा। मैंने उससे कहा, ''यह बहुत सरल है, और मैं सिर्फ़ एक शब्द में ऐसा कर सकता हूँ—कूड़ा। यह मेरी अवस्था है। मेरा हृदय कूड़े से भरा हुआ है जिसको साफ करने की आवश्यकता है। फिर भी मैं इतना कह सकता हूँ कि यह दैवी माली की कृपा और दया थी कि उसने मेरा, जो कि कूड़ा है, अपने दैवी बाग़ की रक्षा करने के लिये, जिसका प्रतिनिधित्व उनकी मंडली करती है, खाद की तरह प्रयोग किया।

बाबा ने मेरे जैसे अयोग्य व्यक्ति को, अपनी मंडली के माध्यम से अपनी उपस्थिति का अनुभव करने का अवसर प्रदान किया।''

मैं अक्सर एरच को नारद की कहानी सुनाते हुये सुनता था, जो बाबा ने उन्हें सुनाई थी। इसका सही महत्व और गहराई मुझे बहुत बाद में समझ में आई। अपनी बीमारी के दौरान, जिसे अब मैं एक छिपा हुआ वरदान समझता हूँ, क्योंकि मैं कोई भी शारीरिक कार्य करने में असमर्थ था, इसलिये मैं मंडली के साथ बिताये गये अपने जीवन के बारे में और वे हमें जो शिक्षा देने का प्रयत्न कर रहे थे, उसके बारे में सोचा करता था। मेरे दिमाग में बहुत सी कहानियाँ आ रहीं थी जब अचानक मेरे दिमाग में एक अनोखा विचार आया और मैं सीधा बैठ गया। शायद बाबा ने यह विचार दिया, ''क्या नारद की तरह, बाबा के यंत्र के रूप में मंडली किसी व्यक्ति को ईश्वर–साक्षात्कार प्रदान कर सकती है?''

मेरे मन में इसके पक्ष और विपक्ष दोनों में सभी तरह के विचार आये। मेरा तर्क मुझसे कहता था, ''ऐसा कैसे हो सकता है; वे एकदम साधारण

मनुष्य थे, वे गल्तियाँ करते थे। अगर बाबा बहुत से लोगों के हृदयों को स्पर्श करने के लिये, उन्हें अपने यंत्रों के रूप में प्रयोग करते भी थे, तो भी ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त करना जीवन का अन्तिम लक्ष्य है और यह भेंट केवल एक सद्गुरु दे सकता है और मंडली जन पूर्ण नहीं थे, वे केवल उनके (बाबा के) यंत्र थे।'' लेकिन मेरा हृदय विपरीत दिशा में जाता था,

नारद की कहानी के द्वारा, बाबा अपनी वर्तमान मंडली के बारे में बात कर रहे थे। वह कहानी एरच की नहीं, हमारी भलाई के लिये थी। एरच और मनी हमें बार बार बताते थे कि कई अवसरों पर, बाबा किस तरह से अपनी मंडली के किसी एक जन को, उनके (बाबा के) प्रभुत्व और मुहर के साथ भेजते थे, जैसे कि (उनके रूप में) वे स्वयं वहाँ पर मौजूद थे। इसी तरह से उनके यंत्र किसी भी योग्य आत्मा को ईश्वर साक्षात्कार प्रदान कर सकते हैं।

अभी भी मेरा मन यह स्वीकार नहीं कर सका कि एरच, मनी, अलोबा या भाऊजी जैसा कोई व्यक्ति अपनी महानता के बावजूद, ईश्वर साक्षात्कार प्रदान करने की क्षमता रखता था। बाबा द्वारा सुनाई गई कहानी के बावजूद, मुझे यह बात असंभव लगती थी। फिर भी, समय बीतने के साथ मेरा हृदय परिपक्व होने लगा। मैं अपने हृदय पर विश्वास करने लगा और मैं यह अनुभव करने लगा कि वे (मंडली जन) ऐसा कर सकते थे, लेकिन मुझे यह जानना था। क्योंकि एरच की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिये मुझे भाऊजी से यह प्रश्न पूछना था।

भाऊजी का स्वभाव जानते हुये, मैं समझता था कि इस विषय पर उनसे कोई उत्तर पाना कठिन होगा क्योंकि वह उत्तर देने से बचेंगे और अपना वही प्रिय और सीधा उत्तर देंगे ''मैं नहीं जानता। मैं सिर्फ़ एक आलू हूँ।'' फिर भी मेरे पास इसके अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं था कि जब तक वह मुझे अपना उत्तर नहीं दे देते तब तक मैं उनके पीछे लगा रहूँ।

मैंने भाऊजी से पहली बार यह प्रश्न 2002 में पूछा होगा। मैंने कहा, भाऊजी हमने मंडली जनों से यह सुना है कि अवतार के हाथों से मृत्यु होने पर किस तरह से ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त होता है लेकिन अगर मंडली

जन किसी व्यक्ति को जान से मारते हैं, तो क्या होता है? क्या उस व्यक्ति को मुक्ति प्राप्त होती है अथवा ईश्वर साक्षात्कार?'' वातावरण को हल्का करने के लिये, मैंने मज़ाक करते हुये आगे कहा था, ''भाऊजी, आप मुझे सत्य बता सकते हैं और, आप चिन्ता न कीजिये, मैं वादा करता हूँ कि मैं आपसे मुझे मुक्ति देने के लिये नहीं कहूँगा।''

भाऊजी इस मज़ाक पर हँसते थे, लेकिन फिर अपना वही सीधा उत्तर देते थे, ''मैं कुछ नहीं जानता हूँ; मैं सिर्फ़ एक आलू हूँ, केवल बाबा जानते हैं।'' इसी प्रश्न को मैं दूसरे ढँग से भाऊजी से पूछता था ताकि वह मेरी चाल में फँसकर उत्तर दे दें। यह प्रश्न भाऊजी की किसी बात पर आधारित था जो वह अक्सर कहते थे, ''बाबा का असली कार्य हमारे हृदयों में भरा हुआ कूड़ा साफ़ करना, हमारे संस्कारों को नष्ट करना और हमें ईश्वर–साक्षात्कार देना है।''

फिर मैं पूछता था, ''अगर बाबा का असली कार्य हमारे संस्कारों के कूड़े को साफ़ करना हमें ईश्वर साक्षात्कार देना है और, क्योंकि मंडली जन उनके विश्वव्यापी आध्यात्मिक कार्य के लिये उनके यंत्र हैं, तो क्या इसका यह अर्थ है कि, मंडली के द्वारा वह संसार के लोगों के संस्कारों के कूड़े को साफ़ करने का अपना कार्य अभी भी करते जा रहे हैं?''

भाऊजी मुँह बंद करके हँसते हुये उत्तर देते थे, ''मैं सिर्फ़ एक आलू हूँ और ऐसे ही सारे मंडली जन हैं। हमें कुछ भी ज्ञान अथवा हममें कोई भी शक्ति नहीं है– और बाबा हमारे द्वारा क्या कार्य करते हैं हम नहीं जानते; हममें इस विषय में कोई चेतना नहीं है, केवल बाबा अपने कार्य को जानते हैं।'' जब भी अवसर मिलता था, मैं उसी प्रश्न को अलग अलग ढँग से पूछता था, लेकिन भाऊजी हमेशा वही उत्तर देते थे।

बाबा की कृपा से, मैं हर साल अहमदनगर जाता था और ट्रस्ट आफ़िस में चार छः हफ़्ते तक रहता था। मैं कभी कभी साल में एक बार से अधिक बार भी जाता था। इस समय के दौरान, मैं भाऊजी के पास बैठता था और जब वह फुर्सत में होते थे और जब केवल उनके सहायक उनके आस पास होते थे (क्योंकि वह ऐसे प्रश्नों के उत्तर लोगों के सामने

बहुत कम देते थे) मैं उनसे अपने बहुत से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की कोशिश करता था। 2002 से 2008 के बीच, मैं यह प्रश्न पूछने की कोशिश करता रहा लेकिन भाऊजी के उत्तर में कोई अंतर नहीं आया। जनवरी 2009 में बाबा की कृपा से मेरे मन में एक विचार आया और मैंने अपना प्रश्न पूछने का ढँग बदल दिया। मैंने भाऊजी से उसी प्रश्न को पिछले अवतरणों के संदर्भ में पूछने का निश्चय किया।

इसीलिये एक दिन, जब भाऊजी फुर्सत में थे और उनके पास केवल उनके सहायक थे, मैंने अत्यधिक भोलेपन के साथ, भाऊजी से पूछा, ''भाऊजी, हमें मंडली ने जो कुछ बताया है, उससे हम यह समझते हैं कि रावण को मोक्ष प्राप्त हुआ क्योंकि भगवान राम ने उसे मारा था। लेकिन उन लोगों का क्या हुआ जो राम की मंडली अथवा राम के मंडल के सदस्यों (circle members) द्वारा मारे गये थे? क्या उन्हें भी मोक्ष प्राप्त हुआ?''

मैं सोचता था कि प्रश्न को इस रूप में पूछकर, मैं भाऊजी को बेवकूफ़ बना रहा था। लेकिन जैसे ही भाऊ जी ने प्रश्न सुना, वह हँसकर बोले, ''तुम मुझे लम्बे समय से फँसाने की कोशिश करते रहे हो। ठीक है, मैं तुम्हें बताऊँगा। मंडली जन बाबा द्वारा उनकी चेतना पर डाले गये एक पर्दे के नीचे होते हैं। वह अपने कार्य के लिये उनका (मंडली जनों का) प्रयोग करते हैं लेकिन पर्दे के कारण उन्हें इसकी कोई चेतना नहीं होती है। अगर पर्दा नहीं होता, तो उन्हें ईश्वर–साक्षात्कार का अनुभव होता और वे उनका (बाबा का) कार्य करने के योग्य नहीं रहते। पर्दे के कारण ही वह उनका कार्य कर सकते हैं और उनके यंत्र बन सकते हैं। जब मंडली अपने निर्धारित कार्यों को पूरा कर लेती है, पर्दा उठ जाता है और अपना शरीर छोड़ने के ठीक पहले उन्हें (मंडली) ईश्वर–साक्षात्कार का अनुभव होता है। मंडली पर्दे के कारण अपने आप कोई भी काम नहीं कर सकती है। लेकिन अगर बाबा ऐसा चाहते हैं, तो वह किसी भी योग्य आत्मा को, ईश्वर–साक्षात्कार देने के लिये, अपनी मंडली को अपने यंत्र के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। याद रखो, मंडली अपने आप कुछ नहीं दे सकती है। केवल बाबा, अगर वह ऐसा चाहते हैं, तो मंडली के द्वारा ऐसा कर सकते हैं अर्थात् ईश्वर–साक्षात्कार दे सकते हैं।''

67. मल की मक्खी

मैं मेहेरवान जसावाला से इस बारे में बात कर रहा था कि मन की चालें और धोखे कितने अधिक आश्चर्यचकित करने वाले थे। मैंने उनसे कहा, "मुझे यह देखकर व्याकुलता होती है कि मन कितनी आसानी से नकारात्मक प्रभावों के, यहाँ तक कि उस समय भी जब कि यह अच्छे और सकारात्मक वातावरण के बीच में होता है, अधीन हो जाता है। मंडली जनों को देखो, वे कितनी महान हस्तियाँ हैं। लगभग प्रत्येक व्यक्ति ने, जो उनसे मिलता है, उनकी महानता का अनुभव किया है और अपने हृदय में जानता है कि वे साधारण आत्मायें नहीं हैं।

"स्वयं बाबा ने, अपनी मंडली की महानता के बारे में टिप्पणी की है और यहाँ तक कहा है, कि वे (मंडली) चेतना में उनके साथ एक हैं लेकिन उनकी चेतना पर पर्दा पड़ा हुआ है। Discourses (उपदेशों) में बाबा ने अपने मंडल के सदस्यों के बारे में विस्तार से बताया है। उसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया है कि मंडली की चेतना पर पड़ा हुआ संस्कारों का पर्दा, साधारण मनुष्यों की चेतना पर पड़े हुय संस्कारों के पर्दे से बहुत भिन्न होता है। बाबा बताते हैं कि वह किस तरह से मंडली जनों की चेतना पर विज्ञानी संस्कारों का पर्दा डालते हैं जो मंडली को, वे चाहे कुछ भी करें, और अधिक बंधनकारी संस्कार उत्पन्न करने से बचाता है– चाहे वे नकारात्मक अथवा सकारात्मक (अच्छे या बुरे) कार्य करें अथवा, इसके लिये, वे कोई दूसरा कार्य करें।

"साधारण मनुष्यों की तरह, वह इन कार्यों से संस्कारों के बंधन में नहीं बँधते हैं। यह उन विशेष संस्कारों के कारण होता है जिनको पर्दे के रूप में बाबा ने उनकी चेतना पर रखा है। इन्हीं विशेष (विज्ञानी) संस्कारों के द्वारा बाबा अपनी इच्छा और मर्ज़ी के अनुसार, मंडली जनों से कार्य करवाते हैं। और, इस क्रिया में, अपने विश्वव्यापी कार्य के लिये उनको (मंडली को) एक यंत्र की तरह प्रयोग करते हैं। बाबा ने कहा है कि जब मंडली की चेतना के ऊपर रखे गये संस्कारों का प्रयोग हो जाता है, जो दो या तीन जन्मों में होता है, तब उन्हें ईश्वर–साक्षात्कार का अनुभव होता है।"

मेहेरवान के सामने अपना अगला विचार प्रकट करने के लिये मैं थोड़ी देर रुका। "बौद्धिक स्तर पर हम सब यह जानते हैं। हमारे पास पर्याप्त साहित्य है; वास्तव में, इसमें से कुछ बाबा के सीधे मार्ग निर्देशन में लिखा गया है। अजीब बात यह है कि हम इसे पढ़ते हैं और बुद्धि द्वारा इसकी विवेचना करते हैं, और फिर भी हम उस स्पष्ट तथ्य को समझ नहीं पाते हैं जिसे बाबा बार बार हमें समझाना चाहते हैं : वह तथ्य यह है कि सद्‌गुरुओं और उनके मंडल द्वारा किये गये निषेधात्मक (बुरे) कार्य मानव जाति की भलाई के लिये होते हैं और उनका निर्णय सांसारिक दृष्टिकोण से नहीं करना चाहिये।

"इस सबके बावजूद, मैं यह देखता हूँ कि जब मंडली जन कोई निषेधात्मक कार्य करते हैं, यह मन प्रतिक्रिया करता है और आलोचना करना शुरू कर देता है। मैंने देखा है कि बहुत से बाबा प्रेमी मंडली जनों की केवल आलोचना ही नहीं करते हैं बल्कि मंडली के किसी निषेधात्मक कार्य के साथ तुलना करके अपनी स्वयं की किसी कमज़ोरी (दोष) को उचित ठहराते हैं। यह मन कहता है कि अगर मंडली ऐसा कर सकती है, तो अगर हम यह कार्य करते हैं, तो इसमें गलत क्या है? हम बाबा द्वारा बताये गये सबसे अधिक स्पष्ट तथ्य को समझने में चूक जाते हैं कि मंडली इन कर्मों के बंधन में नहीं फँसती है, लेकिन जब हम ये कार्य करते हैं तो हम कर्मों के बंधन में फँसते हैं।

"मुझे इस बात से और अधिक व्याकुलता होती है कि हमारा मन मंडली के महान कार्यों का अनुसरण करने से इनकार करता है। मंडली की महानता असीम है और उनके द्वारा किये गये महान कार्यों की संख्या भी बहुत अधिक है। मन इस महानता का, जिसके प्रति सामान्य रूप से मन आकर्षण का और उसका अनुसरण करने के लिये प्रेरणा का अनुभव करेगा, अनुसरण करने से अथवा इस महानता की अपने जीवन में नकल करने से इनकार करता है। फिर भी अधिकांश रूप से यह मन निषेधात्मक कार्यों का अनुसरण करता है। बाबा प्रेमियों को मंडली की आलोचना करते हुये और उनके निषेधात्मक कार्यों पर प्रकाश डालते हुये सुनना सामान्य बात है। ऐसे लोग मंडली की महानता के बारे में बहुत कम बात करते हैं।

ऐसा क्यों है? मन निषेधात्मक कार्यों के प्रति आकर्षण का अनुभव क्यों करता है?''

मेहेरवान ने उत्तर दिया, ''क्या तुमने मल (टट्टी) पर बैठने वाली मक्खी को देखा है? मल की मक्खी हमेशा मल की ओर आकर्षित होती है, तुम मल की मक्खी को फूलों के बाग में रख दो, फिर भी, पूरा बाग फूलों से भरा होने पर भी मल की मक्खी फूलों अथवा उनकी खुशबू की ओर आकर्षित नहीं होती है। यथार्थ में अगर बाग के किसी कोने में थोड़ा सा भी मल होगा, तो मल की मक्खी इसकी ओर दौड़कर जाती है। ऐसा ही मन के साथ भी है। हमारी युगों पुरानी इच्छाओं ने हमारे लिये ऐसे संस्कार पैदा किये हैं कि मल की मक्खी की तरह हम मल की ओर आकर्षित होते हैं। बाबा ने हमें अपनी याद का उपहार दिया है जिसका, अगर हम धीरज और दृढ़ निश्चय के साथ प्रयोग करें, तो यह हमें इस आकर्षण से मुक्त कर सकता है, और यह अन्ततः मन को अन्दर की ओर, दैवी सुगंध की ओर मोड़ सकता है। इसलिये, सिर्फ़ बाबा की याद करते रहो क्योंकि इसके अलावा और दूसरा कोई रास्ता नहीं है।''

68. उनके अलावा और कोई नहीं है

एक दिन सुबह मेहेराज़ाद जाने वाली सड़क पर एरच के साथ घूमते समय, उन्होंने मुझसे पूछा, ''क्या तुम पिछली रात ठीक से सोये थे?'' मैंने उत्तर दिया, ''हाँ।'' उन्होंने आगे पूछा, ''क्या तुम नींद में स्वप्न देखते हो?'' मैंने उत्तर दिया, ''हाँ, मैं स्वप्न देखता हूँ, लेकिन पिछली रात मैंने एक भी स्वप्न नहीं देखा।''

एरच ने प्रश्न पूछना जारी रखा। ''तुम स्वप्न में जिन लोगों को देखते हो, वे सब कहाँ से आते हैं?'' मैंने उत्तर दिया, ''मेरा अनुमान है कि वे अर्ध चेतन मन से आते हैं जो उनकी रचना करता है।'' तब एरच ने टिप्पणी की, ''क्या यह अजीब बात नहीं है कि मन स्वप्न देखते समय इतने अधिक विभिन्न चरित्रों की रचना करता है, और स्वप्न में परिस्थिति चाहे कितनी भी हास्यास्पद क्यों न हो, तुम स्वप्न को वास्तविक (सत्य)

समझते हो? यहाँ तक कि तुम स्वप्न को बदल भी नहीं सकते हो, भले ही तुम्हारे अपने मन द्वारा इसका निर्माण हुआ है। क्या ऐसा नहीं है?''

एरच जो कुछ कह रहे थे, वह बहुत ही रोचक था और मैं यह भी जानता था कि इसका सबसे अच्छा भाग अभी भी बताने के लिये रह गया है, क्योंकि एरच कभी भी व्यर्थ की बात नहीं करते थे। मैंने एरच को उत्तर दिया, ''ठीक है, क्योंकि अब आप इसका ज़िक्र कर रहे हैं तो मेरी समझ में आ रहा है कि हालाँकि स्वप्न का निर्माण मेरे मन द्वारा हुआ है, मैं इसको नियंत्रित नहीं करता हूँ। मैंने पहले कभी भी इस बात पर ध्यान नहीं दिया था।''

एरच मुँह बंद करके हँसे और टिप्पणी की, ''ऐसा ही संसार के साथ है जिसे हम यथार्थ समझते हैं। सभी चीजें, जो तुम देखते हो, सभी लोग जिनसे तुम मिलते हो, सभी विभिन्न स्थान, जहाँ तुम रहते हो, और सारे कार्य, जो तुम करते हो, इस सबका तुम्हारे स्वप्न–तुम्हारी कल्पना के अलावा कोई भी अस्तित्व नहीं है। यह अजीब बात है कि स्वप्न से जागने के बजाय, लोग इस स्वप्न को और अधिक अच्छा, और अधिक अच्छा बनाने का निरंतर प्रयत्न कर रहे हैं। इस कभी भी समाप्त न होने वाले स्वप्न पर व्यक्ति का कोई नियंत्रण नहीं होता है और फिर भी हर व्यक्ति का प्रयत्न, अधिकांशतः इस स्वप्न को और अधिक अच्छा बनाने की ओर रहता है।

''थोड़ी सी बिरली आत्मायें, इस स्वप्न से जागने के लिये संघर्ष करती हैं। बाबा ने, जो कि एक जागृत हस्ती हैं, और जो हमें जगाने के एकमात्र उद्देश्य से आये हैं, इस बात पर बार बार ज़ोर दिया है कि यह सब यथार्थ नहीं है और जितना अधिक हम स्वप्न के साथ संघर्ष करते हैं, इसे बदलने का हम जितना अधिक प्रयत्न करते हैं, उतना ही अधिक हम इसमें बँधते जाते हैं। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने सारे प्रयत्नों को जागने की ओर लगायें और एक दिन, बाबा की कृपा से, तुम्हारी आँखें खुलेंगीं और जब ऐसा होता है, तब तुम क्या पाओगे? कुछ नहीं। यह सब, जिसे तुम यथार्थ समझते थे, अचानक गायब हो जाता है, उनके (बाबा के), तुम्हारे हर जगह रहने वाले प्रियतम के अलावा, इसमें से

कुछ भी शेष नहीं रहता है। केवल इतना ही नहीं, यहाँ तक कि तुम्हारा अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है और अब तुम्हारा अस्तित्व उनके (बाबा के) अस्तित्व में लीन हो जाता है और तुम उनके साथ एक हो जाते हो। अब तुम्हारा अस्तित्व उनके साथ एकता की अवस्था में होता है। तुम अपने प्रियतम के साथ एकता का अनुभव करते हो। चाहे तुम यह कहो कि वही (बाबा) सब कुछ हैं अथवा सब कुछ तुम्हीं हो, यह एक ही बात है क्योंकि इसके अलावा और कुछ नहीं है। सर्वत्र एकता की अवस्था में, केवल तुम और तुम्हारे प्रियतम के अलावा, दूसरा कोई नहीं है।''

एरच ने फिर मुझसे कहा, ''जब कोई परिस्थिति तुम्हें व्याकुल कर देती है, उस समय, मैंने तुम्हें अभी अभी जो कुछ बताया है, उसे मत भूलो। उस समय, यह याद करो कि यह सब एक स्वप्न है। याद रखो, यह सब तुम्हारे और तुम्हारे प्रियतम के बीच खेला जा रहा एक खेल है और इसमें दूसरा कोई नहीं है। केवल तुम और वह (बाबा) हैं।''

69. मंडली

जो लोग मंडली के निकट सम्पर्क में आते हैं, वह इस बात पर अक्सर आश्चर्य करते हैं कि मंडली के लोग साधारण क्यों लगते हैं जब कि बाबा ने उनके असाधारण होने की घोषणा की है। अपने प्रतिदिन के कार्यों में वे कभी कभी बहुत अधिक गड़बड़ी और मूर्खतापूर्ण ग़ल्तियाँ, यहाँ तक कि हम साधारण मनुष्य जितनी ग़ल्तियाँ करते हैं, उसकी तुलना से भी अधिक, करते हैं। फिर भी, बाबा ने उनको अपना यंत्र घोषित किया है जिनके द्वारा वह अपना कार्य करते हैं।

मंडली के साथ रहने के मेरे अनुभव में, मैंने भी इस बात पर ध्यान दिया कि अपने कार्यों में वे लोग कितने साधारण थे और फिर भी, समय बीतने के साथ, मैंने उनके साधारण कार्यों के नीचे एक गहराई और उनकी आत्माओं में महासागर की विशालता का अनुभव किया जो कि साधारण व्यक्ति में नहीं मिलता है। इसकी उपमा देने के लिये, मैं इसकी तुलना महासागर के बीच की और किनारे की लहरों से करूँगा। हालाँकि बाहर से दोनों जगह की लहरें एक जैसी दिखती हैं, फिर भी जब तुम महासागर

के किनारे की लहरों की सतह के नीचे जाने का प्रयत्न करते हो, तुम्हें वहाँ पर केवल बालू मिलती है। हम साधारण मनुष्य ऐसे ही हैं। लेकिन जब तुम महासागर के बीच की लहरों की सतह के नीचे जाते हो, तुम एक ऐसी गहराई और विशालता का अनुभव करते हो जो मात्रा में इतना अधिक व्याकुल करने वाली होती है कि तुम्हारा मन पूर्णरूप से चौंधिया जाता है।

बाबा की कृपा से, मुझे मंडली जनों के हृदय की एक झलक पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और इसकी (हृदय की) विशालता के सामने एक सबसे अधिक गहरा महासागर भी, एक छोटे से तालाब की तरह प्रतीत होगा। हिन्दी में मंडली का वर्णन करने के लिये एक पुस्तक से यह अंश उद्धृत है, ''मंडली को खुदा नहीं कहो, मंडली खुदा नहीं है, लेकिन खुदा के नूर से मंडली जुदा नहीं है,'' जिसका अर्थ है, ''मंडली को ईश्वर नहीं कहो, वे ईश्वर नहीं हैं; फिर भी वे ईश्वर की कान्ति, तेज से अलग नहीं हैं।''

अवतार मेहेरबाबा की जय!!!

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

रुस्तम बी. फ़लाहाटी

सी / 201, किशान्त बिल्डिंग, गन पाउडर रोड,

मझगाँव, मुंबई–400010

फोन (022)–23776313, (022) 23755606

ई–मेल : yougoicome@rediffmail.com

vorkj esgjckck dkfLed QkmUMs'ku
}kjk izdkf'kr iqLrdsa

1. **vorkj esgjckck ds lkFk esjh thou xkFkk&** श्री केशव नारायण निगम
2. **iqjkru iq#"k &** एरच जसावाला के संस्मरण
3. **vlyh [ktkuk &** रुस्तम फ़लाहाटी
4. **vlyh [ktkuk II &** रुस्तम फ़लाहाटी
5. **vorkj &** जीन एड्रियल
6. **esgj n'ku &** मेहेरबाबा की काव्यमय जीवनी–श्री भाऊ कलचुरी
7. **esgjkckn pyks&tc nqfu;k funk esa Fkh &** श्री भाऊ कलचुरी
8. **esgj pkyhlk ¼fgUnh½**
9. **esgj pkyhlk &** Meher Chalisa - English
10. **vorkj esgjckck dh ubZ ftUnxh**
11. Avatar Meher Baba's New Life

iqLrdsa eaxkus ds fy;s lEidZ djsa

1- Mk- ¼Jherh½ esgj T;ksfr dqyJs"B

"जिज्ञासा", बी–2448, इन्दिरा नगर, लखनऊ–उ.प्र. 226016

फ़ोन– (0522)–2350214 मोबाइल– 09415080217

2- Jh lehj fnytu

सी–8–8823, वसन्त कुंज, नई दिल्ली–70

फ़ोन–(011)–40515660 मोबाइल–09871608615